

PdffHindi.in

एक प्रेम कहानी मरी भी

‘सरल, ईमानदार और दिल
को छू लेने वाली दास्तान’
एन.आर. नारायणमूर्ति



रविंदर सिंह

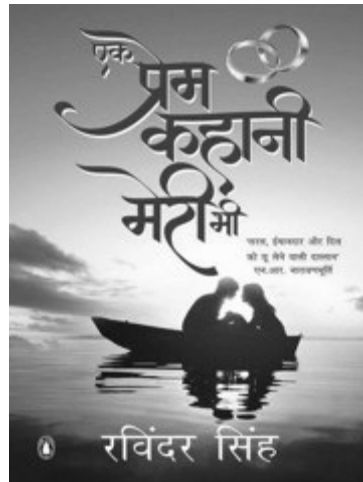


Ebook Downloaded From www.pdfhindi.in
For More Books visit! @ pdfhindi.in

रविंदर सिंह

एक प्रेम कहानी मेरी भी

प्रभात रंजन के द्वारा अनुवादित



अंतरस्तु

लेखक के बारे में

समर्पण

फुर्मिलन

खुशी

नजदीकियाँ

आमने-सामने

उससे दूर

वापसी

जो सोचा न था

उसके बिना

फ़िलहाल

आभार

पेंडुन का पालन करें

सर्वाधिकार

पेंडुन बक्स एक प्रेम कहानी मेरी भी

रविंदर सिंह बेस्टसेलिंग किताबों के लेखक हैं। उनकी पहली किताब आई टू हैड अ लव स्टोरी ने लाखों दिलों को छुआ है। कैल लव हैस ट्वाइस? उनकी दूसरी किताब है। उड़ीसा के कुर्मा में अपना अधिकतर जीवन बिताने के बाद अब वे चंडी गढ़ में रह रहे हैं। रविंदर एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर के बतौर देश की जानी-मानी आईटी कंपनियों में काम कर चुके हैं। फिलहाल वे हैदराबाद के इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस से एमबीए कर रहे हैं।

प्रभात खन हिंदी के चर्चित कहानीकार हैं। आपके दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा बहुवचन, आलोचना जैसी पत्रिकाओं के संपादन कार्य से जुड़े रहे हैं। आपने जनसत्ता में भी काम किया है और संप्रति अध्यापन कार्य कर रहे हैं। जानकी पुन नाम से एक ब्लॉग भी चलाते हैं।

प्यार की सारी दास्तानें हमेशा पूरी नहीं होतीं ।
कुछ अधूरी रह जाती हैं...

उस लड़की की याद में, जिससे मैंने प्यार किया
लेकिन शादी नहीं कर सका ।

तेरे जाने का असर कुछ ऐसा हुआ मुझ पर,
तुझे ढूँढते-ढूँढते, मैं खुद खो गया...

—अज्ञात

... वरना, अपने भीतर छुपे लेखक से मेरी
मुलाकात नहीं हुई होती ।

दिन तो किसी तरह गुज़र जाते हैं
लेकिन रातें दर्द से भरी होती हैं
ज़ख्म तो समय के साथ भर जाते हैं
लेकिन निशान रह जाते हैं
अपने आरामदेह बिस्तर पर पड़ा मैं
करवटें बदलता हूँ और सोने की कोशिश करता हूँ
लेकिन ख़याल मेरे दिमाग़ में उमड़ रहे हैं
और जमा हो गए हैं
बीते हुए दिनों की चुभती हुई रोशनी में
बिखर रहा हूँ मैं टुकड़े-टुकड़े
मेरे जीवन का अंधेरा अंधेरे में ज़्यादा उजागर हो उठता है
और अब मैं उन सबको आवाज़ देने की कोशिश कर
रहा हूँ
दिल को जुबान दे रहा हूँ

पुनर्मिलन

मुझे वह तारीख अच्छी तरह याद है : 4 मार्च, 2006। मैं कोलकाता में था और हैप्पी के घर पहुँचने ही वाला था। सुबह से ही बड़ी कुलबुलाहट हो रही थी क्योंकि मैं अपने उन दोस्तों से तीन साल बाद मिलने जा रहा था जिनको एक ज़माने से 'गैंग ऑफ़ फ़ोर' कहा जाता था। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद मनप्रीत, अमरदीप, हैप्पी और मैं पहली बार मिलने वाले थे।

होस्टल में पहले साल हैप्पी और मैं ए ब्लॉक भवन के चौथे माले पर अलग-अलग कमरों में रहते थे। एक ही माले पर रहने के कारण हम एक दूसरे को पहचानते तो थे लेकिन कभी एक-दूसरे से किसी तरह की बातचीत नहीं करना चाहते थे। मैं उसे 'अच्छा लड़का' नहीं समझता था क्योंकि उसे लड़ाई मोल लेने और अपनी मार्कशीट पर लाल रंग जुड़वाते जाने का शौक था। लेकिन दुर्भाग्य से, सेकेंड ईयर की शुरुआत में मैं होस्टल देर से लौटा और तब तक सभी कमरे दूसरे छात्रों को दिए जा चुके थे। मेरे पास इसके अलावा और कोई चारा नहीं बचा कि मैं हैप्पी का रूममेट बन जाऊँ। और चूँकि जिंदगी अजीब होती है, चीज़ें नाटकीय ढंग से बदलीं और हम सबसे अच्छे दोस्त बन गए। जिस दिन हमारा पुनर्मिलन तय हुआ उस वक्त वह दो सालों से टीसीएस कंपनी में काम कर रहा था और कंपनी के लंदन प्रोजेक्ट पर काम करते हुए मज़े उठा रहा था। हैप्पी को 6.1 फुट की लंबाई, भरा-पूरा शरीर और बला की सुंदरता मिली थी। और हैप्पी हमेशा खुश रहता था।

मनप्रीत, जिसे हम एमपी बुलाते, गोल-मटोल, गोरा-चिट्ठा और स्वस्थ था। 'स्वस्थ' शब्द इस्तेमाल करने का कारण यह है कि अगर मैं उसके लिए सही शब्द 'मोटा' इस्तेमाल करूँ तो वह मुझे मार डालेगा, वह हम लोगों में पहला व्यक्ति था जो होस्टल में कंप्यूटर लेकर आया और उसकी उस मशीन में न जाने कितने कंप्यूटर गेम थे। असल में, यही कारण था कि हैप्पी और मैं उससे दोस्ती करना चाहते थे। एमपी काफी पढ़ाकू था। उसने स्कूल के दिनों में गणित ओलंपियाड जीता था और वह हमेशा उसके बारे में डींगें हाँका करता था। वह मोदीनगर का रहने वाला था, लेकिन जिस समय हम फिर से मिल रहे थे वे वह बंगलुरु में ओक्वेन के साथ काम कर रहा था।

अमरदीप का नामकरण एमपी ने 'रामजी' किया था। मुझे पता नहीं कि उसका यह अजीब नाम कब और क्यों पड़ा। हो सकता है शायद इसलिए क्योंकि वह स्वभाव का सीधा-सादा था। होस्टल में हम लोगों के विपरीत वह बिलकुल निशाचर नहीं था और उसके कमरे की बत्तियाँ ठीक 11 बजे बुझ जाती थीं। कभी-कभार एमपी, हैप्पी और मैं उसके कमरे के सामने 11 बजे से कुछ सेकेंड पहले खड़े हो जाते और गिनती शुरू कर देते, 10, 9, 8, 7, 6, 5, 4, 3, 2, 1...और रामजी सो जाता। अमरदीप के बारे में बस एक ही रहस्यमयी बात थी कि वह साइकिल पर बैठकर कहीं जाता था, हर इतवार। उसने हमें कभी नहीं बताया कि वह कहाँ जाता था। जब भी हमने उसका पीछा करने की कोशिश की, उसे न जाने कैसे पता चल जाता और वह अपना रास्ता बदलकर हमें छका देता। आज भी हममें से कोई उस बारे में नहीं जानता। उस आदमी के बारे में सबसे अच्छी बात उसकी सादगी थी। और, सबसे बड़ी बात यह कि हमारे इंजीनियरिंग बैच के आखिरी सेमेस्टर का टॉपर था। वह हमारे ग्रुप की शान था। वह बरेली का रहने वाला था और तब वह एवाल्युसर्व में काम कर रहा था जब वह एमपी के साथ पुनर्मिलन के लिए हवाई जहाज से कोलकाता आया।

कॉलेज के बाद हम सब जीवन के ढर्रे में काफी बँध गए थे। एक दिन, हमें पता चला कि हैप्पी लंदन से दो हफ़्तों के लिए आ रहा था। सब फिर से मिलने के लिए उत्साहित थे। 'कोलकाता में हैप्पी के

घर पर 4 मार्च, 2006' हमने फैसला किया।

आखिरकार, उस निर्धारित तारीख को मैं हैप्पी के घर की सीढ़ियाँ तेज़ी से चढ़ कर ऊपर गया। दोपहर के 12.30 बजे मैंने उसके दरवाज़े को खटखटाया। उसकी माँ ने दरवाज़ा खोला और मुझे अंदर बुलाया। चूँकि मैं उसके घर कई बार जा चुका था। वो मुझे अच्छी तरह जानती थीं। हैप्पी के घर में बहुत अधिक औपचारिकताएँ नहीं होती थीं। मैं जब पानी पी रहा था उन्होंने मुझे बताया कि हैप्पी घर में नहीं था और उसका सेल फोन स्विच ऑफ था।

‘खूब! और उसने मुझसे कहा था कि देर मत करना,’ मैं अपने आपसे बुदबुदाया।

कुछ देर बाद फिर दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ आई। दरवाज़ा खोलने के लिए मैं अपनी कुर्सी से उठा, क्योंकि हैप्पी की माँ किचन में थीं। मैंने दरवाज़ा खोला तो कुछ इस तरह का शोर-शराबा होने लगा, ‘ओह...बुराह...हैंडसम...हा हा हा...ओहहा हा...!’ नहीं, यह हैप्पी नहीं था। एमपी और अमरदीप आये थे।

तीन सालों बाद कॉलेज के अपने दोस्तों से मिलना ऐसा उत्तेजक और पागलपन भरा होता है कि आपको इसका अंदाज़ भी नहीं रहता कि आप किसी और घर में हैं जहाँ आपको कुछ शिष्टाचार दिखाना चाहिए और शांत रहना चाहिए। लेकिन फिर इस पुनर्मिलन का सारा कारण ही यही था कि कॉलेज के दिनों को याद किया जाए और वह उसकी बेहतर शुरुआत थी। जब ड्राइंग रूम में हम सोफे पर बैठ गए तब एमपी ने हैप्पी के बारे में पूछा।

‘वह अपने घर में भी समय पर नहीं है’, मैंने एमपी की ओर देखते हुए कहा और हम फिर से हँसने लगे। अगले करीब आधे घंटे तक हम तीनों बातें करते रहे, एक दूसरे का मजाक उड़ाते रहे और हैप्पी की माँ का बनाया हुआ लंच उड़ाते रहे। हाँ, हमने हैप्पी के बगैर ही खाना शुरू कर दिया था। यह सुनने में तो अच्छा नहीं लगता—लेकिन हमारे पास इसका ठोस कारण था—उसके बारे में यह कोई नहीं बता सकता था कि वह कब आएगा, इसलिए इंतज़ार करने का कोई मतलब नहीं था। कुछ देर बाद फिर दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ आई। दरवाज़ा हैप्पी की माँ ने खोला।

‘हैप्पी वीर!’ एमपी डाईनिंग टेबल से उठते हुए चिल्लाया।

अमनदीप और मैंने एक-दूसरे को देखा क्योंकि जब एमपी हैप्पी के गले लगा तो ऐसा लगा जैसे उसकी आँखों से आँसू निकल आएँगे। हमें याद आया कि जब वे पहरों बैठकर शराब पीते थे तो कैसे रोने लगते थे, जब उनके दिमाग की बत्ती गुल हो जाती थी और दिल बातें करने लगता था। अमनदीप और मैं अपना कोक पीते हुए उनकी भावुकता के मज़े लिया करते थे।

हम सब खड़े हुए, बारी-बारी से उसके गले लगे और फिर खाने में लग गए! उस दिन खाना बहुत स्वादिष्ट बना था। या शायद इसलिए कि हम लोग बहुत दिनों बाद साथ-साथ खाना खा रहे थे, जिसने उसे खास बना दिया था।

खाने के बाद हम दूसरे फ्लैट में चले गए। यह उसी बिल्डिंग में कुछ माले ऊपर था, यह हैप्पी के परिवार का दूसरा फ्लैट था जो रिश्तेदारों और हम जैसे दोस्तों के लिए था। अंदर जाते हुए हम एमपी के एक चुटकुले पर हँस रहे थे और शायद उस समय भी हँस रहे थे जब हम ड्राइंग रूम में बड़े से काउच पर धँसे हुए थे। बाँहें फैलाए छत की दीवार की ओर देखते हुए हम खुला-खुला महसूस कर रहे थे।

कुछ देर तक तो कोई भी नहीं बोला। और फिर हैप्पी के ठहाके के साथ बातचीत फिर शुरू हुई। मेरे ख्याल से उसे रामजी से जुड़ा कोई प्रसंग याद आ गया था।

उस शाम हम चारों ने उस फ्लैट में ज़बरदस्त समय बिताया। हम अगले पिछले जीवन के बारे में बातें करते रहे। कॉलेज की उन खूबसूरत नहीं दिखने वाली लड़कियों के बारे में, कंप्यूटर पर देखी गई

अश्लील फिल्मों के बारे में, विदेशों के अपने-अपने अनुभवों के बारे में और भी बहुत सारी बातें।

‘तो तुमको यूरोप अधिक अच्छा लगा या अमेरिका?’ हैप्पी ने उठते हुए मुझसे पूछा।

‘यूरोप,’ मैंने लेटे-लेटे छत की ओर देखते हुए जवाब दिया।

‘क्यों?’ अमरदीप ने पूछा। वह अक्सर हर बात के पीछे के कारण को जानने में दिलचस्पी रखता था (लेकिन उसने हमें यह नहीं बताया कि होस्टल के दिनों में वह हर इतवार को कहाँ जाता था)।

‘यूरोप का अपना इतिहास है। जब आप देश बदलते हैं तो भाषा बदल जाती है खाने की कला और स्थापत्य कला, सफ़र के बेहतरीन साधन, दिलकश नज़ारे, यूरोप में सब कुछ शानदार है,’ मैंने बताने की कोशिश की।

‘तुमने अमेरिका में यह सब नहीं देखा?’

‘कुछ चीज़ें हैं, लेकिन आने-जाने के साधन उतने अच्छे नहीं हैं जितने यूरोप में। अमेरिका के ज्यादातर हिस्से में आप और आपकी गाड़ी ही विकल्प होते हैं, केवल न्यूयार्क इसका अपवाद है। आपको वहाँ उतनी भाषाएँ नहीं सुनाई देंगी जितनी आपको यूरोप में सुनने को मिलती हैं। मेरा कहना यह है कि अमेरिका बहुत विकसित है लेकिन मैं यूरोप को अमेरिका से तरजीह दूँगा।’

अमरदीप ने सिर हिलाया जिसका मतलब था कि उसका सवाल खत्म हुआ।

‘आईटी क्षेत्र की यह सबसे अच्छी बात है, अमरदीप। हमें बहुत सारी जगहों पर जाने का मौका मिल जाता है जिनके बारे में कॉलेज के दिनों में हमने सपने में भी नहीं सोचा था,’ एमपी ने अमरदीप से कहा। कॉलेज के बाद एमपी, हैप्पी और मैंने आईटी क्षेत्र को चुना जबकि अमरदीप ने केपीओ को अपनाया।

हम एक-दूसरे का साथ पाकर खुश थे। आखिर, कॉलेज में फेयरवेल की रात के बाद उस दोपहर हम घंटों बातें करते रहे। हम शाम को कहीं बाहर घूमने के बारे में सोच रहे थे कि हमें महसूस हुआ कि हम कितने थक गए थे और हमें बड़ी शिद्दत से आराम की ज़रूरत थी...मुझे याद नहीं है कि हम में से उस दोपहर सबसे पहले कौन सोया।

‘उठो गधो। 6.30 बज चुके हैं।’

कोई हमें सपनों की दुनिया से बाहर निकालने की कोशिश कर रहा था। होस्टल में हममें अमरदीप सबसे पहले उठता था से और ज़ाहिर है वही हम सबको उठाता था। इसलिए हम जानते थे कि वह हमारा सुबह-सवेरे का अमरदीप था।

तो भी, यह कैसे अच्छा लग सकता है कि कोई आपका दरवाज़ा पीटकर आपको बिस्तर से उठा दे? हम इनसानों की प्रकृति भी विचित्र होती है-जब हम सोये होते हैं तो हम उस आदमी से नफ़रत करते हैं जो हमें जगाने की कोशिश करता है, बाद में हम उसी इनसान को प्यार करते हैं हैं क्योंकि उसने सही काम किया।

हमेशा की तरह अमरदीप अपने अभियान में सफल रहा। शाम के सात बज चुके थे।

अमरदीप और एमपी पहली बार उस शहर में आये थे। इसलिए हमने तय कि कोलकाता की सड़कों की खाक छानी जाए। सौभाग्य से, हमारे मेजबान के पास दो मोटरसाइकिलें थी—एक उसकी अपनी पल्सर और दूसरी उसके छोटे भाई की स्प्लेंडर। हम तैयार हुए और गराज से हमने मोटरसाइकिलें निकाल लीं। एमपी और मैं स्प्लेंडर पर बैठे, हैप्पी और अमरदीप पल्सर पर।

विद्यासागर सेतु से हमने चिल्लाते और एक दूसरे से बातें करते, हुगली नदी को पार किया। उस शाम स्पीड ब्रेकर हमारी रफ़्तार को नहीं थाम सके। और हम कहाँ थे? सातवें आसमान पर। अपने सबसे अच्छे दोस्तों के साथ इतने समय बाद होना भावुक भी था और रोमांचक भी।

हम विक्टोरिया मेमोरियल और कुछ दूसरी जगहों पर गए। कभी रुककर हमने फलों का जूस पिया, कभी कोलकाता की मशहूर मिठाई और नाश्ते का मज़ा उठाया। कभी हम इसलिए रुके क्योंकि हम में से किसी को पेशाब करना था—एक-दूसरे की देखा-देखी हमें बारी-बारी से खूब पेशाब लगी।

किसी स्थान पर हमने कुल्हड़ में चाय का मज़ा लिया। जब एमपी ने पूछा कि हम घर कब जाएंगे तब तक 10.30 बज चुके थे।

‘चिंता की कोई बात नहीं। मेरे पास ऊपर के फ़्लैट की चाबी है। हम जब चाहे जा सकते हैं। उम्मीद करता हूँ कि हम 1 बजे से पहले नहीं जाएंगे,’ हैप्पी ने अपनी आइस-टी का आखिरी घूट भरते हुए कहा।

‘और तब तक हम कहाँ रहने वाले हैं?’ अमरदीप कुछ चिंतित दिखा।

अमरदीप और 11 बजे उसके सोने का समय मुझे याद आया, लेकिन मैंने इस बात की ओर दूसरों का ध्यान नहीं दिलाया।

हैप्पी ने मेरी ओर देखा और मुस्कुराते हुए पूछा, ‘क्या हम उसी जगह पर चलें?’

‘ओह! उस जगह...?’ इससे पहले कि एमपी का दिमाग कुछ गंदी बात सोचता, मैंने तस्वीर साफ़ कर देने की सोची। ‘महानुभावों! हम एक बहुत ही अच्छी जगह जा रहे हैं और मैं शर्त लगा सकता हूँ कि तुम दोनों को भी वह जगह...’

मैं अपनी बात समाप्त करने ही वाला था कि एमपी का धीरज जवाब दे गया। उसने मेरी बात काटते हुए कहा, ‘ओह हाँ, मैंने सुना है कि चंद्रमुखी पश्चिम बंगाल की ही थी। तो क्या हम लोग योजना बना रहे हैं कि...?’ उसकी कुटिल मुस्कान और शरारती आँखों ने उसके सवाल को पूरा कर दिया।

‘बदमाश कहीं के’, हैप्पी ने हँसते हुए कहा।

‘ज्यादा मत सोचो, एमपी। बस हमारे पीछे-पीछे आओ,’ मैंने बात पूरी की।

बिना किसी को कुछ बताए हम अपनी मोटरसाइकिल पर बैठे और उस स्थान की ओर चल पड़े।

अभी आधी रात भी नहीं हुई थी जब हम उस जगह पर पहुँचे। वहाँ हवा कुछ ठंडी थी। पहली नज़र में ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी झोंपड़पट्टी में हों, वहाँ एक पुराना-सा गराज था जिसका शटर गिरा हुआ था। उसके बाहर कुछ ट्रक खड़े थे। उसके ड्राइवर शायद सो रहे थे। हमने एक ट्रक के पीछे मोटरसाइकिल खड़ी की और गराज की दायाँ तरफ एक पतली सड़क पर चलने लगे। वहाँ ठीक से रोशनी नहीं थी और एकदम शांति थी। हमारी आवाज़ और चलने की आवाज़ तेज़ी से गूँज रही थी। कीड़ों की आवाज़ें उस जगह की भयानकता को और बढ़ा रही थीं। एमपी को कहीं से कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। मुझे नहीं लगता कि उसने सचमुच कोई आवाज़ सुनी भी थी। हो सकता है, उसका कमज़ोर दिल ही तेज़ी से धड़कने लगा हो।

‘१११११ वे जाग जाएँगे,’ हैप्पी ने अपनी ऊँगली को होंठों पर लाते हुए कहा।

‘कौन?’ अमरदीप खुसफुसाया।

‘सामने लोग ज़मीन पर लेटे हुए हैं! ध्यान से देखकर चलो।’ हैप्पी ने कहा।

‘लोग! सड़क पर सो रहे हैं?’ अमरदीप कुछ धीरे-धीरे चलने लगा। वे आस-पास के मछुआरे थे। कुछ सो रहे थे और कुछ देसी शराब के नशे में दुन्न पड़े थे।

अचानक सड़क एक काठ के बने रास्ते के पास रुक गई। वहाँ सीढ़ियों जैसा कुछ था जो नीचे की ओर जा रहा था। और हमें दूर से एक आवाज़ आती सुनाई दे रही थी, जैसे पानी किनारों से टकरा रही हो। कीट-पतंगों की आवाज़ों को पीछे छोड़ते हुए हम उस रास्ते से उतरने लगे।

कुछ ही सेकेंड में हम अपनी मंजिल पर थे।

यह हुगली नदी थी और हम उसके तट पर खड़े थे। अमरदीप और एमपी का डर खुशी में बदल गया।

‘यह नदी का तट है और अभी हम हावड़ा में हैं। यह वह जगह है जहाँ से नाव दूसरे किनारे कोलकाता शहर में ले जाती है,’ हैप्पी ने नदी की दूसरी ओर इशारा करते हुए घोषणा की।

जोश में आकर हम उस काठ की बंदरगाह जैसी संरचना पर कूदने लगे। उस बंदरगाह की तीन तरफ़ नदी अपने पूरे उफान पर थी। वह एक खूबसूरत रात थीं, चाँद हमारे सिर पर था और तारे जगमगा रहे थे। और आकाश के नीचे हम चार थे।

हम बंदरगाह के किनारे एक विशाल लंगर के पास बैठ गए। नदी ठंडी हवा को बेधती हुई बंगाल की खाड़ी से मिलने के लिए बढ़ रही थी। उस ख़ामोशी में बंदरगाह से पानी के टकराने की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी। नदी की दूसरी तरफ़ कोलकाता शहर था। ऊँची इमारतें और छोटी-छोटी पीली रोशनी की झालर मुझे न्यूयार्क के आसमान की याद दिला रही थी। लेकिन यह उससे भी अधिक अच्छा था क्योंकि मैं अपने दोस्तों के साथ था।

हमने अपनी बाँहें फैलाकर गहरी, लंबी साँसें लीं। ताज़ी, ठंडी हवा अंदर लेते हुए, हम उस जगह की खूबसूरती से मदहोश थे। उसी समय हैप्पी बोल पड़ा।

‘तो?’ उसने अमरदीप की ओर देखते हुए पूछा।

‘क्या?’ जवाब में अमरदीप ने पूछा, क्योंकि उसे हैप्पी के ‘तो’ का मतलब समझ में नहीं आया।

‘तो कैसी लगी यह जगह, झक्कास?’

‘ओह! यह जगह? मैं इससे बेहतर जगह के बारे में सोच नहीं सकता। यह तो स्वर्ग है।’

और एक बार फिर ठंडी हवा के झोंके ने हमें घेर लिया। हम बंदरगाह पर बैठ गए।

उसी समय चर्चा शुरू हो गई। एक गंभीर चर्चा; एक ऐसी चर्चा जिसने मेरे जीवन को बदल कर रख दिया।

इसकी शुरुआत एक और ‘तो’ से हुई।

‘तो,’ अमरदीप ने इस बार हैप्पी की ओर देखते हुए कहा।

‘क्या?’ हैप्पी ने अपनी ठुड्डी उठाते हुए पूछा।

‘अगली खास बात क्या है?’ अमरदीप ने पूछा

‘तुम्हारा मतलब डिनर से है?’ एमपी बीच में बोल पड़ा।

‘नहीं, मेरा मतलब जिंदगी की अगली महत्वपूर्ण चीज़ से है। स्कूल की पढ़ाई हो गई। इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी हो गई। अच्छी-खासी नौकरी भी मिल गई। विदेश भी हो आये। बैंक में पैसा जमा होता जा रहा है। मील का अगला पत्थर क्या है?’

‘हाँ! मैं समझ गया कि तुम क्या बात कर रहे हो,’ अपनी पहले से उठी हुई ठुड्डी मेरी तरफ़ घुमाते हैप्पी ने हाँ में हाँ मिलाई, ‘इससे पूछो,’ हुए उसने कहा।

सब मेरी ओर देखने लगे।

‘मुझे पता नहीं कि तुम लोगों के जीवन में, घर में क्या हो रहा है, लेकिन मेरे मम्मी-पापा तो जैसे पागल हो रहे हैं। वे मेरे पीछे किस तरह पड़े हैं कि तुम सोच भी नहीं सकते। क्या मैं अकेले अच्छी तरह से नहीं रह सकता?’ अमरदीप ने कहा।

‘तो क्या तुमने या तुम्हारे परिवार ने कुछ तय कर लिया,’ मैंने उससे पूछा।

‘नहीं, मेरी कहानी भी तुम लोगों की तरह ही है। लेकिन सच्चाई यह है कि एक दिन हम लोगों को अपने-अपने जीवनसाथी के साथ घर बसाना होगा। कब तक हम लोग अपने माता-पिता के सवाल

को टाल सकते हैं? हमको लेकर उनकी भी कुछ उम्मीदें हैं, कुछ सपने हैं।’

‘मैं जानता हूँ कि तुम क्या कहना चाह रहे हो अमरदीप। लेकिन क्या तुम सचमुच अपनी पूरी जिंदगी किसी के साथ बिताने के लिए तैयार हो? मेरा मतलब है कि होस्टल में 4 साल के दौरान ऐसे कई मौके आए जब हमें एक-दूसरे के साथ तालमेल बिठाना पड़ा...यह तो जीवन भर के लिए होगा,’ हैप्पी ने कहा।

‘लेकिन देर-सबेर हमें यह करना होगा, समझे?’ अमरदीप बोला।

‘अगर हम इसी तरह से रह गए तो क्या होगा?’ एमपी बोला।

‘ज़रा कल्पना करो कि 60 साल की उम्र में तुम अकेले रह रहे हो। जीवन इतना आसान नहीं है, मेरे दोस्त। यह एक यात्रा है और जीवन साथी के साथ इसे सबसे आसानी से पूरा किया जा सकता है।’ अमरदीप बोला।

उस रात नदी-किनारे हम चारों ने इस मसले पर बड़ी गंभीरता से चर्चा की, पहली बार। शायद पहली बार हमने महसूस किया कि हम इतने बड़े हो गए हैं कि इसके बारे में बातें कर सकें। अनेक तरह के सवाल, किंतु-परंतु उठे और हमने उनके जवाब भी दिए। अनेक तरह के पहलुओं को लेकर चर्चा हुई। हम में से कोई भी शादी के खिलाफ नहीं था लेकिन हम उसके फ़ायदों को अच्छी तरह परखना चाहते थे। अमरदीप और मैं तो शादी को लेकर काफ़ी हद तक तैयार थे। और इस चर्चा ने हैप्पी और एमपी को इस मसले में गंभीरता से सोचने पर मजबूर किया, हालाँकि इस चर्चा से वे राज़ी नहीं हुए थे। (जिससे मुझे एक टी-शर्ट पर लिखा यह नारा याद आता है: अगर तुम उसे राज़ी नहीं कर सकते तो बस थोड़ा-सा भ्रम में डाल दो)।

‘फिर और बातों को लेकर भी चर्चा हुई। प्रेम विवाह या अरेंज मैरेज? माँ-बाप की पसंद से या अपनी पसंद से?’ हैप्पी बोला।

‘अब यह तो निजी पसंद का मामला है। अब चूँकि हम अपने पैरों पर खड़े हैं मुझे नहीं लगता कि हमारे माता-पिता हमारे फैसले पर किसी तरह का एतराज़ करेंगे,’ अमरदीप ने कहा।

हैप्पी इसे सुनकर चुप रहा।

‘लेकिन अमरदीप, हमारी जिंदगियों को देखो। हम सभी उत्तर भारतीय हैं, दूर-दूर के राज्यों में काम कर रहे हैं। इसलिए ऐसे में कोई जीवन संगिनी मिल जाए, इसकी संभावना बहुत कम दिखती है। उससे भी बढ़कर, जिस तरह की नौकरी में हम हैं, यह हमें इसके अवसर नहीं देती कि हम अलग-अलग तरह के लोगों से मिल-जुल सकें। और सबसे बदतर बात यह है कि हम में से कोई भी अपने मम्मी-पापा द्वारा चुनी गई लड़की से शादी नहीं करना चाहता, अगर मैं गलत नहीं कह रहा हूँ तो,’ एमपी बोला।

‘मुझे पता नहीं कि तुम्हारा आखिरी वाक्य सही है या नहीं, लेकिन बाकी चीज़ें तो तुम्हारे अपने हाथ में हैं,’ अमरदीप ने जवाब दिया।

‘लेकिन एमपी की बात में दम है। जहाँ तक मेरी बात है, तो मैं अपनी पसंद की लड़की से शादी करना चाहूँगा, लेकिन पिछले एक साल से मैं विदेश में हूँ। और पता नहीं शायद अगले एकाध साल में भारत लौटूँगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए मेरे लिए शादी के बारे में कुछ योजना बना पाना बहुत मुश्किल है। और मेरे जैसे आदमी के लिए किसी ऐसी लड़की के साथ घर बसा पाना असंभव ही है जो हिंदुस्तानी न हो। हिंदुस्तानी भी छोड़ो, उसे सबसे पहले पंजाबी होना चाहिए,’ मैंने कहा।

‘तुमने इनफोसिस में नौकरी के लिए अप्लाई कैसे किया?’ अमरदीप ने बात बदलते हुए पूछा।

मैंने जवाब दिया, ‘बेबसाइट के माध्यम से।’

‘और हैप्पी, तुमने लंदन से अपने मम्मी-पापा को पैसे कैसे भेजे?’

‘इंटरनेट बैंकिंग अकाउंट के माध्यम से। वह काफी तेज़ी से काम करता है,’ उसने जवाब दिया।

‘देखो? दुनिया इंटरनेट प्रेमी होती जा रही है। इस बात के मद्देनज़र कि हम सब आईटी वाले हैं जो लगभग रोज़ ही नेट पर होते हैं, हम शादी के लिए भी इसका उपयोग क्यों नहीं कर सकते?’

‘तुम शादी.कॉम जैसी वेबसाइट के बारे में बात कर रहे हो?’ हैप्पी ने पूछा।

‘हाँ।’

‘वे सचमुच किसी काम के होते भी हैं? मुझे नहीं लगता,’ एमपी ने अपनी बात रखी।

‘यह जानने के लिए कि खाना मीठा है या नमकीन आपको पहले उसे चखना होता है। किसी चीज़ को पक्के तौर पर जानने का वही एक तरीका होता है,’ अमरदीप ने जवाब दिया।

‘या बेहतर तरीका यह है कि किसी ऐसे आदमी से पूछा जाए जिसने उसे पहले चख रखा हो। कोई जोखिम क्यों लें?’ हैप्पी ने हमें हँसाने के ख़्याल से कहा।

‘तो रामजी, तुमने ऐसी कोई वेबसाइट देखी है?’ मैंने पूछा।

‘अभी तो नहीं। लेकिन मैं उसके बारे में सोच रहा हूँ...।’

जब हमने कुछ नहीं कहा तो उसने समझाना शुरू कर दिया, ‘इस सेवा की सबसे बड़ी ख़ासियत यह है कि आप बहुत सारे लोगों के बारे में जान सकते हैं। इससे आपको अपने लिए बेहतर साथी चुनने में मदद मिलती है। और आप उससे बातचीत कर सकते हैं जिसमें आपको इंटरेस्ट जगे...सब कुछ बेहद सलीके से होता है। सबसे बढ़कर आपको इस बात की चिंता भी नहीं करनी होती कि आप किस जगह पर हैं...’

अमरदीप ने कुछ ऐसी बातें रखीं जिसके बारे में बहस करने के लिए शायद हमारे पास कुछ ख़ास था नहीं।

‘हूँ...ठीक है, मुझे यह तो पता नहीं है कि इन सबसे कुछ होता है, लेकिन एक बार इसे आज़माना ज़रूर चाहिए। कौन जानता है...?’ यहाँ तक कि एमपी भी राज़ी लग रहा था।

रात के 1.30 बज चुके थे, हमारे खाली पेटों ने हमारे दिमागों को अपने वजूद की याद दिलायी।

अमरदीप ने कहा, ‘अब काफी देर हो चुकी है और मुझे बेहद भूख लगी है। घर चलते हैं,’ कहते हुए वह उठ खड़ा हुआ।

‘तो वह पहला आदमी कौन है?’ जब हम अपने कपड़ों की धूल झाड़ रहे थे एमपी ने पूछा।

‘सबसे पहले शादी करने वाला? या वेबसाइट पर सबसे पहले अपनी प्रोफाइल डालने वाला?’ हैप्पी ने हँसते हुए पूछा।

‘दोनों।’

‘मुझे लगता है यह,’ हैप्पी ने मेरी तरफ़ ऊँगली दिखाते हुए कहा, ‘पता नहीं क्यों।’

सुबह के करीब 4 बज चुके थे। हम खाना खाकर सोने चले गए। बहुत समय बाद, मैंने उस तरह नींद का आनंद लिया जिस तरह हम होस्टल में लिया करते थे। वह दिन हमारे जीवन का एक यादगार दिन बन गया।

अगला दिन हमने कोलकाता की कुछ मशहूर जगहों को देखते हुए बिताया। और हम उस दिन शाम को फिर से नावों वाले घाट पर गए मेरा यकीन कीजिए, वह 1912 के टाइटेनिक की सवारी से कुछ कम मज़ेदार नहीं था, अपने सबसे अच्छे दोस्तों के साथ होना तो और भी आनंददायक था। हमने सम प्लेस एल्स नाम के एक पब में ख़ूब खाया, पीया और बातें की।

वह हमारे पुनर्मिलन की आखिरी रात थी।

सब मुझे छोड़ने के लिए हावड़ा स्टेशन पर आये और एक बार फिर हम चारों वैसे ही गले मिले जैसे हम कॉलेज के आखिरी दिन हैदराबाद स्टेशन पर मिले थे।

‘सबसे पहले कौन रोने वाला है?’ एमपी ने पूछा । लेकिन हम सब उस अहमकाना और भावुक सवाल पर हँसने लगे ।

ट्रे ने अपनी आखिरी सीटी बजाकर मुझे बुलाया । मैं डिब्बे में सवार हो गया और गेट पर खड़ा होकर तब तक उन सबको हाथ हिलाकर विदा कहता रहा जब तक ट्रे प्लेटफोर्म से खिसकती रही । मैं अगले दिन सुबह भुवनेश्वर पहुँच गया । उसी सुबह अमरदीप और एमपी ने अपने-अपने ठिकानों के लिए फ्लाइट पकड़ ली...उसके कुछ देर बाद हैपी भी लंदन के लिए उड़ गया ।

खुशी

तीन सप्ताह बाद मैं अपने ऑफिस में था। मैं उन तस्वीरों को देख रहा था। जिन्हें पुनर्मिलन के दौरान एमपी ने खींचा था। उसने हम लोगों को इमेल किया था और जब मैं उनको याहू के अपने इनबॉक्स में देख रहा था तब मैंने गौर किया कि ऊपर बाएँ कोने में कुछ संकेत आ रहा था।

वह शादी-विवाह की साइट शादी.कॉम का विज्ञापन था—जिसमें अपने लिए उपयुक्त वर की तलाश में एक खूबसूरत लड़की मुस्कुरा रही थी।

मुझे दोस्तों के साथ हुई बातचीत की याद हो आई। मैंने उस विज्ञापन के लिंक को क्लिक किया जो मुझे उसकी वेबसाइट पर ले गया। मैंने सर्च का विकल्प दबाया और कुछ ही समय में परिणाम मेरे सामने था। चुनाव के लिए बहुत सारी लड़कियाँ थीं वहाँ। उनमें से कुछ तो बहुत ही सुंदर दिखाई दे रही थीं और मैं सबको चेक करना चाहता था। लेकिन इससे पहले कि मैं छठी लड़की का प्रोफाइल देखता, मुझे यह संदेश मिला कि मुझे वेबसाइट के साथ अपने को रजिस्टर्ड करवा लेना चाहिए, क्योंकि उससे बिना मैं और प्रोफाइल नहीं देख सकता। ट्रेलर खत्म हो चुका था और पूरी फिल्म देखने के लिए आपको पहले अपने आपको पंजीकृत करवाना था।

‘उस दिन मेरे पास अधिक काम नहीं था इसलिए मैंने सोचा कि मुझे उस वेबसाइट पर अपनी प्रोफाइल बना ही लेना चाहिए।’ हैप्पी, अमरदीप और एमपी से मैं यही कहता हूँ। जबकि बात इसकी उल्टी थी उसका उल्टा। वेबसाइट पर उन सुंदर चेहरों ने मुझे मजबूर कर दिया कि मैं अपनी व्यस्तताओं के बीच से उसके लिए समय निकालूँ, जबकि अगले ही दिन मुझे एक व्यक्ति को प्रोजेक्ट देना था।

किसी ने सही ही कहा है, तीन चीज़ें—धन, औरत और...(मैं अक्सर तीसरी चीज़ के बारे में भूल जाता हूँ)...दुनिया में कुछ भी संभव करवा सकते हैं।

आखिरकार, मेरी प्रोफाइल वेबसाइट पर आ गयी। मैंने अपना एक अच्छा-सा फोटोग्राफ लगाया और ऐसी सभी बाधाओं को क्लिक करके दूर कर दिया जो मुझे ढूँढने वाली लड़की से मेरा अता-पता छुपाने के लिए कहती हों। मैं इस बात का उल्लेख करना भी नहीं भूला कि मैं अपने काम के सिलसिले में अमेरिका और यूरोप जा चुका हूँ। करीब घंटे भर बाद मैं उन प्यारे चेहरों को देखने के लिए पूरी तरह लैस हो चुका था। मैंने वेबसाइट पर सभी पंजाबी लड़कियों का विकल्प चुना और ‘सर्च’ के बटन को क्लिक कर दिया।

मेरी उस खोज के जो परिणाम सामने आए उनकी संख्या सैकड़ों में थी। यह तो काफी उत्साहजनक था! लेकिन मैं उनमें से करीब 50 के आस-पास के प्रोफाइल ही देख पाया था कि मेरी आँखें थक गईं। फिर भी, उन पचासेक लड़कियों में कुछ तो ऐसी थीं ही, जिनसे मैं सपर्क साधना चाहता था। लेकिन मैं ऐसा कर पाता कि उससे पहले ही दिल को दर्द पहुँचाने वाली एक घटना हुई। उन प्यारे चेहरों से बात करने के लिए मुझे वेबसाइट को भुगतान करना था। मुफ्त का भोजन जैसी वहाँ कोई चीज़ नहीं है। उफ!

मुफ्त में बस यही सुविधा थी कि मैं उनकी प्रोफाइल वाले पन्ने पर जाकर एक बटन दबाकर उनमें अपनी रुचि दिखा सकता था। वह उनके इनबॉक्स में मेरी तरफ से मैसेज की तरह जाता। लेकिन अगर वे भी मुझमें रुचि दिखातीं तो भी मुझे उनका ईमेल तभी मिलता जब तक कि मैं उसका भुगतान नहीं कर देता। मैंने चेक किया कि इसके लिए वे कितने पैसे माँग रहे थे।

साल भर का प्लान लेने के लिए 3000 रुपए! 'बिलकुल नहीं,' मैंने अपने आपसे कहा। मैं भुगतान तो तभी करूँगा जब मुझे उन सुंदरियों से सकारात्मक जवाब मिले। तब तक, जब भी मेरा मन हो, वेबसाइट पर जाऊँ और किसी लड़की की प्रोफाइल पर जाकर उसमें अपनी रुचि जताने वाला बटन दबा दूँ।

यह शादी.कॉम से मेरे अनुभव की शुरुआत थी। इसे मैंने अपने प्रोजेक्ट को निपटने की कीमत पर किया था, जिसे मैंने करीब-करीब बर्बाद ही कर दिया।

हैप्पी, अमरदीप और एमपी के अलावा उस साइट पर मेरी प्रोफाइल होने की बात कोई नहीं जानता था, मेरे माता-पिता भी नहीं। क्योंकि उनको यह बताना कि मैं शादी करने के बारे में सोच रहा हूँ बर के छत्ते में हाथ डालना था। उनको जैसे ही पता चलता वे दुनिया भर के अपने जानने वालों से जानकारी लेने लगते—और हे भगवान! मुझे इन सबसे कितनी चिढ़ थी! अगले कुछ दिनों में मुझे अपने प्रस्तावों के जवाब मिले। जब भी मैं अपना इनबॉक्स खोलता एक विचित्र प्रकार की फुरफुरी आती। लेकिन उनमें से ज़्यादातर अधिक देर नहीं ठहरती। जो उनमें सबसे अच्छी थीं उन्होंने मेरे प्रस्ताव को मना कर दिया। बल्कि कहना चाहिए कि उनमें से अधिकतर ने मेरी तरफ ध्यान ही नहीं दिया। केवल मुट्ठी भर ने मेरे प्रस्ताव को माना लेकिन दुर्भाग्य से वे उतनी अच्छी नहीं लग रही थीं। आह! यह वेबसाइट किसी काम की नहीं है। मैंने अपने आपसे कहा। मानो मैं जेम्स बॉण्ड होऊँ और जैसे ही मैं संपर्क करूँगा दुनिया की सभी लड़कियाँ मेरे ऊपर टूट पड़ेंगी।

और इस तरह शादी.कॉम मेरी प्राथमिकता में सबसे ऊपर से सबसे नीचे चला गया। समय गुज़रता गया और मैं दो या तीन सप्ताह में साइट पर एक बार जाता, जिन लड़कियों के प्रोफाइल मुझे जँचते उनमें रुचि दिखाने का बटन दबा देता, लेकिन मुझे कोई खास उम्मीद नहीं थी। कुछ लड़कियों ने मुझे मना कर दिया, कुछ को मैंने मना कर दिया। कुछ मुझसे आगे बात करना चाहती थीं, लेकिन उनकी शिक्षा-दीक्षा कोई खास अच्छी नहीं थी। कुछ ने मेरे सेल पर फोन किया; कुछ को मैंने एसएमएस भेजे। उनमें से दो-एक यह चाहती थीं कि मैं विदेश में आ जाऊँ लेकिन मैं राजी नहीं था; कुछ दूसरों को मैं यह नहीं समझा पाया कि इंडिया रहने के लिए बेहतर जगह है।

एक बार जब मैं ऑफिस के काम से कुछ दिनों के लिए अमेरिका में था तब मुझे उस साइट का सालाना प्लान लेना पड़ गया, क्योंकि एक लड़की मुझसे बातें करने के लिए बेताब हो रही थी। उफ़! तीन में से कोई एक चीज़ (पैसा, औरत...और आखिरी वाला मैं अक्सर भूल जाता हूँ) दुनिया में कुछ भी संभव करवा सकती है, दूसरी चीज़ मुझे करवा भी रही थी। विडंबना यह रही कि जिस लड़की के लिए मैंने 3000 रुपए लगाए थे, उसने मुझसे कभी बात नहीं की। वेबसाइट में मेरी रही-सही दिलचस्पी भी जाती रही।

और फिर, एक शाम मेरे सेल फोन पर एक एसएमएस आया।

‘हाय, मैं खुशी हूँ। मुझे अपने दूसरे सेल पर आपका मैसेज मिला था क्या आप प्लीज़ फोन कर सकते हैं।’

यह 20 जुलाई, 2006, 18:58:19 की बात है। मेरे सेल फोन का इनबॉक्स अब भी दिन और समय दिखा देता है।

जब मुझे यह एसएमएस मिला तब मैं अमेरिका के किसी क्लाइंट से कॉन्फ्रेंस पर बात कर रहा था। मुझे तुरंत याद आ गया कि यह उस प्रोफाइल वाला नाम है जिससे मुझे एक सप्ताह पहले मुझे सहमति मिली थी, साथ में मोबाइल नंबर और ईमेल भी दिया हुआ था। मैंने जवाब में एसएमएस किया:

‘मैं इस समय कॉन्फ्रेंस पर बात कर रहा हूँ। मैं आपको अगले आधे घंटे फोन करूँगा।’

अगले ही मिनट मेरे सेल पर एक और मैसेज चमका।

‘मैंने भी कुछ ही मिनट पहले कॉन्फ्रेंस कॉल पूरी की है। तुम अपनी पूरी कर लो और मैं तब तक इंतज़ार करती हूँ।’

जब फोन पर मेरी बातचीत पूरी हो गई, मैंने उसका नंबर मिलाया, लेकिन उससे पहले मैंने जल्दी से उसका प्रोफाइल देखा।

‘हेल्लो,’ दूसरी तरफ से एक खूबसूरत आवाज़ आई।

‘हाय! मैं रविन बोल रहा हूँ।’

‘और मैं खुशी,’ उसने सुहानी और आत्मविश्वास से भरी आवाज़ में कहा।

‘हाँ, यह तो मैं आपके एसएमएस से जान ही चुका हूँ। सॉरी मैंने तुमको इंतज़ार करवाया, असल में मैं एक क्लाइंट से कॉन्फ्रेंस पर बात कर रहा था।’

‘कोई बात नहीं, मुझे भी इस बीच कुछ काम पूरे करने थे।’

हमारी बातचीत शुरू तो हुई औपचारिक रूप से ही लेकिन जल्दी ही वह काफी सहज हो गई तब हमें कुछ मजेदार बातें पता चलीं।

‘मुझे पता चला है कि आप 1982 के फरवरी महीने में पैदा हुए थे,’ उसने कहा।

‘हाँ, 4 फरवरी को। कोई खास बात?’ मैं सोचने लगा कि क्या कुछ ऐसा था उसके प्रोफाइल में जो याद रखना चाहिए था। लेकिन मुझे बस एक ही बात याद आई कि वह तस्वीर में सुंदर लग रही थी।

‘हो सकता है आपने ध्यान दिया हो कि मेरे जन्म का साल और महीना भी वही है।’

‘ओह हाँ! 22 फरवरी। मैंने देखा था,’ मैंने जल्दी से कंप्यूटर के पास जाकर उसकी प्रोफाइल देखकर जवाब दिया। ‘और आप फरीदाबाद में पैदा हुई थीं...।’

‘नहीं मैं कोलकाता में पैदा हुई थी। मेरे पापा फौज में थे और जब मैं पैदा हुई थी तो उनकी पोस्टिंग कोलकाता में थी और वे वहाँ अपनी फैमिली के साथ रह रहे थे।’

‘सच...? तुम यकीन नहीं करोगी!’ मैं ऐसे चिल्लाया कि आसपास काम करने वाले भी देखने लगे।

‘क्या?’

‘तुम गेस करो!’ मैंने सीढ़ियों की तरफ बढ़ते हुए जवाब दिया ताकि मैं बिना किसी को डिस्टर्ब किए उससे बात कर सकूँ।

‘यह मत कहो कि तुम भी उसी जगह पैदा...’

लेकिन इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाती, मैं फिर चिल्लाया।

‘हाँ!’

‘लेकिन कैसे?’

‘वहाँ मेरी ननिहाल है।’

और पता नहीं क्यों वह यह सुनकर चिल्लाई और हँसने लगी। हमारे देश की जो हालत है उसे देखते हुए यही कहा जा सकता है कि हज़ारों लोग उसी साल, उसी महीने, उसी स्थान पर पैदा हुए होंगे। लेकिन हम ऐसे चौंक रहे थे।

‘तुमको बताऊँ, हमारे बीच कुछ और बातें भी मिलती हैं—क्लासिकल म्यूजिक। मैंने पढ़ा है कि तुम्हारे पास सितार बजाने की डिग्री है।’ मैं बोला।

‘और तुम्हारे पास तबला बजाने की, ठीक?’

‘सच में। मैंने चार साल बजाना सीखा है। असल में मैं तो बिलकुल नहीं चाहता था, लेकिन मेरे पापा ने ज़बरदस्ती सिखाया...।’

‘पता है क्या? यही एक कारण था जिससे लगा कि तुमसे बात करनी चाहिए।’

‘मैं पक्के तौर पर नहीं कह सकता कि मुझे यह बात समझ में आ गई है,’ मैंने धीरे से कहा।

‘लेकिन तुम्हारी प्रोफाइल के हॉबी वाले हिस्से में लिखा है कि तुम तबला बजाते हो। और क्लासिकल म्यूजिक में तुम्हारी दिलचस्पी ही एक ऐसी बात थी जो तुमको दूसरों से अलग करती थी और जिसके कारण मुझे लगा कि तुमसे बात करनी चाहिए।’ उसने साफ़ किया।

तो यह तबला था जिसके कारण एक लड़की ने एक लड़के से बात की! उस लड़की को समझना तो असंभव था लेकिन मेरा मन हुआ कि मैं अपने पापा को गले लगा लूँ और उनका शुक्रिया अदा करूँ कि उन्होंने तबला सीखने के लिए मेरे साथ ज़बरदस्ती की।

‘चार सालों बाद मुझे प्रयाग यूनिवर्सिटी से डिग्री भी मिल गई। और हम दोनों ही आईटी क्षेत्र में हैं,’ उसने हमारे बीच की कुछ और समानताओं की ओर ध्यान दिलाया।

‘अरे हाँ! तुम नोएडा में एक आईटी कंपनी में काम करती हो, अगर मैं गलत नहीं हूँ तो?’ यह जानते हुए कि मैं गलत नहीं था, मैंने पूछा। और मैं भूल भी कैसे सकता था जबकि उसकी प्रोफाइल मेरे सामने खुली हुई थी?

‘हाँ मैं काम करती हूँ?...अच्छा बताओ, मेरे दोस्तों का कहना है कि इन्फोसिस में काम करने वाले काफी पढ़ाकू होते हैं और अच्छी रैंक वाले होते हैं। क्या यह सच है?’

‘क्या तुम यह उम्मीद कर रही हो कि मैं इसके जवाब में ‘न’ कहूँगा?’

वह हँसने लगी।

यह उस लड़की के साथ मेरी पहली बातचीत थी, जिसे मैंने अभी तक देखा नहीं था। उस बातचीत के दौरान हमने कई बातों के सिरे पकड़े: नई फिल्में हमने कौन-सी देखीं, अपने अच्छे दोस्तों के बारे में, उसके परिवार के बारे में, उसके परिवार, अपने-अपने कॉलेज के दिनों के बारे में, संगीत और दिलचस्पी के और क्षेत्रों के बारे में।

‘तुम्हारा परिवार भी भुवनेश्वर में रहता है क्या?’

‘नहीं, मैं एक छोटे-से शहर बुर्ला का रहने वाला हूँ, जो संबलपुर के पास है। मम्मी-पापा वहीं रहते हैं। मैं और मेरा भाई भुवनेश्वर में रहते हैं और दोनों ही इन्फोसिस में काम करते हैं। हम किराए के एक फ्लैट में रहते हैं जिसमें हमारे साथ दो और रूममेट भी रहते हैं। हम हर दूसरे सप्ताह मम्मी-पापा से मिलने जाते हैं। भुवनेश्वर से बुर्ला महज एक रात की दूरी पर है।’

हम करीब एक घंटे तक बातें करते रहे। मैं अपने कानों के पास अपने सेलफोन की जलन को महसूस कर सकता था और फोन की बैटरी अपने आखिरी दौर में थी। और फिर भी मैं उससे बातें करते रहना चाहता था, मुझे कहना ही पड़ा, ‘सुनो! मेरी बैटरी खत्म होने वाली है। लेकिन मुझे उम्मीद है कि हम आगे भी बातें करते रहेंगे।’

‘तुम्हारी बैटरी?’ उसने हँसते हुए कहा?

‘मेरा मतलब है मेरे मोबाइल की।’ मैं भी हँसने लगा।

‘मैं तो मजाक कर रही थी। मुझे लगता है कि हम फिर बात करेंगे।’ अचानक उसने फिर जोड़ा, ‘लेकिन फोन रखने से पहले तुमको एक अच्छी बात कहनी होगी।’

एक अच्छी बात? अब इस धरती पर मैं कहने के लिए कहाँ से एक अच्छी बात ढूँढकर लाऊँ। लेकिन एक दिन पहले ही मैंने एक फिल्म देखी थी, भगवान का शुक्रिया अदा करते हुए मैंने उसी की एक लाइन दोहरा दी। ‘बिस्मिल का संदेश है कि कल लाहौर जाने वाली गाड़ी हम काकोरी पे लूटेंगे, और उन पैसों से हथियार खरीदेंगे।’

फिर, मैंने एक लंबी साँस ली और इंतज़ार करने लगा....और वह ठहाका लगाकर हँसने लगी।

मैं तो अभी भी सोचता हूँ कि वह एक अच्छी लाइन थी। लेकिन मुझे पता नहीं कि वह किस बात पर हँसी। खैर, मैं भी उसके साथ हँसने में शामिल हो गया, ताकि उसे यह न लगे कि मैं बेवकूफ हूँ या मुझमें सेंस ऑफ ह्यूमर कम है।

‘ओके। अब मुझे फोन से आखिरी बीप-बीप सुनाई दे रही है। यह अच्छा है। इसका मतलब हुआ कि हम फिर बात करेंगे...’ उसने कहा और कहीं न कहीं उसकी यह बात मेरे दिल को छू गई। उसकी मासूमियत ने और जिस तरह से चहकते हुए उसने मुझसे बात की, उसने मेरे दिमाग पर अमिट छाप छोड़ी।

‘सी यू,’ फोन रखने से पहले मैंने कहा।

उस रात बिस्तर पर लेटे-लेटे मैं बार-बार उस बातचीत को याद करता रहा। और यही सोचता रहा कि अगर मैं थोड़ा और हँसी-मजाक वाला होता तो शायद मैंने उसे अधिक प्रभावित किया होता। या बातचीत एकदम वैसी ही थी जैसी उसे होनी चाहिए थी? और क्या वह भी इस समय अपने कमरे में कहीं बैठी? उस बातचीत के बारे में सोच रही होगी।

पता नहीं क्यों लेकिन मेरा मन उसे बार-बार फोन करने को हो रहा था और अपनी इस इच्छा को रोकना मुश्किल हो रहा था। लेकिन मुझे खुद को रोकना पड़ा क्योंकि मैं बात को बिगाड़ना नहीं चाह रहा था, वह भी शुरुआत में ही एक ऐसा आदमी बनकर जो रात को 11.30 बजे उसे परेशान करे।

‘नहीं’, मैंने खुद से जोर से कहा, बत्ती बुझाई और बिस्तर पर चला गया।

कमरे में अकेले मैं मुस्कुरा रहा था, किसी से बात नहीं कर रहा था और तरह-तरह की भावनाएँ मन में आ-जा रही थीं। मैं सोया तो केवल इसलिए कि किसी तरह वह रात गुज़र जाए और एक नया दिन आये जिससे मैं उसकी खूबसूरत आवाज़ फिर से सुन सकूँ।

अगले दिन मैं उसके फोन का इंतज़ार करता रहा। हालाँकि हमने ऐसा कुछ तय नहीं किया था कि वह मुझे फोन करेगी, लेकिन फिर भी मुझे अंदर से लग रहा था कि वह फोन करेगी। ऑफिस में 10 बजते-बजते मैं बेचैन हो रहा था। मैं उसकी आवाज़ सुनना चाह रहा था लेकिन साथ ही यह भी चाहता था कि वह मुझे फोन करे।

हैप्पी ने लड़कियों के मामले में मुझे सफल होने का फंडा दिया था: उनको यह महसूस मत होने दो कि तुम उनके लिए पागल हो रहे हो; उनको कुछ समय दो और वे तुम्हारे पास आ जाएँगी।

11 बजे मुझे ऐसा लगा कि हैप्पी बेवकूफ़ था और आगे बढ़कर उसे एसएमएस किया ‘गुड मॉर्निंग’, हालाँकि इसके लिहाज़ से कुछ देर हो चुकी थी, लेकिन जब मुझे अपने एसएमएस का कोई जवाब नहीं मिला तो मैं सोचने लगा कि आखिर असल बेवकूफ़ कौन था...

उस दिन मुझे कुछ समझ में थी नहीं आ रहा था कि मुझे अपने दिल की सुननी चाहिए या अपने दिमाग की? दोनों मुझे एक-दूसरे की दिशा में धकेल रहे थे। मेरा दिमाग मेरे अहम से कह रहा था, ‘वह अपने आपको क्या समझती है?’ जबकि मेरा दिल था कि अब भी उसकी आवाज़ सुनना चाहता था। आप इसे मेरी कमजोरी समझ लीजिए या अपने अहम को दबाने की मेरी कोशिश, मैंने वही किया जो दिल मुझसे कह रहा था और मैंने उसका नंबर डायल कर दिया।

‘हे, हाय! कैसे हो?’ खुशी ने फोन उठाते हुए कहा।

‘आपको गुड मॉर्निंग भेजने वाला भी वैसा ही जवाब चाहता है। मैं ठीक हूँ।’

‘मैं ऑफिस जाने के रास्ते में उसका जवाब देने वाली थी।’

‘तुम्हारा मतलब है कि तुम अभी भी घर में ही हो?’

‘हाँ। असल में हम दोपहर की शिफ्ट में काम करते हैं जिससे हम ऑस्ट्रेलिया के अपने क्लाइंट के साथ तालमेल रख सकें। ऐ, मेरी टैक्सी बाहर खड़ी है,’ उसने भागते हुए कहा और अपनी माँ को बाय कहा। मुझे दरवाजा बंद होने की आवाज़ और टैक्सी में उसका अपने साथियों को हाय कहना सुनाई दिया। जब वह अंदर बैठ गई तो हमारी बातचीत फिर शुरू हो गई।

‘तो क्या हाल है?’ मैंने पूछा।

‘आज सुबह अमी दी यहाँ आई थीं,’ उसने कहा। मुझे याद आया कि पिछली बातचीत के दौरान उसने कुछ नाम लिए थे, लेकिन मुझे याद नहीं रह गया था कि उनमें कौन-कौन था।

‘अमी दी...’ मैं फुसफुसाया और उस नाम को याद करने लगा।

‘मेरी तीन बहनें और एक भाई है। मिशा दी सबसे बड़ी हैं और लुधियाना में रहती हैं। उनका एक बहुत प्यारा बच्चा है, दान, जो नर्सरी में पढ़ रहा है। अमी दी दूसरे नंबर की बहन हैं और उनकी भी शादी हो चुकी है। वह नोएडा में रहती हैं जो हमारे घर से एक घंटे की दूरी पर है। वो एक बीपीओ में काम करती हैं। मेरा भाई दीपू, मुझसे दो साल छोटा है और असम में एक एमएनसी में काम करता है। उनका तेल वगैरह का काम है। नीरू सबसे छोटी है, मेरी प्यारी छोटी बहन।’ उसने बिना इस शिकायत या सवाल के कि मैं इतनी जल्दी उनके बारे में कैसे भूल गया अपने भाई-बहनों के बारे में बताया।

उसने बात जारी रखी, ‘और इनके अलावा मम्मी और पापा हमारे साथ हैं। और तुम्हारे परिवार में, तुम्हारे मम्मी और पापा हैं, और तुम्हारा छोटा भाई, टिकू भी सॉफ्टवेयर इंजीनियर है इन्फोसिस में, और उसका ऑफिस भी उसी बिल्डिंग में है, फ़र्क यह है कि उसका पहले माले पर है और तुम्हारा दूसरे माले पर। ठीक?’

यह मेरी याद्दाश्त पर उसका जैसे खामोश थप्पड़ था। उसे मेरे परिवार के बारे में सब कुछ याद था। मैं तो सुनकर केवल यही कह सकता था, हूँ...10 में 10 और हँस पड़ता। लेकिन मैं अकेला हँसा।

‘तो मैं यह कह रही थी कि अमी दी सुबह आई थीं। अपनी नाइट शिफ्ट करने के बाद वह फरीदाबाद आ गई, वह सप्ताह में एक या दो बार आती हैं।’

उसका यह फोन उसके पूरे परिवार को लेकर ही था। मुझे दो और लोगों के बारे में पता चला—मीशा दी के पति, देविंदर जीजू, और अमी दी के पति पुष्कर। पुष्कर और अमी दी एक ही कंपनी में काम करते थे और दोनों को प्यार हो गया, जो खुशी की दीदी को अच्छा नहीं लगा था। उनको जिन मुश्किलों का सामना करना पड़ा वो किसी मुंबइया सिनेमा से अलग नहीं थे। पुष्कर हिंदू थे जबकि अमी दी सिख परिवार की। पुष्कर को शराब और माँस-मछली से परहेज़ नहीं था जबकि खुशी के परिवार में इनकी सख्त मनाही थी। फिर भी, जैसा कि हमने उन फिल्मों में देखा है, अंत में प्यार की ही जीत होती है। और इस मामले में भी वही हुआ। खुशी के परिवार में नई पीढ़ी के लोगों ने अपने पापा को इस बात के लिए मना लिया कि वे शादी के लिए हामी भर दें।

उसी फोन के दौरान खुशी ने यह भी बताया कि वह ऑफिस से रात में 9.30 बजे निकलती है और घर 11 बजे पहुँचती है। जिसका मतलब यह हुआ कि वह काफी देर तक जगी रहती थी और मैं उसे वैसे हालात में देर रात में भी फोन कर सकता हूँ, जैसा कि पिछली रात महसूस हो रहा था।

इस तरह हमने एक-दूसरे से फोन पर बातचीत करनी शुरू कर दी, एक-दूसरे को एसएमएस करते, यहाँ तक कि रात में सोने से पहले एक दूसरे को गुड नाइट भी कहते। लेकिन अपनी शुरुआती बातचीत के दौरान हमने उस विषय को लेकर एकदम बात नहीं की जिसको लेकर हमारी बातचीत शुरू हुई थी-शादी।

लेकिन उसने तब इसकी शुरुआत भी की, जब एक दिन मैंने अपने फोटो का अलबम भेजा। उन्हें मैंने बेल्जियम में अपने दोस्तों के साथ खिंचवाया था।

‘मैंने देखा एक फोटो के नीचे लिखा हुआ था—‘दोस्तों के साथ रेड वाइन पीते हुए,’ उसने कहा।

‘अरे हाँ, वह बेल्जियम की एक मस्ती भरी शाम थी।’

‘तो तुम पीते हो?’

‘अहाँ...लेकिन कभी-कभार, कभी दो-तीन महीने में तो कभी छह महीने में। मैं केवल तभी पीता हूँ जब मैं दोस्तों के साथ होता हूँ और जब वे साथ देने के लिए कहते हैं,’ मैंने सहज ढंग से जवाब दिया।

‘पता नहीं, तुमको यह कैसा लगे लेकिन मैं हमेशा से चाहती थी कि जो मेरा जीवनसाथी हो वह इन सब चीज़ों से दूर रहे।’

और मैंने अपने आपसे पूछा, ‘तो क्या वह यह कह रही है कि वह किसी और को देखने का इरादा कर रही है?’ मुझे कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन एक बात तो पक्का हुआ कि आखिरकार हम शादी के बारे में बात करने लगे।

उसने आगे कहा, ‘देखो, हर आदमी की अपनी पसंद-नापसंद होती है। जब हम शादी की बात करते हैं तो यह एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करना होता है; यह विश्वास का नाता होता है, कुछ समझौते, और भी बहुत कुछ। और अगर तुम मेरे जीवन साथी बनने वाले हो तो मैं तुमसे बड़ी शिद्दत से एक बात कहती हूँ कि शराब को छोड़ दो।’

हम दोनों में से पहले उसने ही कहा कि अगर तुम मेरे जीवन साथी बनने वाले हो। और उसकी आवाज़ में शब्द इतने अलग लग रहे थे, इतने जादुई लग रहे थे।

और ज़ाहिर है, यह उसके शब्दों का ही असर था कि जिसने मेरी चेतना पर असर किया और मैं कह उठा, ‘यह एक भले आदमी का वादा है। अगर तुम मेरी जीवनसंगिनी बनने वाली हो तो मैं तब तक शराब नहीं पीऊँगा जब तक कि तुम इसकी इजाज़त नहीं दो। और यह बात मैं दिल से कह रहा हूँ।’ मैं वही नहीं रुका, बल्कि आगे कहता रहा, ‘मैं इसलिए ऐसा कर सकता हूँ क्योंकि मैं शराब का आदी नहीं हूँ, लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि अगर कोई सौ दिनों में एक बार शराब पीए तो मैं उसको बुरा नहीं मानता, वह भी केवल दोस्तों का साथ देने के लिए। उस पर भी, मैंने कभी इतनी नहीं पी कि मैं अपना सुध-बुध ही खो बैटूँ। फिर भी अगर यह बात मेरे और मेरे जीवन साथी के बीच किसी समस्या का कारण बनती हो तो मैं इसे खुशी-खुशी छोड़ दूँगा।’

‘और वादे रखने के लिए किए जाते हैं...’ उसने कहा, और शायद वह मुस्कुराई भी।

‘बिल्कुल,’ मेरे अंदर का सज्जन अब भी बात कर रहा था। ‘लेकिन जिस दिन मुझे पूरी तरह से जान जाओगी—छह महीने बाद या दस या शायद एक साल बाद, या शायद उससे भी अधिक दिन बाद। फिर तुमको अगर लगे कि मेरे मामले में शराब पीना कोई बुरी बात नहीं है तब तुमको मुझे अपने दोस्तों के साथ शराब पीने की मंजूरी देनी होगी। लेकिन फिर से एक बात कह दूँ कि मैं तुम्हारे ऊपर ऐसा कहने के लिए कोई दबाव नहीं डालूँगा।’

यह हमारी कहानी का एक और मुकाम था और इसके बाद से उसे मुझसे बातें करना और अच्छा लगने लगा। मुझे भी अच्छा लगने लगा क्योंकि यह उसे जो अच्छा लग रहा था। तीन चीज़ों में से दूसरी (धन, औरत और तीसरी चीज़ मैं अब भी याद नहीं कर सकता) चीज़ ऐसी है जो दुनिया में कुछ भी करवा सकती है। वह मुझसे क्या करवा रही है? मैं तब यह नहीं जानता था, अब भी यह नहीं जानता हूँ। मुझे केवल एक चीज़ परेशान कर रही थी, मैं हैप्पी और एमपी से तब क्या कहूँगा जब अपनी अगली मुलाकात में? हम रेड वाइन लेकर साथ बैठेंगे ‘दोस्तों, प्लीज़ मुझे माफ करो क्योंकि

मैं शराब पीनी बंद कर दी है, क्योंकि मैं एक लड़की से वादा किया है, जिससे मैं पिछले एक हफ्ते से केवल फोन पर बात की है। हाँ, केवल एक सप्ताह। हमारे साथ-साथ गुज़ारे गए अनेक बरसों के बरअक्स महज़ एक हफ़ता।’

मैं तब यह नहीं जानता था कि मैं लिए वह वादा अच्छा था या बुरा। लेकिन अच्छी बात यह थी कि हमने आपस में विश्वास और समझ बनाई थी। और यह तो महज़ शुरुआत थी। यह मुश्किल तो था, लेकिन मैं अंदर कुछ था जो उसे और अधिक चाहने लगा था, काफी अधिक...हमेशा के लिए।

नजदीकियाँ

‘क्या तुमने अपने मम्मी-पापा से अभी तक बात नहीं की है? शोना! तुमने मुझसे वादा किया था कि तुम अब तक कर लोगे।’

अगर आपको आश्चर्य हो रहा हो कि यह नया कैरेक्टर शोना कौन है—तो वह मैं हूँ। और जो मुझसे चिल्ला-चिल्लाकर यह सवाल पूछ रही है वह मेरी खुशी है। हाँ, अब वो मेरी हो चुकी है।

हमें प्यार हो गया है। पहली बार तो सुनकर अजीब लगता है न...?

तो, क्या यह तब हुआ जब हम कॉलेज में साथ-साथ पढ़ रहे थे?

बिलकुल नहीं। मैं तो उससे एक हजार मील दूर था।

क्या वह पहली नज़र का प्यार था।

बिलकुल नहीं। क्योंकि हमने तब तक एक-दूसरे को देखा तक नहीं था।

जब इस तरह के सवाल मेरे दोस्त मुझसे पूछेंगे, तब मैं उनको यह जवाब दूँगा (कुछ गंदे किस्म के सवाल भी थे, जिन्हें फिलहाल आप नज़रअंदाज कर सकते हैं)। लेकिन सबका आखिरी सवाल एक ही था।

‘क्या तुम पागल हो गए हो?’

मुझे पता नहीं है..

फिर भी, किसी ऐसे आदमी से प्यार करना जिससे आप मिले भी नहीं हों, अपने आपमें पागलपन ही है और उससे एक दिन शादी करने का फैसला करना उससे भी बड़ा पागलपन। कभी मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मुझे इस तरह से प्यार होने वाला है। ईमानदारी से कहूँ तो मैंने कभी यह भी नहीं सोचा था कि मुझे प्यार भी होने वाला है।

लेकिन अब मैं काफी बदल चुका था और मैं वही आदमी नहीं रह गया था जो मैं कुछ समय पहले तक था।

मुझमें और मेरे आस-पास काफी कुछ बदल चुका था। केवल उसको फोन करने के लिए मैं अपने दोस्तों से बातचीत बीच में छोड़ने लगा था। मैं कम सोने लगा था और अधिक बातें करने लगा था। मेरे महीने के खर्चे में मेरे फोन का बिल सबसे ऊपर आ गया था। उसने घर के किराए को बहुत पीछे छोड़ दिया था। मैं अब प्रेमी जोड़ों को ध्यान से देखने लगा था : वे जिस तरह से बागों में बैठते थे, जिस तरह हाथों में हाथ डालते, जिस तरह से कोई लड़की अपने ब्वायफ्रेंड को मोटरसाइकिल पर बैठकर पकड़ती। मैं इस बात को लेकर परेशान रहने लगा था कि मैं कैसा लगता हूँ। ऑरकुट पर मैंने अपना स्टेटस ‘सिंगल’ से ‘कमिटेड’ में बदल दिया था। इंटरनेट पर मैं उसके नाम का पासवर्ड बनाने लगा था। ऑफिस में बैठा-बैठा बिना किसी बात के मैं मुस्कुराने लगता था।

प्यार फ़िज़ाओं में था।

हमारी कहानी बहुत अलग-सी थी। 21वीं शताब्दी की एक प्रेम कहानी, जिसकी बुनियाद में आधुनिक संसार के गैजेट थे। ग्राहम बेल का शुक्रिया कि उन्होंने टेलीफोन का आविष्कार किया जिसने उससे बात करने में, उसे अच्छी तरह से जानने में मेरी मदद की और आखिरकार उसके प्यार में पड़ने में मदद की। शुक्रिया इंटरनेट का, शादी.कॉम जैसी साइटों का जिन्होंने उसे ढूँढने में मेरी मदद की। इस हाइटेक प्यार के दौरान मैंने पाया कि मैं सच्चा सॉफ्टवेयर इंजीनियर हूँ। इस तरह का प्यार

अच्छा था या बुरा, इसके बारे में सोचने का कोई मतलब नहीं था क्योंकि हम तो उसमें पहले ही पड़ चुके थे।

अब उस बात पर आते हैं जिसके लिए वह मेरे ऊपर चिल्ला रही थी।

क्योंकि मैंने वादा तोड़ा था। नहीं, शराब पीने वाला नहीं। कोई और।

उसका परिवार मुझे तबसे जानता था जब उसने मुझे पहली बार फोन किया था, लेकिन मेरी तरफ से ऐसा नहीं था। मेरे घर के लोग उसके बारे में अब तक नहीं जानते थे। बल्कि वे तो यह भी नहीं जानते थे कि उनके बेटे का प्रोफाइल विवाह संबंधी किसी वेबसाइट पर है। स्वाभाविक है, वह इस बात को लेकर चिंतित थी। वह भी तब जब हमने अपने भाग्य का फैसला कर लिया था।

इस बात को लेकर उसके सवाल रोज बढ़ रहे थे। धीरे-धीरे इसी बात को लेकर वह असहज महसूस करने लगी। इसलिए एक सप्ताह पहले मैंने उससे वादा किया कि मैं अगले वीकेंड अपने घरवालों से इस संबंध में बात करूंगा। लेकिन दुर्भाग्य से मैं कर नहीं पाया, क्योंकि वीकेंड में आइएमएस की परीक्षा थी (आइएमएस। यह हम दोनों के बीच एक और समानता थी। हम दोनों एमबीए की तयारी कर रहे थे, और अपने-अपने शहरों में हमने उसकी तैयारी के लिए एक ही इंस्टीट्यूट के सेंटर्स में नाम लिखवाया था!)।

‘मैं पिछले वीकेंड बुर्ला नहीं जा पाया क्योंकि मुझे आइएमएस में क्लास टेस्ट देना था।’ मैंने उसको शांत करने की कोशिश की।

‘लेकिन तुमने मुझसे वादा किया था शोना...!’ वह चिल्लाने वाली लड़की अब इमोशनल हो रही थी। उसने उस नाम से मुझे मार डाला। वह मुझे अलग-अलग नामों से बुलाती थी और उनमें सबसे अच्छा नाम था शोना। और वह जिस तरह से कहती थी वह मुझे बहुत पसंद था। इतने प्यार और गर्मजोशी से।

‘इस वीकेंड पक्का, इससे ज़रूरी कोई काम नहीं है मेरे पास,’ मैंने उससे कहा।

और मेरी शोनिमोनी फिर से खुश हो गई। शोनिमोनी। मैंने उसे यह नाम दिया था, प्यारी और मीठी के लिए पंजाबी शब्द; शोना का स्त्रीलिंग।

अगला वीकेंड आ गया और मैं परेशान था। मुझे अपने घरवालों से जाकर अपनी शादी की बात करनी थी। यह सुन कर वे खुश हो जाते।

मैंने चालाकी से अपने छोटे भाई टिंकू को बुर्ला जाने से पहले वाली रात विश्वास में लिया। वह इस बात को पहले से जानता था कि मेरे और किसी लड़की के बीच कुछ चल रहा था। देर रात को जो मैं फोन करता था उससे यह बात उसके लिए साफ़ हो गई थी। लेकिन उसने इस बात की कभी कल्पना नहीं की थी कि इस सबकी शुरुआत शादी-ब्याह की एक वेबसाइट से हुई होगी। उसका बड़ा भाई होने के नाते मैंने उसके सामने इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं छोड़ा कि जब मैं मम्मी-पापा से इसके बारे में बात करूँ तो वह मेरी तरफ़दारी करे।

जबसे हम बुर्ला के अपने घर आए थे, मैं अजीब-अजीब तरह की हरकतें कर रहा था। इधर से उधर घूमता हुआ कोशिश कर रहा था कि किस तरह से उस विषय को उठाऊँ। सही समय का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि सही समय कौन-सा हो।

मैं बहुत अधिक सोच रहा था। उससे कहीं अधिक जितना मेरा दिमाग़ सोचा करता था। क्या मुझे अभी कह देना चाहिए? या 15 मिनट और ठहर जाऊँ? लेकिन 150 मिनट बीतने के बाद भी मैं इंतज़ार ही कर रहा था।

जैसे ही मैं कुछ कहने को होता कि कुछ हो जाता: फोन की घंटी बज जाती, कोई दरवाज़ा खटखटाने लगता। और अगर नहीं कुछ तो प्रेशर कुकर की सीटी मम्मी को वापस किचन में बुला लेती। लेकिन जिस समय इस तरह की कोई बात नहीं हुई, उस समय भी मैं अपना मुँह नहीं खोल सका।

‘इस बार मैंने बात नहीं की तो वह रो देगी।’ मैंने अपने आपसे कहा।

दिन के खाने के बाद मैंने इस संदिग्ध बातचीत की शुरुआत करने की हिम्मत किसी तरह जुटाई। वैसे तो मुझे लगा कि यह बात काफी अजीब है कि मैं अपने मम्मी-पापा से पूछूँ कि वे किस तरह मिले और कैसे उनकी शादी हुई, लेकिन मुझे इस विषय पर चर्चा शुरू करने का इससे कोई बेहतर तरीका नहीं सूझा।

‘मम्मा, एक बात बताइए। आप दोनों किस तरह एक-दूसरे से मिले और कैसे आप लोगों की शादी हुई?’ मैंने पूछा।

मम्मी-पापा ने एक-दूसरे की ओर देखा, फिर मेरी ओर देखा और मुस्कुराने लगे। माँ-बाप स्मार्ट होते हैं और हम यह नहीं जानते कि वे इस बात को जानते हैं कि हमारे दिमाग में क्या चल रहा है। उन्होंने शायद बहुत आसानी से यह पढ़ लिया कि मेरे माथे पर क्या लिखा हुआ चमक रहा था।

फिर भी उन्होंने पूरी कहानी सुनाई और जैसे ही कहानी खत्म हुई मम्मा ने पूछा, ‘तो तुम्हारी शुरुआत किस तरह हुई?’

मुझे लगा मानो मुझे अपना चेहरा कुशन में छिपा लेना चाहिए, या कहना चाहिए, ‘मेरी कहानी...? मेरी कोई कहानी है ही नहीं।’ लेकिन उससे पहले मेरे दिमाग ने मुझसे गुस्से में कहा, ‘अब बोलो भी, बेवकूफ कहीं के!’

और सौभाग्य से मैंने अपनी दबी-छिपी हिम्मत जुटाई और अपनी अब तक की कहानी उनको सुनाई। मैंने उनको उसका फोटो भी दिखाया। मैं सोच रहा था कि मेरे मम्मी-पापा तरह-तरह के सवाल करेंगे, लेकिन मुझे आश्चर्य यह हुआ कि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। बल्कि टिकू ने मुझसे उन लोगों से ज़्यादा सवाल पूछे।

मम्मी खुश थीं कि आखिरकार उनका बेटा शादी के बारे में सोच तो रहा है। डैडी इसलिए खुश थे कि वे अपने बेटे की पसंद की लड़की ढूँढने की जद्दोजहद से बच गए। वे राहत महसूस कर रहे थे लेकिन ऊपर से चालाकी दिखाने की कोशिश कर रहे थे। मैं खुश था क्योंकि मैंने आखिरकार सबके सामने अपने दिल की बात कह डाली थी। और टिकू सबकी प्रतिक्रियाओं को ध्यान से देख रहा था। वह जल्दी से प्रभावित नहीं होता, उसकी इस बात को मैं पसंद भी करता हूँ और नापसंद भी।

मम्मी-पापा ने दो-एक सवाल पूछे, जिनका जवाब मैंने पूरे आत्मविश्वास से दिया, और बस हो गया। मैंने कभी नहीं सोचा था कि इतनी मुश्किल बाधा इतनी जल्दी पार हो जाएगी। लेकिन जब इतवार की रात हम भुवनेश्वर के लिए निकल रहे थे तो बस स्टॉप पर डैड ने कहा, ‘हम लोग इसके बारे में सोचेंगे लेकिन अच्छी बात यह है कि तुम शादी को लेकर गंभीर हो रहे हो।’

‘कोई बात नहीं। मैं आपकी बात समझता हूँ,’ मैंने उनसे कहा। हालाँकि मन ही मन मैं यह सोच रहा था, ‘परवाह कौन करता है डैड!’

सोमवार की सुबह मैं भुवनेश्वर के अपने घर पहुँचा। बिस्तर पर पसरते हुए मैंने खुशी को फोन किया।

‘मिशन पूरा हो गया।’ मैंने उसे जगाते हुए कहा। उन दो शब्दों से वह सब कुछ समझ गई। और बदले में मुझे क्या मिला? खूब सारे चुंबन। बाद वाले तो भरपूर थे। वह पहला दिन था जब उसने फोन पर मेरा चुंबन लिया।

‘अरे! इतनी जोर से? आस-पास कोई है नहीं, हाँ?’ मैंने पूछा।

उसने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया पर कहा, 'मेरा मन हो रहा है कि अभी तुमको मैं अपने बिस्तर पर खींच कर ले आऊँ और पागलों की तरह किस करूँ।'

वाह! वह कितना खुश और अच्छा महसूस कर रही थी यह जानकर कि मैंने उसके बारे में अपने परिवारवालों को बता दिया।

हमारी प्रेम कहानी का एक और पड़ाव पार हो गया था। दोनों परिवार हमारी कहानी के बारे में अब जानने लगे थे। और हमेशा की तरह मैं इसलिए खुश महसूस कर रहा था क्योंकि मेरी शोनिमोनी खुश थी। लेकिन जैसा कि कहा गया है कि प्रेम में सभी भावनाओं का मेल होता है।

जल्दी ही एक शाम आई जब मैंने उसे रुला दिया। और फिर मैं भी रोया क्योंकि वह जो रो रही थी।

वह एक और वीकेंड था और मैं बुर्ला में था। बाहर बरामदे में बैठा पढ़ रहा था। मैं अपने आपसे बहुत चिढ़ा हुआ था क्योंकि मैंने अपने आप जो परीक्षा ली थी उसमें मैंने बहुत बुरा किया था।

मैं अगले पैसेज की ओर बढ़ने ही वाला था कि उसका फोन आया।

'हाय!' मैंने बुझी हुई आवाज़ में कहा।

'मेरा बेबी क्या कर रहा है?' उसने पूछा। मुझे यह बहुत अच्छा लगता था जब वह इस तरह से बात करती थी। जब वह मुझे अपनी प्यारी आवाज़ में बेबी बुलाती थी। उसमें इतना अपनापन लगता था, मानो उसने मेरी देखभाल की सारी ज़िम्मेदारी ले ली हो।

'आरसी तुम्हारे बेबी की जान ले रहा है और मेरा मूड बहुत खराब है।'

'फिर कुछ देर मुझसे बातें कर लो तुम्हारा मूड ठीक हो जाएगा।'

'नहीं डियर। मैं एक नया पैसेज शुरू करने वाला हूँ और इस बार अच्छा स्कोर कहना चाहता हूँ। मेरा मूड उसी से बदलेगा। क्या हम रात में बात कर सकते हैं...प्लीज?'

'हूँ...ओके। बाद में बात करते हैं। लेकिन फोन रखने से पहले एक अच्छी बात तो कह दो।'

खुशी की अनेक खासियतें थीं, छोटी-छोटी बातें जो उसके लिए मायने रखती थीं। जैसे यह कि फोन रखने से पहले एक अच्छी बात सुनना। मुझे ज़्यादातर समय तो अच्छा लगता था, जब तक मैं बहुत थका नहीं होता।

'खुशी! प्लीज़ इस बात को समझो। मेरा दिमाग़ काम नहीं कर रहा है। मैं इस इस समय कुछ अच्छा नहीं सोच सकता। मैं आज रात में तुमसे दो अच्छी बातें करूँगा। ठीक?'

'ओके। तुम अपना ध्यान रखना।'

'बाय।'

'बाय नहीं, सी यू।' उसने मुझे फिर से सही किया।

'अरे हाँ, सी यू,' और मैंने फोन रख दिया, अभी भी मेरा मूड खराब था।

मुश्किल से 15 मिनट हुए होंगे कि मेरा सेल फोन फिर से बजने लगा। वही थी।

'अब क्या?' मेरी आवाज़ कुछ तेज़ हो गई।

'तुम्हें पता है मैंने तुम्हें पहले क्यों फोन किया था?'

'ओहो...क्यों?' मैं चिढ़ गया था।

'क्योंकि यहाँ बारिश हो रही है। और मेरा मन हो रहा है कि तुम्हारा हाथ पकड़कर बारिश में डांस करूँ।'

'खुशी!' मेरी आवाज़ तेज़ हो गई।

'ओके बाबा सॉरी। बाद में बात करते हैं।' उसने बड़ी मासूमियत से कहा।

वह फोन रखने ही वाली थी कि मुझे लगा कि मैंने उसके साथ कितना बुरा व्यवहार किया और मैंने कहा, 'अरे सुनो। हम कुछ देर बात कर सकते हैं। मैं इस आरसी से थोड़ी देर ब्रेक लेना चाहता हूँ।'

और वह फिर से खुश हो गई।

कुछ ही देर में हमारी बातचीत बारिश से हटकर हमारे वादों की ओर चल पड़ी। वे बातें जो हम स्वीकार करना चाहते थे और वे बातें जो हम एक-दूसरे के लिए छोड़ देना चाहते थे। शराब तब तक नहीं जब तक कि वह उसको लेकर सहज न हो जाए, खुद को शाकाहारी माहौल के लिए तैयार करना तथा इसी तरह की कुछ और बातें मेरे मन में थीं। मुझसे और मेरे परिवार से पंजाबी में बात करना सबसे महत्वपूर्ण बात थी जो मैंने उसके सामने रखी (उसका परिवार हिंदी में बात करता है और वह उसी माहौल में बड़ी हुई है, जबकि मेरे कान उस भाषा को बुरी तरह सुनना चाहते थे जिसके माहौल में मैं पला-बढ़ा था)। हालाँकि हमने एक-दूसरे पर कुछ भी थोपा नहीं था। आखिर हमें जीवन भर साथ जो रहना था।

उस शाम मैंने उससे शरारतन पूछा, 'तुमको पंजाबी में बात करना बुरा तो नहीं लगेगा? तुमने अभी तक कभी मेरी यह इच्छा पूरी नहीं की है। या तुम शादी के बाद ऐसा करने वाली हो?'

'और अगर मैं कहूँ कि मैं शादी के बाद भी नहीं करूँगी तो तुम क्या करोगे?' उसने मुझे छेड़ा और हँसने लगी। मैंने कल्पना की कि वह अपने बिस्तर से कूदकर खिड़की तक गई होगी और वहाँ उसने बारिश की कुछ बूँदों को छुआ होगा।

'फिर मैं तुमको फरीदाबाद तुम्हारे घर ले जाऊँगा और वहीं छोड़ दूँगा।'

उसने सिर्फ इतना कहा 'शोना...?' मैं उसकी खिड़की से बाहर बारिश की आवाज़ सुन सकता था। मुझे महसूस हुआ कि मैं यह क्या कह गया। मेरा यह मज़ाकिया अंदाज़ बुरी तरह से फेल हो गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि अब मैं क्या कहूँ। इससे पहले कि मैं कुछ कहता, उसने कहा, 'शोना, तुम अपना पैसेज बनाओ। बाद में बात करते हैं।' और उसने चुपचाप फोन रख दिया—यह कुछ ऐसा था जो इससे पहले कभी नहीं किया था।

मुझे बहुत बुरा लगा। याद आया कि उसकी छेड़छाड़ पर मैंने किस तरह जवाब दिया था। न तो मैं उसे फोन करके यह कह सकता था कि मेरे कहने का मतलब वह नहीं था जो उसने समझा, न ही मैं आरसी के अगले पैसेज पर ध्यान लगा पा रहा था। अगले पैसेज के मैंने जो जवाब बनाए वे सब ग़लत निकले। उस शाम करीब 7 बजे मैंने अपनी बाइक निकाली और पास के एटीएम तक कुछ पैसे निकालने गया, ताकि भुवनेश्वर वापसी का टिकट ख़रीद सकूँ। बूँदाबांदी होने लगी—मौसम की पहली बारिश। अब मैं समझ सकता था कि उसे उस समय कैसा लग रहा होगा जब उसने मुझे पहले फोन किया था। मैं एटीएम के सामने की लाइन से निकल आया और मैंने उसका नंबर मिलाया।

'हेलो?' उसने कहा। उसकी आवाज़ काँप रही थी।

'खुशी,' मैंने कहा।

'हाँ, शोना,' उसने तुरंत जवाब दिया। फिर मुझे सिसकने की आवाज़ सुनाई दी, जो किसी के लिए भी यह समझने के लिए काफी थी कि वह रो रही थी।

मैंने एक पल के लिए कुछ भी नहीं कहा, जिस बीच उसके आँसू बहते रहे। 'हे डियर! प्लीज़...मत रोओ। मुझे माफ़ कर दो कि मैंने तुमसे इतनी बुरी बात की।'

वह जोर-जोर से सिसकने लगी और मैं उस लड़की के लिए शर्मिंदा महसूस करने लगा जो मेरा हाथ थामकर बारिश में डांस करना चाहती थी। मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मुझसे बहुत बड़ा पाप हो गया हो—कि मैंने धरती की सबसे प्यारी लड़की को रुला दिया, उस लड़की को जो बस मेरे ही लिए बनी है।

मैं ऐसा कैसे कर पाया? मैंने सामने की दीवार पर जोर से मारा। लाइन में खड़े लोग मुझे देखने लगे। मैं उस सड़क की ओर चल पड़ा जहाँ रोशनी नहीं थी।

‘मुझे माफ़ कर दो खुशी। सॉरी। मेरी बेवकूफी के कारण तुम रोओ मत।’
खामोशी।

‘मुझसे बात करो डियर। कुछ तो कहो। मुझे जो चाहे सज़ा दो, लेकिन भगवान के लिए मुझसे बात करो,’ कहकर मैं भी रोने लगा।

कुछ देर बाद वह किसी तरह कह पाई, ‘शोना, तुम अभी तो मुझे अपने घर भी नहीं ले गए और तुम मुझे वापस भेजने की बात कर रहे हो।’

उसके इस मासूम सवाल ने मुझे ख़ामोश कर दिया। वह रो रही थी, मैं रो रहा था और हमारे साथ आसमान भी रो रहा था। तेज़ बारिश होने लगी।

‘तुम्हें तो कहने में बस एक सेकेंड लगा। लेकिन मैं तो एक लड़की हूँ। मैं अपने मम्मी-पापा, अपने भाई-बहनों को छोड़ रही हूँ, जिनके साथ मैंने अब तक का अपना जीवन जिया है, अपने घर को, जिसकी बहुत सारी यादें हैं, सिर्फ़ तुम्हारी होने के लिए। और तुमने कहा कि तुम मुझे छोड़ दोगे।’

‘मैं पागल हूँ, गंदा हूँ,’ सड़क के किनारे एक पेड़ पर हाथ मारते हुए, बारिश में जोर-जोर से रोता हुआ। मैं चिल्लाया, मुझे इसकी भी परवाह नहीं थी कि कोई मुझे देख लेगा। तेज़ आवाज़ के साथ बारिश हो रही थी। और मैं पोल को जोर-जोर से मार रहा था और रो रहा था। मुझे ज़रूर कुछ हो गया है, मैं इस तरह से तो कभी नहीं रोया।

और शायद यह लड़कियों का स्वाभाव होता है कि वे औरों को रोने से रोकती हैं। तो उसने वह किया जो मुझे उसके लिए करना चाहिए था। उसने पहले मेरे आँसू पोंछे।

‘शोना! शोना!...मुझे तुम्हारे रोने की आवाज़ सुनाई दे रही है। प्लीज़ मत रोओ...प्लीज़...देखो मैं तुमसे बात कर रही हूँ। और चाहे कुछ भी हो मैं तुम्हारी हूँ, सिर्फ़ तुम्हारी और मैं अब भी तुम्हारे साथ हूँ। अगर तुम मुझे खुश देखना चाहते हो तो प्लीज़ मत रोओ डियर।’ टूटा हुआ दिल उसको दिलासा दे रहा था जिसने उसे तोड़ा था। कुछ देर बाद उसने मुझे हँसाया भी।

फिर मैंने कहा, ‘मुझे माफ़ कर दो और मैं शर्मिंदा हूँ कि मैंने तुम्हारा दिल दुखाया।’

‘शोना जानते हो, तुम्हारी तरह मैं भी अपने परिवार के साथ हमेशा रहना चाहती हूँ। लेकिन जिस तरह का हमारा समाज है, संस्कृति है, मुझे उन सबको छोड़ना पड़ेगा। और मैं ऐसा करूँगी क्योंकि मैं तुमसे प्यार करती हूँ और वह आदमी जिसे मैं सबसे अधिक पाना चाहती हूँ, जो मेरा ध्यान रखे, वह तुम हो।’

‘मैं जानता हूँ डियर। मैं यह बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। मुझे पता नहीं कैसे मैं ऐसी बात कह गया। मैंने दिल से ऐसा महसूस नहीं किया था। तुम्हें पूरा हक़ है मुझे सज़ा देने का।’

‘सज़ा?’ उसने प्यारी आवाज़ में पूछा।

‘हाँ। वह कुछ भी हो सकता है,’ मैंने कहा।

‘तुम कहाँ हो?’ उसने पूछा और मुझे महसूस हुआ कि उसकी आवाज़ बेहतर हो रही है।

‘मैं एटीएम से पैसे निकलने आया था। यह घर से दो ब्लाक आगे है।’

‘क्या एटीएम पर और लोग हैं?’

‘हाँ, यहाँ लंबी लाइन लगी है।’

‘तुम लाइन में लग जाओ।’

‘क्यों?’

‘तुम जाओ वहाँ। ‘यह तुम्हारी सज़ा का हिस्सा है।’

‘ठीक है,’ मैंने कहा और वापस चला गया, ‘हाँ, मैं वहाँ आ गया।’

‘ओके। अब मुझे पाँच किस दो।’

‘क्या?’

‘शोना!’ उसने थोड़ी सख्ती से कहा, मुझे याद दिलाने के लिए कि मैं इनकार नहीं कर सकता।

मैंने उसे रुलाया था और अब मुझे उसकी चाहत पूरी करनी थी। मैंने आसपास के लोगों पर से अपना ध्यान हटाया और फोन पर उसे पाँच ज़ोरदार किस दिए। मैं लाइन में दूसरा आदमी था और मैंने अपना सिर झुका लिया ताकि मैं उन चौंकी हुई निगाहों से बच सकूँ जो मुझे घूर रही थीं।

यह शर्मा देने वाली बात थी लेकिन वह हँसने लगी। और अपनी शर्म के बावजूद मैं खुश था कि मैंने उसे फिर से हँसा दिया।

साथ ही, मैं एक लड़की की हालत को समझ सकता था। उसे अपने सपनों के आदमी के लिए जिस तरह की कुर्बानियाँ देनी पड़ती हैं। उस आदमी और उसके परिवार को अपनाने के लिए वह अपने जीवन में हासिल सारी चीज़ों को छोड़ देती है। मैंने अपने आपसे पूछा कि अगर मुझे अपने परिवार को उसके लिए छोड़ना पड़ा होता तो कैसा महसूस होता। क्या मैं अपने परिवार को छोड़ने के बारे में सोच भी सकता हूँ। लड़कियाँ किस तरह ऐसा कर पाती हैं? और सबसे बढ़कर, केवल उनको ही ऐसा क्यों करना पड़ता है? मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था। समय के साथ खुशी ने मुझे इस तरह के कई पाठ पढ़ाए। धीरे-धीरे वह मुझे और मेरी सोच को बदल रही थी।

उस शाम मैंने पैसे नहीं निकाले क्योंकि अगले ही पल मैंने देखा कि मुझसे ठीक आगे मेरा एक पड़ोसी लाइन में खड़ा था। उसके चेहरे से साफ़ था कि उसने मुझे फोन पर किस करते हुए पकड़ लिया था।

आधी रात है, अगस्त का आखिरी शनिवार। मैं फिल्म देखकर घर लौटा हूँ। दोपहर में खुशी और मेरी लड़ाई हुई थी। इसकी वजह से हमारी बात बंद थी और मैं यह सहन नहीं कर सकता था कि मेरी उससे बात नहीं हो रही है। इसलिए मैं यह सोचकर सिनेमा देखने चला गया कि इससे मुझे अच्छा लगेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

जब और सहन नहीं कर पाया तो मैंने उसे आधी रात में फोन किया।

उसने हँसते हुए फोन उठाया, तब मुझे समझ में आया कि मैंने जो कड़ी बातें कही थीं उनके ऊपर कायम नहीं रह पाया—मैंने कहा था कि मैं अपनी तरफ से उससे बात शुरू नहीं करूँगा। कुछ ही देर में मैं भी उसके साथ हँसने लगा। हम अब नहीं लड़ रहे थे। कुछ देर बाद उसने कुछ ऐसा कहा जो मेरे दिल को छू गया।

‘शोना, शोना बाद के जीवन के लिए एक नियम बना लेते हैं, अगर हम घर पर साथ हुए तो हम एक ही प्लेट में खाना खाएँगे, चाहे कुछ भी हो जाए। चाहे उस दिन हमारी कितनी ही भयानक लड़ाई हुई हो। हो सकता है हम एक-दूसरे से बातचीत नहीं करें। लेकिन साथ बैठकर...अपने हिस्से की रोटी का टुकड़ा तोड़ते हुए जब हमारे हाथ एक-दूसरे को महसूस करेंगे...तो इससे हमारा गुस्सा शांत हो जाएगा। है न?’

वह अक्तूबर की शुरुआत थी—हमें एक-दूसरे को जानते हुए करीब तीन महीने हो चुके थे। इस बीच मैं उसके पूरे परिवार से बात कर चुका था और वह मेरे पूरे परिवार से।

असल में, वह मेरी माँ की अच्छी दोस्त बन चुकी थी। माँ हमेशा चाहती थीं कि उनकी एक बेटी हो। धीरे-धीरे वह खुशी के साथ अपना सुख-दुख बाँटने लगीं। वह उससे मेरे बचपन, मेरे स्वभाव, मेरी पसंद-नापसंद को लेकर, इन बातों को लेकर जिनसे मुझे गुस्सा आता था, उससे बातें करती थीं। वह

इस परिवार में अपने जीवन के बारे में भी बातें करती थीं, उस परिवार में जिसमें पुरुषों की संख्या महिलाओं से तीन गुना थी और जहाँ दुर्भाग्य से बहुमत का राज चलता था।

मेरी माँ के बारे में कुछ बातें ऐसी थीं जो मैं पहले नहीं जानता था, लेकिन खुशी ने मुझे वे बातें बताईं। किसी भी बेटे की तरह मैं भी अपनी माँ को प्यार करता हूँ, लेकिन मुश्किल यह है कि हमें पता ही नहीं चला कि हम कब इस पुरुष आधारित समाज का हिस्सा हो गए। खुशी मुझे औरतों के स्वाभाव के बारे में, उनकी उम्मीदों के बारे में समझाती थी। वह मुझे बताती कि जब मैं वीकेंड में घर जाऊँ तो मुझे उनके लिए क्या करना चाहिए। वह मुझे टिप्स दिया करती थीं। कभी-कभी अगर मैं उनको भूल जाता था तो वह मुझ पर चिल्लाने भी लगती थी। तब मुझे खुश होने की एक और वजह मिल जाती थी, कि खुशी रिश्तों की अहमियत को समझती थी, वह परिवार और उसका ध्यान रखने के महत्व को समझती थी।

मैंने उसे एक और ज़िम्मेदारी यह दे रखी थी कि वह मुझे 10 बजे के बाद न तो फोन करे और अगर मैं उसके बाद फोन करूँगा तो वह मुझसे बात नहीं करे। कारण यह था कि कैट की परीक्षा पास आ गई थी और मैं तीन-चार घंटे रोज उसकी तैयारी में लगाना चाहता था।

तो हमने बेमन से ही सही लेकिन यह शपथ ली।

‘जब तक कैट की परीक्षा नहीं हो जाती तब तक हम 10 बजे रात के बाद एक-दूसरे से बात नहीं करेंगे।’ मैंने कहा।

‘और यह नियम केवल सोमवार से शुक्रवार तक के लिए ही होगा।’ उसने अपनी बात जोड़ी। ‘वीकेंड में हमारे पास तैयारी के लिए पर्याप्त समय होता इसलिए हमें एक-दूसरे से बात नहीं करके अपने जीवन को मुश्किल बनाने की कोई ज़रूरत नहीं थी।

‘ठीक है बाबा, अब मेरे साथ दोहराओ,’ मैंने कहा।

‘भगवान के नाम पर मैं रविन...’ मैं रुका ताकि वह उसे दोहराए।

‘भगवान के नाम पर मेरा शोना और मैं, खुशी...’ और मुझे इतना अच्छा लगा कि उसने अपने बयान में ‘मेरा शोना’ कहा। ऐसी छोटी-छोटी बातों के लिए अंदर से मेरा मन हो रहा था कि उसे एक बार और किस कर लूँ।

ऊपर से मैं अपनी शपथ के साथ चालू रहा।

‘शपथ लेते हैं कि...।’

‘शपथ लेते हैं कि’

‘हम लोग सप्ताह के दिनों में 10 बजे के बाद एक-दूसरे को तब तक फोन नहीं करेंगे जब तक कोई इमरजेंसी न हो।’

‘हम लोग सप्ताह के दिनों में 10 बजे के बाद एक-दूसरे को तब तक फोन नहीं करेंगे जब तक कोई इमरजेंसी न हो...और कोई इमरजेंसी न हो और मुझे अगर नींद नहीं आ रही हो तो मैं केवल पाँच मिनट के लिए फोन करूँगी,’ उसने अपनी तरफ से जोड़ा।

‘यह क्या है...?’ मैंने पूछा और हँसने लगा। मैं उसके लिए अपने प्यार को रोक नहीं पाया और मैंने उसे किस कर लिया। एक के बाद एक वे किस मोबाइल टावर और सैटेलाइटों को पार करते हुए उस तक पहुँच गए।

खुशी ने मुझे जीवन के हर पल का आनंद दिया: अच्छा, बुरा और चुनौतियों से भरा। उसने सबको शानदार बना दिया।

पहले हफ्ते तो अपनी शपथ पर टिके रहना मुश्किल लग रहा था, लेकिन हमने किसी तरह उसको निभा ही लिया। सच्चाई यह है कि इस शपथ के बाद एक-दूसरे से बात करने की इच्छा, खासकर 10

बजे के बाद और भी बढ़ गई—यह इनसान का स्वाभाव होता कि जिस चीज़ के लिए उसे मना किया जाता है उसकी इच्छा और बढ़ जाती है। और सुबह के समय बात करते हुए हमें इसका अहसास हुआ कि बात करने के लिए रात कितना अच्छा का समय होता है।

‘रात को बात करना कितना रोमांटिक होता है न?’ उसने एक सुबह अपनी प्यारी, मीठी आवाज़ में पूछा।

‘मैं उस बातचीत को इतना मिस करता हूँ। इस फैसले के बाद लगने लगा है कि मैंने जैसे अपने पैर पर ग़लती से कुल्हाड़ी मार ली हो,’ मैंने कहा।

‘नहीं डियर, ऐसा नहीं है कि तुमने अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार ली है,’ उसने बड़ी विनम्रता से कहना शुरू किया, फिर अचानक चिल्लाई, ‘बल्कि तुम जान-बूझकर उसकी तेज धार पर नंगे पैर कूद गए हो। अब अपने घाव के मज़े लो।’ वह गुस्से में थी। लेकिन कुछ भी नहीं किया जा सकता था। वादे पूरे करने के लिए किए जाते हैं, और हम दोनों ही जानते थे कि हमें इसे निभाना पड़ेगा।

जल्दी ही वीकेंड की रात आई और हम एक-दूसरे से बात करने को बेताब थे।

रात! रात का समय बात करने के लिए बहुत सुहाना होता है, खासकर प्रेमियों के लिए। मम्मी-पापा तब तक सो चुके होते हैं। भाई-बहन समझते हैं कि आपको डिस्टर्ब नहीं करना चाहिए। और आप? अपने बेडरूम में अकेले शॉर्ट, टी-शर्ट पहनकर बिस्तर पर मद्धिम रोशनी में सेल फोन थामे लेटे होते हैं। जिसका मतलब होता है कि आप पूरी तरह से उस आदमी के साथ हैं जिसके साथ आप बातें कर रहे हैं।

‘हाय शोना,’ उसने कहा।

उस रात उसके हाय कहने का अंदाज़ कुछ अलग लगा। वह कुछ अधिक प्यार भरा था, जिसे मैं उससे पहले शायद ही महसूस कर पाया था।

‘हाय हनी!’ मैंने बहुत इत्मीनान से कहा और हमारी बात चल पड़ी। मुझे याद है कि हमें बहुत दिनों के बाद रात को बात करना कितना अच्छा लग रहा था, जबकि अभी एक सप्ताह ही गुज़र था। कुछ देर बाद वह अपनी किसी दोस्त की मंगनी के बारे में बताने लगी और कुछ ही देर में वह यह बात करने लगी कि हमारी सगाई किस तरह होगी।

‘सगाई हमारे घर पर होगी और मैं उस शाम साड़ी पहनूँगी। पता है क्यों? क्योंकि साड़ी में मैं बहुत अच्छी लगती हूँ।’ उसने मेरे पूछने से पहले ही अपने सवाल का जवाब दे दिया।

‘अहा...चलो फिर मैं अपनी शोनिमोनि को उस शाम साड़ी में देखना चाहता हूँ।’

‘वह मेरी जिंदगी की सबसे अच्छी शाम होगी। मैं अपने होने वाले पति की बगल में खड़ी होऊँगी, बहुत सारे लोगों के बीच में। मैं सबके सामने तुम्हें छूँ सकती हूँ, तुम्हारा हाथ थाम सकती हूँ और कोई कुछ भी नहीं कहेगा।’ उसने कहा।

‘मैं उस शाम के इंतज़ार में मरा जा रहा हूँ। फिर मैं तुम्हारा हाथ पकड़ूँगा और हम संगीत पर डाँस करेंगे, सबके सामने। मैं चाहता हूँ कि मेरे दोस्त मुझसे जलें क्योंकि तुम मेरी हो,’ मैंने उस दिन के जल्दी आने के सपने के साथ कहा।

‘और सबके सामने हमारी आँखें एक-दूसरे से बातें कर रही होंगी। वे अनकहे शब्द जो उन लोगों को साफ़ सुनाई दे रहे होंगे। जब तुम मेरी आँखों में देखोगे तुम समझ जाओगे कि उसी समय, तुम्हें देखते हुए मैं क्या महसूस कर रही हूँ।’

‘जब लोग खाने में लगे होंगे मेरी आँखें तुमसे कहेंगी कि ऊपर चलो, टेरेस पर। और मैं सीढ़ियों की तरफ बढ़ जाऊँगी।’

‘और मेरी आँखें तुमसे आने के लिए कहेंगी, और पहला मौका आते ही मैं भाग जाऊँगी, यह कहते हुए कि मुझे बाथरूम जाना है,’ उसने लड़कियों-से शरारती अंदाज़ में कहा।

‘मैं टेरेस पर होऊँगी, दरवाज़े के ठीक पीछे जहाँ टेरेस की सीढ़ियाँ खत्म होती हैं।’

‘तुम्हें मेरे पायलों और चूड़ियों की आवाज़ सुनाई देगी जब मैं सीढ़ियों से अँधेरे टेरेस पर आऊँगी,’ उसने धीरे से कहा।

‘लेकिन तुम्हें पता नहीं चलेगा कि मैं दरवाज़े के ठीक पीछे खड़ा हूँ,’ मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

‘मैं दरवाज़े को धकेलते हुए सीधा आगे बढ़ जाऊँगी,’ उसने भी फुसफुसाना शुरू कर दिया।

‘तुम जैसे ही दो कदम आगे बढ़ोगी मैं तुमको पीछे से पकड़ लूँगा।’

पता नहीं हम लोगों को क्या हो रहा था। क्या यह इसका फल था कि हम लोग सप्ताह के दिनों में रात में बात नहीं कर रहे थे या इसका कोई और कारण था?

बाहर बारिश होने लगी थी जो माहौल में और भी उत्तेजना घोल रही थी। मैं धरती पर गिरती बारिश की बूंदों की आवाज़ को सुन पा रहा था, और ठंडी हवा खिड़की को खोलकर उस रात मेरे कमरे में आ रही थी।

‘शोना!’, उसने प्यार से मेरा नाम पुकारा।

‘और तुमको पीछे से पकड़ कर मैं तुमको बाँहों में भर लूँगा।’ मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। और शायद उसने भी वैसा ही किया हो जब उसने फिर से गहरी साँस लेते हुए धीरे से प्यार भरी आवाज़ में कहा ‘शोना!’।

‘और अपने हाथों से तुम्हारे लंबे बालों को मैं तुम्हारे बाएँ कंधे की तरफ ले आऊँगा और अपने चेहरे को तुम्हारे गर्दन की दायाँ तरफ बहुत पास ले जाऊँगा, जबकि मेरा दूसरा हाथ तुम्हारी खुली कमर से खेल रहा होगा...।’

मैंने अपनी भावनाओं को काबू करने की कोशिश की क्योंकि मैं अपनी दिलरुबा को ज्यादा डराना नहीं चाहता था, वह भी इतनी जल्दी। उसने कुछ देर तक कुछ नहीं कहा, लेकिन हमारी साँसें तेज़ होती जा रही थीं, वह भी इतनी ज़ल्दी। मेरा अपना दिल भी खुशी से उछल रहा था।

‘और फिर?’ उसने आखिरकार पूछा। मैं उसके दिमाग को समझ गया, उसके मन में चलने वाले उतार-चढ़ावों को भी। लेकिन सबसे बढ़कर, वह मेरे साथ उस पल का आनंद उठाना चाहती थी। और मैंने उसको जवाब दिया, ‘और फिर तुम मेरे होठों को अपने दाएँ कान के पीछे, अपनी गर्दन पर महसूस करोगी।’

‘उम्म।’ वह फुसफुसाई, गहरी साँस लेते हुए।

‘मैं इस समय इतना अलग महसूस कर रहा हूँ। क्या तुम भी?’ मैंने बहुत धीमे-से पूछा।

‘हाँ, कुछ बहुत अलग। तुमको कैसा लग रहा है?’

‘तुमको अपनी बाँहों में लेकर मैं उस कोलोन को महसूस कर पा रहा हूँ जो तुमने लगाया है। औरतों जैसी तुम्हारी मीठी खुशबू। मुझे महसूस हो रहा है कि मेरे होठ तुम्हारे कंधों को चूमते हुए तुम्हारी पीठ की ओर बढ़ रहे हैं और तुम्हारे पसीने को चूम रहे हैं...।’ अब तक मेरी आवाज़ भी काँपने लगी थी। मैंने उससे पूछा, ‘बताओ, तुमको कैसा लग रहा है?’

‘मुझे लगता है...।’ वह अपनी लाइन पूरी करने की कोशिश कर रही थी और मैं उसकी तेज़ साँसों को साफ़-साफ़ सुन रहा था।

वह हिचकिचा रही थी। मैं इंतज़ार कर रहा था।

‘मुझे...मुझे लगता है,’ कहकर वह रुकी और उसने फिर कोशिश की। ‘मुझे लगता है जैसे तुमने मेरे ऊपर जादू-सा कर दिया है। मैं उससे बाहर नहीं आना चाहती।’

वह काँपते हुए तेज़-तेज़ साँस ले रही थी। उसकी मस्ती भरी आवाज़ मुझे और भी उत्तेजित बना रही थी।

‘अब मेरा दूसरा हाथ भी तुम्हारी कमर के इर्द-गिर्द आ गया है। और फिर...’ कहकर मैं रुक गया।

‘और फिर...?’ वह आगे ज़ारी रखने को कह रही थी।

‘और फिर, अचानक बारिश शुरू हो गई।’ मैं बाहर की बारिश को अपने सुंदर सपने में ले आया।

‘मम्म...और फिर...?’

मैं धीरे से फुसफुसाया, ‘और फिर मैंने तुमको अपनी तरफ घुमा लिया है। हम बारिश में भींग चुके हैं। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारी गीली साड़ी तुम्हारे बदन से चिपक गई है। मैं देख रहा हूँ कि तुम्हारे माथे पर बारिश की बूँदें पड़ रही हैं, तुम्हारी नाक से होते हुए वो कुछ देर तुम्हारे होंठों पर ठहरती हैं और फिर तुम्हारे बदन पर आगे की ओर बढ़ जाती हैं। तुम्हारे भीगे बालों के लट तुम्हारे गालों से चिपक गए हैं।

‘और फिर...’ वह फिर से फुसफुसाने लगती है।

‘तुम नीचे देख रही हो, कहीं मेरी शर्ट की ओर, तुम्हें मेरी आँखों में देखने में शर्म आ रही है। मैं तुम्हारी ठोड़ी को ऊपर उठा रहा हूँ ताकि तुम मेरी आँखों में देखकर उनको पढ़ सको, जो तुम्हें घूर रही हैं।’

‘और फिर...?’ उसके लिए कुछ भी बोलना मुश्किल हो रहा था और उसके मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे।

‘हमारे सिर थोड़ा-सा झुके, मेरे होंठ तुम्हारे होंठों पर ठहरी हुई बारिश की बूँदों को महसूस करते हैं, उनको अपने मुँह के अंदर को लेने बाद मैं फिर तुम्हारे होंठों की मुलायमियत को हासिल कर लेता हूँ...’ मैंने जिस गहरे चुंबन का वर्णन किया था वह कुछ देर तक चलता रहा। वह पहला मौका था जब मुझे लगा कि उसने मुझे कुछ सीमाओं को लांघने की छूट दे दी। एक-दूसरे से मीलों दूर हमने उस पल की एक-एक कंपन को महसूस किया।

हम एक-दूसरे में खोये हुए थे कि अचानक वह फिर से शरारती हो गई। ‘हे! नीचे लोग हमें ढूँढ़ रहे होंगे। मुझे भागना है इससे पहले कि मम्मी-पापा मुझे ढूँढ़ते हुए ऊपर आ जाएँ,’ वह चिल्लाई।

मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने किस तरह से अपनी ऊर्जा इकट्ठी की, और उससे भी बढ़कर उसने किस तरह से काल्पनिक लोगों को कल्पना की उस बारिश में याद किया, उस झूठ-मूठ सगाई की रात में (हालाँकि उसे आने वाले कुछ महीनों में सच साबित होना था)।

‘अरे नीचे लोग खाने में मस्त होंगे,’ मैंने उसे आश्वस्त करने की कोशिश की।

‘ना...प्लीज़। अपनी बाँह हटाओ, हमें जाकर अपने कपड़े बदलने होंगे, इससे पहले कि वे हमें देख लें,’ उसने हमारी उस आभासी हालत पर हँसते हुए कहा।

‘ठीक है। लेकिन एक शर्त है।’

‘और वह क्या है भला?’

‘मैं तुमको कपड़े बदलते हुए देखना चाहता हूँ।’

‘ओह हो हो...तुम्हें ऊँगली क्या पकड़ाई, तुम तो पूरा हाथ पकड़ना चाहते हो। ज्यादा ग़लतफ़हमियाँ मत पालो।’ धीरे से हँसते हुए उसने मुझे चेतावनी दी।

‘हाथ पकड़ना? सिर्फ हाथ नहीं, मैं तुमको पूरी तरह से थामना चाहता हूँ।’ मैंने जवाब दिया।

मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसने मुझे इसकी अनुमति नहीं दी, वह भी तब जबकि हमें सिर्फ सोचना भर था।

उस रात हम बहुत देर से सोए। नहीं, रात नहीं थी। मुझे लगता है सुबह होने वाली थी जब हमने आखिरकार फोन रख दिया।

मैंने अपने सेल फोन की तरफ देखा और अपने बिस्तर से उठते हुए खिड़की की ओर गया। मैंने देखा कि तब तक बारिश थम चुकी थी। मैं थक चुका था और मुझे बहुत भूख लग रही थी, इसलिए मैंने किचन से एक सेब उठाया और बिस्तर पर लेटे-लेटे उसे कुतरने लगा। फिर मैं अपनी उस बातचीत के बारे में सोचने लगा, एक-एक बात, कि क्या हुआ हुआ...मुझे एकदम याद नहीं कि कब मुझे नींद आ गई और कब मैं सपनों में खो गया।

अगली सुबह बहुत सुहानी थी, सूर्य की किरणें मेरे कमरे में खिड़की के रास्ते आ रही थीं। बारिश भरी रात के बाद की सुबह सचमुच सुहानी होती है। अपनी अधखुली आँखों से मैं पिछली रात को याद करते हुए अपने ऊपर मुस्कराया। मैं किसी तरह उठा और बिस्तर पर बैठकर अपने आपको मुस्कराता हुआ शीशे में देखने के लिए घूम गया। फिर मैंने अपनी परछाई से पूछा, 'अब भी उसके खुमार में हो, हाँ?'

और वह रात भी क्या रात थी। अगर केवल खयाल में लिया गया चुंबन इतना मज़ेदार हो सकता है, तो सचमुच का कैसा होगा, मैं सोचने लगा। फिर मैंने फ़ैसला किया कि उसे फोन करूँगा—उस सबके लिए उसे चिढ़ाने की खातिर जो उसने कल रात किया था।

उसने नींद में ही फोन उठाते हुए कहा, 'मेरा बेबी उठ गया?'

'आह...तुम मार ही देती हो जब इतना मीठा बोलती हो।'

'सच?'

'हूँ...'

'लेकिन मुझे अभी भी नींद आ रही है और मैं अपने सपनों में वापस जाना चाहती हूँ,' उसने कहा। शरारती ढंग से मैं उसके ऊपर चिल्लाया, 'नींद? मैं तुमको जगाने के लिए हूँ न यहाँ। तुमको कुछ याद भी है तुमने एक लड़के से कल रात क्या-क्या कहा था? मेरा मतलब है कि तुम इतनी खुली, इतनी बोल्ड कैसे हो सकीं, मुझे इतना कुछ कहने के लिए तुमने मुझे कैसे उकसाया। मैं उस शर्म से बाहर निकलने के लिए जद्दोजहद करता रहा। मैंने कभी सोचा नहीं था कि तुम शर्म की सारी दीवारों को इस तरह पार कर जाओगी, नैतिक मूल्यों को...'

मैंने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि वह पूरी तरह से उठ गई और मेरे ऊपर वापस चिल्लाई, 'आय हाय...तुम लड़के! तुम कितने चालाक हो, हे भगवान। तुम सारे लड़के एक जैसे होते हो। जो बातें तुमने अभी कहीं वे असल में मेरी होनी चाहिए। तुमने मेरी लाइनें चुरा लीं क्योंकि मैं सोई हुई थी। सारी सीमाएँ तुमने पार कीं और अब तुम मेरी खिंचाई भी कर रहे हो। तुम ऐसा कैसे कर सकते हो? मुझ जैसी भोली-भाली लड़की को तुम लोग कितना उल्लू बनाते हो...'

'हे...' मैंने बीच में उसको शांत करने के खयाल से टोका। लेकिन वह बोलती ही गई जैसे विपक्षी पार्टी का नेता एनडीटीवी की बिग फाइट में बोलता ही चला जाता है।

'तुम लड़के मौका पड़ते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने लगते हो।'

और मैं याद करने की कोशिश करने लगा कि मैंने गिरगिट के बारे में कहाँ सुना था। शायद बायोलॉजी में।

गिरगिट को परे कर मैंने उसको टोकने की कोशिश की, 'अच्छा बाबा, सुनो।'

'...और तुम लड़के ही इस तरह की बातें करते हो, हम लड़कियाँ कभी नहीं...।' उसकी बात पूरी नहीं हुई थी।

‘हे खुशी...’ मैंने कहा, लेकिन वह मेरी बात पर ध्यान ही नहीं दे रही थी।

‘और तुमको पता है? तुम सारे लड़के...’

‘अब बहुत हो गया!’ मैं चिल्लाया। ‘तुमको पता है? कल रात का वह आधा घंटा मेरे लिए इतना खास है कि मैं तुम्हारे साथ उसका फिर से आनंद उठाने के लिए सौ बार मरने को तैयार हूँ...मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।’

और वह ऐसे पिघल गई जैसे गर्मी में आइसक्रीम।

‘सच्ची?’ उसकी मासूम, मीठी आवाज़ अब शांत लग रही थी।

‘मुच्ची। मैं सगाई की उस शाम का इंतज़ार करूँगा कि वह इसी तरह से सच हो जाए। इसका ध्यान रखना कि तुम ज्यादा लिपस्टिक मत लगाना।’

‘शट अप,’ उसने शर्माते हुए कहा।

सारा दिन उस ख़बर के पक्का होने का इंतज़ार करता रहा। अगर कोई और समय होता तो यह ख़बर अच्छी होती। दुर्भाग्य से, मुझे पक्की ख़बर मिल गई और यह बात मुझे उसे और अपने परिवारवालों को भी बतानी थी। मैं समझ नहीं पा रहा था कि जब वह सुनेगी तो खुश होगी या दुखी।

फिर भी, बिना आगे कुछ सोचे मैंने उसे बताने के लिए फोन किया। जब उसने फोन नहीं उठाया तो मैं अपनी पढ़ाई में लग गया। पाँच मिनट में मैंने देखा कि मेरे सेल फोन की घंटी बज रही थी, स्क्रीन पर उसका नाम चमक रहा था।

मैंने फोन उठाया और बड़े रोमांटिक अंदाज़ में एक पुच्ची के साथ कहा, ‘हाय जाना।’

‘उह, हाय।’

उफ़फ! यह नीरू थी, उसकी छोटी बहन। कितनी बड़ी गलती हो गई। अब मुझे क्या कहना चाहिए? क्या मुझे बात करनी चाहिए या फोन डिस्कनेक्ट कर देना चाहिए? मैं घबरा रहा था। मैं उसके परिवार के सामने किस तरह की इमेज पेश कर रहा हूँ अपनी, पहली लाइन तो पक्के तौर पर झटके की तरह लगी होगी।

‘कैसे हैं आप?’ नीरू ने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा।

‘उह...मैं ठीक हूँ। तुम कैसी हो? और तुमने उसके फोन से कैसे कॉल किया।’ मैंने अपना सिर खुजाते हुए पूछा और यह सोचते हुए कि शायद उसने मेरी पहली वाली लाइन या तो किसी जादू से या किसी तकनीकी खराबी की वजह से नहीं सुनी हो।

‘मैं ठीक हूँ, असल में खुशी बाथरूम में थी और मैं आपका फोन उठाने ही वाली थी कि घंटी बजनी बंद हो गई। तो मैंने मिस्ड कॉल को डायल कर दिया। लीजिए, वह आ गई कमरे में। और अब वह मुझसे फोन छीनने की कोशिश कर रही है...’ और उसकी आवाज़ दूर होती चली गई। आख़िरकार खुशी ने अपने आपको बहन के मुक्कों से बचाते हुए कहा, ‘हा...हेलो’। नीरू मुझसे बात करना चाहती थी और शायद यही वह समय था जब मुझे उससे बात करनी थोड़ी मुश्किल लग रही थी, इसकी वजह फोन पर हमारी बातचीत की अटपटी शुरुआत थी।

‘हे भगवान, अच्छा हुआ तुम आ गई,’ मैंने उससे कहा।

‘शोना, एक मिनट,’ यह कहकर वह सुनने के लिए रुक गई जो बात उससे नीरू कह रही थी। वह एक मिनट पाँच मिनट तक चला और तब मुझे लगा कि मैंने जो जादू वाली बात सोची थी वह कितनी ग़लत थी।

‘क्या?’ ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुए खुशी चिल्लाई।

‘हाय मेरी जान,’ नीरू पीछे से चिल्लाई और वह भी बहन के ठहाके में शामिल हो गई।

‘हे भगवान!’ मैंने सोचा और अंदर ही अंदर मुझे शर्म आने लगी।

लेकिन खुशी मेरे बचाव में नहीं आई, बल्कि वह भी उस पल का मज़ा उठाने में अपनी बहन के साथ शामिल हो गई।

‘उफ्फ!’ उसकी छोटी बहन मुझसे ऐसे बातें कर रही थी जैसे उसने कुछ भी नहीं सुना हो और ज़रा अब उसे देखिए। लड़कियाँ! अब मुझे याद आया कि गिरगिट क्या होता है और मुझे लगता है यह लड़कियों को ज्यादा सूट करता है—वे कितनी तेज़ी से रंग बदल लेती हैं।

और इस तरह से मैं उन दोनों बहनों के लिए मज़ाक़ का कारण बन गया।

मैं तब तक यह भूल चुका था कि मैंने किस कारण फोन किया था, जब तक अपने ठहाके के दौर को विराम देते हुए आख़िरकार खुशी फोन पर वापस आई।

‘हाँ, अब बोलो।’ वह दूसरे कमरे में फोन पर वापस आई।

‘तुम्हारी बहन इतनी चालाक है। ऐसे जता रही थी जैसे उसने कुछ सुना ही न हो।’

‘आख़िर वह मेरी ही बहन है न!’

‘अब मैं कुछ दिनों तक उसका सामना नहीं कर पाऊँगा।’

‘अरे छोड़ो! आख़िर तुम उसके जीजू हो, और जीजू और साली में इस तरह की बातें होती रहती हैं।’

‘लेकिन अगली बार से मैं इस तरह रोमांटिक अंदाज़ से बात नहीं करूँगा, जब तक मुझे यह पक्के तौर पर न पता लग जाए कि फोन पर तुम ही हो।’

‘ठीक है बाबा, अब बताओ। तुम क्या कहने वाले थे?’

थोड़ी चुप्पी के बाद मैंने एक साँस में कह डाला, ‘मुझे यूएस जाना है, एक सप्ताह के लिए। अपने प्रोजेक्ट के सिलसिले में।’

‘क्या?’ उसने ऐसे कहा कि लगा जैसे उस एक शब्द में ही हज़ारों तरह के ख़याल छिपे हों, सब अलग-अलग दिशाओं में।

‘हाँ।’

‘एकदम अचानक से?’ उसने बेचैनी से पूछा।

‘मुझे पता था कि यह बात लंबे समय से लटकी हुई थी, जिसे मैं नवंबर में होने वाले एकजाम तक टालना चाहता था। लेकिन इस बार बचने का कोई रास्ता नहीं है।’

‘लेकिन तुम कोई बड़ा बहाना बना सकते हो, नहीं?’

‘हम...लेकिन यह मेरे कैरियर का सवाल भी है, डियर। सुनो। प्लीज गुस्सा मत होना। इस समय मैं यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि मैं किस तरह से यह कर पाऊँगा। मेरा मतलब है आइएमएस की क्लासेज, मॉक टेस्ट। मुझे तुम्हारी मदद चाहिए।’

आइएमएस की क्लासेज, मॉक टेस्ट, कैरियर तुम्हें सब कुछ याद है, लेकिन मेरे बारे में क्या ख़याल है? अपने ऑफ़िस, कैरियर, आइएमएस में इतना बिजी रहे कि हम अभी तक एक-दूसरे को देख भी नहीं पाए हैं। हमारी कहानी कितनी अलग है...और अब तुम कह रहे हो कि तुम अमेरिका जा रहे हो...’ वह रोने-रोने को थी।

‘लेकिन मेरे पास तुम्हें खुश करने को भी कुछ है।’

‘वो क्या?’

‘मैं प्लेन दिल्ली से पकड़ूँगा। मैं एक दिन की छुट्टी ले लूँगा जिससे मैं एक पूरा दिन तुम्हारे साथ बिता सकता हूँ। आख़िरकार हम लोग मिलेंगे। क्या यह तुमको खुश करने के लिए काफ़ी नहीं है?’

हालाँकि मैं यह जानता था कि यह उसको खुश करने का सही तरीका नहीं था—पूरा दिन उसके साथ बिताना फिर एक महीने से भी अधिक समय के लिए देश से चले जाना। लेकिन इस बात ने हमारे दिलों को कुछ सुकून दिया कि हम लोग सारा दिन एक दूसरे के साथ बिताने वाले हैं। हमारे पास मानो इसके अलावा और कोई विकल्प नहीं था कि हम उस दिन के आने की बेताबी से प्रतीक्षा करें और उसे कम से कम साल भर संजोकर रखें।

आश्चर्य की बात यह थी कि एक ऑफिशियल ट्रिप के कारण हम लोगों को एक दूसरे से पहली बार मिलने का मौका मिल रहा था। कभी-कभी हमें इस बात पर आश्चर्य होता कि हमारे जीवन में कितनी भागमभाग थी, ऑफिस से आईएमएस, कैरियर से परिवार, लेकिन उस आदमी से मिलने का समय ही नहीं था जिसके साथ हम आगे का जीवन गुज़ारने वाले थे।

एक-एक करके दिन गुज़रता जा रहा था। जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा था हमारी भावनाएँ और मज़बूत होती जा रही थीं। दिल और दिमाग़ में बेचैनी बढ़ रही थी। और आखिरकार वह दिन भी आ गया जब हम पहली बार मिले।

वह इतवार का एक गर्म, चिपचिप दिन था। हम लोग टीवी पर एक ही फ़िल्म देख रहे थे, वह फरीदाबाद में थी, मैं भुवनेश्वर में था। मैं उसे इसलिए देख रहा था क्योंकि उसने मुझे एसएमएस करके इस फ़िल्म को देखने के लिए कहा था।

फ़िल्म में हीरोइन अपने पति के साथ लड़-झगड़ कर अपना सामान पैक कर रही है।

उसी समय खुशी ने मुझे फोन किया। और खुद को उसने उस औरत की जगह रख लिया, मुझे समझ में नहीं आया कि उसने ऐसा क्यों किया, ‘पता है? अगर मैं किसी दिन तुमसे नाराज़ हो गई और तुमने भागने लगी तो...तुम एक छोटा-सा काम करना...’

मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन वह बोल रही थी।

‘मेरे पास दौड़ के आना और मुझे ज़ोर से गले से लगा लेना, चाहे उस समय मैं तुमको कितना ही मारूँ। मुझे गर्मागर्म झप्पी देना। एक भी शब्द मत कहना। कुछ देर मुझे अपनी बाँहों में थामे रहना...और कुछ देर बाद मुझे अपने पैक किए हुए सामान को बाहर निकलने में मदद करना, बोलो करोगे न?’

आमने-सामने

दोपहर के 2.30 बज रहे थे और मैं भुवनेश्वर से दिल्ली जाने वाले जहाज में बैठा था। पहली लाइन में खिड़की वाली सीट थी।

मेरा ऑफिस वाला लैपटॉप मेरी गोद में था। मैं अतिरिक्त घंटे काम करके इन्फी को अपने ऊपर गर्व करने का मौका नहीं दे रहा था। बल्कि मैं तो वे फोटो देख रहा था जो मैंने एयरपोर्ट आने से ऐन पहले डाउनलोड किए थे।

अपने कंप्यूटर स्क्रीन पर
उसकी तस्वीर देखते हुए
मैंने पाया कि मैं चढ़ती ऊँचाई से गिर रहा हूँ
उसके साथ प्यार में पड़ते हुए
कहने से खुद को रोक नहीं पाया—मैं तुम्हें प्यार करता हूँ
उसमें पागलपन भी शामिल हो गया
जब तस्वीर ने भी यही कहा

इस यात्र के दौरान मैंने एयर होस्टेसों और अपने सहयात्रियों को यह सोचने का मौका कई बार दिया कि मुझमें कुछ तो अटपटा था। या संक्षेप में कहें, तो मेरा दिमाग़ ख़राब है। जब आप किसी आदमी को अपने लैपटॉप से बातें करते हुए देखें, बीच-बीच में बाहर बादलों को देखते हुए, मुस्कुराते हुए देखें, फिर स्क्रीन को देखकर फिर मुस्कुराते हुए पाएँ—तो आप कि को इसके लिए दोष नहीं दिया जा सकता कि आप उस आदमी को दिमाग़ से खाली समझते हैं। मुझे याद है जब एयर होस्टेस सुरक्षा उपायों के बारे में बता रही थी तो उसने देखा कि मैं मुस्कुरा रहा था। इस पर वह शायद मुझसे चिढ़ गई हो क्योंकि उसके इस प्रदर्शन को उसके सहकर्मी के अनाउंसमेंट के साथ तालमेल बिठाते हुए होना चाहिए था, पर वह उसमें पिछड़ रही थी। लेकिन उससे किसने कहा था कि वह मेरे ऊपर ध्यान दे। मैंने तो नहीं।

अगर आप मुझसे पूछें कि मैं क्यों शरमा रहा था, मुस्कुरा रहा था तो मेरे पास इसके बहुत सारे जवाब थे। उसी एयर होस्टेस की दी हुई कैंडीज खाते हुए मैं यह याद कर रहा था कि किस तरह खुशी ने कल रात 12 बजे के ठीक एक मिनट बाद मुझे फोन किया था जब हम नए दिन यानी आज के पहले पल में आये थे।

‘तुम आज मेरे पास आ रहे हो।’ वह चिल्ला पड़ी।

‘हाँ, मैं पागल हो रहा हूँ’ उस शांत आधी रात की ख़ामोशी को तोड़ते हुए मैं अपनी बालकनी में कूदते हुए चिल्लाया।

मुझे लगता है कि मैंने कुछ पड़ोसियों को जगा दिया था और कुछ ऐसे लोगों के आनंद में ख़लल डाल दी थी जो ऑर्गैज्म (सेक्स के चरम आनंद) को बस पाने ही वाले थे। कुछ आवारा कुत्ते अँधेरे से निकलकर आ गए और मेरे ऊपर भौंकने लगे। मैं दौड़ कर अपने कमरे में भागा जब मैंने देखा कि बग़लवाली इमारत के कुछ फ्लैट्स में बत्तियाँ जल उठीं।

बीती रात की उस बात को याद करते हुए कैंडीज का आनंद उठाते हुए मुझे याद आया कि मैं सुबह कितनी उधेड़बुन में था कि मुझे पहनना क्या चाहिए। मैंने सारे कपड़े आलमारी से निकाल लिए और उन सबको आईने के सामने पहन-पहन कर देखा। मुझे फैसला लेने में करीब आधे घंटे लगे और

ऑफिस जाने से ठीक पहले मैंने उस कपड़े को भी बदल लिया। मज़ेदार बात यह रही कि मैंने वह शर्ट पहन ली जिस पर आयरन नहीं हुआ था। (गहरी रंग की जींस के साथ)।

उस दिन मैंने जो भी किया, सब गड़बड़ किया। जब-जब मैं उन पलों को याद करता कई अजीब तरह के खयाल मेरे में आने लगते—

अगर वह उतनी खूबसूरत नहीं हुई जितनी तस्वीरों में दिखती है तो?

अगर वह अजीब तरह से हँसती हो तो?

अगर वह लँगड़ाती हो तो?

और अनेक तरह से खयाल मेरे दिमाग में लुका-छिपी खेलते रहे, जब मैंने अपने आपसे यह बड़ा सवाल पूछा।

क्या तुम उसे प्यार करते हो, रविन?

बकवास! ज़ाहिर है यह सवाल पूछने के लिहाज से काफी देर हो चुकी थी।

‘हाँ। मैं करता हूँ। बिल्कुल करता हूँ।’ मैंने आप से पूछा।

वैसे अगर ईमानदारी से कहूँ तो मैंने अपने आपको ऐसा कहने के लिए मज़बूर किया। पता नहीं क्यों मन में तरह-तरह की शंका हो रही थी। लेकिन, चाहे यह अच्छी बात हो या बुरी, उससे शादी करने का फैसला पूरी तरह से मेरा अपना था, जिसके लिए मुझे न तो परिवार की तरफ़ से ही इसके लिए किसी तरह का दबाव था न ही उसकी ओर से।

इसलिए, इस तरह के अजीब खयालों से निज़ात पाने के लिए मैंने सामने वाली सीट के पीछे बने रैक से अख़बार निकाल लिया। लेकिन अख़बार पढ़ने में मेरा मन नहीं लगा। एक अजीब तरह की बेचैनी थी जिससे मन के अंदर कुलबुलाहट हो रही थी, जिससे कभी मैं सिहर उठता था। पता नहीं वह किस तरह का डर था।

इस घबराहट और बेचैनी का नतीजा यह हुआ कि मैं हर 20 मिनट में बाथरूम जाता। शायद यह सबके साथ होता है...या नहीं? और मुझे पक्के तौर पर इसका यकीन था कि पिछली सीट पर बैठा बच्चा इसकी गिनती कर रहा था कि मैं उसके पास से कितनी बार गुजरा। मैंने उसकी अनदेखी करने की कोशिश की जब मैंने देखा कि वह अपनी माँ के कान में कुछ फुसफुसाने रहा था। ज़ाहिर है कि वह अपनी माँ को मेरे बारे में बता रहा था। मैंने देखा था कि जब वह मेरी तरफ़ ऊँगली दिखा रहा था तो उसकी माँ ने मुस्कुराते हुए उसके हाथ को वापस खींच लिया।

आखिरकार शाम को 5 बजे मेरा जहाज़ दिल्ली के हवाई अड्डे पर उतरा और मैंने कैप्टेन की इस उद्घोषणा को नज़रअंदाज़ करते हुए अपना मोबाइल फोन ऑन कर लिया कि अगली सूचना से पहले ऐसा न करें। जब जहाज़ रनवे से मुड़ रहा था तो मैंने खिड़की से देखा कि कहीं कोई लड़की जहाज़ की तरफ़ हाथ तो नहीं हिला रही है—यह वह हो सकती थी (अब सोचता हूँ तो लगता है कि मैं कितना बेवकूफ़ था कि रनवे पर मैं किसी के होने की उम्मीद कर रहा था)। मैं उसको फोन करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन मेरा मोबाइल रोमिंग में किसी कारण से काम नहीं कर रहा था। अपने फोन और नेटवर्क को कोसता हुआ। मैं लगातार कोशिश कर रहा था। मैं कोशिश करता रहा और नाकाम होता रहा।

कुछ मिनट बाद मैं सामान लेने के लिए खड़ा था और अपने सामान के आने का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन मैं सामान की तरफ नहीं देख रहा था, मेरी नज़रें तो किसी और को ही ढूँढ़ रही थीं। यहाँ-वहाँ मैं हर लड़की को देख रहा था और शीशे की दीवार की दूसरी ओर खड़ी भीड़ को निहार रहा था।

फिर मैंने देखा मेरा लाल बैग सामान की भीड़ में नज़र आ रहा था, लेकिन इससे पहले कि वह मुझ तक पहुँचता, वह पहुँच गई।

मेरे फोन पर।

मेरा सेल अब काम करने लगा था और मुझे उसकी घंटी सुनाई दी। 'खुशी' स्क्रीन पर दिखाई दे रहा था। मैंने फोन उठा लिया।

'हाय।'

'हाय।'

खामोशी।

'तो', और मैं बाहर निकलने के दरवाज़े की ओर मुड़ गया।

'तो।'

'तो क्या?'

वह कभी इतनी शर्मीली और खामोश नहीं दिखी थी। मैं उसे शरमाते हुए सुन सकता था। ज़ाहिर है, उसकी दिमागी हालत मुझसे अलग नहीं थी। और वह अलग हो भी कैसे सकती थी? दो लोग जिन्होंने पागलों की तरह एक-दूसरे से प्यार किया और शादी करने का फ़ैसला किया, वे जीवन में पहली बार एक-दूसरे से मिलने वाले थे!

'मैं सामान लेने वाली जगह पर हूँ,' मैंने कहा। और तभी मैंने देखा कि मेरा बैग उस ट्राली पर मुझसे दूर चला जा रहा था। 'उफ़फ़! मैं मिस कर गया।'

'क्या मिस कर गए?'

'मेरा सामान। मैं तुमसे बात करने में लग गया और उसे मिस कर गया।'

'ओहो।' कहकर वह कुछ देर के लिए रुकी और मेरा ध्यान सामान वाली उस घूमती ट्रॉली पर लगा था, कि उसने फिर पूछा, 'मैं तुमसे कुछ पूछ सकती हूँ?'

'क्या?'

'क्या तुम नर्वस हो?'

'तुम्हें कैसे पता?'

'क्योंकि मैं हूँ,' उसने अपने आप मान लिया। फिर उसने कहा, 'अच्छा ये बताओ कि आज तुमने क्या पहना है?'

हल्के रंग की शर्ट और गहरे रंग की जींस। और तुमने?

'हे भगवान।'

'क्या हुआ?' मुझे लगा कि उसे वह रंग पसंद नहीं आया। 'यह मेरे ऊपर अच्छा लगता है।'

'नहीं-नहीं। बात अच्छे और बुरे की नहीं है।'

'फिर'

'मैंने भी हल्के हरे रंग की शर्ट और जींस पहन रखी है।'

संयोग जैसे हमेशा हमारा पीछा करते रहे। हमारा जन्मस्थान, महीना, साल, संगीत का टेस्ट, हमारा कैरियर, आईएमएस। और अब कपड़े जो हमने उस दिन पहन रखे थे।

'अद्भुत! हम लोग वाकई एक-दूसरे के लिए ही बने हैं। हे मेरा सामान मेरी तरफ घूमता हुआ आ रहा है। मैं सामान उठा कर दो मिनट में बाहर आता हूँ। सी यू!'

'मैंने भीड़ में से अपनी जगह बनाई, सामान उठाया, ट्रॉली पर लादा और बाहर निकलने के दरवाज़े की तरफ बढ़ गया। लैपटॉप अब भी मेरे कंधे से लटक रहा था।

आखिरकार, जब मैं उसे देखने ही वाला था मेरी बेचैनी बढ़ गई थी, मैं काँप रहा था और मेरा दिल बहुत तेज़ी से धड़क रहा था। भीड़ में से जैसे ही किसी औरत की आवाज़ सुनाई देती मुझे लगता उसी की न हो। लेकिन ऊपर से मैं ऐसे जता रहा था जैसे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ रहा हो।

‘रिलैक्स...रिलैक्स...रिलैक्स । अब एक गहरी साँस लो,’ मैंने अपने आपसे कहा । और उसके बाद मैं बाहर निकल आया था ।

मेरे सामने बहुत सारे लोग थे, अपनों का इंतज़ार करते हुए । कुछ टैक्सी ड्राइवर हाथों में तख्तियाँ लिए अपने मालिकों के इंतज़ार में खड़े थे । ट्रैफिक की चिल्ल-पों मची थी ।

फिर, किसी कारण से मैं आगे आने के बजाय बाईं ओर मुड़ गया ।

वह वहाँ थी ।

मेरी परी, मेरी सुंदर परी ।

उसकी मुस्कुराहट मेरी भावनाओं को जैसे काबू में कर रही थी । हम दोनों झिझक रहे थे । उसके लंबे, खुले बाल हवा के झोंके के साथ उसकी आँखों पर गिर रहे थे । उसके हाथ उसके चेहरे के इर्द-गिर्द लहरा रहे थे, उसके बालों को उसके बाएँ कान के पीछे समेट रहे थे । उसका बायाँ कान, उसमें चमकता चाँदी का झुमका, उसका खूबसूरत चेहरा, सबने जैसे मुझे सम्मोहित कर लिया । उसकी हरे रंग की, खुले बाँह की टॉप और जींस । उसका जिस्म इतना सुडौल, इतना जवान लग रहा था । वह तो करिश्मे की तरह लग रही थी । मैं उसके ऊपर से अपनी आँखें नहीं हटा पा रहा था । बल्कि मैं उसे ऊपर से नीचे बहुत धीरे-धीरे निहारना चाहता था—असल में मैंने यही किया भी ।

‘यही है वह,’ मैंने अपने आपसे कहा । ‘यह मेरी है ।’

वह एक ऐसा पल था जिसे मैंने बार-बार जिया है, उस पहली मुलाकात को याद करते हुए ।

मैं अपनी ट्रॉली को लगभग भूलते हुए उसकी तरफ़ मुस्कुराते हुए बढ़ा । और कुछ ही पलों में उसके सामने खड़ा था, महज एक कदम दूर । उसके ऊपर से नज़र अभी भी नहीं हटा पा रहा था ।

‘हाय,’ मैंने हाथ मिलाने के लिए अपना बायाँ हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा ।

‘हाय,’ उसने इतनी विनम्रता और सुंदर अंदाज़ में कहा । हमने एक दूसरे को पहली बार छूते हुए हाथ मिलाया (आपने सुना मैंने क्या कहा? पहली बार एक-दूसरे को छुआ...एकदम जादू की तरह था) और उसकी आँखें...इतनी खूबसूरत थीं । उनमें कुछ खास बात थी । कुछ ऐसा जिसने मुझे कुछ और नहीं देखने दिया । मैं सुनना चाह रहा था कि वो मुझसे क्या कह रही थीं । वह भावना, उस समय का सच...पता नहीं क्या था ।

मैंने देखा, और मेरी आँखें तुम्हारे ऊपर ठहर गईं

मैं नज़रें हटाना चाह रहा था, लेकिन वे गोंद की तरह चिपक गई थीं ।

तुम्हें सचमुच का देखते हुए मैंने तुम्हारी आँखों को देखा

तुम्हारी सारी खूबसूरती वहीं बसी थी

इतनी असल, इतनी ईमानदार, इतनी सुंदर, इतनी गहरी

हल्की-सी रोशनी के साथ जिनमें कुछ शरारत-सी चमक उठी

अपने सपनों को सच होता देख

मैंने अपने काँपते होंठों से गुजारिश की कि उन लफ़्जों को आवाज़ दें जो मैंने

तुम्हारे लिए सोचे थे

कहने को कितनी बातें थीं

मैं कुछ भी याद नहीं कर सकता

लेकिन कोई बात नहीं, मेरा तरीका निराला है

‘यह मेरी बहन नीरू है और यह है गिरीश—उसका सबसे अच्छा और एकमात्र दोस्त,’ उसने उन दोनों से मिलवाते हुए मुझे मेरे ख़यालों की दुनिया से बाहर निकाला । मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि मैंने

उन दोनों को अपने पीछे खड़ा क्यों नहीं देखा। क्या मैं उसमें खोया हुआ था? कोई शक नहीं कि मैं खोया था।

मैंने उन दोनों को हलो किया और कुछ चुटकुले सुनाए। ऐसा मैंने उस मीठे दबाव को कम करने के लिए किया जो खुशी और मैं महसूस कर रहे थे। फिर हम बाहर निकलकर उस टैक्सी पार्किंग की तरफ आए, जिससे वे लोग एअरपोर्ट आए थे। खुशी को मेरे साथ चलने में इतनी शर्म आ रही थी कि वह नीरू और गिरीश के साथ टैक्सी को देखने चली गई। मैं अपनी ट्रॉली के साथ कुछ दूर पीछे-पीछे चल रहा था। मेरी हालत भी उससे कुछ अलग नहीं थी।

मैंने उसको एसएमएस किया, 'तुम सुंदर हो!'

अगले ही पल मैंने देखा कि वह दूसरी तरफ से मेरी तरफ आ रही है अपने सेल फोन में कुछ देखते हुए, शायद मेरा एसएमएस पढ़ते हुए।

मेरे पास आने पर वह मुस्कुराई।

'थैंक्स,' उसने कहा।

'मुझे अच्छा लग रहा है। जो कुछ हो रहा है। यह बेचैनी, कुलबुलाहट और तुमको देखना,' मैंने कहा।

शर्म के मारे वह मुड़ गई, उसके बाल फिर से उसकी आँखों पर गिर रहे थे। उसका ध्यान पूरी तरह से मेरी ओर था, फिर भी वह मेरी नज़रों से बचने की कोशिश कर रही थी।

'ये बताओ, मैं किसी काम का लग रहा हूँ? या बेवकूफ़ नज़र आ रहा हूँ?' मैंने पूछा।

वह हँसी और मेरी तरफ़ मुड़ी। उसके दाँत खूब थे।

'नहीं, तुम अच्छे लग रहे हो, असल में। मेरा भी वही हाल है,' उसने मुस्कुराते हुए कहा। जल्दी ही, नीरू और गिरीश उस टैक्सी की तरफ़ इशारा करते हुए आ गए जो हमारी तरफ़ आ रही थी। यह साफ़ हो गया था कि मुझसे यह उम्मीद की जा रही थी कि मैं टैक्सी में पहले बैठूँ और इसकी वजह से मैं घबराया हुआ था।

मुझे कहाँ बैठना चाहिए? मैंने अपने आपसे पूछा। पीछे, उसके साथ? लेकिन क्या यह अच्छा लगेगा कि मैं पीछे दोनों बहनों के बीच में बैठूँ और गिरीश को सामने वाली सीट पर बैठना पड़े। तो क्या मुझे आगे बैठना चाहिए? या क्या मैं पीछे बैठूँ बायीं ओर, बीच में गिरीश बैठे और खुशी दायीं तरफ़। और उसकी बहन ड्राइवर के साथ? नहीं। नहीं। यह तो गड़बड़ है। कितनी तरह की उधेड़बुन मिनटों में सुलझाने थे। यह मेरे दिमाग़ से बाहर की बात थी। बेहतर है कि आगे ही बैठूँ। मैंने सोचा। यह सबसे आसान रास्ता है।

और जल्दी और सावधानी में मैं ड्राइवर की बगल में बैठ गया। 'बेवकूफ़। वह तुम्हारे बारे में क्या सोचेगी? तुम पीछे क्यों नहीं बैठे, उसकी बगल में?' अगले ही पल मेरे कमअक्ल दिमाग़ ने मुझसे चिल्लाकर कहा। ओफ़फ़, मैं अपनी बेवकूफी से सारी बात बिगाड़ रहा हूँ। मैं अपनी गर्लफ्रेंड से अलग बैठ रहा था।

बमुश्किल एक मिनट बाद मेरे सेल पर फोन आया। मम्मी का फोन था।

उफ़फ़! उन्होंने कहा था कि जैसे ही दिल्ली में उतरूँ उनको फोन करूँ। मैं भूल गया, फोन उठाते हुए मैं फुसफुसाया। 'हाँजी मम्मा। बस अभी एअरपोर्ट से बाहर निकला।' उनके कुछ पूछने से पहले ही मैंने जवाब दिया।

'मुझे पता था तुम भूल जाओगे। अब बताओ।' उन्होंने कहा।

'क्या कहूँ?' मैंने पूछा, जबकि मैं जानता था कि उनके शायद सैकड़ों सवाल थे, खुशी को लेकर, जिनके जवाब मैं नहीं दे सकता था क्योंकि मैं उनके साथ ही टैक्सी में बैठा था।

लेकिन उन्होंने मुझसे वे सारे सवाल नहीं पूछे। केवल एक सवाल जिसमें सारे सवाल शामिल हो गए थे, 'तो तुम खुश हो?'

'हाँ माँ! मैं...मैं बहुत खुश हूँ,' मैंने धीरे से जवाब दिया, खिड़की से बाहर देखते हुए।

'अच्छा है मैं यही जानना चाहता थी। मैं जानती हूँ इस समय तुम मुझसे बातें नहीं करोगे। एन्जॉय करो और हम लोग बाद में बात करेंगे। ठीक है?'

'हाँजी मम्मा, ठीक है। मैं आपको बाद में फोन करूँगा। बाय।'।

हम लोग होटल के रास्ते में थे जिसमें मुझे रुकना था। क्योंकि अमेरिका जाने में अभी एक दिन से कुछ ज्यादा ही समय बचा था। मुझे इसके बारे में कुछ पता नहीं था कि वह होटल कहाँ था, न ही टैक्सी ड्राइवर को ही पता था। खुशी और गिरीश कह रहे थे कि उनको पता था लेकिन दोनों ही दूसरी तरफ का रास्ता बता रहे थे। अगर दूसरे शब्दों में कहें तो किसी को कुछ पता नहीं था। लेकिन यह सोचते हुए हम आगे चलते रहे कि हम जल्दी ही किसी से उसके ठीक ठिकाने के बारे में पूछ लेंगे।

क्या शाम थी वह! मैं ड्राइवर की बगल में बैठा था और पीछे मेरी महबूबा बैठी थी, बीच में नीरू और गिरीश उसकी दायाँ ओर। रेडियो पर उस दिन कुछ ज़्यादा ही अच्छे गाने बज रहे थे—रोमांटिक गाने जिससे मैं और खुशी खुद को जोड़ सकते थे—और हम बैठे उनको सुन रहे थे, बिना कुछ कहे, लेकिन मन ही मन मुस्कराते हुए।

खामोशी के इन पलों ने उन गानों को और भी सुंदर बना दिया। मैंने शीशे में उसको देखने की कोशिश की लेकिन हर बार मुझे गिरीश का मजाकिया चेहरा दिखाई दिया और वह मुझे चिढ़ाता हुआ, अपनी भौंहें चढ़ा लेता।

हालाँकि जल्दी, ही हमारी औपचारिकता खुलपेन में बदल गई और हम एक-दूसरे से बातें करने लगे। बीच-बीच में हम एक-दूसरे की खिंचाई भी कर देते, अचानक कोई अजीब-सी बात याद कर लेते और उसे सुनाते हुए उसमें खूब नमक-मिर्च मिलाते। नीरू और गिरीश ने खुशी को निशाना बना लिया था और वे उसकी नक़ल उतार रहे थे कि वह किस तरह से उस दिन मुझसे मिलने से पहले शरमा रही थी। हम चिल्ला रहे थे और टैक्सी में उनके लिए हुए पैटीज और पेस्ट्रीज खाते हुए पार्टी मना रहे थे।

'ये लो लड़की वालों की तरफ से,' गिरीश ने मुझे पेस्ट्रीज का डिब्बा देते हुए कहा।

हम खुशनुमा मूड में थे और यह खुशी और बढ़ गई जब बाहर बारिश होने लगी। शोर मचाते हुए, हँसते हुए, उन फिल्मी गानों की धुन पर हम टैक्सी में पगलाए जा रहे थे, हमने खूब मज़े किए। कुछ मौकों पर उसने चुपचाप मुझे पीछे से चिकोटी काट ली, और मुझे वह बहुत अच्छा लगा।

हम लोग करीब डेढ़ घंटे तक दिल्ली की सड़कों पर होटल को ढूँढते रहे। और खुशी को सबसे अधिक इसको लेकर चिंता हो रही थी। उसका कहना था कि मैं सफ़र के कारण थका हुआ था और मुझे कुछ आराम की ज़रूरत थी, लेकिन मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मैं वैसा क्यों नहीं महसूस कर रहा था।

चाय वालों और पान वालों की मेहरबानी से शाम के करीब 7.30 बज चुके थे जब हम कुतुब दीन होटल पहुँचे, जो कुतुब मीनार के पास में था। हम सब होटल में घुसे और मैंने रिसेप्शन पर जाकर अपनी बुकिंग के बारे में पता किया।

'रूम नंबर 301। उस तरफ़ सर। लड़का आपका सामान ले आएगा।' रिसेप्शन पर बैठे एक मुच्छड़ ने कहा।

'ठीक है,' मैंने कहा और हम सब 301 की तरफ बढ़ गए सब मेरे पीछे आ रहे थे।

नीरू और गिरीश आपस में फुसफुसा कर कुछ बातें कर रहे थे, कि तभी खुशी ने मुझसे बड़ी विनम्रता से कुछ कहा—

‘क्या तुम थोड़ा धीरे चल सकते हो? तुमने पीछे छोड़ दिया है।’

और तब मुझे समझ आया कि लोग क्यों कहते हैं कि लड़कियाँ लड़कों से अधिक परिपक्व होती हैं। मैं बेवकूफ था, पहले मैंने उसे टैक्सी में पिछली सीट पर छोड़ दिया और खुद आगे बैठ गया। और यहाँ भी मैं उसको पीछे छोड़कर अकेला चल रहा था। मैं थोड़ा घबराने लगा, नहीं जानता था कि इस तरह के हालात से कैसे निपटा जाए। मैं पहली ही बार ब्वायफ्रेंड बना था। रोमांस के स्कूल में एकदम नया था।

‘भगवान मेरी मदद कीजिए’, मैं फुसफुसाया और धीरे चलने लगा।

वह मेरे नज़दीक आते हुए बोली, ‘अब तुम अकेले नहीं हो। तुम्हारे जीवन में एक लड़की है। इसलिए उसके साथ-साथ चलो।’

हमारे पीछे गिरीश और नीरू शरारती हँसी हँस रहे थे।

‘क्या वे हमें कुछ देर के लिए अकेले नहीं छोड़ सकते?’ मैंने सोचा। लेकिन वे मेरे खयालों को किस तरह सुन सकते थे? वे हमारा पीछा करते रहे।

हम 301 में आ गए थे। मैंने कमरे का दरवाज़ा खोला और हम अंदर चले गए।

कमरे में खूब अच्छी तरह से रोशनी की गई थी। एक छोटा-सा टेबल, एक टेलीफोन और एक गुलदान दोनों बिस्तरों को अलग कर रहा था। बिस्तर पर चादर भी अच्छी बिछी थी। बेड की दूसरी तरफ टीवी सेट के पास एक टेलीफोन डाइरेक्टरी और एक मेनू रखा था। हमारे सामने की दीवार पर एक विशाल शीशा लगा था जिसमें पूरा कमरा दिखाई दे रहा था। वे दोनों बेड और दरवाज़े के पास वाली आलमारी भी। शीशे की बगल में एक दरवाज़ा था जो बाथरूम में खुलता था।

‘हुम...ये तो अच्छा है,’ मैंने घोषणा की।

मेरे आसपास के सभी लोगों ने भी हामी भरी। फिर गिरीश ने कमरे का अच्छी तरह से निरीक्षण शुरू किया। वह हर चीज़ के बारे में बताने लगा कि क्या अच्छी है और क्या बुरी।

जब उसका काम निपट गया तो मैंने कहा, ‘थैंक्स गिरीश,’ उसने भी उसका जवाब दिया।

उसके बाद मैं उससे बस एक सवाल पूछना चाहता था—‘भगवान के लिए तुम लोग हमें अकेला कब छोड़ोगे?’ वैसे मैं चुप ही रहा, इस उम्मीद में कि मेरी आँखें सारी बातें कह देंगी। और नीरू को आखिरकार यह बात समझ में आई कि उन्हें हम लोगों को कुछ देर के लिए अकेला छोड़ देना चाहिए। वह गिरीश के कान में फुसफुसाई और पता नहीं क्यों तीनों ने एक दूसरे को देखा और मुस्कुराने लगे। वे मेरा मज़ाक़ नहीं उड़ा रहे हों।

‘हम लोग पास ही कुछ खाने जा रहे हैं, अगर आप लोग चाहते हैं तो हम आपके लिए भी कुछ ला सकते हैं,’ गिरीश ने नीरू के साथ दरवाज़े की तरफ बढ़ते हुए कहा।

‘गिरीश अगर हमें कुछ चाहिए तो मैं तुमको फोन कर दूँगी। और नीरू का ध्यान रखना। उसे अकेले मत छोड़ना, ठीक है?’ खुशी ने टेबल पर रखी बिसलेरी की बोतल को खोलते हुए कहा।

‘हाँ, मैं रखूँगा। आप फ़िक्र मत कीजिए। वैसे 8.30 बज चुके हैं। हमें दिल्ली 9 बजे तक छोड़ देनी चाहिए, जिससे हम फरीदाबाद 10.15 बजे तक पहुँच सके। हम पहले ही लेट हो चुके हैं, पता है न?’

‘हाँ। लेकिन चिंता मत करो। हम मैनेज कर लेंगे।’ खुशी ने कहा।

आखिरकार वे कमरे से बाहर गए और मैंने चैन की साँस ली।

मैं जाकर दरवाज़ा बंद कर दिया, जबकि खुशी ने बोतल से पानी की आखिरी घूंट ली। उसने मुझे दरवाज़ा बंद करते हुए देखा और मुस्कुरा उठी, फिर उसने बोतल को टेबल पर रखा और मेरे लैपटॉप बैग को कुर्सी पर। मैं दोनों बिस्तरों के बीच में आया और बायीं तरफ के बिस्तर पर बैठ गया, वह आई और दायीं तरफ के बिस्तर पर बैठ गई, ठीक मेरे सामने। हम साथ-साथ थे, बस हम दोनों। हमारी मुस्कुराहट हमारे मूड को बयान कर रही थी।

उस समय सब कुछ सुंदर सपने की तरह लग रहा था। हम उस पल को महसूस करना चाहते थे और हमेशा के लिए जीना चाहते थे। वह लड़की जिसके साथ मैं अपना बाकी जीवन बिताने जा रहा था, मेरे सामने बैठी हुई थी। मैं उसकी सुंदर आँखों में झाँक सकता था, उसे छू सकता था, महसूस कर सकता था। उस पल की खुशी में हम जैसे बँध-से गए थे। शब्द उस वक्त फालतू लग रहे थे। मैं काफ़ी देर तक उसे देखता रहा। जब वह मेरे इस तरह के देखने को बरदाश्त नहीं पाई, तो वह ज़मीन की ओर देखने लगी, उसकी गर्दन झुक रही थी और उसके खूबसूरत बालों के लट कंधों से सामने की ओर गिर रहे थे, उसके दाएँ गाल और कानों को ढँकते हुए।

कमरे की ख़ामोशी बनी हुई थी और वहाँ हम प्यार में पागल थे। अब हमें इस बात का यकीन नहीं हो रहा था कि आखिरकार हमने एक-दूसरे को देख लिया। मैं अभी भी घबराया हुआ था, समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ।

उसने हिम्मत जुटाते हुए मेरी आँखों में देखा (जो अब भी उसी के ऊपर टिकी हुई थीं) और अपने बालों को कानों के पीछे किया, फिर उसने पूछा, 'सफ़र में कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई?'

पाँच मिनट से भी अधिक की चुप्पी के बाद इस बात का आना अजीब लग रहा था। इसने हम दोनों को पुरानी बॉलीवुड की फिल्मों की याद दिला दी जिसमें हीरोइन अपने प्रेमी से पूछती है, 'सुनिए जी, आपको सफ़र में...' और यही सब। इससे पहले कि वह मेरे जवाब को सुनती उसे समझ में आ गया कि यह सवाल कितना घिसा-पिटा और बेवकूफी से भरा था, हमने एक-दूसरे की ओर देखा और अपने-अपने बिस्तरों पर गिरकर हँसने लगे। वैसे इस सवाल ने हम दोनों के बीच जमी बर्फ़ को भी पिघला दिया और हम दोनों सहज हो गए।

'हा हा हा! कोई तकलीफ़ नहीं हुई,' मैंने उठते हुए कहा।

'मैं भी कितनी अहमक हूँ,' उसने अपना सिर पीटते हुए कहा।

'न, तुम नहीं हो। तुम...सुंदर हो,' मैंने बहुत ही सुकून से कहा, उसकी आँखों में आँखें डालते हुए।

और पता नहीं कैसे मेरे अंदर इतनी हिम्मत आ गई कि मैंने अपना दायाँ हाथ उसकी ओर बढ़ाया, उसके चेहरे की ओर। मेरी उँगलियों ने उसके गाल को छुआ, पहले बीच वाली उँगली ने, फिर पहली उँगली ने, फिर सबने, उसके बालों को कानों के पीछे समेटने में मदद करते हुए। वह छुअन अनमोल थी। मेरी उँगलियों को अपने चेहरे पर महसूस कर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और अब मैं उसकी तेज-तेज चलती साँसों को महसूस कर रहा था। उसका खूबसूरत चेहरा, उसके माथे की लकीरें बन-बिगड़ रही थीं। उसकी तनी हुई भौहें। उसकी प्यारी नाक। उसके मुलायम होंठ, जिनको मैंने बहुत प्यार से अपने अँगूठे से सहलाया और वह काँपने लगी, उसकी आँखें अब भी बंद थीं और उसके हाथों ने बेडशीट को कसकर पकड़ लिया था। मेरी आँखें चुपचाप उस पल हमारी हालत को देख रही थीं। मेरा दिमाग़ जैसे सम्मोहित था और मेरी उँगलियाँ अब भी उस खूबसूरत चेहरे को समझने की कोशिश कर रही थीं जो मेरे सामने था। बीच-बीच में उसकी गर्म साँसें मेरी ठंडी उँगलियों को छू जाती थीं।

मेरी चेतना ने मुझसे पूछा कि जो कुछ भी हो रहा था वह सच था और फिर उसने अपने आप ही जवाब दिया—मैं सपना नहीं देख रहा था। वह सचमुच थी। वह मेरे साथ थी। अंदर कहीं गहरे मैं

बहुत संतुष्ट महसूस कर रहा था, इतना खुशनसीब कि मेरी परी आखिर मेरे सामने आ ही गई।

हम एक-दूसरे में खोए हुए थे। 'शोनिमोनी,' मैंने उसके बहुत करीब जाते हुए उसके कान में कहा। उसकी साँसें अब भी तेज़-तेज़ चल रही थीं और वह कुछ नहीं कह सकी।

'यह कितना अच्छा समय है। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा है। तुम मेरे साथ हो...' मैं करीब-करीब उसके बिस्तर तक पहुँच गया।

'शोना,' उसने कहा और मेरा हाथ थाम लिया।

थोड़ी देर में उसने धीरे-से अपनी आँखें खोलीं और मेरी ओर देखकर मुस्कुराई। वह मुझे पास देखकर इतनी खुश लग रही थी। और वह मुझे कुछ देर तक उसी तरह से देखती रही।

उसने उसी तरह मुस्कुराते हुए अपनी भौंहें थोड़ी-सी उठाई और मुझसे पूछा, 'ये बताओ, तुम्हें इस समय कैसा लग रहा है, मेरे साथ होकर?'

मैंने अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया और उसके कान को प्यार से काटने लगा। मैंने कहा, 'मुझसे मत पूछो। मैं बता नहीं पाऊँगा। मैं बस एक बात कहना चाहता हूँ...' फिर मैं उसके कान में फुसफुसाया, 'मैं तुम्हारे प्यार में पागल हो गया हूँ,' कहकर मैंने अपनी ठोड़ी उसके कंधे पर टिका दी।

'आई लव यू टू,' उसने कहा और अपनी उँगलियाँ मेरी बाँह से कलाई तक फिराने लगी, फिर हथेली पर और फिर उँगलियों के बीच। उस समय मैं अपने आपको इतना भरा-पूरा महसूस कर रहा था। मुझे महसूस हुआ कि मेरी तरह वह भी उस पल को ऐसे जीना चाहती थी। मानो वह कभी खत्म ही न हो।

मैंने उसे कुछ देर अपनी बाँहों में भर लिया। मैंने उस समय तक जो रोमांटिक फ़िल्में देखी थीं उनसे यह जानता था कि उस तरह से अपनी प्रेमिका को अपनी बाँहों में भरने से अलग ही तरह का अनुभव होता है। लेकिन वह इस क़दर जादुई होगा मैंने ऐसा नहीं सोचा था। कुछ चीज़ों को समझने और उनमें विश्वास करने के लिए आपको उनका अनुभव करना होता है। और प्यार ऐसी ही एक चीज़ है। हुम्म...असल में यह एक चीज़ नहीं है, उससे कुछ बहुत ज्यादा।

हम फिर ख़ामोश हो गए थे, बस एक-दूसरे को महसूस कर रहे थे। लेकिन बात करना चाहता कौन था? ख़ामोशी अपने बेहतरीन रूप में बात कर रही थी।

लेकिन उस ख़ामोशी को भेदते हुए मेरे दिल में एक और ख़याल आया, अचानक...क्या मुझे उसको किस करना चाहिए? और इसके साथ ही दिल और दिमाग़ के बीच जंग छिड़ गई।

दिल-हाँ।

दिमाग़-नहीं।

दिल-क्यों नहीं? यह कितना अच्छा मौका है। मुझे लगता है मुझे करना चाहिए।

दिमाग़-अगर उसे अच्छा नहीं लगा तो? आखिर यह पहली मुलाकात ही तो है।

दिल-लेकिन क्या ऐसा मौका मुझे फिर मिलेगा? कल उसका पूरा परिवार हमारे साथ होगा। तब समय नहीं होगा। और अगले ही दिन मुझे फ़्लाइट पकड़नी है। मेरे पास अभी ही मौका है।

दिमाग़-मौका? पहले शीशे में खुद को देखो और अपने आपसे पूछो कि क्या तुम्हें पहले ही दिन ऐसा करना चाहिए?

दिल-बकवास बंद करो। मैं आगे बढ़ रहा हूँ।

दिमाग़-गुड लक।

दिल-धन्यवाद...

दिमाग़-एक सेकेंड इंतज़ार करो।

दिल-अब क्या?

दिमाग—तुम ठीक तो हो न? हो सकता है तुम पहले बाथरूम जाना चाहो...पता है, इससे फ़ायदा होता है।

दिल—बकवास बंद करो!

यह मेरे साथ हमेशा होता है। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं दिमागी तौर पर उतना मज़बूत नहीं हूँ, इसीलिए मेरे दिल की हमेशा जीत होती है। लेकिन ईमानदारी से कहूँ तो तो मुझे यह बहुत अच्छा लगता है।

मैंने गहरी साँस लेकर अपने फेंफड़ों में ऑक्सीजन भरा और उसकी तरफ़ करीब 180 डिग्री घूम गया। हम अब एक दूसरे के सामने थे। मेरी बाँहें अब उसको घेरे हुए थीं और उसके हाथ मेरे कंधों पर थे। मैंने उसकी आँखों में देखा।

मैंने उसको थाम लिया

सीधा उसकी आँखों में देखा

मैंने उसे कहा, मैं जो करता हूँ?

उसको अपने तरीके से करता हूँ

मैं जीवन में पहली बार कुछ महसूस करने के लिए तैयार था—मैं झूठ नहीं बोलूँगा—मेरे दिल की धड़कनें उस समय उससे भी अधिक तेज चल रही थीं जितनी तेज शुमाकर अपनी फेरारी चलाता है। मैंने उसकी आँखों में देखा और उसे अपने करीब खींच लिया।

मैंने उसे थाम लिया

सीधे उसकी आँखों में देखा

पलक झपकते ही, मैंने उसे करीब खींच लिया

मेरे होंठ चल रहे थे, लेकिन कुछ कहने के लिए नहीं

मैंने उसे कहा, मैं जो करता हूँ

उसको अपने तरीके से करता हूँ।

हाँ, यह मेरा अब तक का पहला किस होने वाला था....

लेकिन!

लेकिन मैं कितना चिढ़ता हूँ इस शब्द से—लेकिन।

लेकिन किस्मत ने बीच में दखल दी और गिरीश ने विलेन का रोल अदा किया, उसने खुशी सेल पर फोन किया। फोन के रिंगटोन ने मेरे सपनों को चूर-चूर कर दिया और इससे पहले कि मैं उसके होंठों तक पहुँच पाता, वह फोन का जवाब देना चाहती थी। और फोन उठाने से पहले उसने घड़ी की तरफ देखा।

‘हे भगवान! 9 बज गए,’ उसने कहा, (नहीं वह चीखी) और अपना फोन उठाने के लिए बढ़ गई।

‘यह गिरीश है,’ उसने फोन उठाते हुए कहा।

जब वह फोन पर बात कर रही थी, मैं दुखी होकर बेड पर गिर पड़ा, इस पर हैरत में डूबा था कि गिरीश की सेंस ऑफ टाइमिंग कैसी है। वह इतना पक्का कैसे हो सकता था? मैं अंदर ही अंदर जल-भुन रहा था।

इस बीच, वह फोन पर बात करती रही।

‘हाँ बोलो।’

‘हाँ, मुझे पता है कि हमें जाना है,’ उसने मेरी तरफ अपनी पीठ की और दरवाज़े की तरफ बढ़ गई जो अंदर से बंद था।

‘नहीं, हमें कुछ नहीं खाना है।’ उसने मेरी तरफ देखा और हाथ के इशारे से पूछा कि क्या मुझे भूख लगी है।’

‘ठीक है गिरीश, बस पाँच मिनट और यार।’ वह अपनी मुट्ठियों को खोलने और बंद करने लगी।

‘अरे मुझे पता है बाबा। मैंने कहा ना, हम मैनेज कर लेंगे।’ और उसने खुद को शीशे में देखा।

‘अब फोन रखोगे भी। प्लीज़?’ उसने शीशे की तरफ अपनी पीठ घुमाई।

‘अच्छा, हम वहाँ 5 मिनट में आ जाएँगे। ठीक है। बाय!’ और वह फोन काटते हुए मेरी ओर बढ़ी, वह घबरा उठी थी, अचानक।

‘शोना! मुझे जाना है। मुझे देर हो रही है। हो सकता है मम्मी का फोन आने ही वाला हो।’

‘हुम्म... ठीक है। फ़िक्र मत करो, तुम समय से पहुँच जाओगी। नीरू और गिरीश कहाँ हैं?’ मैंने उसे भरोसा दिलाने की कोशिश की और उससे भी बढ़कर उस आग को दिखाना चाहा जो मेरे अंदर अभी-अभी जल रही थी।

‘रिसेप्शन पर,’ उसने जवाब दिया।

‘ओके। मेरे ख़याल से तुम लोग उसी टैक्सी से वापस जा रहे हो,’ मैंने बेड से उठते हुए और आधी भरी हुई बोतल से पानी का घूँट भरते हुए पूछा।

‘हाँ, वही टैक्सी है,’ उसने उठकर एक बार फिर शीशे की ओर बढ़ते हुए जवाब दिया।

फिर उसका फ़ोन बार-बार बजने लगा। गिरीश था। इस बार मैंने फोन उठाया।

‘हे मेरे ख़याल से तुमको ज़ल्दी करनी चाहिए, बारिश होने लगी है,’ उसने कहा।

वैसे तो उस समय मुझे उससे नफ़रत हो रही थी, फिर भी मैंने कहा, ‘हाँ, बस एक सेकेंड। हम नीचे आ रहे हैं। वहीं मिलते हैं।’

हम कमरे से निकलने ही वाले थे कि वह एक बार फिर चीखी, ‘उफ़फ़! मैं तो भूल ही गई,’ उसने दरवाज़े के पास रखे बड़े प्लास्टिक बैग की ओर देखते हुए कहा, जो वहाँ नीरू रख गई थी।

उसने उसे ज़ल्दी से उठाया और कहा, ‘शोना, यह तुम्हारे लिए।’

‘इसमें क्या है?’

‘खोलो।’

मैंने वही किया जो उसने कहा। उसमें नीले रंग की धारियों वाली शर्ट थी जिसके ऊपर पार्क एवेन्यू का टैग लगा था और साथ में टाइयाँ भी थीं। एक काले रंग की थी जिसमें बीच में सफ़ेद धारियाँ बनी थीं, जो मुझे बहुत अच्छा लगी। एक लड़की ने मेरे लिए कुछ खरीदा... मेरी खुशी ने मेरे लिए कुछ खरीदा। और मुझे अचानक अपने ऑफिस के कुछ मैनेजरो की याद आई, जिनको मैं कभी-कभी देखता था कि अपनी पत्नियों के साथ खरीदारी करने जाते थे, जो उनके लिए शर्ट पसंद करती रहती थीं। मुझे अच्छा लगा, महसूस हुआ कि वे सब चीज़ें अब मेरे साथ हो रही थीं। नई चीज़ें, अलग चीज़ें ख़ूबसूरत चीज़ें।

‘मेरे लिए?’ मैंने उससे पूछा।

‘नहीं, टैक्सी ड्राइवर के लिए है,’ उसने मुझे चिढ़ाने की कोशिश की।

‘सच में? तुम्हारा उसके साथ भी चक्कर चल रहा था,’ मैंने भी उसे वापस चिढ़ाने की कोशिश की।

‘शट अप,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा लेकिन उसकी आँखें ऐसी लग रही थीं मानो मुझे डराना चाह रही हों। फिर उसने मुझे याद दिलाया। ‘मुझे भागना होगा। बारिश शुरू हो चुकी है।’

‘अरे हाँ, चलो चलते हैं,’ मैंने वह डिब्बा अपने पीछे बिस्तर पर रखा और कमरे से बाहर निकल गया। इस बार मैंने इसका खास ध्यान रखा कि उसकी बगल में ही चलूँ और उसने भी शरारती मुस्कान के साथ इस पर अपनी खुशी ज़ाहिर की।

हम लोग रिसेप्शन पर पहुँचने ही वाले थे कि मैं अपने आप पर काबू नहीं रख पाया और उससे पूछ ही लिया, ‘तुम जा क्यों रही हो खुशी? प्लीज़ मत जाओ...’ और इसके साथ ही मेरी आवाज़ और क़दम दोनों ही थम गए।

वह भी वहीं रुक गई और उसने मेरा हाथ अपने हाथों में लेते हुए कहा, ‘कुछ ही महीनों की तो बात है और फिर मुझे इस तरह से जाना नहीं पड़ेगा। मैं पूरी तौर पर तुम्हारी होऊँगी।’ उसके इन लफ़्ज़ों में इतना प्यार था कि मानो अब से वह हमेशा के लिए मेरा ध्यान रखने वाली थी।

‘मुझे पता है,’ उसने कहा।

‘अब चलें इससे पहले कि गिरीश का एक और फोन आ जाए?’

‘हाँ।’

रिसेप्शन पर हम फिर नीरू और गिरीश से मिले। वे चेहरे के हाव-भाव से खुशी को चिढ़ाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन जो वे सुनना चाहते थे उसे ध्यान हटाते हुए वह बस मुस्कुराती रही। होटल के बाहर खड़ी टैक्सी जाने से पहले हम लोग कुछ मिनट और वहीं खड़े रहे।

बूँदाबाँदी हो रही थी। वे बैठ गए और टैक्सी पीछे मुड़ गई। वे जा रहे थे और मेरी आँखें बायीं खिड़की की ओर देख रही थीं जहाँ से वह मुझे हाथ हिला रही थी। उस दिन उसकी आखिरी झलक देखने के लिए मैं लगभग सड़क के बीचोबीच आ गया। फिर सड़क के आखिरी सिरे से टैक्सी दायीं ओर मुड़ी और वह ओझल हो गई।

लेकिन ओह! मुझे वह हलकी बारिश अच्छी लग रही थी और मैंने ऊपर आकाश की ओर देखा, उस को धन्यवाद देने लिए।

वैसे वह दिन वहीं खत्म नहीं हुआ।

कुछ मिनटों बाद मैं अपने कमरे में था, अपनी जीत की खुशी में नाचता हुआ और यह गीत गुनगुनाता हुआ। पहला नशा पहला खुमार। ठीक फिल्म की तरह मैंने अपना बायाँ पैर बिस्तर पर रखा और दाएँ पैर से ज़मीन पर कूद गया, स्लो मोशन में। बस एक ही फर्क रहा, मेरी वह कूद उतनी सफल नहीं रही और मैंने टीवी के पास रखा शीशे का गिलास तोड़ डाला।

ज़मीन पर काँच के टुकड़े बिखर गए। और खामोशी...

मैंने शीशे के सामने खड़े होकर अपनी परछाई को डाँट लगाई, ‘देखो तुमने क्या कर डाला?’

अगले ही पल मेरी परछाई ने मुस्कुराते हुए फुसफुसाकर कहा, ‘नया प्यार है, नया इम्तिहान।’

मैं पूरी तरह से बेकाबू हो रहा था, यह सोचता हुआ कि मैं किस तरह से दुनिया को बताऊँ कि मैं इस समय इस धरती पर सबसे खुश आदमी हूँ। मेरे अंदर की भावना बाहर आने को छटपटा रही थी। और पता नहीं कि मैं उसको संभाल नहीं पा रहा था या बेहतर संभव तरीके से जश्न मना रहा था।

आखिरकार मैंने अपना सेल फोन उठाया और उसको कह डाला, ‘तुम बहुत सुंदर हो। एकदम परफेक्ट...मैं कितना खुशनसीब हूँ...’ मैं कहता रहा वह मुस्कुराते हुए सुनती रही।

वह अब भी टैक्सी में थी और मैं उसके आसपास खिलखिलाने की आवाज़ें सुन पा रहा था। उसने बस इतना कहा, ‘मुझे भी बहुत कुछ कहना है, लेकिन कह नहीं सकती। तुम्हें पता है न।’

हमने कुछ देर बातें कीं और फिर मैंने डिनर के लिए ऑर्डर किया जो 10 मिनट में आ भी गया। 10.30 तक मैंने खाना खा लिया और थोड़ी देर में होटल का अटेंडेंट कमरे में आया और खाली बर्तन

उठा कर ले गया।

‘खाना कैसा था सर?’ उसने पूछा।

क्या मैंने सचमुच स्वाद की तरफ ध्यान दिया था? स्वाद की बात तो छोड़िए, क्या मुझे यह भी ध्यान रहा था कि मैंने क्या कुछ खाया था? मैं तो बस उसके चेहरे के बारे में सोच रहा था, वह कैसा लग रहा था जब मैंने उसे अपनी बाँहों में भरा था, उसकी आँखें और उसकी खुशबू जो अब भी मेरी साँसों में महक रही थी।

लेकिन मैंने जवाब दिया, ‘अरे हाँ, बहुत अच्छा था।’ उसने प्लेटें उठाई और कमरे से बाहर निकल गया। 11.30 बज रहे थे और मैं सो नहीं सका था, जबकि मैं थका हुआ था, मुझ पर तो एक अलग-सी खुमारी छाई हुई थी, पहली बार। मैं प्यार में होने का जश्न मना रहा था। मुझे आसपास की सब चीज़ें सुंदर दिखाई दे रही थीं क्योंकि मेरे दिमाग में बस सुंदरता ही बस गई थी।

वह भी कुछ ऐसा ही महसूस कर रही थी, मुझे तब पता चला जब आखिर में उसने फोन किया। और हम लोग बहुत देर तक बातें करते रहे, साफ़-साफ़, हमारे अंदर जो डर थे उनको स्वीकार करते हुए; उसके बारे में बताते हुए कि जब हमने पहली बार एक-दूसरे को एयरपोर्ट पर देखा तो हमारे दिमाग में क्या चल रहा था, जब मैं आगे की सीट पर बैठा, उसे पीछे की सीट पर छोड़ते हुए तो से कैसा लगा, जब मैंने नीरू और गिरीश के जाने के बाद अंदर से दरवाज़े को बंद कर लिया और उसे बाँहों में भर लिया; हमारी खुशी, हमारे अंदर का वह जोश जो अब भी बाकी था। मुझे याद नहीं है ठीक से कि असल में हम कब सोए...

अगली सुबह मैं गिरीश का रास्ता देख रहा था। खुशी ने मुझे यह बताने के लिए फोन किया था कि गिरीश किसी काम से दिल्ली आ रहा है और फरीदाबाद लौटते हुए वह मुझे ले लेगा। मैं उसके परिवार से मिलने जा रहा था हालाँकि उसके डैड नहीं मिलने वाले थे जो उस समय पंजाब में थे, वहाँ के गुरुद्वारे में किसी धार्मिक प्रोग्राम में हिस्सा लेने गए थे।

उसका रास्ता देखते हुए मैंने कुछ अजीब तरह की हरकतें करते हुए अपना समय बिताया। आईने के सामने खड़े होकर मैं वह सब बोलने की प्रैक्टिस करता रहा जो उसके परिवार के सामने मुझे अलग-अलग मौकों पर बोलना पड़ सकता था। मैं चाहता था कि मेरे चेहरे के हाव-भाव और देह की भाषा ठीक रहे जिससे उसके परिवार पर मेरा इम्प्रेशन अच्छा जमे। इसलिए मैंने कुछ लाइनें बोलने का रिहर्सल भी किया:

‘नहीं, नहीं, मेरे घरवालों को इससे कोई परेशानी नहीं होगी अगर यह शादी के बाद भी अपने कैरियर की बनाये रखती है। बल्कि मैं तो शादी भी इसलिए ही कर रहा हूँ क्योंकि यह कैरियर पर ध्यान देने वाली लड़की है।’ (अपने हाथों के बेहतरीन हाव-भाव के साथ।)

‘पक्का नहीं है कि हम लोग नॉर्थ इंडिया की तरफ जल्दी रहने आएँगे या नहीं, लेकिन हाँ हम ऐसा सोच ज़रूर रहे हैं।’ (पूरे आत्मविश्वास के साथ।)

‘बिलकुल, मैं खाना बना सकता हूँ। आपको बताऊँ, काम के सिलसिले में विदेश जाने पर मैंने सीखा। (मुस्कराहट के साथ।)

...और इसी तरह की बातें।

सुबह के दस बजे रहे थे। कुछ और समय काटने के लिए मैं लाउंज की तरफ चला गया। जब मैंने कमरा छोड़ा तो मैं नर्वस हो रहा था। इतने सारे नए लोगों से एक साथ मिलने की नर्वसनेस। लाउंज में बैठकर मैंने अखबार पढ़ा और एक कप चाय पी, जो मेरा एकमात्र नाश्ता था। मुझे बिलकुल भूख नहीं लग रही थी, बल्कि मैं जोश और उत्साह से भरा हुआ था।

कुछ मिनट के बाद मेरे सेल फोन पर बीप की आवाज़ हुई। उसका एसएमएस था।

गिरीश वहाँ 10.15 बजे तक पहुँच जाएगा।

तैयार रहना और गुड लक।

अब से कुछ ही घंटों में तुम अपने होने वाले ससुराल में होओगे।

जैसे ही मैंने उसका मैसेज पढ़ा मेरे सेल फोन की स्क्रीन पर एक नया नंबर चमका। इस बार गिरीश था। मुझे बाहर बुला रहा था। मैंने जल्दी से अपनी चाय पी, अखबार को रैक पर वापस रखा और होटल से निकल पड़ा।

जल्दी ही, मैं क्वालिस गाड़ी में था, इसमें कोई शक नहीं कि उसके डैडी बड़े आदमी थे। फरीदाबाद के रास्ते में वह मुझे अपने डैड के बारे में बताता रहा, जो कुछ साल पहले एमएलए रह चुके थे। वह बताता रहा कि उनकी कितनी इन्वेस्टमेंट ज़मीन-जायदाद में है, शेयर्स में है। और मैं हामी भरता रहा—असल में मैं उसकी बड़ी-बड़ी बातों को ध्यान से सुन भी नहीं रहा था। मेरे दिमाग में तो यही चल रहा था कि अगले कुछ घंटों में किस तरह से सब कुछ होगा। मैं कभी किसी सास-ससुर में नहीं मिला था। जहाँ तक हमारे बाकी रिश्तेदारों की बात है, लड़के के परिवार वाले ही लड़की वालों के यहाँ जाया करते थे। लेकिन यहाँ चीज़ें कितनी अलग थीं। मैं बिलकुल अकेला था।

कई तरह के ख़याल मेरे दिमाग में आ-जा रहे थे...

मैं एकदम अकेला हूँ। उफ़फ़! मुझे तो विश्वास भी नहीं हो रहा है कि मैं ऐसा कर रहा हूँ, अपने ससुराल वालों से मिलने जा रहा हूँ।

क्या मुझे उसकी माँ से एक और बार यह कहने की ज़रूरत है कि मैं खुशी से प्यार करता हूँ?

भगवान का शुक्र है कि उसके डैडी घर में नहीं हैं।

मुझे थोड़ी परिपक्वता दिखानी चाहिए। एक ज़िम्मेदार नागरिक की तरह। उफ़फ़! नागरिक नहीं। एक ज़िम्मेदार आदमी जो खुशी को पूरी ज़िंदगी बहुत खुश रखेगा।

उसका घर कैसा होगा? मेरे घर से बड़ा?

क्या कोई मुझसे मेरी सैलरी के बारे में पूछने वाला है? क्या मुझे कुछ हज़ार बढ़ाकर बताना चाहिए?

उनके पास एक बड़ी गाड़ी भी है और मेरे पास सिर्फ़ बाइक-वह तो पल्सर भी नहीं है।

उफ़फ़! मैं यह सब क्या सोच रहा हूँ? बकवास!

‘क्या हुआ?’ गिरीश ने पूछा।

‘नहीं। नहीं। कुछ नहीं,’ मैंने कहा, इस पर आश्चर्य करते हुए कि क्या उसने मेरे ख़यालों को सुन लिया था।

‘हे हे ऐसा ही होता है,’ उसने मज़ाक करते हुए कहा।

‘इससे तुम्हारा क्या मतलब है कि ऐसा ही होता,’ मैंने अपनी बेचैनी को छिपाते हुए पूछा।

‘कुछ नहीं,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा और गाड़ी में म्यूजिक लगा दिया।

करीब एक घंटे में हम अपनी मंजिल पर पहुँच गए। रास्ते में, फरीदाबाद की एक बेकरी से पाइनेपल केक खरीदा, जिसके बारे में गिरीश का कहना था कि वह शहर की सबसे अच्छे बेकरियों में से एक थी।

‘लो आ गयी आपकी ससुराल,’ गिरीश ने कहा।

‘अब लड़के! यही है,’ मैंने आपने आपसे कहा।

मैंने गहरी साँस ली और गाड़ी से उतर गया और सामने सफ़ेद रंग के घर को देखने लगा। फिर मैंने काले दरवाज़े को खोला और अंदर घुस गया। वहाँ कुछ पौधे लगे थे, जिनमें फूल खिले हुए थे। टाइल

वाला बरामदा था जिसका आधा हिस्सा कवर किया हुआ था। मैंने सामने के दरवाज़े को खटखटाया, जबकि गिरीश गाड़ी बंद करके आया।

किसी ने दरवाज़ा खोला और मैं यह जानने के लिए बेचैन था कि वह कौन था।

उसकी माँ थीं। एक बेहद साधारण और अच्छे सूट में। वह मेरी माँ की तरह ही साधारण दिखाई दे रही थीं। दरवाज़ा खोलते हुए वह मुस्कुराई और मुझे अंदर आने के लिए कहा।

‘सत श्री अकाल,’ मैंने कहा और उनके पाँव छूने के लिए झुक गया।

‘सत श्री अकाल बेटा जी,’ उन्होंने मेरा माथा चूमते हुए कहा।

उसकी माँ मुझे देखकर बहुत खुश हुई। आखिरकार, मैं उनकी नजरों के सामने था। वह पहली बार उस शख्स को देख रही थी जो उनकी प्यारी बेटी को उनसे दूर ले जाने वाला था। और उन आँखों में अपनी बेटी के लिए बहुत सारी उम्मीदें थीं, बहुत सारी चिंताएँ थीं।

उन्होंने मुझे ड्राइंग रूम में बुलाया। गिरीश भी मेरे पीछे-पीछे उनके पाँव छूते हुए आया।

‘बैठो बेटा,’ उन्होंने हम दोनों से कहा।

जब हम लोग अपने आपको सहज करने की कोशिश कर रहे थे, उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं ठीक तो हूँ और मुझे रास्ते में कोई दिक्कत नहीं तो नहीं हुई। फिर वह यह कहते हुए कमरे से बाहर गई कि मैं अभी आई। शायद वह किचन में गई हों।

उधर ड्राइंग रूम में मैं अपने आपको अपनी होने वाली ससुराल के माहौल के अनुसार होने की कोशिश कर रहा था। मुझे कमरे का माहौल अच्छा लगा: कमरे के एक कोने में सेंटर टेबल के चारों ओर सोफे और कुर्सियाँ लगी हुई थीं; दूसरे कोने में टीवी सेट रखा था और कैबिनेट में बहुत सारे अलग-अलग तरह के सजावट के सामान, नकली फूलों के गुलदान। एक कोने में मनी प्लांट भी था, सोफे पर कुर्सियों के बीच दीवार पर पेंटिंग टंगी थी जिसके नीचे दाईं ओर बनाने वाले की साइन थी। मेरे सामने एक बहुत बड़ी, लगभग एक मीटर लंबी पेंटिंग में एक राजकुमार की बरात का चित्र बना था, जो घोड़े पर बैठा था। उसकी दुल्हन डोली में बैठी थी और कुछ लोग शहनाई बजा रहे थे।

‘आपको कैसा लग रहा है?’ गिरीश सोफे की दूसरी ओर से फुसफुसाया, जो कुछ भी हो रहा था वह उसका मज़ा उठा रहा था।

‘मैं अच्छा हूँ,’ मैंने फुसफुसाते हुए जवाब दिया।

‘बढ़िया,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा।

कुछ देर बाद कमरे में कोई आया। एक सुंदर लड़की जिसने काली जींस और हलके हरे रंग की टॉप पहन रखी थी, उसके हाथ में ट्रे था, जिसमें बहुत सुंदर गिलासों में सॉफ्ट ड्रिंक रखे हुए थे। वह नीरू थी। पिछले दिन मैंने ध्यान नहीं दिया था कि वह कितनी सुंदर थी। लेकिन कैसे देख सकता, जब उससे भी सुंदर उसकी बहन मेरे सामने थी। खैर, मैं कुछ सोचकर खुश हुआ, ‘सुंदर साली भी है।’

तो, इस तरह से सब कुछ शुरू हुआ। कोल्ड ड्रिंक और नाश्ते का ढेर सारा सामान, ड्राई फ्रूट और मिठाइयाँ। नीरू और उसकी माँ हमारे साथ बातचीत करने लगीं। उसकी माँ के सवाल थे : उड़ीसा में मेरा परिवार कैसा है? मैं कितने दिनों के लिए विदेश जा रहा हूँ? और इसी तरह के बहुत सारे...कभी-कभी वह अपने परिवार के बारे में बात करतीं, जिसका मतलब था कि मैं एक बार और वह सब जान लूँ जो कुछ मैं पहले से जानता था।

दीपू असम में एक मल्टीनेशनल में काम करता था। पुष्कर और अमृत (अमी दी) आधे घंटे के अंदर आने वाले थे।

पहले से ही मेरे और खुशी में बहुत सारी समानताएँ थीं। और अब मैंने देखा कि हमारे परिवारों में भी बहुत कुछ समानताएँ थीं। दोनों ही धार्मिक किस्म के थे और साधारण ढंग से रहने वाले भी।

उसकी माँ तो हर तरह से मुझे अपनी माँ जैसी ही लग रही थीं।

बातचीत के दौरान में अपनी नज़रें उठाता और नीरू की तरफ देखता, मानो ख़ामोशी से उससे पूछ रहा होऊँ कि उसकी बड़ी बहन कहाँ थी।

‘थोड़ा धीरज से काम लीजिए। वह तैयार हो रही है। सिर्फ आपके लिए ही।’ उसने जवाब दिया और मुझे देखकर हँसने लगी। फिर उसने मेरे सामने एक प्लेट बढ़ाई, ‘एक समोसा लीजिए।’

‘हाँजी बेटा लो न,’ उसकी माँ ने इसरार किया।

और यही सब चलता रहा—

काजू ले लो।

‘थैंक्स।’

‘यह आलू भुजिया ले के देखिए।’

‘नहीं प्लीज़, प्लीज़। बस बस बस! अब बहुत हो गया...’

इतना खाने से मुझे लग रहा था कि या तो कब्जियत हो जाएगी या फिर पेट तो पक्का ही ख़राब हो जाएगा।

करीब 20 मिनट हो चुके थे और उस लड़की का कोई अता-पता नहीं था जिसके लिए मैं यहाँ आया था। कमरे में हम चार आपस में बातें कर रहे थे। बीच-बीच में, नीरू और गिरीश एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा उठते थे।

अचानक अंदर से एक आवाज़ आई, ‘नीईईरू!’

‘लो हो गई तैयार महारानी,’ नीरू ने अपनी कुर्सी से उठकर खुशी की ओर जाते हुए कहा।

कुछ ही पलों बाद मैंने अपनी तरफ आती दो अलग-अलग क़दमों की आवाज़ें सुनीं। मेरी परी सम्मोहित कर देने वाले सूट में थी: गुलाबी रंग की कमीज़, आसमानी रंग की पैजामी और दोनों से मिलते रंग की चुन्नी जिस पर गोटे लगे थे। चमकते हुए होंठ और चमकदार इयररिंग्स। उसने मेरी तरफ़ देखा और कहा, ‘हाय!’

मैंने भी जवाब में ‘हाय’ कहा। मैं आश्चर्य में था कि वह कितनी सुंदर लग रही थी। हमारे अंदर अब एक अलग तरह की हिचक थी, सबके सामने बातें करने की। फिर भी, हम आगे बढ़े।

उसने अपनी आँखों से पूछा कि वह कैसी लग रही थी।

और मैंने कहा, ‘तुम ग़जब लग रही हो।’

‘थैंक यू,’ उसने कहा और हमारे बीच शामिल हो गई।

वह ठीक मेरे सामने बैठी थी। वह इस देशी ड्रेस में कितनी सुंदर लग रही थी। मैंने यह सोचा कि कमरे में बैठा हर आदमी कुछ घंटों के लिए ग़ायब हो जाए, जिससे हम एक-दूसरे को देखते रह सकें।

हम सब बात करने लगे। बीच-बीच में वह अपनी चुन्नी ठीक कर लेती थी, जो उसके बाएँ कंधे से सरक रही थी। अपनी मम्मी के कहने पर उसने कुछ काजू उठा किए, ढोकला और रसगुल्ला को उसने हाथ नहीं लगाया क्योंकि उससे उसकी लिपस्टिक खराब हो जाती, बीच-बीच में यह देखने के लिए वह मुझे देख लेती कि सब लोगों के बीच मैं उसको किस तरह से देख रहा था और उसने चुपचाप मुझसे मिन्नत की कि मैं उसके ऊपर से अपनी आँखें हटा लूँ। लेकिन मर्द तो हमेशा मर्द ही होते हैं।

उसने मेरे ऊपर से अपना जादू कम करने के लिए मुझसे बातचीत शुरू कर दी।

‘कल तुम्हारी फ्लाइट किस समय है?’

‘सुबह 7.30 बजे।’

‘तो फिर तुमको करीब 4.30 बजे होटल छोड़ना पड़ेगा?’

‘हाँ, मुझे कल सुबह जल्दी उठना होगा।’

और हम सब कुछ देर तक बातचीत करते रहे। मैं तब तक बहुत सहज हो चुका था, सिवाय इस डर के कि कहीं कुछ और खाने के लिए न कह दिया जाए। गिरीश जाना चाहता था। जैसे हमने एक गाड़ी के आने की आवाज़ सुनी वह कोच से उठ खड़ा हुआ।

‘हे अमी दी आ गई,’ नीरू ने लगभग गाते हुए कहा और दरवाज़े की तरफ दौड़ कर झाँकने लगी।

‘और पुष्कर?’ मैं एक और मर्द के आने के बारे में पक्का कर लेना चाहता था।

‘उसके साथ ही तो आई होंगी,’ गिरीश बोला।

और कुछ ही सेकेंड में पुष्कर और अमी दी अंदर आ गई, डोर मैट पर अपने जूते पोंछते हुए। सब उनके स्वागत में ऐसे उठ खड़े हुए जैसे उनसे मिलने के लिए ही जुटे हों वहाँ पर। सबको देखकर मैं भी उठ खड़ा हुआ।

‘वाह! घर के दूसरे दामाद का कितनी गर्मजोशी से स्वागत हो रहा था। हुम्म...मैं अगला हूँ। ज़बरदस्त कंपीटिशन है।’ मैंने अपने आपमें सोचा।

काले रंग के टॉप और नीले रंग की जींस में अमी दी किसी प्रोफेशनल की तरह लग रही थीं। 21वीं सदी की औरत। उनकी जींस उस समय के अजीब फैशन के अनुसार थी—जिसमें लड़कियाँ अपनी जींस को टखनों से कुछ ऊपर मोड़कर रखती थीं, जिससे जींस का अंदर का हलका रंग दिखाई देता था। मुझे समझ में नहीं आता था कि इसमें आखिर ऐसा क्या है। हम लोग स्कूल के दिनों में ऐसा तब करते थे जब हम कीचड़ में फुटबॉल खेलते थे। उनके चश्मे की फ्रेम स्टाइलिश थी और पीछे बाल बाँधने का उनका अंदाज़ भी कुछ अलग था—एकदम मॉडर्न।

कुल मिलाकर अमी दी आज की लड़की लग रही थीं।

जो चीज़ मुझे उनमें सबसे अच्छी लगी वह थी सफ़ेद और लाल रंग की चूड़ियाँ, जिससे उनके दोनों हाथ भरे हुए थे। ज़ाहिर है, इससे पता चलता था कि उनकी शादी उसी साल हुई थी। रीति-रिवाजों के अनुसार, जिस लड़की की नई-नई शादी हुई हो उसके हाथ में चूड़ियाँ कम से कम एक साल तक रहनी चाहिए।

पुष्कर मुझे बहुत साधारण लगा। हाथ मिलाने और हाय-हेलो के बाद सब लोग सोफे और कुर्सियों पर बैठ गए। बातचीत फिर शुरू हो गई।

‘आप कैसे हैं रविन?’ पुष्कर ने पूछा।

‘मैं ठीक हूँ, थैंक्स। आप लोग कैसे हैं?’ मैंने दोनों की ओर देखते हुए कहा।

‘बहुत अच्छे। और आपके भाई, मम्मी-पापा कैसे हैं?’

‘वे भी बढ़िया हैं,’ मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

इस तरह हमारी बातचीत कई मुद्दों को लेकर चल पड़ी। मेरे ऑफिस, उनके ऑफिस, खुशी के ऑफिस, उन अलग-अलग जगहों के बारे में बातचीत हो जहाँ हम गए थे। यह मेरे लिए मौका था कि मैं अपनी विदेश यात्राओं के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर बोलूँ, दिल्ली की ट्रैफिक, कैट, अगला इंडियन आइडल और भी पता नहीं क्या-क्या...

और फिर नाश्ते का अगला दौर शुरू हुआ और मुझे नए आने वालों का साथ देना पड़ा...मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरा पेट फट जाएगा।

इस बीच गिरीश के लिए एक और फोन आया और वह जिस तरह से क्वालिस की तरफ दौड़ा हम समझ गए कि उसके डैडी का था। मैं उसे बस थैंक्स कह पाया क्योंकि उसने यहाँ पहुँचने में मेरी मदद की और उससे भी बढ़कर इतनी सारी महिलाओं के बीच पुष्कर के आने से पहले वही एक मर्द था। वह चला गया।

बातचीत कुछ ही देर में खूब जमने लगी और मुझे यह समझने में आधा घंटा भी नहीं लगा कि पुष्कर इच्छा इनसान है। वह बहुत व्यावहारिक लगता था। और वहाँ सारी महिलाएँ उसके इस पहल को लेकर बड़-चढ़कर बोल रही थीं—

‘पता है, जीजू बहुत अच्छा खाना बनाते हैं। उन्होंने खाना बनाना बहुत अच्छी तरह सीखा है,’ नीरू ने ऐसे गर्व से कहा मानो उसके जीजू स्टार प्लस पर एक कुकरी शो पेश करने जा रहे हों। लेकिन, हाँ, अगर कोई मर्द बढ़िया खाना बनाना जानता हो और यह भी जानता हो कि डाइनिंग टेबल पर किस तरह से चम्मच-कांटे सजाते हैं तो वह इस धरती की 99.99 प्रतिशत लड़कियों के लिए ‘ड्रीम मैन’ होता है। (बल्कि मुझे पक्के तौर पर लगता है कि कुछ अन्य ग्रहों पर भी, अगर वहाँ भी लड़कियाँ हों।)

नीरू ने जैसे ही यह टॉपिक छेड़ा, दो मिनट भी नहीं लगे और पुष्कर की वह महान हॉबी मेरे लिए बहुत बड़ा खतरा बन गई—खुशी की मम्मी ने मेरे ऊपर एक बाउसर फेंका। ‘बेटा आप खाना बना लेते हो?’ उन्होंने बड़ी विनम्रता से पूछा, लेकिन दुर्भाग्य से बहुत उम्मीद से भी।

खामोशी। दाँतों के बीच किसी के काजू चबाने की आवाज़ भी सुनी जा सकती थी।

सब को मेरे जवाब का इंतज़ार था। ऐसा लगा मानो भारत-पाकिस्तान का क्रिकेट मैच देखते हुए उन्होंने यह सुन लिया हो कि तेंदुलकर ने बाल को हवा में ऊपर मार दिया हो और वे इसका इंतज़ार कर रहे हों कि वह छक्का हुआ या कैच।

अपने गिलास में कोक के बुलबुले देखते हुए मैंने सोचा, ‘क्या अगला सवाल आप यह पूछेंगे कि क्या आप उसकी सलवार-कमीज़ पर आयरन कर लोगे?’ या ‘अरे कुछ गाना सुनाओ न?’ ऐसा ही होता है जब आप ऐसी जगहों पर अपने मम्मी-पापा के बिना आते हैं। सामने वाले आपको इतने आराम से अलग-अलग मोर्चों पर परखना चाहते हैं, कि आप उन को न भी नहीं कह सकते।

मैं मन ही मन यह मनाता हुआ अपने सेल फोन की ओर देखते हुए कोई जवाब देने के बारे में सोच रहा था, कि यह बज उठे और मैं उन सवालों से बच जाऊँ जिनका मुझे सामना करना है। लेकिन वह गंदा गैजेट तो जैसे गलत मौकों पर बजने के लिए ही बना था—जैसे पिछली शाम, जब वह किस हो सकता था—लेकिन तब कभी नहीं बजता जब मुझे उसकी सबसे अधिक ज़रूरत महसूस होती थी।

आखिरकार, घबराहट में कुछेक बार थूक निगलने के बाद मैंने उनको वह कहना शुरू किया जो वह सुनना चाहते थे।

‘आह, उम्...हाँ, बना सकता हूँ, अधिकतर चीज़ें तो मैं ठीक-ठीक ही बना लेता हूँ। लेकिन मैं पराँठे अच्छा बनाता हूँ...’

मैंने अभी अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि उसकी प्यारी और भोली माँ ने मेरे जवाब से खुश होते हुए पूछा, ‘कौन-कौन से पराँठे?’

‘अब यह तो कुछ ज्यादा ही हो गया!’ वैसे मैंने ऐसा कहा तो नहीं, लेकिन मैं यही सोच रहा था कि मुझसे यह उम्मीद की जा रही है कि मैं पूरा मेनू लिस्ट पढ़कर सुनाऊँ जैसे बुर्ला के पंजाबी ढाबे के पप्पू अंकल सुनाते हैं।

लेकिन मजेदार बात यह है कि अगले ही पल मेरे चेहरे पर मुस्कराहट आ गई। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर से किस तरह के सवाल पूछे जा रहे थे। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे इस तरह के इंटरव्यू का भी सामना करना पड़ेगा, अपने किसी अजीबोगरीब सपने में भी नहीं। दूसरी तरफ़ मैं खुश था कि मुझसे इस तरह के अलग तरह के सवाल पूछे जा रहे थे। मैंने अपने आपसे कहा, ‘ये कोई खराब सवाल नहीं हैं, बल्कि उत्तेजना पैदा करने वाले सवाल हैं। इसलिए आत्मविश्वास के साथ जवाब दो।’

और मैंने आगे बढ़कर जवाब दिया, 'मम्मा, मैं कई तरह के बना सकता हूँ, आलू के, प्याज के, जाड़ों में कभी-कभी गोभी और मूली के भी।'

'वाह, रविन, यह तो बहुत बढ़िया है। तुमने यह सब कब सीखा?' पुष्कर ने पूछा। उसको बहुत दिलचस्पी हो रही थी।

और मैंने उससे कहा, 'जब मैं बेल्जियम में आठ महीने के लिए था। मैं वहाँ अकेला रहता था और मुझे खुद ही खाना बनाना पड़ता था। उससे पहले मैंने किसी तरह का खाना नहीं बनाया था। आवश्यकता आविष्कार की जननी है, आप जानते हैं न...'

कोक का गिलास टेबल पर रखते हुए मैंने उनको अपने पहले दिन के किचन का अनुभव सुनाया, जहाँ मैं मिक्स वेज जैसा कुछ बनाना चाहता था, लेकिन मैंने गरमा-गरम मसालेदार रंगीन घोल बनाया, जिसमें सब्जियाँ तैर रही थीं, उनमें से कुछ तो इतनी उबल चुकी थीं कि उनका भुरता बन चुका था और वे बर्तन के नीचे बैठ गई थीं। उनमें से कुछ तो इतनी उबल चुकी थीं कि उनका भुरता बन चुका था और वे नीचे बैठ गई थीं। और जैसी कि उम्मीद थी, मेरे खाना बनाने के पहले दिन के अनुभव को सुनकर सब हँस पड़े। मेरी खुशी मुँह में सॉफ्ट ड्रिंक भरे किसी तरह अपनी हँसी को दबाने की कोशिश कर रही थी। पुष्कर खूब जोर से हँसने लगा और उसने तो लगभग ताली भी बजा दी। यह सब अच्छा लगा।

और जल्दी ही दो बज गए। किसी को इसका अंदाज़ा नहीं हुआ कि कितना समय गुज़र गया या कम से कम मुझे तो नहीं ही।

'खाना तैयार है।' नीरू ने घोषणा की।

अब तक मैं अपने पेट में राजमा के लिए जगह बना चुका था जिसके बारे में खुशी ने कहा था कि उसने मेरे ही लिए बनाया था। वह जानती कि वह मेरा पसंदीदा है।

हम सब डाइनिंग टेबल की तरफ बढ़े, कुर्सियाँ खींचीं और बैठ गए। और वह ठीक मेरे सामने बैठी। मैं अपनी फ्यूचर वाइफ़ की ओर देख रहा था, सोच रहा था कि कुछ महीनों बाद हम लोग अपना लंच, डिनर और ब्रेकफास्ट सब साथ-साथ करेंगे और वह भी एक ही प्लेट में।

इन्हीं ख्यालों में डूबा मैंने अपने सामने कटोरी का ढक्कन हटाया।

'नीरू, तुम भी आ जाओ,' अमी दी ने कहा, कुछ सलाद लेते हुए। डाइनिंग टेबल अलग-अलग तरह के डिशों से भरा हुआ था: पनीर, रायता, आलू-गोभी, सलाद, चावल का बर्तन, चपाती से भरा कैसरोल और मेरा पसंदीदा रायता। बर्तन नए दिख रहे थे, उस तरह के जैसे खास-खास मौकों पर निकाले जाते हैं।

डाइनिंग टेबल पर खाना बढ़ाने में सब एक-दूसरे की मदद कर रहे थे। मैं टेबल के दूसरे सिरे से खाना निकालने का चम्मच लेने की कोशिश कर रहा था कि खुशी ने मुझे रोका और आहिस्ते से कहा, 'रुको, मैं देती हूँ।'

उसने एक हाथ में चम्मच पकड़ा दूसरे हाथ में बर्तन और मुझे खाना परोसा। फिर, उसने मेरी प्लेट में कुछ सलाद रखे और मुझसे पूछा, 'चपाती या चावल?'

मैं अपनी केयरिंग दिलरुबा की तरफ देख रहा था, जो खाना लेने में मेरी मदद कर रही थी। मैं अंदर ही अंदर मुस्कुरा रहा था, शायद बाहर से भी, और मैंने अपने दिल में उससे पूछा, 'तुम मेरा हमेशा इसी तरह खयाल रखोगी, ठीक?'

'चपाती या चावल?' उसने फिर पूछा, इस बार भौंहें चढ़ाते हुए।

लेकिन उस समय भूख किसको लगी थी? मेरा पेट तो उसके प्यार और दुलार से भी भर चुका था। फिर भी मैंने कहा, 'चपाती।'

अपने खूबसूरत हाथों से उसने कैसरोल खोला और उससे निकलती भाप से बचने के लिए ज़ल्दी से अपने हाथ वापस खींच लिए। उसकी चूड़ियाँ खनखना उठीं। फिर, तनी उँगलियों से उसने दो चपातियों को बीच से मोड़ा और फिर बड़े सलीके से मेरी प्लेट में रख दिया। उसने मेरी तरफ़ देखा और मुस्कुराई। मैं चाहता था कि वह मुझे अपने हाथों से खिलाए ताकि मैं उसकी खूबसूरत उँगलियों को चाट सकूँ...अचानक मेरी उससे शादी करने की इच्छा हुई और वह भी जल्दी, जिससे मैं उसकी गोद में सो सकूँ। जिससे मैं उसके हाथों से खाना खा सकूँ।

सब खाना खाने लगे। मैंने जैसे ही पहला निवाला लिया मैं जानता था कि वे उत्सुक आँखें मुझसे कुछ सुनना चाहती थीं। मैंने उसकी हसीन आँखों में देखा और उससे कहा कि मुझे वह बहुत अच्छा लगा जो उसने मेरे लिए बनाया था। जब मैंने कुछ भी खाने से पहले राजमा लिया तो वह मुस्कुराई और उसके चेहरे पर संतोष का भाव था। मेरे खाना शुरू करने के बाद उसने अपना पहला कौर लिया।

हम खाने में लग गए और बातचीत सिमटकर खाना और खाना बनाने वालों की तारीफ़ को लेकर होने लगी। मुझे याद आता है कि जब हमने खाना खत्म किया तब पौने तीन बज चुके थे। लज़ीज़ खाना, मीठा और फल खाकर मेरा पेट बुरी तरह भर चुका था।

बातचीत फिर सोफे और कुर्सियों पर बैठकर होने लगी। इस बार हँसी-मज़ाक़ का दौर चल पड़ा—अच्छे चुटकुले, बुरे चुटकुले और ऐसे चुटकुले जो चुटकुले थे भी नहीं। हम नौजवानों के साथ उसकी माँ भी हँस रही थीं, ज़ोर-ज़ोर से। और, कभी-कभी मैं अलग तरह की मुस्कुराहट को महसूस करता था। ऐसी मुस्कान जो उनके होंठों पर नहीं उनकी आँखों में होती थी। ऐसी मुस्कान जिसने मुझे बताया कि उनको लगता है कि मैं एक बेहतर इंसान हूँ। एक ऐसी मुस्कान जिसने यह भेद खोला कि वे इसके लिए तैयार थीं कि जल्दी ही मुझे अपनी बेटी दे दें, पूरी जिंदगी के लिए। ऐसी मुस्कान जिसमें मेरे लिए बेहतर भविष्य के लिए दुआएँ छिपी थीं। और कहीं न कहीं, वह मुस्कान मेरे कानों में उनके दिल की बात भी फुसफुसाकर कह जाती थी, ‘इसके साथ मैं तुमको अपना दिल दे दूँगी। उसका ध्यान रखना...हमेशा।’

शाम के 4 बजे हमने चाय पी। हम का मतलब है मैं और पुष्कर, क्योंकि बाकी लोगों ने चाय नहीं पी। हाँ, उस पूरे परिवार में कोई भी चाय नहीं पीता है। विचित्र परिवार है, पुष्कर और मुझे ऐसा ही महसूस हुआ।

इस बीच, खुशी अपने कमरे में गई और अगले ही पल मुझे अपने सेल पर उसका एसएमएस देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। मैं सोच रहा था कि उसने ऐसा क्यों किया, मैंने मैसेज पढ़ा।

मैं दो मिनट में कॉल करूँगी। तुम बाहर जाओ

बरामदे में कॉल रिसीव करने के लिए।

किसी को पता नहीं चलने देना कि मैं फोन कर रही हूँ।

और उसने मुझे फोन किया।

मैंने ऐसे नाटक किया जैसे मेरे कॉलेज के किसी दोस्त का फोन हो और मैं उससे बात कर रहा होऊँ, मैं बरामदे में गया और उसके दूसरे कोने में जाकर उससे पूछा, ‘तुम कहाँ से फोन कर रही हो?’

‘बाथरूम,’ उसने जवाब दिया।

‘अच्छा, तो वहाँ तुम क्या कर रही हो...?’ मैंने शरारती अंदाज़ में पूछा।

‘शट अप! अब मेरी बात सुनो,’ उसने कहा, कुछ समझाने की कोशिश करते हुए।

और अगले मिनट मैंने यह सब कहा:

‘क्या?’

‘तुम पागल हो गई हो?’

‘वाह ।’

‘क्या तुमको पक्का यकीन है कि तुम ऐसा कर पाओगी?’

‘हाँ! हाँ! मुझे लगता है कि हम कर पाएँगे...?’

‘अरे नहीं! मैं इसके ऊपर यकीन नहीं कर सकता । तुम्हारे अंदर इतनी हिम्मत है । मुझे ऐसा करना बहुत अच्छा लगेगा...’

‘मज़ेदार! लेकिन क्या होगा अगर हम पकड़े गए?’

‘नीरू? वह हमारी मदद करेगी? यह तो बढ़िया है । तुम्हारी छोटी बहन तो बहुत अच्छी है यार ।’

‘अच्छा । ठीक है । अगले आधे घंटे में ये करते हैं । तुम मेरे लिए टैक्सी वाले को अभी फोन कर सकती हो ।’

उसके फोन से उत्सुक और सनसनाया हुआ मैं ड्राइंग रूम में वापस लौटा । वहाँ सब कुछ पहले जैसा ही था—माहौल, बातचीत और लोग—लेकिन अचानक से मैं यह चाहने लगा कि समय तेज़ी से बीत जाए । मैं प्लान को लेकर जोश में था, जिसके बारे में मैंने और खुशी ने अभी-अभी बात की थी । मैं यही सोच रहा था कि अगर हम सचमुच ऐसा कर सकें ।

अपने प्लान पर काम करने के लिए हम लोग अमी दी और पुष्कर के जाने का इंतज़ार कर रहे थे । थोड़ी-थोड़ी देर में हममें से कोई या तो दीवार घड़ी की ओर देखता या अपनी कलाई घड़ी की ओर खामोशी के उन कुछ पलों में उनको लग रहा था कि हम लेट हो रहे थे । और...

कमाल हो गया!

पुष्कर उठा और उसने अमी दी की ओर देखते हुए कहा, ‘मुझे लगता है हमें देर हो रही है ।’

यह सुनते ही नीरू ने मुझे आँखें चमकाते हुए देखा, और मैंने खुशी की ओर, हम तीनों आगे के लिए तैयार थे ।

4.12 शाम ।

‘मम्मा! मुझे आईएमएस के लिए जाना है,’ नीरू ने कहा, एक बच्चे की तरह जो असल में कुछ नहीं करना चाहता हो ।

‘आईएमएस? अभी? लेकिन तुम्हारी तो शाम को क्लास नहीं होती है न?’ उसकी माँ ने पूछा ।

‘आज एक स्पेशल क्लास है । खुशी की भी क्लास है । उससे पूछिए...’

‘तुमको भी जाना है?’ मम्मा ने खुशी से पूछा ।

‘क्लास तो है, लेकिन अगर आप नहीं कहेंगी तो मैं नहीं जाऊँगी,’ खुशी ने जवाब दिया ।

इस बीच मैंने जल्दी से अपनी लाइनें कह दी, ‘नहीं, नहीं मुझे लगता है कि तुम लोगों को क्लास के लिए जाना चाहिए । बल्कि मुझे भी जल्दी जाना है । मैं उसे इग्नोर नहीं कर सकता ।’

पुष्कर ने कहा, ‘कैसे जाओगी लड़कियों? क्या मैं तुम लोगों को छोड़ दूँ?’

खुशी ने तुरंत जवाब दिया, ‘नहीं पुष्कर आप लोग जाइए । आईएमएस उसके ठीक उलटी तरफ़ है जिधर आप लोग जा रहे हैं । हम लोग चले जाएँगे ।’

4.15 शाम

सब कुछ हमारे प्लान के मुताबिक ही हो रहा था कि पुष्कर ने मुझसे पूछा, ‘रविन, आप कैसे दिल्ली जाएँगे?’

‘अरे हाँ, मैंने टैक्सी के लिए फोन किया था । मुझे लगता है कि वह बाहर खड़ी है,’ मैंने उसको जवाब दिया और यह देखने के लिए दरवाज़े की ओर बढ़ा कि बाहर टैक्सी खड़ी है या नहीं ।

अपनी बहनों की ओर देखते हुए अमी दी ने कहा, 'तब तो रविन तुमको आईएमएस छोड़ सकता है। वह इसके रास्ते में है।'।

और हम यही तो सुनना चाहते थे।

अमी दी ने मेरी तरफ देखा और मैं ऐसे बना रहा जैसे कि मैं कुछ भी नहीं जानता होऊँ।

'अच्छा, आईएमएस मेरे रास्ते में आएगा? फिर तो मैं आप लोगों को छोड़ सकता हूँ।' मैं उनकी बहनों की तरफ मुड़ा। अपनी मुस्कुराहटों को रोकना मुश्किल हो रहा था, खासकर तब जब सब कुछ प्लान के मुताबिक ही चल रहा था।

'आपको कोई दिक्कत तो नहीं होगी न?' नीरू ने पूछा।

और अपने दिल में मैं कह रहा था कि अब रहने भी दो, ज़रूरत से ज़्यादा मत करो। मैंने ज़ोर से कहा, 'मुझे क्या दिक्कत हो सकती है, दो सुंदर लड़कियों को लिफ्ट देने में? मुझे तो अच्छा ही लगेगा।' मैंने सबकी ओर देखा और मुस्कुराने लगा।

खुशी कमरे की तरफ भागी और 10 मिनट में आई, कपड़े बदलकर। काले रंग के टॉप और सफ़ेद रंग की जींस में वह गज़ब की सुंदर लग रही थी। वह सैंडल ढूँढते हुए एक कमरे से दूसरे कमरे में भागने लगी। वह अपनी ही तैयारियों में बिजी थी, इसलिए उसने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया।

'चलो मैं तुमको अपना कमरा दिखाती हूँ,' नीरू ने कहा और मुझे अपने कमरे में ले गई जिसमें वह खुशी के साथ रहती थी। उसने दरवाज़े से अपने हाथ के इशारे से मुझे दिखाते हुए कहा, 'यह है हमारा कमरा, मेरी आँखें दाएँ से बाएँ की ओर घूमने लगीं। जब वह कमरे में रखी अलग-अलग चीज़ों के बारे में बताने में लगी थी, मैं कुछ और ही देख रहा था। मेरी आँखें बेड पर गई जहाँ कुछ ऐसी आँखों को खींचने वाली चीज़ रखी थी। गुलाबी और आसमानी रंग का सूट जो उस लड़की ने कुछ ही देर पहले खोला था, बिस्तर पर पड़ा था, उल्टा। वह बिस्तर के ऊपर फैला हुआ था, जिसे बिस्तर का आधा हिस्सा ढँका हुआ था। पता नहीं क्यों मुझे उन कपड़ों को देखना बहुत दिलकश लग रहा था जिसे पहनकर वह सारे दिन मेरे सामने बैठी थी। खासकर, उल्टा। असल बात यह है कि कुछ ही मिनट पहले वे उसके बदन से चिपके हुए थे, इस बात से मेरे मन में तरह-तरह की कल्पनाएँ आ रही थीं। एक पागल, मदहोश कर देने वाला भाव कि उनमें अब भी उसके बदन की खुशबू थी, उसकी सिकुड़न में, उसकी उस सिलाई में जो अब दिखाई दे रही थी, बग़ल के पसीने के गीलेपन में। काश मैं उनको छू पाता, महसूस कर पाता, सूँघ पाता। अगर नीरू वहाँ नहीं रही होती तो मैं अपने आपको रोक नहीं पाता।

लेकिन मुझे अपने ख्यालों की उस दुनिया से निकलकर वह देखना था जो नीरू मुझे अलग-अलग खानों में दिखा रही थी, उसकी किताबें, उसका कंप्यूटर, और बाकी कमरा। मैं अभी नीरू को सुन ही रहा था कि खुशी हम लोगों को ढूँढती हुई अंदर आई।

जैसे ही उसकी नज़र बिस्तर पर पड़ी तो वह दौड़ती हुई कपड़ों को उठाने के लिए भागी।

'शिट!' वह धीरे से बुदबुदाई। अपनी उस शर्म को दिखाते हुए जो उसे अनजाने में मेरे उन कपड़ों को देख लेने से हुई थी। फिर वह उन्हें बाथरूम में ले गई, जहाँ उसने शायद उन्हें दरवाज़े के पीछे टाँग दिया था। उसे लगा कि मैं नीरू से बातें करने में लगा हुआ हूँ, लेकिन अपनी आँखों के कोने से मैंने उसे ऐसा करते देख लिया था।

4.20 शाम

अब हम लोग दरवाज़े के पास थे, सबको अलविदा कहने के बाद। पुष्कर और अमी दी कार में बैठ गए। मैंने मम्मा के पाँव छुए और उन्होंने अपने हाथ मेरे सिर पर रख दिए। मैंने उनसे कहा कि अमेरिका से लौटने के बाद मैं उनसे मिलूँगा। उन्होंने मुझे सफर के लिए शुभकामनाएँ दीं।

खुशी, नीरू और मैं टैक्सी की ओर बढ़े। जीत की खुशी से हम भरे हुए थे जब हम अपने मिशन के आखिरी क़दम के पास पहुँचे। हमारा अगला मुकाम आईएमएस था जहाँ हमें नीरू को उतारना था, जहाँ किसी अनजान बैच के साथ वह अनजान क्लास करने वाली थी। और खुशी को टैक्सी से नहीं उतरना था वह उस पूरी शाम मेरे साथ रहने वाली थी—बिना अपने परिवार को बताए। यही हमारा प्लान था। लेकिन, जब हम टैक्सी में बैठे और हमने गेट बंद कर लिया—अचानक कुछ ऐसा हुआ जिसके बारे में हमने सोचा तक नहीं था, प्लान बनाना तो दूर की बात थी।

अचानक खुशी की माँ को याद आया कि उनको दूध लाने के लिए उस डेयरी तक जाना था जहाँ से वह हर शाम घर के लिए दूध लेने जाती थीं। वह जल्दी बंद हो जाता था और चूँकि घर में कोई नहीं था इसलिए उनको मुश्किल हो जाती। और दुर्भाग्य से, मुझे पता लगा कि आईएमएस के अलावा डेयरी भी मेरे रास्ते में ही पड़ती थी।

‘उह...एह...हाँ। हम उनको ड्रॉप कर देंगे’, खुशी मुझे और नीरू को देखकर हकलाने लगी, उसकी आँखों में अनेक सवाल भरे हुए थे, जिसके जवाब हम दोनों के पास नहीं थे।

उसका मेरे साथ भागने का प्लान एक टूटे हुए पुल पर डगमगाने लगा, और हमें इसका कोई अंदाज़ा नहीं था कि आगे क्या होने वाला था। हमें यही नहीं समझ में आ रहा था कि क्या हम इस सबसे बचकर निकल पाएँगे? सच को सामने आने में कितना समय लगेगा? क्या इस एक झूठ को छिपाने के लिए हमें और कई झूठ बोलने पड़ेंगे। फिर, खुशी मेरे कान में फुसफुसाई, इसका ध्यान रखते हुए कि उसकी माँ का ध्यान उसकी ओर न जाए, ‘डेयरी आईएमएस से पहले आएगा। तुम चिंता मत करो।’ डेयरी के बाद हम फिर अपने प्लान के मुताबिक रास्ते पर आ जाएँगे। या ऐसा लगा।

खुशी ड्राइवर को रास्ता बताने लगी। बीच-बीच में मुझे लगा कि वह ज़रूरत से ज्यादा बता रही थी, ज़रूरत से अधिक बोल रही थी, पता नहीं यह उसकी घबराहट थी या जोश (प्लान अभी भी सही हो सकता था!)। चाहे जो भी रहा हो इसने मुझे कुछ अधिक चौकन्ना बना दिया था और मैं तो यही मना रहा था कि यह सब जल्दी गुज़र जाए। कोई भी समझदार आदमी यह नहीं चाहेगा कि उसकी होने वाली सासू माँ उसे एक ऐसे आदमी के तौर पर देखे जिसने पहले ही दिन उनको धोखा दिया और उनकी बेटी के साथ भाग गया।

लेकिन खुशी...पता नहीं उसको क्या हो गया था। वह कुछ अधिक ही बोल रही थी। ड्राइवर से बातें, मम्मा से बातें, सबसे बातें। बातें, समझाना, समझाना, बातें।

और इतना अधिक समझाने के कारण ड्राइवर कन्फ्यूज हो गया और आखिरकार उसने आगे वाली सीट पर बैठी नीरू से पूछा, ‘माताजी तो डेयरी तक जाएँगी। और आप कहाँ जाओगे? दिल्ली तक?’

और उसके बाद बल्लंडर हो गया। मेरी घबराई, जोश से भरी, बकबक करने वाली खुशी एक पल के लिए भूल गई, वह सब जो हम एक घंटे से बना रहे थे और नीरू के बोलने से पहले ही वह बोल पड़ी, ‘नहीं भैया, यह तो आईएमएस पर उतर जाएगी।’

इससे पहले कि वह समझ पाती कि उसने क्या कह दिया, उसकी माँ ने उसके कंधे पर हाथ से थपकी देते हुए पूछा, ‘ये तो आईएमएस पर उतर जाएगी मतलब? तूने कहाँ जाना है फिर?’ ज़ाहिर है उसकी माँ बेहद चौकन्नी हो गई, यह समझने की कोशिश में कि आखिर हो क्या रहा था।

‘गई भैंस पानी में,’ मैंने सुना नीरू अपने आपसे कह रही थी, बिना पीछे देखे। मेरे भाव से लगा, ‘गुडगोबर!’

और खुशी।

खुशी ने अपनी जीभ दबाई, यह समझते हुए कि उससे क्या ग़लती हो गई है। उसने एक नाम लिया—एक सहेली का जिससे वह पहले मिलने जा रही थी, ताकि वह उससे नोट्स ले सके। लेकिन

तब तक उसकी माँ ने कुछ गड़बड़ी भाँप ली थी और उन्होंने नीरू को ओर देखते हुए पूछा, 'नीरू क्या हो रहा है?' और नीरू ने अपनी बड़ी बहन को उस गड़बड़झाले से निकालने के लिए जवाब दिया, 'मम्मा, इसे पहले अपनी एक दोस्त से मैथ्स के नोट्स लेने हैं।'

उसी समय टैक्सी डेयरी पर आकर रुकी जहाँ उसकी माँ को रुकना था। मुझे पता है कि वह अपनी बेटियों को बहुत कुछ कहना चाहती थीं, खासकर अपनी बड़ी बेटी को, लेकिन मेरी मौजूदगी के कारण उन्होंने बस इतना कहा, 'घर समय से आ जाना। ठीक है।'

'हाँजी,' टैक्सी में बैठी लड़कियों ने जवाब दिया। और मैंने उसकी माँ को आखिरी बार गुड बाय कहा।

जैसे ही वह गई और टैक्सी आगे बढ़ी, नीरू और मैं दोनों चिल्लाए, 'तुमने क्या कर दिया!'

खुशी ने नीचे देखते हुए उस बच्चे की तरह कहा, 'सॉरी, जिसे उसके माँ-बाप ने क्रिकेट की गेंद से खिड़की का शीशा तोड़ते हुए पकड़ लिया हो।

'मरते-मरते बचे हैं...ये भी न,' नीरू ने कहा।

तो भी हम लोग बाल-बाल बचने से राहत महसूस कर रहे थे। लेकिन इसे बचना नहीं कहा जा सकता था। माता-पिता अपने बच्चों को अच्छी तरह से जानते हैं। उन्होंने इस दुनिया में हमसे ज्यादा समय बिताया होता है, और ज़ाहिर है, अगर हमें अपनी उम्र में यह लगता है कि हम स्मार्ट हैं, तो अपनी उम्र में वे अधिक स्मार्ट होते हैं। उसकी माँ यह बात बहुत अच्छी तरह से समझ चुकी थीं कि उनकी बड़ी बेटी निश्चित तौर पर आईएमएस नहीं जा रही थी बल्कि वह कहीं और जा रही थी। लेकिन यही तो माँ की खूबसूरती होती है। उन्होंने उसे जाने दिया, यह ज़ाहिर किए बिना कि उनको पता था कि उनकी बेटी कहाँ जा रही थी।

उधर टैक्सी में नीरू और मैं खुशी के उस कारनामे पर हँस रहे थे। मैंने शीशे में ध्यान दिया कि ड्राइवर के चेहरे पर भी मुस्कुराहट तैर रही थी। उसने भी यह बात समझ ली थी कि हम क्या कर रहे थे। अगले पाँच मिनट में आईएमएस आ गया जहाँ नीरू उतर गई।

'बाय-बाय ब्यूटीफुल,' मैंने हाथ हिलाते हुए कहा।

'बाय,' उसने अपनी मीठी आवाज़ में गाते हुए कहा और मुझे याद दिलाया, 'अमेरिका से एक टिन चॉकलेट लेकर आना।'

'मैं ज़रूर लाऊँगा,' मैंने जवाब दिया।

फिर वह अपने मुकाम की ओर चल पड़ी और हम अपने मुकाम की ओर—वह होटल जहाँ मैं दिल्ली में रुका था। प्लान के इस हिस्से के बारे में तो नीरू को भी नहीं पता था। उसको उसकी बहन ने बताया था कि हम मूवी देखने जा रहे थे। डबल क्रॉस!

इससे खुशी ने एक बार फिर मेरा दिल जीत लिया। मुझे यह देख कर अच्छा लग रहा था कि उसका जोश और संतोष मेरे जैसा ही था। मेरी महबूबा ने एक ऐसी कहानी बनाई थी जिससे वह अपने सपनों के राजकुमार (अरे हाँ! मुझे प्रेमी राजकुमारी ने उसी शाम यह खिताब दिया था) उसकी हिम्मत और मेहनत की मैंने तारीफ़ की। आखिरकार उसने ही झूठ बोलकर सारी प्लानिंग की थी। उसकी बेचैनी कि मेरे साथ उस शाम कुछ समय बिता सके...उसने मेरे ऊपर जो विश्वास दिखाया उसने हमारे दिलों का एक न दिखाई देने वाले बंधन में बाँध दिया।

मैं उसकी तरफ़ मुड़ा और मैंने देखा कि उसका खूबसूरत मासूम चेहरा खुशी से दमक रहा था। मैं उसकी बगल में बैठा था और ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी सुंदर सपने में हूँ। हाँ, मैं जानता था कि जो कुछ भी हो रहा था सब सच था। फिर भी सब कुछ इतना जादुई लग रहा था। यहाँ तक कि उस टैक्सी में हमारे आस-पास की हवा भी अलग रही थी। मुझे बहुत अच्छा लग रहा था और मैं खुश था।

कि वह मेरी थी और मैं उसके साथ था। और, उस समय, मैं नहीं जानता था कि वह मुझे जिंदगी का बेहतरीन एक घंटा देने वाली थी।

उस शाम 6 बजे हम होटल पहुँचे। उतरने से पहले मैंने टैक्सी वाले से कहा कि वह 7.30 तक आ जाए जिससे मैं उसे 8.47 के आसपास तक घर छोड़ दूँ। प्लान के मुताबिक आईएमएस में उसकी क्लास 8.30 बजे तक चलने वाली थी।

होटल की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए मुझे कुछ अलग तरह का ही महसूस हो रहा था। मैं अपने आपको अलग तरह के दोस्तों जैसा पा रहा था। वैसे दोस्त जिनकी गर्लफ्रेंड होती है। जिसके साथ वे कार में घूमते हैं, डिनर के लिए बाहर ले जाते हैं। या शायद डिस्को या सिनेमा दिखाने। शायद उनकी गर्लफ्रेंड को भी अपने परिवार वालों से उसी तरह झूठ बोलना पड़ता हो जैसे मेरी गर्लफ्रेंड ने बोला था। पता नहीं क्यों मैंने उस तरह से कभी महसूस नहीं किया था। खुशी को मेरे जीवन में आए तब तक दो महीने से ऊपर हो चुके थे। लेकिन मुझे लगता है कि उसके मेरे सामने होने के कारण मैं खुद को अपने उन अलग तरह के दोस्तों के बीच पा रहा था। और अगर ईमानदारी से कहूँ तो उस तरह से अपने आपको देखना बहुत जोशीला लग रहा था। वह साथ थी तो दुनिया मुझे इतनी अच्छी लग रही थी।

साथ चलते हुए, हम फिर से रूम नंबर 301 में पहुँचे। मैंने कमरे की चाबी उसे दे दी—मैं चाहता था कि दरवाज़ा वह खोले।

हम कमरे में गए और मैंने बत्ती जलाई। मेरा कमरा कुछ बिखरा-बिखरा सा लग रहा था। बिस्तर पर अनेक तरह के सामान रखे हुए थे—पानी की खाली बोतल, एक टी-शर्ट, मेरा सेल फोन चार्जर सब एक दूसरे से उलझे हुए रखे थे, चादर आधी बिस्तर पर थी और आधी नीचे ज़मीन पर और मेरे ऑफिस के कुछ कागज़ात, जो कुछ खास अहम नहीं थे, मेरे तकिए के नीचे रखे हुए थे। ‘अरे इस अस्त-व्यस्तता के लिए माफ़ करना। मुझे लगा होटल वाले ठीक कर देंगे,’ मैंने अपनी गर्दन के पीछे हाथ खुजाते हुए कहा।

वह मुस्कुराने लगी, शायद उसे याद आ रहा हो कि मैं कितना बड़-चढ़कर बताया करता था कि मैं कितना साफ़-सुथरा रहने वाला इनसान हूँ। वह अब सब अपनी आँखों से देख सकती थी।

‘मैं एक मिनट में आया,’ कहकर मैं बाथरूम में गया, अपने थके और चिपचिपे हो गए चेहरे को धोने के लिए।

जब दो-तीन मिनट बाद मैं बाहर आया तो मैंने जो देखा उससे मुझे बेहद खुशी हुई। उन चंद मिनटों में ही मेरा कमरा सँवर चुका था। मेरे बेड से चीज़ें अपने-अपने नियत स्थानों पर जा चुकी थीं। टी-शर्ट अलमारी में, चार्जर ठीक से टीवी की बगल में रखा हुआ था, पानी की खाली बोतलें डस्टबिन में थीं, और कागज़-पत्तर बेड की बगल की टेबल पर।

और यह सब किसने किया? ज़ाहिर है, इस कमरे में मौजूद सचमुच में साफ़-सफ़ाई में यकीन करने वाली लड़की ने।

वाह! तो लड़की के साथ होना यह होता है। मैंने पहली दफ़ा इसे महसूस किया। यह होता है औरत के हाथ का कमाल। इसी कारण से हम सुनते रहते हैं, ‘आदमी मकान बनाता है, लेकिन औरत घर बनाती है।’ और मुझे वैसी एक लड़की मिल गई थी।

थोड़ी देर बाद हम बेड पर बैठे थे, दोनों बेड के नीचे बीच की जगह में पैर लटकाए। अपने लैपटॉप पर हम एक डांस वीडियो देख रहे थे, जो कुछ अरसा पहले इन्फोसिस में कल्चरल फेस्टिवल में मैंने किया था। मुझे डांस करता देख उसे बहुत मज़ा आ रहा था और वह लगातार कहती रही कि अगर वह इन्फी में आई तो इस तरह के कल्चरल प्रोग्राम में हम लोग साथ-साथ डांस करेंगे। अपनी

चमकती हुई आँखों से वह लैपटॉप के स्क्रीन पर देखती रही। और मैं उसे देखता रहा...मैं अब भी इसको लेकर पक्का नहीं हूँ कि उसकी गर्दन की बगल में कानों के नीचे इतना खूबसूरत क्या था आखिर जिसकी तरफ उसकी लंबी इयररिंग ध्यान लगाए थी। मैंने उसकी गर्दन की ओर घूरा और उसकी ओर कुछ और देर घूरा। उसकी सुंदरता मुझे मदहोश कर रही थी। मेरी मदहोशी और बढ़ती जा रही थी। वह अब भी वह वीडियो ही देख रही थी जब मैं उसकी गर्दन के करीब आया और बिना एक भी शब्द कहे मैंने वहाँ किस कर लिया।

मैंने उसकी प्रतिक्रिया नहीं देखी, क्योंकि मैं अब उसकी गर्दन और उसके बदन की भीनी खुशबू को महसूस कर रहा था। यह सब कुछ इतनी जल्दी में हुआ कि वह इस हालत में भी नहीं थी कि कोई प्रतिक्रिया कर सके। जब कुछ देर में उसे होश आया तो उसने अपना चेहरा उठाते हुए अपनी गर्दन तक मुझे आने दिया, मैंने आगे बढ़ते हुए उसको हर तरफ चूमा। हमारी आँखें बंद थीं। मैंने उसे अपनी बाँहों में भर लिया, मैंने महसूस किया कि उसकी बाँह सख्त हो रही थी और उसने जोर से मेरी शर्ट के कोने को पकड़ लिया, उसकी आवाज़ वही कह रही थी जो वह महसूस कर रही थी।

मेरे लैपटॉप का वीडियो अब भी चल रहा था, लेकिन वह हमें नहीं रोक पाया।

उसने अपने आपको करीब-करीब मेरी बाँहों में छोड़ दिया। मैं उसके ऊपर थोड़ा झुका, और वह बिस्तर पर झुक गई, हमारे पाँव अब भी ज़मीन को छू रहे थे। उसने अपनी बाँहें मेरी गर्दन के इर्द-गिर्द डाल दीं और मेरे हाथ उसके बदन को सहारा दे रहे थे। हम लोग साथ-साथ फिसलते जा रहे थे, हर पल। किस और जोशीले ढंग से लिपटना तब तक चलता रहा जब तक कि हम बिस्तर पर गिर नहीं गए।

अचानक मुझे कुछ याद आया। 'मैं एक सेकेंड में आया, बस एक सेकेंड में,' मैं उसके कानों में फुसफुसाया। उसकी आँखें अब भी बंद थीं। मैंने जाकर दरवाज़े को देखा और उसे डबल लॉक कर दिया। मैंने अपने कमरे की तेज रोशनी को बंद कर दिया और बाथरूम की लाइट जला ली जिससे कमरे में मद्धिम रोशनी बनी रहे। मैंने ऐसा क्यों किया उसे बताया नहीं—मुझे एक फिल्म की याद आ रही थी जिसमें होटल में छिपे हुए कैमरे ने एक जोड़े की फिल्म बना ली थी।

फिर मैं उसके पास आया। लेकिन उसकी आँखें अब बंद नहीं थीं। अब मैं उसकी ओर बढ़ा तो वह मुझे घूर रही थी। उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर मैं उसके पास खड़ा रहा और उसकी आँखों में गहरे झाँकता रहा। और मैंने पहली बार उसमें कुछ अलग-सा महसूस किया। मैंने एक ऐसी लड़की को देखा जिसके दिल में डर समा चुका था। तब मुझे समझ में आया कि ऐसा क्यों हुआ। वह भोली लड़की, जिसकी आँखों को मैंने पढ़ लिया, एक आदमी के साथ होने से डरी हुई थी, एक बंद कमरे में, वह भी डबल लॉक रूम में, जिसमें ठीक से रोशनी भी नहीं थी, बस बाथरूम के खुले दरवाज़े से मद्धिम रोशनी आ रही थी। उसने कुछ नहीं कहा। लेकिन मैंने वह सब कुछ देख लिया जो उसके दिमाग में उस समय चल रहा था।

'शोना...' उसने कहा, और मैं धीरे से फुसफुसाया 'शश!' और मैंने अपने हाथ उसके होंठों पर रख दिए, उसे बोलने का मौका नहीं दिया। मैंने अपनी हथेली से उसका माथा सहलाया और आहिस्ते से उसकी आँखों को एक बार फिर से बंद कर दिया, मेरी उँगलियाँ उसकी पपनियों से खेल रही थीं। फिर मैंने उसे बहुत आहिस्ता से कहा, 'तुमको पता है? मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूँगा जिसकी गवाही हमारी आत्मा और मूल्य न देते हों। मैं नहीं कर सकता। सिर्फ इसलिए क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूँ। मैं अपनी सीमाओं को जानता हूँ और मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूँगा जो तुमको अच्छा नहीं लगे और जिसके लिए तुमको बाद में पछताना पड़े। मैं वादा करता हूँ...तुम बस इस पल मेरे साथ रहो।' और मेरी परी ने मुझे बाँहों में भर लिया और मुझे अपने और करीब खींच लिया।

‘शोना!’ उसने बड़े प्यार से मेरा नाम लिया। ‘मैं तुमको बहुत प्यार करती हूँ, उस सबके लिए जो तुम मेरे लिए करते हो।’ मैं अपनी पीठ पर उसके हाथों की फिसलन को महसूस कर रहा था। उसका डर दूर भाग चुका था और इसकी खुशी थी कि मैं उसकी बाँहों में था।

मैं थोड़ा बिस्तर पर लेटा था और थोड़ा उसके ऊपर। वह थोड़ी शरारती हो गई थी और मैं भी। हम दोनों में से किसी को यह पता नहीं चला कि कब मेरे लैपटॉप का वीडियो बंद हो गया। लेकिन जैसे ही मुझे इसका पता चला, बिना उसको बताए मैंने लैपटॉप पर अपना पसंदीदा गाना लगा दिया, धीमी आवाज़ में, जो उस कमरे के रोमांटिक माहौल के माकूल था।

सब कुछ एकदम परफेक्ट लग रहा था—कमरे में मद्धिम रोशनी, पीछे बजता धीमा संगीत, बढ़िया चादर, और वह और मैं।

मैंने उसकी आँखों पर फूँक मारी, जिससे उसकी पपनियाँ और नीचे झुक गईं और उसकी आँखें बंद हो गईं। हवा का वह झोंका उसके माथे पर बायीं से दायीं ओर चला, फिर उसकी आँखों पर, फिर उसकी प्यारी नाक को, उसके होंठों के बीच, उसके गले से लेकर ठुड्डी तक गया और फिर अपने बीच की हवाओं में खो गया। उसने फिर अपनी आँखें खोलीं। मैंने उसके कानों को अपने कानों से छुआ, उसके बाद मैंने अपनी नाक से उसकी नाक को महसूस किया, ठीक वैसे जैसे माँएँ अपने बच्चे को प्यार जताते हुए करती हैं। वह भी एक प्यारी-सी बच्ची थी। मेरी बच्ची। वह अपनी शरारती शर्म के साथ मुस्कुराई।

वह कितना अच्छा पल था! और ज़ाहिर है, मुझे उसे यादगार बनाना था। और वह बिना किस के कैसे हो पाता? और इसीलिए उतने समय में ही मैंने उस किस को यादगार बनाने के लिए न जाने कितनी चीज़ें सोच लीं...मैं यह करूँगा...मैं वह करूँगा...मैं उसे इस तरह से बाँहों में भर लूँगा, उसके चेहरे को उस तरह थामूँगा...और फिर...एक किस को लेकर इतनी सारी प्लानिंग। और फिर, मैंने वह किया।

जल्दी ही, हमारे चेहरे एक दूसरे के करीब आ गए, एक दूसरे के सामने झुके हुए, हमारी गर्म साँसें एक-दूसरे के होंठों को छू रही थीं। मेरे होंठों ने उसके होंठों को छुआ। मैंने उसे किस किया। मैंने उसे फिर किस किया।

मुझे याद नहीं कि कब मैंने आँखें बंद कर लीं और उसमें खो गया। वह पल स्वर्ग जैसा था जिसका अनुभव मैंने पहली बार किया था। उस पल मैं सब कुछ भूल गया, वह सब कुछ जिसके बारे में मैंने कुछ समय पहले योजना बनाई थी। मैं तो यह बात भी भूल गया कि मैंने कुछ प्लानिंग भी की थी। यह भी भूल गया कि अगली सुबह मुझे देश छोड़ना है। मैं अपनी नौकरी के बारे में भूल गया, अपने कैंट एगजाम के बारे में भूल गया, अपने दोस्तों और परिवार को भूल गया। सब कुछ भूलकर मैं उस एक पल को जी रहा था...मेरे जीवन का बेहतरीन एक घंटा।

मुझे याद नहीं है कि पहले मैंने अपनी आँखें खोलीं या उसने। लेकिन हम एक-दूसरे की आँखों में देख रहे थे।

मैं अब भी उसके ऊपर लेटा था।

वह मुस्कुराई। मैं मुस्कुराया।

उसने अपनी पलकें झपकाई, मैंने अपनी।

मेरे माथे को एक बार फिर चूमते हुए उसने कहा, ‘आई लव यू सो मच शोना।’

और मैंने उसकी नाक से अपनी नाक मिलाते हुए कहा, ‘आई लव यू सो मच सो मच। जानेमन।’ हम प्यार में इस कदर डूबे हुए थे कि हम समय देखना भी भूल गए। हमने टैक्सी ड्राइवर से कहा था

कि वह 7.30 तक होटल आ जाए। मेरे सामने की दीवार घड़ी 8.30 बजा रही थी।

‘ओह-हो! तुमको पता है क्या टाइम हो गया है?’ मैंने बड़े आराम से मुस्कुराते हुए पूछा।

उसने तुरंत घड़ी की ओर देखा। और फिर वह चीखी, उसी तरह जिस तरह वह एक दिन पहले चीखी थी।

‘साढ़े आठ???’

और इसके साथ वह बिस्तर से उठ गई, घबराई हुई, इधर-उधर भाग कर अपना सामान समेटने लगी, अपना फोन, अपना पर्स, अपनी सैंडल...और बहुत कुछ। मैंने उसकी मदद करने के लिए बत्ती जला दी।

फिर वह भागकर बाथरूम में गई, उसने अपने चेहरे पर पानी के छीटा डालकर दरवाज़े के पीछे टंगे तौलिए का इस्तेमाल किया, अपने पर्स से कंधी निकाली, अपने बाल बनाए, लिपस्टिक निकालकर होंठों पर लगाया।

उसको देखते हुए मुझे आश्चर्य हो रहा कि मैंने कितनी सारी लिपस्टिक खा ली थी और मैं बिना कुछ कहे अपने आप पर हँसने लगा, जब तक वह तैयार हो रही थी, मैंने उसका पर्स उठाया। ‘अरे लगता है जैसे जादुई पर्स हो। कितनी सारी चीज़ें इससे निकल रही हैं—कंधी, लिपस्टिक, रूमाल...मुझे देखने दो कि इसमें क्या बचा है,’ मैंने हँसते हुए कहा।

और उसी समय उसने मेरे उस हाथ पर चपत लगाई जो पर्स का चेन खोलने की कोशिश कर रहा था।

‘बुरी आदत! किसी लड़के को लड़की का पर्स चेक नहीं करना चाहिए।’

‘लेकिन क्यों? क्या तुम लड़कियाँ पर्स में बम लेकर चलती हो?’ मैंने उसे देते हुए कहा। ‘यहाँ तक कि मेरे ऑफिस में एक औरत गेट पर लड़कियों के पर्स को चेक करती है। मुझे आश्चर्य होता है जिस तरह की अजीब-अजीब चीज़ें लड़कियाँ उसे अपने पर्स से दिखाती हैं...वे उसे देखकर मुस्कुराती रहती हैं और फिर वह भी बदले में मुस्कुरा देती है।’

मैं अपने इस जोक पर हँसा लेकिन वह नहीं हँसी।

उसे देर होने के कारण फ़िक्क हो रही थी। मैंने इस पर ध्यान दिया और अपनी हँसी को पीछे छोड़ एक मुस्कान से उसे दिलासा देने की कोशिश की, ‘अच्छा ठीक है, खुशी। कोई बात नहीं। हम तुम्हारे घर 10 बजे से पहले पहुँच जाएँगे। तुम चिंता मत करो, डियर।’

अपनी सैंडल पहनते हुए उसने कहा, ‘शोना, अगर हम समय से नहीं पहुँचे और घर में पता चल गया तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी।’

उसकी यह हालत देखकर मैं उसके करीब गया और अपना हाथ उसके कंधे पर रख दिया।

‘खुशी, सब कुछ अच्छा होने वाला है। चाहे कुछ हो, तुम किसी परेशानी में नहीं पड़ोगी। मैं वादा करता हूँ। अब तुम मेरा विश्वास करोगी?’ ... उससे बेहद शाइस्तगी से पूछा।

और उसने बड़ी मासूमियत से अपनी गर्दन हिलाई।

‘गहरी साँस लो, पानी का एक घूँट पी लो और हम लोग चलेंगे।’

कुछ मिनट के बाद हम लोग टैक्सी की पिछली सीट पर बैठे थे।

‘भैया, वापस फरीदाबाद, जहाँ से हम आए थे,’ खुशी ने ड्राइवर को जल्दी-जल्दी कहा।

लेकिन, होटल से बाहर आने के बाद हमने पाया कि पिछले घंटे भर में बड़ी तेज बारिश हुई थी। चारों तरफ़ पानी भरा हुआ था। आस-पास के मकानों की छतों से पानी गिर रहा था, सड़कों के मेनहोल खुले थे जिससे पानी उसमें जा सके।

हमारी टैक्सी चलने लगी।

‘भैया, कितना टाइम लगेगा?’ उसने टैक्सी ड्राइवर से पूछा।

‘कुछ कह नहीं सकते मैडम। बहुत बारिश हुई है। बस आगे रोड पर कहीं जाम न लगी हो।’

ट्रैफिक जाम होने की संभावना से उसकी घबराहट कुछ और बढ़ गई। उसने मेरी ओर देखा।

और मैंने उससे कहा कि फ़िक्र न करे। ‘मैं तुम्हारे साथ हूँ न, ठीक। फिर तुम परेशान क्यों हो? हम समय से पहुँच जाएँगे?’

मेरी बातचीत के अंदाज़ को देखकर ड्राइवर को भी लगा कि उसे उस लड़की को डराना नहीं चाहिए। बल्कि, उसने यह जोड़ा, ‘मैडम घबराने वाली तो कोई बात ही नहीं है। हम पहुँच जाएँगे।’

लेकिन जल्दी ही हमने खुद को मुश्किल में घिरा पाया। होटल से बमुश्किल 15 मिनट चलने के बाद हम ट्रैफिक जाम में फँस गए—शायद मेरे जीवन का अब तक देखा गया सबसे बड़ा जाम। मेरे सामने सैकड़ों कारें खड़ी थीं, यकीनन। भयानक जाम। पानी सड़क से नालियों की तरफ़ बह रहा था। वहाँ जो कुछ भी दिखाई दे रहा था सब गीला-गीला था। दुकानें बंद हो रही थीं; उनके गीले शटर गिर रहे थे। बड़ी-छोटी कारें अपना रास्ता बनाने में लगी थीं। सड़क पर कोई भी गाड़ी लाइन में नहीं थी। सब अपने-अपने ढँग से रास्ता बनाने में लगी थीं। एक दूसरे से होड़ लेती हुई, जिसके कारण कोई भी आगे नहीं बढ़ पा रहा था। क्या अफरा-तफरी थी!

‘एक ट्रक का इंजन स्टार्ट नहीं हो पाया, आधा किलोमीटर आगे,’ हमने सुना जब ड्राइवर ने कार का शीशा नीचे सरकाया। यह सुनकर क़रीब-क़रीब सबने अपनी गाड़ियाँ बंद कर लीं। हमारी टैक्सी में बेचैनी और बेचारगी बढ़ रही थी।

होटल के कमरे में सबसे सुंदर समय बिताने के आधे घंटे बाद अब हम बेचैनी और निराशा के दौर से गुज़र रहे थे। मेरे साथ एक लड़की थी जिसने अपने घरवालों से झूठ बोला था और मेरे साथ भागने में कामयाब रही थी। अपने ऑफिस के अलावा वह घर से बाहर इतनी देर तक कहीं नहीं रुकी थी। लेकिन उस दिन वह एक अलग ही हालत में थी और जिस आदमी पर उसने पूरा भरोसा दिखाया था वह शहर से वाकिफ़ नहीं था। और समय...समय मेरी कलाई घड़ी में तेज़ी से भागा जा रहा था, लेकिन जब मैंने अपने आसपास की ट्रैफिक की ओर देखा तो पाया कि वह ठहरा हुआ था। पंद्रह मिनट गुज़र गए और हमारी टैक्सी एक इंच भी आगे नहीं बढ़ी थी। यह कहना ग़लत होगा कि मुझे घबराहट नहीं हो रही थी। लेकिन मैं अपनी जिम्मेदारियों को समझता था। खुशी की सुरक्षा मेरी जिम्मेदारी थी।

आखिरकार, हमारे टैक्सी ड्राइवर ने टैक्सी का इंजन बंद कर दिया जिसने हमारी बेचैनी को और भी बढ़ा दिया। कुछ भी हो, ट्रैफिक जाम में चलता हुआ इंजन बंद इंजन से अधिक उम्मीद जगाता है। खैर, यह सब मनोवैज्ञानिक होता है, लेकिन दुर्भाग्य से उसने हम दोनों पर अपना प्रभाव छोड़ा।

और चूँकि केवल बारिश नहीं हो रही थी, ज़ोरदार हो रही थी—खुशी का सेलफोन बजने लगा।

उसने मेरी ओर डर से देखा। मैंने अपनी घड़ी की ओर देखा। 9 बजने को थे।

‘क्या कहूँ अगर मम्मा का फोन हुआ तो?’ उसने दुखी होकर पूछा और मैं बस यही कह पाया कि पहले देखो तो किसका फोन है।

उसने पर्स खोला और चैन की साँस ली। ‘भगवान का शुक्र है! नीरू का फोन है।’

उसने फोन का स्पीकर ऑन कर दिया। गला साफ़ करते हुए और हिम्मत जुटाते हुए (जिसे वह उस वक़्त खो चुकी थी जब उसने घंटी की आवाज़ सुनी थी), उसने कहा, ‘नीरू।’

‘तुम कहाँ हो यार?’ नीरू ने पूछा।

‘यार, हम ट्रैफिक में फँस गए हैं।’

‘तुम फरीदाबाद में ही हो न?’

‘हाँ बाबा...हम मूवी देखने गए थे। इस बीच इतनी बारिश हुई कि रोड पर पानी भर गया जिससे ट्रैफिक जाम हो गयी और हम फँस गए।’

‘ठीक है। लेकिन जल्दी घर आ जाओ। मैं घर पहुँच गई हूँ और मैंने मम्मा को बोला है कि तुम्हारी क्लास देर तक चलेगी और तुम यहाँ 20-30 मिनट में आ जाओगी।’

‘थैंक्स। हम जाम के खत्म होने का इंतज़ार कर रहे हैं। मैं जल्दी ही घर आ जाऊँगी,’ खुशी ने कहा और फोन रख दिया।

20-30 मिनट? इतनी ज़ल्दी तो कोई भी गाड़ी चलाकर फरीदाबाद नहीं पहुँच सकता, चाहे रोड पूरी तरह खाली हो तब भी। यह तो खुशी भी जानती थी।

‘शोना, मुझे बड़ी टेंशन हो रही है।’ उसने कहा, अपनी डटी हुई और मद्धिम आवाज़ में। लेकिन ज़ाहिर है हम टेंशन में थे। फिर भी मैंने कहा, ‘जानता हूँ डियर। लेकिन हमें धीरज नहीं खोना चाहिए। अधिक से अधिक क्या होगा, हम तुम्हारे घर थोड़ी देर से पहुँचेंगे, ठीक? फ़िक्र मत करो। अगर ऐसा हुआ तो मैं मम्मा को सब कुछ समझा दूँगा, ठीक है?’ मैंने उसे दिलासा देने की कोशिश की, अपना हाथ उठाया और उसके सिर को अपने क़रीब ले आया ताकि वह मेरे कंधे पर आराम कर सके।

अगले ही पल हमने ध्यान दिया कि सड़क के एक किनारे से ट्रैफिक आगे बढ़ने लगी। सब लोगों की तरह हमारे ड्राइवर ने भी गाड़ी का इंजन स्टार्ट किया और गाड़ियों के काफिले में आगे बढ़ने लगा। उम्मीद की एक किरण हमारे चेहरे पर चमकने लगी।

कुछ ही देर में ड्राइवर ने हमारी मुस्कान को और भी बढ़ा दिया। ‘साहब, अब निकल जाएँगे आराम से, जाम खुल गया है। बस एक बार बॉर्डर क्रॉस कर लें। फिर हाइवे ठीक है।’

वह दिल्ली-हरियाणा बॉर्डर की बात कर रहा था जिसे हमने बड़े आराम से अगले 20 मिनट में क्रॉस कर लिया। लेकिन हमारा ठिकाना अब भी मीलों आगे था।

उसका सिर अब भी मेरे कंधे पर था और मैं उससे बातें किए जा रहा था, उसका ध्यान बँटाने की कोशिश कर रहा था। वह मेरी हथेलियों पर अपनी उँगलियाँ फिरा रही थी, कल्पना की लकीरें खींचते हुए, वह बच्चों की तरह खेल रही थी। जब उसकी उँगली मेरी तीसरी उँगली तक पहुँची तो वह उस अँगूठी से खेलने लगी जो मैंने पहन रखी थी। वह कुछ अलग तरह की अँगूठी थी, उसमें चंडी के तीन छल्ले उसी तरह बने हुए थे जैसे ओलंपिक के छल्ले बने होते हैं। जब उसने मुझसे अँगूठी के बारे में पूछा, तो मैंने उस मौके का फ़ायदा उठाया और उसे उस समय की घबराहट से निकालने के लिए उस अँगूठी के बारे में बताने लगा जो उतना ही रहस्यमय हो गया जैसे ‘लॉर्ड ऑफ द रिंग्स।’

‘आह!’ मैंने ऐसे कहा जैसे उसने मेरे किसी टूटे हुए अंग पर पाँव रख दिया हो।

‘क्या हुआ?’ उसने पूछा, मेरे कंधे से अपना सिर उठाते हुए।

‘कुछ नहीं,’ मैंने बेहद उदासी के साथ जवाब दिया, अपना सिर दूसरी तरफ घुमाते हुए, टैक्सी की खिड़की से बाहर देखते हुए।

मेरे उस जवाब से वह हैरत में गई, उसने कुछ नहीं कहा, बल्कि मेरे जवाब का इंतज़ार करने लगी। और मैंने कहा, ‘मैं जानता था, किसी न किसी दिन मुझे तुमको इसके बारे में बताना पड़ेगा...’

मेरी यह बात सुनकर उसने अपनी भौहें चढ़ाई और इस बात पर ज़ोर दिया कि मैं उसे सब कुछ बताऊँ। मैं खिड़की से बाहर देखता रहा और वह मुझसे उसके पीछे की कहानी बताने के लिए कहती रही। ‘बताओ न शोना...प्लीज़ बताओ न...।’

मैं समय काट रहा था। टैक्सी तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। और उसके दिमाग में मेरी तीसरी उँगली की अँगूठी को लेकर खयाल आते-जाते रहे। अधिक इस कारण क्योंकि मैं उसे बताने से कतरा रहा था।

'शोना बोलो न क्या बात है,' अपने हाथ से मेरा चेहरा अपनी तरफ़ घुमाते हुए।

'खुशी...' मैंने उसकी ओर देखते हुए कहा।

'हुम्म...?'

'तुमसे मिलने के एक साल पहले की बात है...मेरा मतलब है...एक दिन एक ख़ूबसूरत लड़की ने यह अँगूठी मुझे पहनाई थी...' और मैं उससे आँखें बचाते हुए दूसरी तरफ़ घूम गया और टैक्सी से बाहर देखने लगा।

ख़ामोशी...

वह अब भी सुन रही थी—पूरी तरह ध्यान लगाए...इस बात को भूलकर कि हम लेट हो रहे थे। टैक्सी से बाहर देखते हुए मैं बोलता रहा, 'मैं हमेशा से तुमको यह कहना चाहता था, लेकिन...मुझे मौक़ा नहीं मिला, क्योंकि मैं नहीं जानता था कि तुमको यह जान कर कैसा लगेगा।'

उसकी आँखें मुझे ढेर सारे सवालियों के साथ देखती रहीं।

अगले ही पल उसका सेल फोन बजने लगा। यह नीरू थी, कह रही थी कि माँ कितनी बेचैन हो रही थीं और असल बात यह है कि अब तक उनको यह पता चल चुका था कि खुशी आईएमएस नहीं गई थी बल्कि मेरे साथ कहीं और गई थी। वे यह भी कह रही थीं कि फरीदाबाद में ज़ोरदार बारिश हो रही थी। और खुशी ने उससे बस इतना ही कहा कि वह किसी तरह हालात को संभाल ले। 'उनसे कहो कि मैं बारिश में फँस गई हूँ।' प्यारी नीरू अपनी माँ और बहन के बीच शटल की तरह इधर-उधर उधर हो रही थी। यह परिवार में सबसे छोटे होने का नतीजा होता है—हर कोई आपको इधर-उधर सरकाना चाहता है।

जैसे ही उसने फोन रखा, वह पुराने टॉपिक पर लौट आई।

'एक लड़की ने तुमको यह दिया?' उसने अँगूठी की ओर देखते हुए पूछा और फिर मेरी ओर देखा। वैसे उसका यही एक सवाल नहीं था। मेरे ऊपर शब्दों के गोले बरसने वाले थे। और मैं झाड़ियों के आस-पास छिप रहा था। यह सब करीब 15 मिनट तक चला, जब उसने आखिरकार मेरा सिर अपने सिर के पास लाते हुए मुझसे पूछा, 'मेरी कसम खाओ, क्या किसी लड़की ने तुम्हारी उँगली में यह पहनाई थी?'

उसकी आँखों में कितनी उम्मीद थी। यह उम्मीद कि मुझे सच बोलना चाहिए। और यह उम्मीद भी कि मेरा जवाब एकदम न में होना चाहिए। जिसका मतलब होता कि वह सारी कहानी एक बड़ा झूठ थी जिसका मतलब सिर्फ़ उसे डराना था। लेकिन, उसकी दूसरी उम्मीद तोड़ते हुए मैंने अपना सिर हिलाया, यह मानते हुए कि उसने जो कुछ सुना वह सच था।

एकदम ख़ामोशी छा गई...

टैक्सी के अंदर का माहौल अधिक तनाव से भर गया। ट्रैफिक जाम, घर देर से पहुँचना, अपने झूठ को माँ के सामने मानना, इस बड़े सच के सामने सब कुछ कितने बौने लगने लगे। वह लड़की, जो एक घंटे पहले मेरी बाँहों में इतनी शिद्दत के साथ थी, वह अब एक अलग तरह के सच का सामना कर रही थी। मैं यह उम्मीद कर रहा था कि वह मेरे ऊपर चिल्लाएगी, मुझे कुछ करने के लिए मेरे कुछ कहने से पहले फटकार लगाएगी। और मैं यह चाहता था कि यह सब कुछ और मील तक चलता रहे।

और मैं यह सब किसी कारण से कर रहा था। मैं जितना ही समय लेता उसे घर देर से पहुँचने की चिंता उतनी ही कम होती। 10 तो बज ही चुके थे।

लेकिन जब उसका प्यारा और भोला दिल दुखा, जब उसकी आँखों से पहले आँसू ढलके, मुझे रहस्य से पर्दा उठाना पड़ा। मैं उसे रोता हुआ कैसे देख सकता था?

‘ऐ शोनिमोनी...मेरी बात सुनो।’ और मैंने उसे अपनी बाँहों में लेते हुए कहा, ‘तुमने जो कुछ भी सुना वह सच था, लेकिन एक अलग ही ढंग से। तुम्हें पूरी कहानी जाननी पड़ेगी।’

‘तो बताओ,’ उसने कहा, किसी बच्चे की तरह से अपनी आँखों को मलते हुए, उसकी आँखें फिर से मेरे ऊपर थीं।

‘जिस लड़की ने मुझे यह अँगूठी पहनाई थी...मैं तो उसका नाम तक नहीं जानता। मैं उससे बमुश्किल 10 मिनट के लिए मिला था। करीब एक साल पहले, मैं लंदन में वाटरलू स्टेशन पर अपने दोस्त के साथ खड़ा था, बेल्जियम के लिए अपने ट्रेन का इंतज़ार करते हुए। मेरी ट्रेन कुछ देर थी इसलिए मैं अपने दोस्त के साथ पास के ही एक स्टॉल पर चला गया। वहाँ खड़ी एक लड़की अँगूठियाँ बेच रही थी। मैंने डिस्प्ले से इस अँगूठी को पसंद किया और उठा लिया। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस अँगूठी को कैसे पहनूँ क्योंकि इसमें तीन छल्ले थे। मेरी मदद करने के लिए उसने मेरा हाथ पकड़ा और पहना दिया। यह अच्छा लग रहा था। मैंने उसे धन्यवाद कहा, 5 पाउंड दिए और अपनी ट्रेन पकड़ने के लिए वापस चल पड़ा।’

इसके साथ ही, मेरा तनाव भरा भाव शरारती भाव में बदल गया और मैंने ध्यान दिया कि उसके होंठों पर मुस्कान फैलने लगी। उसकी नम आँखें फिर से चमकने लगीं।

‘एक और बात...’ मैंने उसकी मुस्कुराहट को रोकते हुए कहा, ‘वह लड़की...वह बेहद खूबसूरत थी!’ और मैं हँसने लगा।

और वह भी हँसने लगी, मेरी छाती और कंधे पर मुझे मारती हुई। ‘तुम...तुमको पता है कि तुमने मुझे कितना डरा दिया था? मैं तुमको मार डालूँगी,’ वह मेरे ऊपर चिल्लाती रही और मुझे मारती रही जबकि मैं अपने आपको बचाने की कोशिश करता रहा।

अगले ही मिनट उसका सेल फोन से बजने लगा और फोन के स्क्रीन पर नीरू का नाम चमक रहा था...

खुशी ने फोन उठाते हुए कहा, ‘नीरू...मैं बस पहुँचने ही वाली हूँ...और सुनो...’

उसने अपनी बात पूरी नहीं कि बल्कि वहीं रुक गई। यह नीरू का फोन नहीं था, उसकी माँ का था।

उसके चेहरे पर डर फिर से लौट आया। वह काँप रही थी। उसने ड्राइवर के कंधे पर हाथ मारते हुए कहा कि वह रेडियो की आवाज़ कम कर दे, और अपने होंठों पर उँगली ले जाते हुए उसने मुझे चुप रहने का इशारा किया। फिर उसने अपने फोन को स्पीकर कर लगा दिया। 10.10 बज रहे थे।

वह अपनी माँ को यह समझाने की कोशिश कर रही थी कि अब भी आईएमएस में ही थी, बारिश में फँस गई थी, मुझे पता नहीं कि वह इसमें कितनी सफल रही। उसके लिए सच को छिपाना मुश्किल हो रहा था। उसने अपनी माँ को आखिरी बात यह कही कि उनको चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उसके साथ पूरा बैच है वहाँ, उसके बाद फोन रख दिया। अँगूठी की कहानी से उसका ध्यान बँटाने की मेरी तमाम कोशिश एक मिनट में चूर-चूर हो गई। उसने अपना फोन पर्स में वापस रख लिया, ड्राइवर ने वापस रेडियो बजा दिया, इस बार धीमी आवाज़ में।

तब तक हम फरीदाबाद उसके घर की तरफ़ बढ़ते हुए मथुरा रोड पहुँच चुके थे।

‘भैया, और कितना टाइम लगेगा?’ उसने ड्राइवर से पूछा।

लेकिन ड्राइवर ने कोई जवाब नहीं दिया और मुझे लगा कि कुछ बहुत गलत हुआ है। हमारे सामने पानी का न खत्म होने वाला जमाव दिख रहा था, सारी ज़मीन उससे ढँकी हुई थी। सड़क गायब हो चुकी और रोड के डिवाइडर भी डूब चुके थे। हमारी टैक्सी अब भी पानी से भरी सड़क पर चल रही

थी। हर पल पानी बढ़ता जा रहा था, करीब एक फुट तक पहुँच चुका था। इसकी ज़िम्मेदार थी फरीदाबाद में पानी निकासी की व्यवस्था।

सड़क पर कोई लाईट नहीं थी। अगर थी तो यह काम नहीं कर रही थी। पानी के उस जमावड़े में अनेक गाड़ियाँ आगे बढ़ने के लिए संघर्ष कर रही थीं, इंच-इंच करके। टैक्सी की हेडलाइट में मैंने देखा कि पानी में लहरें उठ रही थीं, उनके साथ पत्ते और तमाम तरह की गंदगी थी और रुकी हुई गाड़ियों से टकरा रही थीं। टैक्सी अब भी आगे बढ़ रही थी, धीमी रफ़्तार में। हम अब गहरे पानी में बढ़ रहे थे, और आखिरकार ड्राइवर ने कहा कि वह अब आगे नहीं जा सकता। ‘साहब यह छोटी गाड़ी है, इंजन में पानी चला जाएगा। हम और आगे नहीं जा सकते।’ मैं उस आगे जाने के लिए राज़ी करने की कोशिश करता रहा लेकिन वह अड़ा रहा और मुझे गुस्सा आ गया। ‘भैया, इस वक्त मेरा दिमाग़ बहुत ज़्यादा ख़राब हो रहा है, अगर फिर से तुमने ये कहा न...’ मैंने अपना आप खोते हुए उससे कहा, तब खुशी ने मेरी कलाई पकड़ते हुए मुझे आगे कुछ भी कहने से रोका। वह जानती थी कि हमारे पास और कोई चारा नहीं था सिवाय इसके कि हम ड्राइवर के मूड को बनाए रखें। इसलिए मैंने अपना टोन बदलते हुए बड़े प्यार से कहा, ‘भैया, मुझे सिर्फ़ इन्हें घर तक पहुँचाना है। आप प्लीज आगे चलते रहो। अगर आपकी टैक्सी खराब हुई तो जो भी खर्चा होगा वो मैं दे दूँगा।’

मेरी मिन्नतों के बाद वह किसी तरह आगे बढ़ने के लिए तैयार हुआ। उसने टैक्सी आगे चलानी शुरू की लेकिन वह बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी।

10.30 बज चुके थे। मैं जानता था कि हमारी हालत बहुत तनावपूर्ण हो गई थी, और मैं इस तनाव के कारण बीमार और थका हुआ महसूस कर रहा था।

हमारी टैक्सी कीचड़ में फँस गई जब अचानक हमारी बायीं तरफ से एक ट्रक गुजरा। मैंने देखा कि उसके भारी पहिए पानी को टरबाइन की तरह चीर रहे थे, जिससे पानी में बड़ी-बड़ी लहरें उठ रही थीं। मैं खुशी को वो भँवर वाली लहरें दिखाने की कोशिश कर रहा था, जिसकी लहरें हमारी बाईं ओर से दाईं ओर बढ़ रही थीं, जब मैंने महसूस किया कि मेरे मोज़े जूते के अंदर गीले हो रहे थे।

‘क्या चूतियापा है!’

सड़क का गंदा पानी हमारी टैक्सी में घुस रहा था। पानी, पानी और पानी...सब ओर। टैक्सी के दरवाज़े के नीचे से बुलबुलों की आवाज़ आई। हमारे पाँव पानी में डूब गए, जैसे टी बैग चाय के कप में डूब जाते हैं।

‘उफ़फ़...इतना पानी?’ वह चीखी।

हमने अपने जूते उतार लिए और सीट के ऊपर पाँव करके बैठ गए।

‘ये तो होना ही था,’ ड्राइवर ने कहा।

उस समय हम उसके घर से बहुत दूर नहीं थे। किसी और सामान्य दिन में वहाँ से घर पहुँचने में 15 मिनट से अधिक का समय नहीं लगता। लेकिन उस भयानक हालत में यह कहना मुश्किल था कि कितना समय लगने वाला था।

धीरे-धीरे टैक्सी के बाहर का दृश्य और भी खराब होता जा रहा था। एक-एक करके सभी गाड़ियाँ चलना बंद कर चुकी थीं। उनके इंजनों ने अंतिम साँसे लीं और फिर से स्टार्ट होने से इनकार कर दिया। मैंने देखा कि लोग अपने कार से बाहर आकर गाड़ियों को पीछे से धक्का लगा रहे थे, जिससे गाड़ियों को वे उस पानी से निकाल सकें। लोग, अपनी पैंट घुटनों तक चढ़ाए, नंगे पाँव, अपनी गाड़ियों से बाहर खड़े एक दूसरे पर किसी न किसी कारण से या अकारण चिल्ला रहे थे।

कुछ ने तो अपनी शर्ट भी उतार रखी थी।

कुछ लोग, जो अब भी अपनी स्टीयरिंग पर बैठे थे, गाड़ी चलाने की पूरी कोशिश कर रहे थे और लगातार एक-दूसरे को कोस रहे थे, खासकर ऑटो वाले। 'तेरे बाप की सड़क है?' 'अबे साले पीछे हट!' 'अरे तेरी माँ की...' वे अपने बंद पड़े ऑटो को पीछे छोड़कर लड़ने में लगे थे।

वापस टैक्सी में हमारे दिमाग का तनाव बढ़ता जा रहा था और हम पिछले दो घंटे की घटनाओं से थक चुके थे। जब मैंने उसकी ओर देखा तो पाया कि उसके दोनों हाथ जुड़े हुए थे और आँखें बंद थीं। वह भगवान से प्रार्थना कर रही थी। वह बेहद डरी हुई थी। और शायद उसकी प्रार्थना सुनी भी जा रही थी। शायद इसीलिए हमारी छोटी-सी टैक्सी अब भी पानी में चली जा रही थी जबकि सड़क पर लगभग सभी छोटी गाड़ियाँ बंद पड़ी थीं।

इस बीच, उसकी माँ का एक और फोन आया, जो अब पहले से अधिक गुस्से में थी और परेशान भी। और जब उन्होंने कहा कि उन्होंने खुशी के रिश्ते के एक भाई को फोन करके कहा है कि वह आईएमएस जाए और उसे घर लेकर आए, तब हमें सच बताना पड़ा।

गहरी साँस लेते हुए खुशी ने कहा, 'मम्मा, मैं आईएमएस में नहीं हूँ। मैं रविन के साथ हूँ...शाम से। आई एम सॉरी कि मैंने आपको झूठ बोला।'

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। हम दोनों इस बात से डरे हुए थे कि उसकी माँ क्या कहने वाली थीं।

और फोन के बाद खुशी ने मुझे बताया, कि हैरत की बात यह है कि उसकी माँ सच को जानने के बाद शांत हो गईं। शायद उन्होंने सोचा हो कि उनकी बेटी किसी ऐसे आदमी के साथ थी जिस पर वह भरोसा कर सकती थीं शहर महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं था, खासकर रात में, जब शहर के जंगली अपने-अपने ठिकानों से बाहर निकलकर सभी तरह के बुरे कामों में लग जाते थे। इसलिए शायद उसकी माँ को कुछ राहत महसूस हुई हो जब उनको पता चला कि मैं खुशी के साथ था।

लेकिन जो 'सच' हमने फोन पर बताया था वह अब भी आधा ही सच था।

यह पूछने पर कि वह उस समय तक कहाँ थी खुशी ने उनसे वही कहा जो उसने नीरू से कहा था, 'मम्मा...हम फिल्म देखने गए थे। और जब हम बाहर आए तो इतनी बारिश हो रही थी, हर तरफ पानी था, और फिर यह ट्रैफिक जाम...'

जब वह अपनी माँ को समझाने में लगी थी उसने थोड़ा-सा समय चुराया और मेरे कान में फुसफुसाई, 'हम मुन्नाभाई देखने गए थे, ठीक है?'

और इस कारण मुझे उसके ऊपर प्यार आ गया। उसने जिस तरह से साहस दिखाते हुए हर तरह का खतरा उठाया सिर्फ मुझे खुश करने के लिए, मैं उसके साथ अपने जीवन के सबसे अच्छे दिन का आनंद उठा सकूँ। और उसके लिए उसने अपने घरवालों की डाँट भी सुनी...मैं उसे अपने जीवन में पाकर खुद को खुशकिस्मत समझ रहा था।

एक बार वह सब कुछ स्वीकार कर लेने वाला कॉल खत्म हुआ तो हमने चैन की साँस ली, जैसे हमारे दिल पर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो।

हम उसकी सड़क पर जाने के लिए बाएँ मुड़े ही थे कि हमारी टैक्सी बायीं ओर झुक गई। हम तीनों बाईं ओर सरक गए और अपने शरीर को सीधा रखने की कोशिश में हमारे हाथों ने सीट को पकड़ लिया और अधिक पानी घुस आया। टैक्सी में करीब आधा फुट पानी घुस आया था। हमारे जूते अंदर कहीं तैर रहे थे।

ड्राइवर ने कितनी भी कोशिश कर ली लेकिन हमारी झुकी हुई टैक्सी ने आगे बढ़ने से मना कर दिया। बाईं तरफ का अगला पहिया एक गड्ढे में घुस गया था। गाड़ी को आगे बढ़ाने के लिए ड्राइवर ने

मुझसे कहा कि मैं टैक्सी को पीछे से धक्का मारूँ, सिवाय इसके कि स्वीमिंग पूल में पानी इतना गंदा नहीं होता और आप जींस और टी-शर्ट में नहीं होते।

मैं उस कीचड़ में खाली पैर खड़ा था। मेरे पैर छोटे-छोटे नुकीले पत्थरों और झाड़-झँखाड़ को छू रहे थे, जो पानी वाले कीड़े भी हो सकते थे, इससे कुछ-कुछ डर भी लग रहा था। पानी मेरे घुटनों तक आ गया। यहाँ तक कि घुटनों तक जींस चढ़ा लेना भी कुछ काम नहीं आया। मैं टैक्सी के पीछे गया। ड्राइवर अब भी ज़ोर-ज़ोर से एक्सिलरेटर दबा रहा था और खुशी कहे जा रही थी, 'शोना...संभल के...ध्यान से...'

मैंने टैक्सी में ज़ोर से धक्का लगाया लेकिन कुछ भी नहीं हुआ।

'साहब और ज़ोर से...' ड्राइवर टैक्सी के अंदर से चिल्लाया।

ज़ाहिर है, वह चिल्ला रहा था और मुझसे बातें कर रहा था। लेकिन मैं अपने ख्यालों में खोया था...

मुझे 6 घंटे के अंदर फ्लाइट पकड़ लेनी थी। मुझे दिल्ली के अपने होटल के कमरे में लौट जाना चाहिए था, हलकी नींद ले लेनी चाहिए, ताकि मैं सुबह के 4 बजे उठ कर एयरपोर्ट जा सकूँ। लेकिन मैं बहुत दूर था, एक अलग शहर में रोड पर फँसा हुआ था, गीली जींस, गीली शर्ट और शायद गीले इनरवियर में भी, अपनी गर्लफ्रेंड को उसके घर वापस पहुँचाने के लिए। कभी न ख़त्म होने वाले गँदले पानी के तालाब में खड़ा टैक्सी को धक्का दे रहा था।

ईमानदारी से बताऊँ तो मुझे इस बात की कोई उम्मीद नहीं लग रही थी कि मैं सुबह एयरपोर्ट पहुँच पाऊँगा। निश्चित रूप से अमेरिका जाना बहुत ज़रूरी था और उसके लिए अभी से कुछ घंटों में फ्लाइट पकड़नी ज़रूरी थी, और उसके लिए दिल्ली में अपने होटल में लौटना बहुत ज़रूरी था, लेकिन सबसे बढ़कर उसके घर पहुँचना सबसे ज़रूरी था।

आख़िरकार हम टैक्सी को बाहर निकालने में सफल रहे। मैंने खुशी को देखा, वह अपनी सीट पर चैन की साँस लेती हुई पीछे घूमकर मुझे देख रही थी।

आगे सड़क पर पानी भयानक रूप से जमा हुआ था। छोटी टैक्सी में जाना कोई अच्छा फ़ैसला नहीं लग रहा था। थोड़ी देर माथा-पच्ची के बाद हमने यह तय किया कि आगे की दूरी केवल रिक्शे पर ही तय की जा सकती है। अपने बड़े पहियों के कारण रिक्शा ही एकमात्र विकल्प दिख रहा था। इसलिए, मैं सड़क पर चलता हुआ आगे बढ़ा, अब भी मैं खाली पैर ही था, रिक्शा ढूँढने। और बड़ी मुश्किल से मुझे एक मिल भी गया। लेकिन रिक्शे वाला उस पानी भरी सड़क पर रिक्शा चलाने के लिए तैयार नहीं हुआ। वह आख़िरकार तब तैयार हुआ जब मैं उसे दस गुना अधिक किराया देने के लिए तैयार हो गया, वह भी एडवांस में। मेरी ज़रूरत उसके लिए मौका बन गई।

मैं रिक्शे पर बैठकर वापस टैक्सी तक आया। मैंने पाया कि मेरे दाएँ पैर से खून निकल रहा था—मेरा दायाँ अँगूठा कट गया था। लेकिन चिंता करने की और भी वजहें थीं। टैक्सी के पास लौटकर मैंने ड्राइवर से कहा कि वह वहीं मेरा इंतज़ार करे, मैं खुशी को घर छोड़कर आता हूँ। मैंने उसका मोबाइल नंबर लिया और उसे अपना नंबर भी दे दिया।

खुशी टैक्सी से बाहर निकलकर रिक्शे पर बैठ गई। वह यह सब देखकर इतने सदमे में थी कि वह अपना सैंडल लाना ही भूल गई और मुझे उनको ढूँढने में कुछ टाइम लगा। (गाड़ी में पीछे अपनी गर्लफ्रेंड का सैंडल ढूँढते हुए आपके हाथ गंदे पानी में डूब जाते हैं...कौन कहता है कि प्रेम का अनुभव हमेशा सुखद होता है।)

सड़क पर पानी बहुत अधिक जमा हुआ था और मैं रिक्शेवाले को चेता रहा था, 'भैया, यहाँ पर ज़रा ध्यान से...' रिक्शे के पहिए पानी में करीब-करीब डूब चुके थे और कभी-कभी तो पानी हमारे

पाँवों को छूने लगता था। रिक्शेवाला जब पैडल मार रहा था तो उसकी जाँघें पानी में डूब-उभर रही थीं। लेकिन हम आगे बढ़ रहे थे, और अगले पाँच मिनटों में हमारी यात्रा खत्म होने वाली थी।

और उसके साथ हमारा साथ भी खत्म होने वाला था, हम दिन में कितनी देर तक कितने करीब थे। अगले कुछ मिनटों में मैं उसे आखिरी बार देखने वाला था, देश छोड़ने से पहले। यह सब कुछ हमारे दिमाग में चल रहा था।

और इससे सब कुछ इमोशनल हो गया, रोमांटिक हो गया।

उन सुनसान पानी भरी सड़क पर हमारे रिक्शे के अलावा कोई और सवारी नहीं थी। पानी में डूबी हुई सड़क बहुत सुनसान लग रही थी। एक अलग तरह की शांति फैली हुई थी और सबसे तेज़ आवाज़ जो आ रही थी वह रिक्शे के पहिए की थी जो पानी काटने से आ रही थी। ऊपर आकाश में चाँद ने हमें साथ-साथ देखा, उस मुश्किल समय में, इस सबसे बाहर निकलने की कोशिश करते हुए, एक दूसरे के प्रति हमारा प्यार। उसने अपना सिर मेरे कंधे पर आराम से टिका दिया था, उसके हाथ मेरी गोद में थे। उसके कंधे के इर्द-गिर्द अपना दायँ हाथ रखकर मैं उसे सहारा दे रहा था और रिक्शा ऊबड़-खाबड़ सड़क पर अपना रास्ता बना हुआ चल रहा था।

और मैंने अपने दूसरे हाथ में उसके सैंडल पकड़ रखी थी।

मेरे हाथ से सैंडल लेकर उसे रिक्शे पर नीचे रखते हुए उसने मेरा हाथ पकड़ा और कहा, 'शोना, हमारी प्रेम कहानी कितनी अलग है, नहीं?'

'हुम्म...' मैं मुस्कराया।

'जिस तरह से हमने एक-दूसरे को पाया,' उसने कहा।

'जिस तरह से पिछले कुछ महीनों से हम फोन पर बातें कर रहे हैं,' मैंने जोड़ा।

'संयोग।'।

'जिस तरह से एक-दूसरे को पाया,' उसने कहा।

'जिस तरह से मिले और सारा दिन साथ बिताया।'।

'और जिस तरह से एक-दूसरे को देखे बिना हमें प्यार हो गया।'।

'हम जिस तरह से मिले और सारा दिन साथ बिताया।'।

'और जिस तरह से हम अभी हैं।'।

'सचमुच, हमारी प्रेम कहानी में सब कुछ एकदम अलग ही था।'।

'मैं कुछ कह सकता हूँ, खुशी?'

'हाँ,' उसने गर्मजोशी से कहा।

'मुझे खुशी है कि इस तरह की रात हमारे जीवन में आई। पता है क्यों? शादी के बाद ख़ूबसूरत रातों में टेरेस पर बैठकर हम इस मुश्किल समय को न जाने कितनी बार याद करेंगे...मुझे इतना अच्छा लग रहा है कि मैं तुमको घर वापस ला पाया,' मैंने कहा।

उसने मेरा हाथ अपनी ओर खींचते हुए किस कर लिया।

'अब मैं कुछ कहूँ?' उसने मुझसे पूछा।

'हुम्म...हाँ।'।

'मैं कितनी खुशनासीब हूँ कि तुम मेरे जीवन में आए। जिस तरह से तुमने मेरा ध्यान रखा, मुझे बचाया, प्यार किया...मैं जानती हूँ कि हमारे रिश्ते में सॉरी या थैंक यू जैसे शब्दों की ज़रूरत नहीं है लेकिन तुमने आज जो एक काम किया और मेरा दिल जीता, उसके लिए मैं तुम्हें थैंक यू कहने से खुद को नहीं रोक पा रही हूँ।' कुछ देर रुकने के बाद उसने फिर कहा, 'मैं तुमहें बताऊँ कि वह क्या बात थी?'

‘मैं तुम्हें उन खूबसूरत शब्दों के लिए थैंक यू कहना चाहती थी जो तुमने अपने कमरे में मेरे कानों में कहे थे। कि तुम ऐसा कुछ भी नहीं करोगे जिसके लिए हमारी आत्मा गवाही नहीं देगी। तुमने एक बार और मेरा दिल जीत लिया जब तुमने यह वादा किया कि तुम ऐसा कुछ भी नहीं करोगे जो मुझे अच्छा नहीं लगे, ऐसा कुछ भी नहीं जिसके लिए मुझे बाद में पछताना पड़े। एक लड़की के लिए इन शब्दों का बहुत मतलब होता है और मुझे खुशी है कि तुमने ऐसा कहा। मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूँ, लेकिन उससे भी अधिक मैं तुम्हारी इज़्जत करती हूँ, इस सबके लिए।’

उसने मेरे सामने अपना दिल खोलकर रख दिया। उस चाँदनी रात में, उसकी बगल में रिक़्शे पर बैठकर, पानी भरे सड़क पर तैरते हुए, मैंने महसूस किया कि वह कितनी खुश थी। शायद इसी कारण उसकी आँखें भर आईं और उसके पलकों से खुशी के आँसू चू पड़े।

‘आई लव यू शोना...मेरे अच्छे और बुरे समय में हमेशा मेरे साथ रहना, जैसे तुम अभी हो वैसे ही,’ उसने कहा।

‘मेरा वादा है,’ मैंने उसके आँसू पोंछते हुए कहा।

...

उस चाँदनी रात में हमारा रोमांटिक सफर खत्म हुआ जब हम उसके घर पहुँचे। गेट पर नीरू और उसकी माँ थी, जिन्होंने अपनी बेटी को देखकर चैन की साँस ली और माँ वाला गुस्सा दिखाते हुए घर के अंदर चली गईं।

हम नीचे उतरे और मैंने रिक़्शेवाले से कहा कि वह 5 मिनट इंतज़ार करे।

गेट पर मैंने नीरू से पूछा, ‘उनका मूड कैसा है?’

‘अब तक तो वे दुखी थीं, लेकिन अब उनके गुस्सा दिखाने का समय है। लेकिन वे ज्यादा कुछ कहेंगी नहीं क्योंकि तुम यहाँ हो,’ नीरू ने हँसते हुए जवाब दिया।

‘चल, मैं सब संभाल लूँगी। लेकिन ऐ! हमारी इतनी मदद करने के लिए शुक्रिया।’

और हम तीनों अंदर आए, मैं सबसे आगे था।

मैंने देखा मम्मा ड्राइंग रूम में बैठी हुई थीं। मैंने इस बात की परवाह किए बिना कि मेरी जींस से कालीन गंदी हो जाएगी, मैं उनके पास गया। जैसा दुनिया की कोई भी माँ महसूस करती, वह भी गुस्से में थीं। बिना एक भी शब्द कहे मैं उनके सामने घुटनों के बल बैठ गया। हाँ, मैं अपनी होने वाली सास के सामने घुटनों के बल बैठा उनकी आँखों में देख रहा था।

मैंने बहुत शालीनता के साथ कहा, ‘खुशी की कोई ग़लती नहीं है इसमें। यह सारा प्लान मेरा था। और आप इसके लिए मुझे सज़ा दे सकती हैं।’ (और मैंने अपने आपसे कहा, जल्दी कर लीजिए क्योंकि मुझे कुछ ही घंटों में प्लेन पकड़ना है।)

दरवाज़े के पास खड़ी दोनों बहनों ने मुझे देखा। पता नहीं वे क्या सोच रही थीं। मैं बहादुर था या बेवकूफ़? मैं नहीं चाहता था कि मेरे जाने के बाद खुशी को माँ के सवालियों के जवाब देने पड़ें इसलिए मैं अपने सामने ही सब कुछ साफ़ कर लेना चाहता था। मैंने वही किया जिससे मुझे लगा कि उसका बचाव किया जा सकता था।

अगले ही पल मम्मा ने मुझे उठाते हुए कहा, ‘थोड़े दिनों में चले जाना है इसने यहाँ से अपने घर...’ वह अंदर से पिघल गई, अपनी प्यारी बेटी के बारे में सोचते हुए। सबकी माँ कितनी भावुक होती हैं, मेरी भी।

उन्होंने आगे कहा कि हम शाम को उन्हें सच बताकर जा सके थे। वह मना नहीं करतीं। (बिलकुल मुन्नाभाई के लिए तो वह न नहीं कहतीं लेकिन दिल्ली के बारे में? मैं अब भी अपने आपसे बातें कर रहा था।)

इस तरह से मैंने उसके घर में हालात को संभाला। जब मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली तो आधी रात हो चुकी थी, मुझे दिल्ली जाना था, उसी पानी भरी सड़क को पार करते हुए, उसी बॉर्डर को पार करते हुए, उसी पानी भरी कार में। समय गुज़रता जा रहा था और अगर सब कुछ सही रहा तो मैं अगले कुछ घंटों में इंदिरा गाँधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर होने वाला था।

उसके घर का माहौल अब अच्छा हो गया था। मैं बेडरूम तक गया, मुझे बाथरूम जाने की ज़रूरत बुरी तरह महसूस हो रही थी। ज़ाहिर है, दो घंटे से गीली जींस को पहने हुए चारों तरफ पानी से घिरे रहने के कारण यह स्वाभाविक ही था।

कुछ देर बाद गेट पर उन तीनों औरतों ने मुझे गुड बाय कहा। लेकिन मैंने उसे हाथ हिलाया जो उन तीनों में सबसे आगे खड़ी थी। मुझे फिर से इतना अलग-सा महसूस हो रहा था। मैं उस लड़की को हाथ हिला रहा था जिसके साथ मैंने सबसे लंबा दिन बिताया था, मैं उसे तब तक देखता रहा जब रिक्शा बाईं ओर मुड़ गया और वह मेरी आँखों से दूर हो गई और मैं उसकी आँखों से।

कुछ ही देर में मैं वापस टैक्सी में पहुँच गया। सड़क पर पानी कम हो गया था और हालात पहले से बेहतर लग रहे थे। वापस जाने में मुझे कुछ ख़ास परेशानी नहीं हुई। तब तक ट्रैफिक बहुत कम हो चुका था, हालाँकि मैंने तब भी देखा कि कुछ खराब गाड़ियाँ सड़क की दोनों तरफ़ खड़ी थीं।

हर 15-20 मिनट में खुशी यह जानने के लिए मुझे फोन कर रही थी कि सब कुछ ठीक था या नहीं। उसने मुझे बताया कि उसने अपने गीले कपड़े उतार दिए थे और वह नाइट ड्रेस पहनकर अपने बेड पर लेटी थी। मुझे यह सुनना बहुत अच्छा लगा जब उसने यह कहा। मेरा मन फिर से उसके साथ होने को करने लगा। हम बहुत देर तक बात नहीं कर सके, क्योंकि मेरे सेल फोन की बैटरी खत्म हो रही थी।

मैंने ड्राइवर से कहा वह रेडियो चला दे, मैं उस दिन की जीत की खुशी मनाना चाहता था, या शायद मेरे जीवन की सबसे यादगार जीतों में से एक की खुशी। ड्राइवर की बग़ल में बैठे हुए मैंने अपनी सीट को पीछे खिसका लिया, जिससे मेरे गीले, दुखते पैरों को आराम मिल सके।

म्यूजिक के साथ मैं अपने पैर थपथपाने लगा। मैंने अपनी बाईं ओर सामने के शीशे में देखा और मुझे एक छाया दिखाई दी...

उन रोशनियों की छाया जो पानी में चलने के लिए संघर्ष करती गाड़ियों से आ रही थी, उस पल की छाया जब वह रिक्शे में मेरे कंधे पर अपना सिर रखकर आराम कर रही थी, उस पल की छाया जब मैं गाड़ी को धक्का लगा रहा था, उसके घर से आने वाले फोन कॉल्स की छाया जिनको उठाते हुए वह डर जा रही थी। उस यादगार किस की छाया जो उस शाम रूम नंबर 301 में लिया गया था।

और, उन छायाओं को देखते हुए मैंने मुस्कुराते हुए अपनी आँखें बंद कर लीं।

‘अरे! मम्मा...वह इतनी अच्छी है!’

मैं एयरपोर्ट पर था, लंबी लाइन में खड़ा आखिरी आदमी, ब्रिटिश एयरवेज के टर्मिनल की तरफ़ के टर्मिनल की तरफ बढ़ता हुआ। मैं अपने कंधे पर टंगे लैपटॉप को संभालते हुए, उसी हाथ से ट्रॉली को पकड़े फोन पर मम्मी-पापा से बातें कर रहा था। बाहर, अभी भी सुबह थी। सूरज कुछ समय में ही निकलने वाला था। मुझे बहुत नींद आ रही थी। लेकिन होटल में ठंडे पानी से नहाने के बाद मेरी नींद खुल गई थी। और मुझे नहाने के लिए भेजने वाली खुशी थी, उसने मुझे ठीक 4 बजे जगा दिया था।

उधर मेरे शहर में, मम्मी-पापा यह जानने के लिए बेचैन थे कि क्या हुआ। ऐसा लगता था कि पापा सुबह की ख़बरों से अधिक मेरे किस्सों का मज़ा उठा रहे थे, नहीं तो उन्होंने उस समय मम्मी को फोन को स्पीकर पर लगाने के लिए नहीं कहा होता जब वे सुबह की चाय पी रहे थे। उसका परिवार कैसा

है? उसकी माँ कैसी है? सबने क्या कहा? उसका घर कैसा है? और सबसे मज़ेदार सवाल मम्मी ने यह पूछा कि तुमने वहाँ लंच में क्या खाया?

‘उसका परिवार सचमुच अच्छा है। मैं उसकी माँ, उसकी बड़ी बहन अमी दी और अमी दी के पति पुष्कर से मिला। उसकी छोटी बहन नीरू भी वहाँ थी। उसकी माँ तो बिलकुल आपकी तरह है। मुझे वहाँ सब अच्छे लगे। खुशी एक अच्छी लड़की है। मम्मा...और मैं बहुत खुश हूँ,’ मैंने कहा और उसके बाद मम्मा ने कहा, ‘और तुम खुश हो तो हम खुश हैं।’

और वे जितने खुश होते उतने ही सवाल और पूछने लगते। मुझे उनके सवालों के जवाब देने में करीब आधे घंटे लगे और उसके बाद मैंने उनको गुडबाय कहा और उन्होंने मुझे हैप्पी जर्नी कहा। कुछ देर बाद मेरा मन उसे फोन करने को होने लगा। वैसे मैं जानता था कि वह सो रही होगी। मैं तो होटल के अपने कमरे में 3 घंटे तक चैन की नींद सोता रहा लेकिन वह थोड़ी-थोड़ी देर में अपने सेल फोन की घड़ी में बार-बार टाइम देख रही थी जिससे कि वह मुझे समय पर जगा सके। अब चैन की नींद सोने की उसकी बारी थी। फिर भी मैंने उसका नंबर डायल कर दिया। क्योंकि अगले कुछ घंटों में मैं उसको फोन नहीं कर पाता।

मैंने पूरे रिंग की आवाज़ सुनी, लेकिन उसकी आवाज़ सुनने को नहीं मिली।

दुखी होकर मैंने अपना फोन जेब में रख लिया और आगे बढ़ने लगा। लोग एक हाथ से ट्रॉली सरका रहे थे और उनके दूसरे हाथ में उनके पासपोर्ट और टिकट थे। कुछ अपने आइपॉड पर म्यूजिक सुन रहे थे। इंडियन चेहरे, विदेशी चेहरे। गोरे बच्चे लाइन में खामोशी से खड़े थे, अपने मम्मी-पापा के हाथ पकड़े। बाकी छोटे-छोटे बच्चे जो इधर-उधर दौड़ रहे थे, शोर मचा रहे थे, खेल रहे थे, सब इंडियन थे।

मैं एक्सप्रेस स्कैनर के सामने खड़ा अपने बैग के बाहर निकलने का इंतज़ार कर रहा था कि मैंने अपने सेल फोन के बजने की आवाज़ सुनी, वही थी।

‘उठ गया मेला बेबी...?’

‘हुम्म...’ और अपनी गर्म, उनींदी भारी आवाज़ में वह मुझे किस कर रही थी, शायद अपनी आँखों को आधा खोले, अब भी थकी हुई। उसकी मीठी आवाज़ को सुनकर, मैंने ख्यालों में सोचा कि किसी सुबह मैं भी उसकी बगल में जग रहा हूँ, उसी बिस्तर पर।

अपना गला साफ़ करते हुए उसने मुझसे बात शुरू की।

लाइन आगे बढ़ती जा रही थी और हम बातें करते जा रहे थे।

सामान की जाँच करने वाले काउंटर पर भी वह मेरे साथ थी।

सेक्योरिटी जाँच के समय इसके अधिकारियों ने मुझे उससे जुदा कर दिया। उन्होंने जाँच से पहले मुझे सेल फोन बंद कर देने के लिए कहा। लेकिन जैसे ही मैं उस जाँच से निकला वह फिर मेरे साथ थी। मैं बुरी तरह उससे बात करना चाहता था, मुझे उसकी कमी बेहद महसूस हो रही थी और मैं एयरपोर्ट से भागकर सीधे उसके पास पहुँच जाना चाहता था। असल में, मेरा मन हो रहा था कि मैं उससे उसी समय और वहीं शादी कर लूँ। इन्हीं कारणों से मैं करीब डेढ़ घंटे तक उससे फोन पर ऐसे लगा रहा था कि मेरे लिए तीसरी और आखिरी अनाउंसमेंट हो रही थीं। आखिरी शब्द थे:

‘...बोर्डिंग फ्लाइट नंबर BA182 टू न्यूयॉर्क, प्लीज़ रिपोर्ट ए गेट नंबर 2।’

मैं जानता हूँ कि मेरी अगली बात पर यकीन करना बहुत मुश्किल होगा, लेकिन यह सच है। मुझसे मीलों दूर किसी और शहर में अपने बेड पर लेटी उसने यह सुन लिया कि मेरे नाम की अनाउंसमेंट हो रही थी (जिसे सुनने से मैं रह गया था, जबकि स्पीकर ठीक मेरे सिर के ऊपर लगा था), मेरे सेल फोन के स्पीकर से। विश्वास नहीं हो रहा है, है न?

‘शोना, मुझे लगता है यह तुम्हारे लिए है,’ वह घबराई ।

‘क्या?’

‘ऐसा लग रहा है यह अनाउंसमेंट तुम्हारे लिए है,’ वह जल्दी में चिल्लाई ।

‘एक सेकेंड ।’

मैंने अपने सामने खड़े गोरे आदमी की पीठ थपथपाई । उसकी टी-शर्ट पर यूएस का झंडा बना हुआ था । ‘आप बताएँगे कि वे किसका नाम पुकार रहे हैं?’ पता नहीं क्यों जब भी मैं किसी गोरे आदमी से बात करता हूँ तो मेरे बोलने का अंदाज़ बदल जाता है ।

‘ओह, आपका मतलब है अंतिम अनाउंसमेंट?’

हाँ ।

‘न्यूयॉर्क जाने वाले किसी रविन के लिए है । पता नहीं लोग टाइम पर एयरपोर्ट क्यों नहीं पहुँचते हैं ।’

मैं गुस्से में उसकी आँखों में देखता रहा लेकिन कहा कुछ भी नहीं । ज़ाहिर है, ग़लती मेरी थी ।

‘यह मैं हूँ ।’ मैंने अपना चेहरा उसके चेहरे के पास ले जाते हुए कहा, ‘लेकिन पता है...यह बताने के लिए आपका शुक्रिया कि यह मेरे लिए था ।’

उसका चेहरा देखने लायक था । पीला । शायद उसे एक सेकेंड के लिए याद आ गया हो कि वह मेरे देश में था, अपने देश में नहीं । लेकिन इससे पहले कि वह माफ़ी माँगना शुरू करता मैं गेट नंबर 2 की तरफ़ भागा ।

उधर फोन पर खुशी अब भी मेरे जवाब का इंतज़ार कर रही थी ।

लेकिन उसके गेट पर जो हुआ वह आश्चर्य में डालने वाला था ।

‘खुशी, मैं कुछ देर में फोन करता हूँ,’ मैंने कहा और फोन काट दिया यह समझने की कोशिश करता हुआ कि क्या हुआ था । दरवाज़े पर खड़ी सेक्योरिटी वाली ने मेरा बोर्डिंग पास ले लिया । उसने उसे जाँचा तो स्क्रीन पर लिखा हुआ आया इनवैलिड । उसने चेहरे पर मुस्कराहट लाते हुए उसे मुझे लौटा दिया । मैंने एक बार पास की ओर देखा और एक बार उसके चेहरे की ओर और आश्चर्य में पड़ गया— अब यह क्या हुआ? फिर, उसने बड़े स्टाइल के साथ उसे मुझसे छीनकर उसके दो टुकड़े कर दिए, और डस्टबिन में डाल दिया ।

मैं पूरी तरह से हैरान था । क्या आपको मेरे सामान में कोई ड्रग मिला? या स्मगलिंग का कोई हीरा? या शायद कोई हैंड ग्रेनेड? हे भगवान मैं तो यह जानता भी नहीं कि ग्रेनेड कैसा होता है ।

मेरे चेहरे पर बेचैनी को देखकर उस औरत ने आखिर बताया कि क्या हो रहा था ।

‘मुबारक हो सर! आप खुशकिस्मत यात्र हैं । आप इकोनॉमी क्लास में नहीं बिज़नेस क्लास में यात्र करने वाले हैं ।’

मुस्कुराते हुए उसने मेरे हाथ में बिज़नेस क्लास का बोर्डिंग पास दे दिया और मुझसे प्लेन के लिए जाने के लिए कह दिया । बाकी जनता, बेचारे इकोनॉमी क्लास के यात्र जिनको मेरी वजह से इंतज़ार करना पड़ा था, उनको भी जाने की इजाज़त दे दी गई ।

क्या बात है!

कुछ ही देर में मैं प्लेन में था और खुशी फिर से मेरे साथ थी । मैंने उसे अपनी खुशकिस्मती के बारे में बताया और उसने छूटते ही कहा, ‘चूँकि मैं तुम्हारे जीवन में हूँ इसलिए तुम्हारे साथ सिर्फ अच्छी चीज़ें ही होंगी ।’

जब मैं उससे बात कर रहा था तो मैंने देखा कि वही यूएस के झंडे वाला यात्री गुज़र रहा था । मैंने उसे देखकर हाथ हिलाया लेकिन वह इकोनॉमी क्लास की तरफ़ ऐसे बढ़ गया जैसे उसने मुझे देखा ही

न हो। लेकिन मैं तो ऐसे बना हुआ था कि कौन परवाह करता है? मैं अब भी फोन पर रोमांस करने में लगा हुआ था।

जब प्लेन रनवे पर था तब एयरहोस्टेस ने मुझसे विनती की कि मैं अपना फोन बंद कर दूँ। मुझे पक्का लगता है कि उसे आश्चर्य हो रहा होगा कि आखिर मुझे बिजनेस क्लास में जाने की इजाज़त किसने दी। मैं उस स्कूली बच्चे की तरह व्यवहार कर रहा था जिसकी तुलना टीचर कुत्ते की पूँछ से करते हैं—आप चाहे जितनी भी कोशिश कर लें वह सीधी नहीं हो सकती।

इस बार मैंने उसे पास आने का इशारा किया और उससे फुसफुसाते हुए पूछा, ‘क्या आपको कभी प्यार हुआ है?’

‘क्या?’ वह एक कदम पीछे जाते हुए बोली।

‘दूसरी तरफ़ मेरी गर्लफ्रेंड है, जिससे मैं एक दिन शादी करने वाला हूँ। मैं उसे बहुत दिनों तक देख नहीं पाऊँगा, बस यही कुछ आखिरी पल हैं देश छोड़ने से पहले उससे बातें करने के। और इस समय वह मेरे साथ रहना चाहती है। क्या मैं उससे बता दूँ कि एक ख़ूबसूरत एयरहोस्टेस मुझे उससे बात नहीं करने के लिए कह रही है?’

वह मुस्कुराई और चली गई। और कुछ ही देर में वह जूस का एक बड़ा गिलास और कुछ कुकीज़ लेकर लौटी। उसने कंबल से मुझे ढँकने में मदद की, ख़ासकर मेरा फोन, और फुसफुसाई, अब एन्जॉय करो।

और ज़ाहिर है मैंने खुशी के साथ उस पल का मज़ा उठाया। वह मुझे किस करती रही और मैं उसे तब तक गुड बाय करता रहा जब कि नेटवर्क खत्म नहीं हो गया।

जहाज़ आसमान में था।

उससे दूर

पहला दिन

मुझे अच्छी तरह याद है। वह शनिवार की रात थी। करीब 7.30, जब मैं होटल पहुँचा। रिसेप्शन पर पेमेंट करते हुए मैंने इस बात को पक्का किया कि मेरे रूम में इंटरनेट कनेक्शन हो।

बेलब्वॉय ने मुझे फर्स्ट फ्लोर कमरे तक पहुँचने में मदद की। मैंने उसे करीब तक डॉलर दिया। फिर मैं अपने कमरे में घुसा। सामान दरवाज़े पर ही छोड़ते हुए, मैंने जल्दी से अपना लैपटॉप बैग खोला और उसी समय ऑनलाइन हो गया। मैंने सबसे पहले याहू मैसेंजर खोला। सबसे पहला काम मैंने यही किया।

इंडिया में सुबह का वक्त था और मैं जानता था कि वह मेरा इंतज़ार कर रही होगी।

और वह सचमुच कर रही थी।

हमने पहले से ही तय कर लिया था कि हम लोग इसी समय चैट किया करेंगे। हालाँकि, मैं छोटे सफ़र की उम्मीद कर रहा था, और उस लिहाज़ से मैं कुछ लेट था। और दिल्ली से हीथ्रो की 8 घंटे की यात्रा के बाद, 3 घंटे ट्रांजिट में, फिर 8 घंटे हीथ्रो से न्यूयॉर्क और फिर टैक्सी से दो घंटे में न्यूयॉर्क से शेल्टन, मुझे बुरी तरह जेटलैग हो रहा था।

लेकिन 24 घंटे से उससे बात नहीं की थी इसने सभी चीज़ों को पीछे छोड़ दिया।

वह मुझे ऑनलाइन देखकर खुश हो गई। मैं भी था। लेकिन उसकी खुशी ज़्यादा थी क्योंकि उसने पल भर में इतनी लाइनें लिख मारीं:

हे...शोना...तुम हो

तुम कैसे हो...कब पहुँचे।

सफ़र कैसा रहा? अभी तुम कहाँ हो?

तुम हो न?

बज़।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, उससे सिर्फ़ पूछा, क्या तुमने मुझे मिस किया?

‘बहुत ज्यादा डियर...और तुम...?’

‘हुम्म...मैं तुम्हें बताऊँगी लेकिन पहले अपना स्पीकर ऑन करो और बातचीत शुरू करो।’

मैंने उसे अपने सफ़र के बारे में सब कुछ बताया—फ्लाइट्स, ट्रांजिट, साथ सफ़र करने वालों के बारे में और इस सबके बीच मैंने उसकी कमी कितनी महसूस की। उसने मुझे बताया कि उसने कैसे अपना सारा दिन मुझसे बिना बात करते बिताया। यहाँ तक कि उसके घर में भी सब समझ गए थे कि वह मुझे कितना मिस कर रही थी। एक दिन के बाद एक-दूसरे की आवाज़ सुनना बहुत अच्छा लग रहा था। पिछले छह महीने में यह कभी नहीं हुआ था। हम काफी देर तक बातें करते रहे और आखिरकार जब फरीदाबाद में बिजली चली गई और उसके यूपीएस ने भी काम करना बंद कर दिया तब जाकर हमने एक-दूसरे को गुड बाय कहा।

तब मुझे समझ में आया कि मुझे अपने जूते उतार लेने चाहिए (जिसे मैं पिछले दिन से ही पहने हुए था), अपना सामान ले आना चाहिए, जो अब भी गैलरी में ही था। उससे बात करने की जल्दी में मैं अपना वॉलेट रिसेप्शन पर ही भूल आया था।

तीसरा दिन

सोमवार था। मेरे क्लाइंट के ऑफिस में मेरा पहला दिन।

ऑफिस में मैं सबसे पहले इन्फोसिस के अपने साथियों से मिला जो मुझसे पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे—कुछ पुराने पहले और कुछ नए। विदेश में हम इंडियंस सबसे पहले इंडियंस को ढूँढते हैं।

और मैं वैसा ही एक गर्व भरा इंडियन था।

अगले कुछ घंटों में मेरे प्रोजेक्ट मैनेजर ने मुझे क्लाइंट से मिलवाया और उसे मुझसे। उनके चेहरों से अधिक में कैफेटेरिया, कॉन्फ्रेंस रूम और बाथरूम जाने के रास्ते को याद रखने की कोशिश कर रहा था।

जल्दी ही मैं अपने काम में लग गया। सप्ताह के मेरे दिन ऑफिस में कटते थे, क्लाइंट के साथ काम करते हुए, अलग-अलग लोगों से मिलते हुए, बाहर के फोन और कैफेटेरिया में अलग-अलग तरह के खाने खाने में। शाम को मैं आम तौर पर होटल के अपने कमरे में जाकर कैट के लिए पढ़ाई करता था। अक्सर, मैं रात का अपना खाना खुद बनाता था। (ईमानदारी से कहूँ तो बनाने के लिए कुछ था नहीं, मैं कुछ फ्रोजेन फूड गर्म कर लेता था)

लेकिन चाहे मैं कुछ भी करूँ वही मेरे ध्यान में रहती थी।

मैं उसे अमेरिकी दिनों में मिस करता था और वह मुझे इंडियन रातों में मिस करती थी। वह मुझे इंडियन दिनों में मिस करती थी और मैं उसे अमेरिकी रातों में। ज़िंदगी आसान नहीं थी। हम जब चाहें तब एक-दूसरे को फोन नहीं कर सकते थे। हम दिन में दो बार चैट करते: मैं अपनी सुबह में जब मैं सोकर उठता और उसके सोने जाने से पहले। मेरी रातों में, जब मैं सोने जाता और वह सोकर उठती।

सातवाँ दिन

हम लोग आम दिनों की तरह चैट कर रहे थे, और उसने मुझसे कहा कि मैं उसके लिए कुछ खास करूँ।

‘शोना, मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे रोज सोने से पहले ईमेल करो। वे मेरे साथ रहेंगे और मैं उनको बार-बार पढ़ूँगी, जब भी तुमको मिस करूँगी।’

लेकिन उसकी इस प्यारी-सी उम्मीद को तोड़ते हुए मैंने जवाब दिया, ‘हुम्म...मैं कोशिश करूँगा। लेकिन कह नहीं सकता भाग-दौड़ भरे दिन के बाद मैं कर सकता हूँ। ऑफिस, किट, चैट, डिनर...इतना कुछ है न।’

मैंने ऐसा इसलिए नहीं कहा कि मैं उसको ई-मेल नहीं लिखना चाहता था, बल्कि मैं उसे सरप्राइज़ देना चाहता था।

मैंने उसके लिए एक डायरी लिखी।

पता नहीं क्यों, मुझे लगा कि हाथ से लिखे शब्दों में अधिक अर्थ होते हैं और अधिक भावना होती है। उनमें कुछ ऐसा होता है जो इलेक्ट्रॉनिक मेल में नहीं हो सकता। मैंने उसे इसके बारे में बताया नहीं, लेकिन हर दिन मैं उसके लिए अपनी भावनाओं को डायरी में लिखने लगा। हर पन्ने में लिखा होता कि मैं उसको किस कदर मिस करता था, मैं तो बस यही चाहता था कि वह मेरे साथ रहे, उसके लिए छोटी-छोटी कविताएँ लिखीं। और उसका स्केच बनाया जब मैं उसके बारे में सोच रहा था। लेकिन उसे अधूरा छोड़ दिया जब मुझे इसका अहसास हुआ कि मैं कितना खराब आर्टिस्ट था।

बारहवाँ दिन

शुक्रवार था। पश्चिम में सप्ताह का यह दिन ऐश का दिन होता है। वैसे तो ऑफिस में यह काम का दिन होता है, लेकिन इस दिन काम को छोड़कर सब कुछ होता है। वैसे हम अपने-अपने क्लाइंट के लिए काम कर रहे थे इसलिए हमारा वीकेंड शुक्रवार की शाम को शुरू होता था।

उन शामों का लुत्फ उठाने के लिए हम गुप बनाकर डिस्को जाते, पब जाते, खाने के ठिकानों पर जाते, खेलने जाते। या हम गाड़ी से पास के शहर में जाते जहाँ देशी फिल्म का शो होता। और मुन्नाभाई अमेरिकी सिनेमा हॉल्स में भी चल रहा था। जिससे मुझे उस मुश्किल भरी रात की याद आती थी।

वहाँ साईट पर वीकेंड में खूब मज़ा होता था। लेकिन इस दफ़ा कुछ अलग था—मुझे उन लोगों से इस साल का सामना करना पड़ता था जिनके साथ मैंने पिछली यात्राओं के दौरान वीकेंड बिताई थी।

‘तुम तो पहले पीते थे, न? तो अब क्या हुआ?’

मैं उनको सच बताना चाहता था लेकिन बताया नहीं। कारण यह था कि मैं अपने पिछले जीवन में (मेरा मतलब है प्यार में पड़ने से पहले) उनको ज्ञान दिया करता था कि लोगों को अपनी गर्लफ्रेंड के कारण अपने आपको बदलना नहीं चाहिए। अब मैं उनको यह कैसे बता सकता था कि मैंने कभी-कभार पीने की अपनी आदत एक लड़की के लिए छोड़ दी है? इसलिए मुझे उनको झूठे कारण बताने पड़े।

और मैं आपको बताऊँ। बहाने बनाना मुश्किल होता है, दो कारणों से। दोस्तों का दबाव बहुत अधिक होता था, खासकर तब जब वे नशे में होते थे और वे आपको पीने के लिए एक-दूसरे की कसमें देने लगते थे। और दूसरे, पीने की मेरी अपनी इच्छा के कारण।

लेकिन मैंने नहीं पी।

और मैं खुश था कि मैंने उससे किया अपना वादा निभाया।

तीसवाँ दिन

एक सुबह—शायद नौ बजे थे—मैं अपने ऑफिस में था और मैंने अपना मैसेजर खोला। हमेशा की तरह उसने अपनी आवाज़ में मैसेज छोड़ रखा था मेरे दिन को बढ़िया बनाने के लिए। अब तक कई जमा हो चुके थे, वे इतने प्यारे थे कि मैंने उनमें से किसी को डिलीट करने के बारे में सोचा भी नहीं। लेकिन जब मैसेज बॉक्स भर गया तो मुझे यह चुनने में मशक्कत करनी पड़ी कि आखिर किस-किस को डिलीट किया जाए। उनमें एक ऐसा था जिसे मैंने कभी डिलीट नहीं किया, वह उनमें सबसे प्यारा था। इसमें वह मुझ पर बच्चों की तरह इस बात के लिए गुस्सा हो रही थी कि मैं एक दिन ऑनलाइन नहीं हुआ था, उसको जुकाम था फिर भी वह मेरे ऊपर चिल्ला रही थी। मैं उस दिन आईएसडी कॉल पर इंडिया के अपने प्रोजेक्ट ऑफिस में बात कर रहा था, कि मैंने देखा कि वह ऑनलाइन थी।

‘मुझे कुछ कहना है,’ उसने मैसेज किया।

इसका जवाब मैंने स्पीकर फोन पर हाथ रखते हुए दिया, ‘मैं बिजी हूँ...तुमको थोड़ा इंतज़ार करना पड़ेगा।’

अगले ही पल, मेरा क्लाइंट मैनेजर मुझे एक मीटिंग के लिए दूसरे कॉन्फ्रेंस रूम में ले गया। उस दिन मैं एक मीटिंग से दूसरी मीटिंग में भागता रहा। किसी-किसी दिन ऐसा होता है और वह वैसा ही दिन था। बाहर बजे के करीब मैं अपने क्लाइंट के साथ कैफेटेरिया में लंच के लिए घुसा कि मुझे याद आ गया कि वह मेरा इंतज़ार कर रही थी।

ओफफो!

मैं अपने कमरे में अपने लैपटॉप की ओर भागा जिसमें मैंने देखा कि उसने ढेर सारे मैसेज छोड़ रखे थे। जो सबसे आखिरी था उसमें लिखा था, 'कब आओगे शोना...मुझे तुमको कुछ दिखाना है।'

मैंने उसके भेजने का समय देखा। वह करीब एक घंटे पहले भेजा गया था। मुझे इस बात का बुरा लगा कि मैंने उससे इंतज़ार करवाया, वह भी कई घंटे। दोपहर की शिफ्ट में काम करना, रात में 11 बजे घर लौटना और फिर तीन घंटे मेरा इंतज़ार...वह कितनी थकी, कितनी उनींदी रही होगी। वह मुझे क्या दिखाना चाहती थी? क्या वह चली गई होगी? क्या सो गई होगी? मैसेंजर में उसका स्टेटस 'फुरसत में' दिखा रहा था।

मैंने अपने वॉलेट से कॉलिंग कार्ड निकाला और उसका नंबर डायल कर दिया। कुछ देर बाद वह अपने आप कट गया। मैं एक बार और करने ही जा रहा था कि अचानक उसका मैसेज मेरे लैपटॉप के स्क्रीन पर चमका, 'क्या तुम थे? क्या तुम ऑनलाइन हो?'

मैंने अपने की बोर्ड पर तुरंत टाइप किया, 'हाँ डियर।'

'तुम कहाँ थे?'

'मुझे माफ़ कर दो डियर। मैं बुरा आदमी हूँ। मैंने तुम्हें इतना वेट करवाया...असल में, सुबह से ही। मैं इतना बिजी चल रहा हूँ यहाँ कि मैं एकदम भूल गया कि तुम ऑनलाइन हो, मेरा वेट कर रही हो। कम से कम मुझे तुमसे कह देना चाहिए था कि हो सकता है कि मैं नहीं जा पाऊँ...।'

'कभी-कभी हो जाता है। मैं समझ सकती हूँ।' वह मेरे ऊपर बिलकुल नहीं चिल्लाई।

'फिर भी...लेकिन अब मैं उसके लिए और वेट नहीं कर सकता जो चीज़ तुम मुझे दिखाने वाली थी। बताओ न क्या था।'

'क्या तुम अभी मुझे दिखा सकती हो?' मैंने उससे फिर पूछा।

और उसने जवाब दिया, 'यह रहा पहला। अपना ई-मेल चेक करो।' उसमें 1.2...कुल नौ फोटोज थे। उसके 9 फोटोग्राफ।

उसकी खूबसूरती में खोया हुआ मैं उन तस्वीरों को देखता रहा। बिला शक वे उसकी सबसे अच्छी तस्वीरें थीं। मेरे ऊपर उनका जादू जैसा प्रभाव पड़ा। उस समय मैं दो चीज़ों से संघर्ष कर रहा था: एक तो मैं उनमें से किसी तस्वीर से अपनी निगाहें नहीं हटा पा रहा था, और दूसरे मेरी यह ख्वाहिश कि मैं बाकी तस्वीरों को एक साथ ही देख लूँ।

कितना अच्छा सरप्राइज़ उसने मुझे दिया था। उस समय मेरा दिल सातवें आसमान पर था यह जानने के कारण कि वह खूबसूरती मेरी थी, और जब सुंदरता आपके दिमाग में चढ़ जाती है तो आपको समझ में नहीं आता कि क्या कहें, और आप खुशी के मारे गुम हो जाते हैं। फिर, जब मुझे यह समझ में आया कि उस मासूम दिल ने मेरे इंतज़ार में अपनी रात की नींद खराब की है, तो मैंने आखिरकार टाइप किया, 'ऐ परी...तुम इन तस्वीरों में परी जैसी लग रही हो। थैंक यू इस प्यारे सरप्राइज़ के लिए।'

उसी समय उसका मैसेज स्क्रीन पर चमका, 'अच्छी लग रही हूँ न मैं? तुम कुछ कहना चाहते हो?'

'बहुत! मुझे जो कुछ महसूस हो रहा है उसके लिए शब्द नहीं सूझ रहे हैं। और शायद मैं...'

और इससे पहले कि मैं अपनी लाइन पूरी कर पाता, मैंने अपने कमरे के दरवाज़े के खुलने की आवाज़ सुनी और उसके बाद क़दमों की आहट सुनाई दी। मैं पीछे मुड़ा। यह मेरा मैनेजर था जो उस समय किसी से फोन पर बात कर रहा था और वह मुझे एक और मीटिंग के लिए बुला रहा था। उससे मैंने दो मिनट का समय माँगा, जिसमें मैंने खुशी को किसी तरह गुडबाय कहा।

'मैं अब तक एक खूबसूरत सदमे में हूँ,' यह मेरा आखिरी मैसेज था।

मैंने उस दोपहर खाना नहीं खाया । मेरी आँखों को जो भरपूर भोजन मिला था उससे मेरी भूख को शांति मिल गई ।

उस दिन के बाद से, उसकी एक न एक तस्वीर मेरे डेस्कटॉप की बैकग्राउंड में बनी रही ।

इकतालीसवाँ दिन

मैं इंडिया के लिए वापसी की प्लेन में चढ़ा ।

वापसी

लगभग आधी रात हो चुकी थी जब मैं दिल्ली के हवाई अड्डे पर उतरा। मैं जैसे ही चेकिंग काउंटर से निकला मैंने अपना इंडिया वाला सेल फोन चालू कर लिया। मैंने सबसे पहले अपनी माँ को फोन किया, जैसा वह चाहती थीं, मैंने उनको बता दिया कि उनका बेटा लौट आया है और वह पूरी तरह से ठीक है। वह भी मेरे फोन का इंतजार कर रही थीं, और इसलिए वह नहीं सोई थीं (माँएँ ऐसी ही होती हैं)। मैंने उनसे कुछ देर बात की और उनको गुडनाइट कहा। फिर मैंने अपना सामान लिया।

बाहर गेट पर मैंने फरीदाबाद के लिए टैक्सी ली। नहीं, मैं उसके घर नहीं जा रहा था बल्कि उस होटल की ओर जा रहा था। उसने मेरे लिए बुक किया था। हमने अपनी पिछली ग़लती से सबक लिया था कि फरीदाबाद से दिल्ली का सफ़र कुछ मुश्किल भरा है। इसलिए क्यों न फरीदाबाद में ही होटल बुक कर लिया जाए?

मैं टैक्सी में ही था कि मेरे फोन पर कुछ मैसेज आए। सब खुशी के थे। सबसे ऊपर वाला इस तरह था : तुम्हारा होटल बुक हो गया है। तुम उतरते ही मुझे फोन करना।

मैं उससे बात करने के लिए बेचैन था और मैं एक बार उसके देश में था...मेरा मतलब है अपने देश में। कितना अच्छा लगता है बहुत समय बाद अपने प्रेम के पास लौटना। आपके आस-पास की सारी चीज़ें कितनी अच्छी लगने लगती हैं। हर ख़ूबसूरत चीज़ आपके चेहरे पर मुस्कान लेकर आती है। हर घंटे आपकी बेचैनी बढ़ती जाती है और जब तक आप एक-दूसरे को देख नहीं लेते, समय जैसे थम जाता है।

मैंने उसे फोन किया। बाद में, उसने मुझे बताया कि कॉल देखकर उसने क्या किया था : अपने प्यारे नाम को इतने समय बाद अपने फोन के डिस्प्ले पर देखकर उसने अपना हाथ दिल पर रख लिया, मुस्कुराई, आँखें बंद कर लीं, ईश्वर का शुक्रिया अदा किया, एक गहरी साँस ली, अपनी आँखें खोलीं और फोन उठाया।

‘हाय...’ कहकर वह ज़मीन पर ज़ोर से कूद पड़ी।

‘हा हा...हेलो!’

‘हा हा...हेलो!’ मैं उसके इस पागलपन भरे हाय को सुनकर खुश हुआ, वह एकदम बच्चे की तरह खुश थी।

‘मैं कितनी कितनी खुश हूँ कि तुम आ गए।’

‘मैं भी।’

और हम पागल हो गए। चीखना, हँसना, गाना...हम लोग इस तरह से खुश थे। मैंने उसे सुना, वह घर में खुश होकर घूम रही थी, सबको बताती हुई कि मैं आ गया था। बाद में एक-एक करके उस घर की सभी महिलाओं ने मुझसे बात की।

‘मुझे भी दो...मुझे भी बात करनी है।’

‘डैड सो रहे हैं, इसलिए तुम उनसे कल बात कर पाओगे।’ उसने कहा। हम तब तक बातें करते रहे जब मैं होटल पहुँच गया। ऐसा नहीं करने का कोई कारण नहीं था। उससे रास्ता पूछ-पूछ कर मैंने ड्राइवर को रास्ता समझा रहा था।

मथुरा रोड पर मैगपाई होटल में मेरा उस रात का ठिकाना था। यह कोई अच्छा होटल नहीं था, लेकिन उसने इसलिए उसे बुक किया था क्योंकि उस समय शहर के ज़्यादातर होटल बुक थे क्योंकि

वह शादी का सीज़न (अक्तूबर) था। और सबसे बढ़कर वह उसके घर के पास था।

मैगपाई के रास्ते में हम शहर के बाहरी हिस्से से गुज़र रहे थे और मेरे फोन का नेटवर्क चला जाता था और मैं बार-बार उसका डायल करता रहा। पूरी तरह से जाने से पहले नेटवर्क मेरे मोबाइल फोन के स्क्रीन पर लुका-छिपी का खेल खेलता रहा। मैं किसी तरह उसको मैसेज भेजने में सफल रहा।

‘होटल पहुँचकर फोन करता हूँ।’

जिसका जवाब उसने दिया।

‘नहीं। उस समय मुझे फोन करना जब तुम होटल का रूम खोल रहे हो। भूलना मत।’

खैर, मैंने वही किया जैसा वह चाहती थी। आधे घंटे बाद मैं होटल में अपने कमरे का ताला खोल रहा था, मैंने उसको फोन किया। हम वापस फोन पर आ गए जब मैं उस अँधेरे में घुसा।

‘ओके। तुम्हारी दायीं ओर एक स्विचबोर्ड है। उसका सबसे पहला स्विच लाइट का है।’ उसने कहा। और मैं सोच रहा था कि वह मुझे क्यों बता रही थी।

कमरा ठंडा था। ऐसी चालू था और कमरे में बहुत अच्छी खुशबू आ रही थी।

मैंने सेल फोन की रोशनी की मदद से कमरे की लाइट ऑन की और आया एक प्यारा सरप्राइज़।

‘हे भगवान!’

मेरे सामने बड़ा-सा बेड था जिस पर गुलाबों के दो बुके रखे थे, दोनों के साथ नोट भी लिखा हुआ था। वे इस तरह थे—‘वेलकम बैक’ और ‘मैंने तुमको बहुत मिस किया।’

इसके अलावा, कुशन के नीचे से टिशू पेपर झाँक रहा था। दूर से मैं पढ़ नहीं पाया, लेकिन मैंने ध्यान दिया कि उसके होंठों का मैं निशान उसके ऊपर था—उसने प्यार का एक एडवांस उपहार मेरे लिए रख छोड़ा था।

मैंने नोट पढ़ा।

‘जब तुम गए हुए थे तब मुझे महसूस हुआ कि मैं तुमको अपने लिए कितनी बुरी तरह चाहती हूँ। आई लव यू सो मच।’

‘मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ डियर,’ मेरे पिघलते दिल से यही निकला। मैंने टिशू पर किए गए उस किस को सूँघा और किस कर लिया। उसने मुझे ऐसा करते हुए सुना। मैं चाहता था कि वह सुने।

अगले ही मिनट किसी ने दरवाज़े पर दस्तक दी।

‘कौन है?’ मैंने पूछा।

‘बेलब्वाय,’ जवाब आया।

‘दो मिनट डियर, दरवाज़े पर कोई है,’ मैंने खुशी से कहा और दरवाज़ा खोल दिया।

‘सर, मैं आपके लिए पानी लेकर आया हूँ।’

ओके।

वह बिसलेरी की एक बोतल और दो उल्टे रखे गिलास लेकर आया। उसने मेरे बेड के बगल में रख दिया और कनखियों से वहाँ जो कुछ भी बिखरा था उनके ऊपर नज़र डाली। वे फूल, वह नोट।

शायद उसने वह किस भी देख लिया हो। उसके चेहरे पर एक मुस्कराहट आई और वह फिर से अपनी औपचारिकताओं पर लौट आया। वापस जाते हुए उसने देखा कि एक आधा खाली गिलास और पानी की एक बोतल रखी हुई थी।

‘आपको पहले पानी मिल चुका है।’

‘नहीं यह मेरा नहीं है। तुम इसे ले जा सकते हो,’ मैंने कहा।

जब मैं कह रहा था तभी मैंने सेल फोन पर उसकी आवाज़ सुनी। वह चिल्ला रही थी, ‘शोना, उसे रोको...उसे गिलास मत छूने दो...’

‘रुको,’ मैंने जोर से उस लड़के से कहा।

और इतनी तेज आवाज़ सुनकर वह मूर्ति की तरह खड़ा हो गया। मानो अगले ही पल वह एक बारूदी सुरंग पर चढ़ने वाला हो और मैंने उसको बचा लिया हो। उसने बड़ी उत्सुकता से मुझे देखा। मुझे भी समझ नहीं आ रहा था कि उसने मुझे ऐसा करने के लिए क्यों कहा।

मैंने उससे कहा, ‘मैं एकदम ठीक हूँ। तुम जा सकते हो।’

वह कुछ समझ नहीं पाया और रूम से बाहर चला गया। मैंने अंदर से दरवाज़ा बंद करते हुए उससे पूछा कि उसने आखिर इस तरह से क्यों कहा।

‘मैं चाहती हूँ कि तुम इसका पता खुद लगाओ।’ वह फिर से शांत हो गई थी।

मैं सोच ही रहा था कि उसका मतलब क्या था, उसने मुझसे पूछा, ‘क्या तुमको प्यास नहीं लगी है?’

‘शायद,’ मैंने कहा, और गिलास का कवर हटाया और उसे उठा लिया।

फिर मैंने सुना वह कह रही थी, ‘तुम वह पानी पी सकते हो जो मैंने तुम्हारे कमरे में छोड़ा था। मैं पानी का घूँट भरने ही वाला था कि मुझे समझ में आया कि उसके सरप्राइज़ अभी भी आ रहे थे। मेरा दिल इस खुशी से मुस्कुरा रहा था। गिलास के कोने पर लिपस्टिक के दाग थे। उसने गिलास से पानी के कुछ घूँट लेकर बाकी पानी उसने मेरे लिए छोड़ दिया था। कितनी प्यारी है।

‘तुम कितनी प्यारी हो,’ मैं धीरे-धीरे गाने लगा, पानी का आनंद उठाते हुए, ठीक उसी जगह से पीते हुए जहाँ उसने अपने होंठों के निशान छोड़े थे।

हमारी बातचीत रोमांटिक होने लगी और हम बहुत देर तक प्यार भरी बातें करते रहे।

मेरे खयाल से रात के करीब दो बज चुके थे जब हम आखिरकार जुदा हुए। उसको सुलाकर मैं नहाने चला गया। अंतिम बार मैं 30 घंटे पहले अमेरिका में नहाया था।

देर रात, उन खूबसूरत फूलों के बीच बैठकर मैंने उसे मैसेज लिखा:

वे 47 दिन किसी तरह निकल गए

लेकिन तुमको देखने का यह कुछ घंटों का इंतज़ार

मुझे मार डाल रहा है, गुड नाइट परी।

दुर्भाग्य से, अगली सुबह उतनी खुशनुमा नहीं थी।

जेट लैग, मौसम का बदलाव, लंबे सफ़र की उदासी, रात का नहाना—इन सबके कारण मुझे जुकाम हो गया। मेरी नाक बह रही थी, सर में बुरी तरह दर्द हो रहा था और गले में भी। दूसरे शब्दों में कहें, तो मेरी वाट लग गई थी।

बेचैनी में मैं दाएँ से बाएँ करवट बदल रहा था, उन बुकेज़ को दबाता हुआ जिनको मैं रात में अपने पास रखकर सोया था। मुझे आखिरकार आँख खोलने में काफी वक़्त लग गया।

फिर मेरा ध्यान एसएमएस की तरफ गया—मैं 11 बजे तक पहुँच जाऊँगी।

मेरी घड़ी में पौने दस बज रहे थे।

उफ़फ़! मैं चाहता था कि उसे जवाब में कुछ देर से आने के लिए लिखूँ। लेकिन मैंने लिखा नहीं। बल्कि, सारी ताकत जुटाकर मैं तैयार हो गया। मैं इस बार गर्म पानी से नहाया। मैं सब कुछ धीरे-धीरे कर रहा था। और मेरे दिमाग़ में बस यही चल रहा था: क्या उसके आने तक मैं कुछ बेहतर हो जाऊँगा?

11 बजे तक मैं ब्रेकफ़ास्ट कर चुका था और उसने मुझे फोन करके कहा कि उसे कुछ देर हो जाएगी। वह अगले आधे घंटे में मेरे पास पहुँच जाएगी।

‘ओके,’ मैंने उससे कम ही बात की क्योंकि मैं यह नहीं चाहता था कि उसे मेरी हालत का पता चले, मैं अब भी नाक सुड़क रहा था और खाँस रहा था। और ऐसा लग रहा था जैसे कोई मेरी खोपड़ी के भीतर बहुत बड़ा ढोल बजा रहा हो। सर दर्द से फटा जा रहा था। मेरे सिर में कभी-कभी ही दर्द होता है, और वह ऐसा ही एक दिन था। मेरी किस्मत! अगले आधे घंटे तक अजीब-अजीब तरह के खयाल मेरे दिमाग में आते रहे।

‘उफ़फ़! मुझे आज ही जुकाम होना था?’ बहती नाक और भारी आवाज़ के कारण 45 दिनों बाद उसे किस करने की मेरी ख्वाहिश टूट गई थी। मैं कितने समय से इसका इंतज़ार कर रहा था और अगले ही दिन मुझे भुवनेश्वर के लिए हवाई जहाज़ पकड़ना था। सबसे बढ़कर, मुझे तो यह भी पता नहीं था कि मैं उसे अगली बार कब देख पाऊँगा।

‘क्या होगा अगर मैं उसे अब भी किस करूँ? मैं अब भी अपने आप से बातें कर रहा था। मेरी यह ख्वाहिश मेरे अंदर के जुकाम के कीटाणु से बातें कर रहे थी। लेकिन, फिर शाम में मुझे उसके घर होना था। क्या होगा अगर उसके घर वालों ने उसे मेरी तरह से छींकते और खाँसते हुए देख लिया? क्या उनको समझ में आ जाएगा कि मैंने उनकी बेटी को जुकाम दे दिया है? (हाँ, मैं जानता हूँ कि कभी-कभी मैं कुछ ज़्यादा ही सोचने लगता हूँ।)

लेकिन वह होटल पहुँची और उसने मुझे मिस्ड कॉल दिया, मेरे अजीबोगरीब खयाल में बाधा डालते हुए। मैं उसे रिसीव करने के लिए अपने कमरे से भागा। आखिरकार डेढ़ महीने एक-दूसरे से अलग रहने के बाद हम एक-दूसरे के सामने खड़े थे।

मेरी सुंदरी मेरे सामने थी—अपने छींकने वाले सुंदर के सामने।

उसकी शर्म और मुस्कराहट बता रही थी कि वह मुझे देखकर कितनी खुश थी। वह मुस्कुराई और उसकी आँखों से पता चल गया कि मेरे साथ फिर से होने पर वह कितनी संतुष्ट थी। और मैं अंदर से खुश, उत्साहित और कुछ घबराया हुआ भी था।

‘हाय,’ मैंने उसे हलके से गले लगाते हुए कहा। मैंने ऐसा इसलिए किया कि कहीं कोई देख न ले, वैसे कोई बाहर था नहीं। शुरू-शुरू में हमारे अंदर एक झिझक-सी थी। यह होता है, है न...और उस हाय से वह तुरंत समझ गई कि मेरी हालत क्या थी।

‘कोल्ड हुआ है तुम्हें?’ उसने आँखें उठाते हुए पूछा।

‘न, बस हल्का-सा,’ मैंने ऐसे जवाब दिया जैसे मैं ठीक था।

उसने मुझे देखते हुए कहा, ‘लेकिन तुम कोई दवा लेना चाहते हो?’

‘नहीं...नहीं। ठीक है डियर। यह ठीक हो जाएगा...सब मौसम के बदलने का असर है। लेकिन मैं जल्दी ही ठीक हो जाऊँगा। अब हम अंदर चलें या दिन भर यहीं खड़े रहने का इरादा है,’ मैंने कहा।

उसके चेहरे की चिंता मुस्कराहट में बदल गई। (झूठी—वह अब भी चिंतित थी।)

हम कमरे में गए। उसने कहा मुझे चाय लेनी चाहिए, इससे जुकाम में कुछ राहत मिलेगी, इसलिए मैंने अपने लिए एक कप चाय का ऑर्डर दिया और उसके लिए सॉफ्ट ड्रिंक का (उसके परिवार में कोई चाय नहीं पीता, याद है? विचित्र परिवार)।

उसको साक्षात अपने सामने देखकर मैं कुछ सजग हो गया था। मुझे पता नहीं, क्यों, लेकिन मैं कभी-कभी ऐसा हो जाता हूँ। और इस हालत में मुझे हमेशा सामान्य होने में कुछ समय लगता है। लेकिन मुझे अंदर से अच्छा लग रहा था। उसको देखना, उसकी बगल में बैठना, उसको फिर से छूना...लेकिन बिना उसकी खुशबू को महसूस किए। (बंद नाक कुछ सूँघ नहीं सकती।) लेकिन चाय पीने से मुझे कुछ और बेहतर महसूस होने लगा, मुझे उसके साथ अच्छा लगने लगा।

कुछ मिनट बाद मैं उसको अपने सफ़र की कहानियाँ सुना रहा था, ऑफिस के बारे में बात कर रहा था, बेवकूफी भरी बातों पर हँस रहे थे, अपने लैपटॉप पर वहाँ खींची तस्वीरें देख रहे थे। थोड़ी देर में, हम उस बड़े बेड पर एक-दूसरे के बगल में पेट के बल लेटे थे, हमारे पैर ऊपर हवा में झूल रहे थे, हमारे हाथ टुड्डियों पर टिके हुए थे और आँखें लैपटॉप की स्क्रीन पर। हम लोग उन छोटे-छोटे वीडियोज को देख रहे थे जो मैंने वहाँ बनाई थीं। और हमारी बगल में वे फूल पड़े थे जिनके साथ मैं रात में सोया था, उसके नोट्स और उसके होंठों के निशान वाले टिश्यू पेपर पड़े थे, जिनको देखकर अब वह शर्मा रही थी। वह ऐसे जता रही थी जैसे इस बात पर उसका ध्यान ही नहीं गया हो कि वे बेड पर थे।

जुकाम के कारण फरीदाबाद के मॉल्स में घूमने का मेरा मन नहीं हो रहा था, इसलिए हमने उस प्लान को कैंसिल कर दिया। बल्कि हम कमरे में ही रहे। हमने कुछ महत्वपूर्ण बातों को लेकर चर्चा की। जैसे, हमारे मम्मी-पापा कब मिलेंगे? शादी कब करना अच्छा होगा? अपने-अपने कैरियर को देखते हुए शादी के बाद हमें कहाँ सेटल करना चाहिए?

और मुझे अच्छी तरह याद है कि अंतिम सवाल पर उसने तुरंत जवाब दिया था, 'वह शहर दिल्ली होना चाहिए।'

'लेकिन भुवनेश्वर क्यों नहीं?' मैंने बड़े आराम से विद्रोह किया।

और किसी पाँच साल के बच्चे की तरह उसे बड़ी मासूमियत के साथ जवाब दिया, 'मेरे लिए मम्मा से दूर रहना मुश्किल होगा।'

मैंने उसके माथे और बालों से खेलते हुए कहा, 'हम तुम्हारी माँम को दहेज में ले आएँगे।'

और हम हँसने लगे।

उस दिन हमने बातचीत के दौरान यू टर्न लेते हुए अपने-अपने पिछले जीवन के बारे में बातचीत की। अपने कॉलेज के जीवन, अपने स्कूल के दोस्तों के बारे में और अपने-अपने परिवारों के बारे में। अच्छी-बुरी यादों के बारे में। उसने अपने जीवन के बारे में मुझे कुछ ऐसी बातें बताईं जो वह मुझे छोड़कर किसी और को नहीं बता सकती थी। उसे अपनी बाँहों में भरते हुए मैंने उसके आँसू पोंछ दिए। मुझे बताकर उसे अच्छा लग रहा था, और उसने मुझसे वादा लिया कि मैं किसी और को इसके बारे में नहीं बताऊँगा। और वादे...वादे निभाने के लिए किए जाते हैं।

मैंने उसका सिर अपने कंधे पर टिका लिया, धीरे-धीरे उसकी पीठ सहलाते हुए, उसकी भीगी आँखों को सुखाते हुए। उसे अच्छा लग रहा था और वह मेरी बाँहों में कुछ देर तक आराम करती रही।

उसका मूड ठीक करने के लिए मैंने उसे कुछ जोक्स सुनाने शुरू किए, जिससे उसे कुछ बेहतर लगे। और जब मैंने देखा कि उसके चेहरे पर हँसी लौट रही है तब मैंने कहा, 'हुम्म...तो अब देखते हैं कि मैं अमेरिका से अपनी जान के लिए क्या लाया हूँ...'

सच्ची?

मुच्ची, मैंने कहा और अपने बैग को खोलने के लिए बेड से कूद पड़ा। वह भी मेरे पीछे-पीछे आई और जब मैं उसे खोल रहा था तो वह मेरी बगल में खड़ी रही, मेरे कंधे के ऊपर से देखती हुई। मुझे अचानक कुछ ध्यान आया और मैं कुछ कहने के लिए पीछे मुड़ा, 'लड़कियों को लड़कों के बैग में झाँकने की इजाज़त नहीं है।'

वह हँसी, लेकिन वहीं खड़ी रही और उसने मेरे साथ बैग को चेक किया। जब उसने देखा कि मैं एक बड़ा पॉलिथिन बैग निकल रहा हूँ, उसकी मुस्कान और चौड़ी हो गई। जब वह उसे लेने के लिए बढ़ी तो मैंने वापस छीन लिया।

'अ..अहा...ऐसे नहीं। मुझे खोलकर दिखाने दो।'

ओके।

और मैंने पर्पल कलर का एक छोटी बाँह का टॉप निकाला, साथ में मैचिंग पेस्टल कलर की स्कर्ट भी थी।

‘वाओ!’ उसने मुँह खोलकर देखते हुए कहा। ‘यह तो बहुत अच्छा है!’ (लड़कियों को सरप्राइज़ अच्छे लगते हैं, न?)

‘अभी नहीं,’ मैंने कहा। ‘इसे सचमुच अच्छा लगने के लिए तुम्हारे ऊपर होना चाहिए। पहनो और मुझे दिखाओ,’ मैंने बाथरूम की तरफ इशारा करते हुए कहा, जहाँ जाकर वह कपड़े बदल सकती थी। कपड़े लेकर वह मुस्कुराती हुई चली गई।

कमरे में बैठा रहा। मैंने इस तरह का कुछ भी कभी किसी लड़की के लिए नहीं खरीदा था। मेरी कोई बहन नहीं थी, न ही इससे पहले मेरी कोई गर्लफ्रेंड थी, कि मैं लड़कियों के कपड़े खरीदने के बारे में सीखता।

कुछ मिनट बाद मैंने बाथरूम का दरवाजा खुलने की आवाज़ सुनी। उसने गर्दन बाहर निकालते हुए पूछा, ‘क्या मैं बाहर आ जाऊँ?’

‘प्लीज़, मैं मरा जा रहा हूँ,’ मैंने कहा।

1...2...3...बाहर आने से पहले उसने गिनती गिनी। और फिर वह मेरे सामने थी। उसे देखते हुए खुशी के मारे मैंने अपने हाथ खोल दिए। वह मेरे तोहफे में ग़ज़ब लग रही थी।

‘ब्यूटीफुल!’

और अचानक मैंने उसके ऊपर से अपनी नज़रें हटा लीं, यह सोचकर कि कहीं इस तरह से देखने से कहीं उसे नज़र न लग जाए। लेकिन मैंने उसे फिर देखा—मैं खुद को रोक नहीं सका।

उसके बदन पर वह टॉप-स्कर्ट इतने अच्छे लग रहे थे जैसे वह उसके लिए ही बने हों। मैं हैरत में था, और चुपचाप मैंने खुद का शुक्रिया का अदा किया। यहाँ तक कि उसे भी हैरत हो रही थी और शायद इसीलिए उसने कहा, ‘मैं नहीं जानती थी कि तुम मुझे इतनी अच्छी तरह से जानते हो।’

वह ड्रेस और उसका बदन जैसे एक-दूसरे के लिए ही बने थे। मेरे कमरे के आईने में उसने खुद को देखते हुए कहा, ‘मैं इस ड्रेस में सबसे अच्छी लग रही हूँ। यह मेरा अब तक की सबसे अच्छी ड्रेस है।’

‘फिर वादा करो।’

क्या?

‘कि इसे सिर्फ तुम पहनोगी और कोई नहीं...तुम्हारी बहनें भी नहीं। मैं इसे सिर्फ तुम्हारे ऊपर देखना चाहता हूँ।’

‘मेरा वादा है।’

और इस वादे के साथ उसे ध्यान आया कि वह लेट हो रही थी। मैंने पॉलिथिन बैग में गिफ्ट पैक करने में उसकी मदद की और उसके बाद उसने मुझे गले से लगाया और कहा, ‘बहुत दिनों बाद तुम्हारे साथ होना बहुत अच्छा लगा।’

‘मुझे भी।’

दरवाज़े पर उसने मुझे अपने घर पहुँचने का रास्ता समझाया। मुझे उसके घरवालों के पास फिर जाना था।

‘देर मत करना।’ उसने कहा और हाथ हिलाते हुए विदा ली।

शाम में मैं उसके घर की तरफ़ पैदल चला जा रहा था। मुझे लगता है कि मैं उसके घर से दो ब्लॉक दूर था कि मैंने देखा कि मेरी तरफ़ दो लोग बढ़े आ रहे थे। एक करीब 3 साल का था और उसका हाथ

पकड़े हुए एक क़रीब 60 साल का आदमी था। मुझे लगा मैं जानता था कि वे कौन थे।

मुझे देखकर बुजुर्ग आदमी रुक गया।

वह छोटा बच्चा उसे खींचने की कोशिश करता रहा। ‘चलो आइसक्रीम!’ वह चिल्लाया। उस बेचारे बच्चे ने बहुत कोशिश की लेकिन असफल ही रहा।

मैंने सामने वाले आदमी की ओर देखा और उस बुजुर्ग ने अपनी उँगली उठाई, उनके माथे पर कुछ लकीरें बन आईं। उनको लग रहा था कि कहीं मैं उनके यहाँ आज आने वाला मेहमान तो नहीं था।

लेकिन इससे पहले कि वे कुछ बोलते, मैंने कहा, ‘मुझे लगता है कि मैं आपके घर आ रहा हूँ। क्या मैं ठीक बोल रहा हूँ?’

‘रविन?’

‘हाँजी,’ मैंने मुस्कुराते हुए उनके पाँव छुए।

वे खुशी के डैड थे और वह बच्चा दान था जो अपने नाना को पास के आइसक्रीम पार्लर लेकर जा रहा था।

लेकिन अब वह प्यारा बच्चा मेरा हाथ पकड़कर सड़क पर चिल्लाते हुए मुझसे पूछ रहा था, ‘आप खुशी मौसी के दोस्त हो...हैं...आप हो न?’

मैंने झुकते हुए उसके नन्हें हाथों को चूमा और कहा, ‘हाँ हाँ, हूँ।’

जल्दी ही वह आइसक्रीम के बारे में भूल गया और मुझे अपने घर की ओर खींचकर ले जाने लगा। इस बीच वह चिल्ला भी रहा था, ‘आओ न...मौसी आपके लिए तैयार हो रही हैं...आओ...आओ।’

वह मुझे तब तक खींचता रहा जब तक मैं उसके घर में घुस नहीं गया। थोड़ी ही देर में, दान मम्मा, नीरू और मिशा दी (दान की माँ) से घिर गया। दान जिस तरह से मुझे खींच रहा था सभी उस पर हँस रहे थे। मैंने दान के हाथ से अपनी उँगली छुड़ाई और सबको नमस्कार किया। फिर, हम सब ड्राईंग रूम में बैठ गए। खुशी के डैड भी आ गए थे और वे भी हमारे साथ बैठ गए।

सवाल शुरू हो गए—इस तरह के सवाल कि सफ़र कैसा रहा और सब कुछ ठीक तो है।

और उनके जवाब देते हुए मैंने अपने आपको उनके बीच सहज कर लिया।

इस बीच, खुशी भी आ गई।

खाने-पीने का दौर शुरू हो गया, पिछली बार की ही तरह। उसके पूरे परिवार में मैंने सबसे अधिक उसके डैड से बातें कीं। वे समझने की कोशिश कर रहे थे कि मैंने सॉफ्टवेयर इंजीनियर होने के लिए असल में क्या किया, बदले में वे भी मुझे बता रहे थे कि इंडियन एयरफोर्स में इंजीनियर के रूप में वे क्या करते थे।

बाद में, उन्होंने शादी की बात भी उठाई। सीधे-सीधे नहीं—कब और कैसे मिशा दी की शादी हुई और फिर अमी दी की और अब खुशी की बारी थी। उन्होंने अपनी बेटियों के ससुराल वालों के बारे में भी बातें कीं और उनके काम-काज के बारे में (हालाँकि सब मैं अच्छी तरह से जानता था) बताया।

मैं सोच रहा था कि इसका मकसद था। मुझे एक विज्ञापन याद आया जिसमें एक आदमी का होने वाला ससुर उससे पूछता है, ‘तुम मेरी बेटी से शादी तो करने जा रहे हो। लेकिन क्या तुम एक परिवार चला पाओगे?’ जिसका जवाब मैंने अपने दिमाग में दिया, ‘मुझे लगता है कि मैं अपने साथ सिर्फ आपकी बेटी को लेकर जाऊँगा, बाकी परिवार आपको खुद ही संभालना पड़ेगा।’

लेकिन मज़ाक़ की बात रहने दें तो मुझे उसके डैड बहुत समझ-बूझ वाले इंसान लगे। मुझे उनकी पर्सनलिटी भी अच्छी लगी।

हम सब खुशी के भाई दीपू का इंतज़ार कर रहे थे जो गाड़ी चलाते हुए घर आ रहा था। मम्मा धीरज खो रही थीं और उसे फोन करके पूछे जा रही थीं कि वह घर से और कितनी दूर था।

बीच-बीच में दान हमारी बातचीत को मजेदार बना रहा था, अपनी बचकानी बातों से सबको हँसा रहा था। वह मेरी गोद में बैठा था कि उसने अचानक गाड़ी की आवाज़ सुनी और दरवाज़े की तरफ भागा। यह दीपू था, कुछ मिनट बाद वह दीपू को ड्राईंग रूम में खींचते हुए ले आया, जैसे वह मुझे खींचकर लाया था। मैंने दीपू से हाथ मिलाया और वह हमारे साथ बैठ गया।

वह उस पूरे परिवार का सबसे तगड़ा इनसान लग रहा था, चौड़ी छाती, चौड़े कंधे, हृष्ट-पुष्ट शरीर। वह असम की किसी तेल कंपनी में काम करता था और छुट्टियों में आया हुआ था। तो अब मेरे जॉब से हट कर उसको लेकर होने लगी।

हम काफी देर तक ड्राईंग रूम में बैठे रहे और करीब 8.30 पर हमने डिनर लिया।

खाने के बाद अपना बगीचा दिखाने के लिए, खुशी मुझे घर की दूसरी तरफ ले गई मनीप्लांट और अमरुद के पेड़ जिस पर वह कभी चढ़ा करती थी, मम्मी के लिए अमरुद तोड़ने के लिए। मुझे उसके साथ कुछ देर का एकांत मिल सकता था, लेकिन नीरू और मम्मा ने हमें अकेला नहीं रहने दिया।

उसके घर वह शाम काफी अच्छी गुजरी। तब तक मैं उन सब लोगों से मिल चुका था जिनसे मैं पिछली बार नहीं मिल पाया था—उसके डैड, दीपू, मिशा दी और प्यारे दान से। मैं खुश था कि मैं एक अच्छे परिवार का हिस्सा बनने जा रहा था। (और मैंने मान लिया कि वे भी खुश थे!)

9.30 बजे तक मैं होटल जाने के लिए पूरी तरह से तैयार था।

‘मुझे लगता है मुझे चलना चाहिए इससे पहले कि मुझे और भी देर हो जाए,’ मैंने वहाँ खड़े लोगों से कहा, खासकर उसके डैड से।

‘हुम्म...हाँ, तुम एक नई जगह पर हो। अच्छा तो यही है कि तुम होटल समय से पहुँच जाओ। दीपू तुमको छोड़ देगा।’ उन्होंने दीपू की ओर देखते हुए कहा, जिसको दान वैसे ही घूँसे मार रहा था जिस तरह से उसने डब्ल्यू. डब्ल्यू. एफ. के लड़ाकों को मारते हुए देखा था।

कुछ देर बाद दीपू गाड़ी स्टार्ट कर रहा था और मैं सबको गुड बाय कह रहा था। दान चिलाता रहा, ‘मुझे भी जाना है...मुझे भी जाना है!’ और इससे पहले कि उसकी जिद और बढ़ती उसकी माँ ने उसे कार में बैठने की इजाज़त दे दी।

इस सबके बीच मैंने खुशी की तरफ देखा, खामोशी से उससे पूछते हुए कि क्या वह भी आ सकती है। और मुझे लगता है मम्मा ने मेरी उस नज़र को भाँप लिया था। शायद इसीलिए उन्होंने खुशी से कहा, ‘तू भी चली जा...’

उसके डैड उसे टोकने वाले थे। लेकिन जैसे ही मैंने देखा कि उसकी माँ ने उसे हरी झंडी दे दी है मैंने टॉपिक बदल दिया। कुछ ही देर में हम कार की पिछली सीट पर बैठे थे। दान मेरे और उसके बीच बात करता रहा। साथ के इन अंतिम पलों में हमने हाथ थामा लेकिन कुछ खास बात नहीं की। कुछ ही देर में हम फिर से जुदा होने वाले थे, पता नहीं कितने दिनों के लिए।

हम ज़रा जल्दी ही मैगपाई पहुँच गए, और यह गुड बाय कहने का समय था।

दीपू कार से बाहर आया और उसने दान का हाथ अपने हाथ में ले लिया। मैंने उससे हाथ मिलाया और दान को किस किया, जिसने मुझसे पूछा कि मैं फिर आऊँगा, और मुझसे कहा कि मुझे उसके लिए चॉकलेट लाना नहीं भूलना चाहिए।

अब बारी थी मेरी महबूबा की। वह कार की बगल में खड़ी रही। मैंने उसकी आँखों में देखा। उसकी आँखों में भी वही भावनाएँ थीं जो मेरी आँखों में। वह आई और आकर मेरे ठीक सामने खड़ी हो गई। मैं कुछ कह नहीं सका, बस उदास मुस्कुराता रहा। उस एक पल उसने दीपू के वहाँ होने की परवाह नहीं की बल्कि मेरी आँखों में देखती रही। दान को कार में बिठाते हुए दीपू ने कार स्टार्ट कर दी जिससे उसकी बहन को पता चल जाए कि उनको वापस भी जाना था।

उसने उसकी परवाह नहीं कि और मेरे पास आते हुए बोली, 'मैं तुम्हारी होना चाहती हूँ, हमेशा के लिए।'

‘तुम मेरी हो। हमेशा से कुछ ज्यादा,’ मैंने कहा।

और इस बार हम एक-दूसरे के गले लगे, बिना आस-पास के संसार की परवाह किए।

वह कार में बैठ गई। मैं उसे तब तक हाथ हिलाता रहा जब तक कि कार होटल के गेट से बाहर मुड़ नहीं गई।

वापस भुवनेश्वर में जीवन उसी पटरी पर लौट आया था। ऑफिस, उसको फोन, जिम, उसको फोन, कैट की तैयारी, उसको फोन। लेकिन इस बार अलग यह था कि मैं उसकी आवाज़ को उसकी चाल-ढाल, उसके शरीर की भाषा, उसकी खुशबू से जोड़ कर देखने लगा था।

दिन गुज़रते जा रहे थे और गुज़रते दिन के साथ-साथ रहने की हमारी शिद्दत बढ़ती जा रही थी। दीवाली का दिन था और हमारे पूरे बरामदे में दीयों, मोमबत्तियों और पटाखों की चकाचौंध थी। एक हाथ से मैं सब को शूट कर रहा था और दूसरे हाथ में सेल फोन लिए था, खुशी से बात कर रहा था। हम लोग एक-दूसरे को अपने-अपने घरों के माहौल के बारे में बता रहे थे। दोनों तरफ सेल फोन इस हाथ से उस हाथ में जा रहे थे। पहले मैंने उससे बात की, फिर मम्मी ने उससे बात की, फिर मेरी माँ ने उसकी माँ से, फिर उसकी माँ ने मुझसे बात की और फिर हम दोनों बात करने लगे, फिर मैं और उसकी बहन, हर कोई...लेकिन सब कोई यही कह रहा था कि वह अगली दीवाली हमारे परिवार का हिस्सा बनकर मनाएगी।

हमारे जीवन के कुछ और दिन गुज़र गए। ज़िंदगी और अच्छी तब हो गई जब हम सप्ताह में काम के दिनों में एक दूसरे से 10 बजे के बाद बात नहीं करने की कसम से आज़ाद हो गए। कैट की परीक्षा हो गई थी। हम दोनों की परीक्षा बढ़िया हुई थी। (यह कहने का सबको अधिकार है कि परीक्षा बढ़िया हुई है, जब तक कि रिजल्ट नहीं आ जाता) हाँ, लेकिन कैट की परीक्षा के हो जाने के बाद हमारे जीवन के सबसे अच्छे दिन शुरू हो गए। असल में अच्छी रातें, दिसंबर, जनवरी, जाड़े की ठंडी रातें। गर्म कंबल में लिपटे हुए, हमारे सेल फोन और हम। (मैं आपको बताऊँ सर्दियों का मौसम सबसे रोमांटिक मौसम होता है, और उसके बाद बरसात के दिन, और...और...एक मिनट! गर्मियों का मौसम भी! क्या मैं कुछ ग़लत कह रहा हूँ? या शायद हर मौसम प्यार में एक नया ही रंग लेकर आता है।)

एक रात 12.30 का समय हो रहा था और हम 2006 को पीछे छोड़ चुके थे। और 2007 हमारे लिए 10 मिनट का हो चुका था। उस समय के बिजी नेटवर्क में भी हम उन खुशकिस्मत लोगों में थे जिनकी बात हो रही थी। यह अलग बात है कि हमें 100 बार एक दूसरे को कॉल करना पड़ा।

सबसे पहले उसका फोन मिला। पता है उसने सबसे पहले क्या कहा था? नहीं, उसने मुझे ‘हैप्पी न्यू ईयर’ नहीं कहा। बल्कि वह खुशी के साथ चिल्लाई, ‘शोना! इस साल हमारी शादी होने वाली है। 2007 आ चुका है। वाह!’

समय-समय पर वह इस तरह की छोटी-छोटी चीज़ें करती रहती थी जिससे मुझे और भी अधिक लगता था कि मैं उसके बिना रह नहीं पाऊँगा।

‘हाँ, हम इस साल शादी करेंगे और फिर हम साथ-साथ रहेंगे। हैप्पी न्यू ईयर डियर,’ मैंने कहा।

‘तुमको भी।’

उस रात बिजी नेटवर्क के कारण हम ज़्यादा बात नहीं कर सके। फिर भी हम बेहद संतुष्ट थे। और हमें ऐसा लगा जैसे हमारी ही तरह बहुत सारे प्रेमी एक-दूसरे से बात करने के लिए पगलाए हुए होंगे। कौन जानता है, उनमें से कुछ इस साल शादी भी करने वाले भी होंगे...

धीरे-धीरे मेरी प्रेम कहानी मेरे दोस्तों तक पहुँची। ऐसा होना नहीं चाहिए था। लेकिन यही हुआ। बहुत समय बाद अमरदीप ने हैप्पी, एमपी और मुझे ईमेल से आपस में जोड़ा। इस ईमेल में उसने शादी-काँम पर से मेरे और एमपी के प्रोफाइल की तस्वीर भेजी थी। उसका पहला मकसद तो हमारा इसके लिए मज़ाक उड़ाना था कि हमने अपने बारे में वेबसाइट पर बढ़ा-चढ़ा कर लिखा था। दूसरे, वह यह भी जानना चाह था कि क्या वेबसाइट ने हमारी कोई मदद की।

बाद में, उस शाम हम चारों एक साथ चैट करने लगे।

हैप्पी: रामजी, तो तुमने आखिरकार इस गधे को पकड़ ही लिया, हाँ। अच्छा किया।

अमरदीप: अब तुम भी बोलो। अभी तक कुछ मिला या नहीं?

रविन: अगर तुमने वहाँ हमारी प्रोफाइल देखी है तो ज़रूर वहाँ पर तुम्हारा भी होगा। बता साले?

अमरदीप: अगर मेरा होगा तो मैं छुपाऊँगा नहीं। अब बात मत बदलो। एमपी तुम बताओ।

हैप्पी: हाँ एमपी हमको बताओ...अब तक कितनी???

एमपी: अरे यार, वह बहुत पुरानी बात हो गई। कुछ खास नहीं। मैं अब शायद ही उसे देखता हूँ।

अमरदीप: तभी तुम्हारी एक्टिविटी वहाँ पर 98 प्रतिशत दर्ज है।

रविन: हा हा हा। गधे!

अमरदीप: तुम इतना हँस क्यों रहे हो रविन? तुम बताओ? तुमको मिली?

रविन: हाँ, मुझे तो कोई मिल गई।

एमपी: क्या मिली?

रविन: वो।

हैप्पी: कौन?

रविन: उसका नाम खुशी है।

अमरदीप: तुम सीरियस तो हो न?

रविन: एकदम सीरियस।

हैप्पी: हूँ...तो इसे मिल गई!! मिल गई! यह तो मजेदार है। सब कोई चैटिंग छोड़ो और हेडफोन उठाओ। हम इसकी कहानी अभी सुनेंगे।

और, अगले आधे घंटे तक मैं उनको अपनी अब तक की कहानी सुनाता रहा। बातचीत जश्न के शोर-शराबे के साथ खत्म हुई, शुभकामनाओं और इस वादे के साथ कि मैं उन सबकी उससे ज़ल्दी ही बात कराऊँगा।

8 जनवरी, 2007

मेरा कोई खास अच्छा नहीं दिखने वाला घर उस सुबह अच्छा लग रहा था और हो भी क्यों नहीं? उस दिन मेरे होने वाले सास-ससुर को जो आना था—खुशी के मम्मी-पापा को।

इस बात को जानकर कि दमे की वजह से मेरी माँ जाड़ों में सफर नहीं कर सकतीं वे हमारे घर आने के लिए तैयार हो गए।

मैं उनको रिसीव करने के लिए संबलपुर स्टेशन पर गया था। ट्रेन समय पर आई और मैंने भीड़ में उनको बड़ी आसानी से स्टेशन पर उतरते हुए देख लिया, मैंने उनके पाँव छुए, उनका हालचाल पूछा और उनके बैग उठा लिए। स्टेशन से लौटते हुए मैंने उनको अपने छोटे-से शहर के कुछ खास ठिकाने दिखाए। सबसे बड़ा बाँध हीराकुंड—जो महानदी पर बना हुआ है। मम्मा चकित रह गई जब मैंने उनको बताया कि यह 4.8 किलोमीटर लंबा है। जिसके जवाब में उन्होंने शरारती ढंग से भाखड़ा-नांगल के बारे में बताया जिसे उन्होंने पहले देख रखा था।

दोपहर 12.30 में हम घर पहुँचे। दोनों मम्मी-पापा आखिरकार एक-दूसरे से मिलकर खुश हुए। हमारे देश में, लड़के-लड़की का एक दूसरे को देखना शादी के सारे प्रोसेस में एक महत्वपूर्ण कदम होता है, लेकिन माता-पिता के चेहरे पर असली खुशी तब आती है जब वे मुस्कुराते हुए एक-दूसरे से गले मिलते हैं। मुझे लगता है इससे उनका एक-दूसरे के परिवार के प्रति विश्वास और आत्मविश्वास बढ़ता है, उनको शादी के लिए आगे बढ़ने का हौसला देता है। मुझे अब इसमें शक है कि वे सचमुच नौजवानों पर शत-प्रतिशत विश्वास करते हैं।

ख़ैर किसी तरह मम्मी-पापा एक दूसरे से मिल गए। सिवाय टिंकू के, जो अपने ऑफिस के काम से भुवनेश्वर में था, वे पूरे परिवार से मिले।

हम फिर गेस्ट रूम में बड़े जहाँ उसके मम्मी-पापा को ठहरना था। उनको हमारा घर अच्छा लगा, खासकर उसकी माँ को। उन्होंने हमारे आँगन में अमरुद और जामुन के पेड़ पर ध्यान दिया। और इस बार मेरी बारी थी बोलने की, 'देखिए, हमारा पेड़ आपके पेड़ से बड़ा है।' और सब हँसने लगे।

वे नीबू-शरबत पी रहे थे, मेरी माँ किचेन में लौट आई। वह बहुत बिजी थीं। कुछ ही देर में दोनों मेहमानों को प्राइवसी मिल गई, नई जगह पर कुछ सामान्य होने के लिए, ताकि थोड़ा आराम कर लें, नहा-धो लें। हम सब फिर लंच पर मिले।

लंच को अच्छा तो होना ही था। और असल में वह हमारे घर पर सबसे अच्छा लंच था—अच्छा खाना, अच्छे लोग, अच्छी बातचीत और सब कुछ एक अच्छे मकसद के लिए। खाने के साथ बुजुर्ग यादों के रास्ते निकल लिए, अपने ज़माने की शादियों को याद करने लगे और उसकी तुलना आज के समय से करने लगे। और मैंने सोचा कि 490 साल बाद मैं आज की शादी को याद करूँगा। या फिर, पता नहीं, तब तक शादी का चलन ही न रहे...

इसके अलावा, उन्होंने कई बातों को लेकर चर्चा की: आज का समाज, लोगों की सोच, जेनरेशन गैप और भी इसी तरह बातें थीं मैं जिसके खिलाफ़ बोल सकता था। लेकिन फिर, मुझे सिर्फ़ इसकी चिंता थी कि उनकी बेटी से मेरी शादी हो जाए। इसलिए मैं उस सब बातों में अपना सिर हिलाता रहा जो उन्होंने नई पीढ़ी को लेकर कहीं। लेकिन अंत में उन्होंने खुश कर देने वाली बात कही, कहा कि इस देश का भविष्य उज्ज्वल है।

अच्छे बच्चों की तरह मैंने मम्मी-पापाओं को अकेला छोड़ दिया, जिससे वे उसको लेकर बात कर सकें जिसकी बात करने वे आए थे। मैं बरामदे में गया और जामुन के पेड़ के नीचे एक चारपाई पर लेटकर मैंने उसे फोन किया।

'हे।'।

हाय।

'वहाँ क्या चल रहा है?' उसने पूछा।

ऊपर आकाश है—मैंने जवाब दिया।

'शट अप! बताओ न। मेरी मम्मी कैसी हैं? क्या ठीक हैं?'

'कमाल है। मुझेसे पूछो कि मैं कैसा हूँ।'

'तुमको कुछ नहीं होने वाला है। तुम हमेशा अच्छे रहोगे क्योंकि तुम्हारे जीवन में मैं हूँ।' उसने बड़े प्यार से जवाब दिया। हालाँकि मुझे लगा कि क्या यही बात उसकी माँ पर लागू नहीं होती?

'तुम्हारी माँ बहुत अच्छी हैं और तुम्हारे डैड के बारे में भी पूछना चाहिए था। लेकिन उसने हमेशा कहा कि वह पहले अपनी माँ की बेटी है... उनकी प्यारी बेटी।

फिर मैंने उसको वह सब बताया जो कुछ भी मेरे घर पर हुआ था, और यह कि शाम का क्या प्रोग्राम था। इस बीच अंदर से ठहाके की गूँज सुनाई दी और मैंने सोचा कि अंदर जाकर देखना चाहिए क्या

बातचीत चल रही थी। हमने फोन रख दिया और मैं अंदर चला गया।

मैंने अपनी शादी के बारे में बात करने के लिए उनको अकेला छोड़ दिया, लेकिन वे बड़े लोग तो चुटकुले सुना रहे थे, उन मजेदार बातों को याद कर रहे थे जो मैं छुटपन में किया करता था। आखिर माता-पिता इस तरह के शर्मिंदा करने वाले राज़ दूसरों के सामने क्यों खोल देते हैं? मैं कोई अकेला बच्चा नहीं था जो सोते में अपना अँगूठा चूसा करता था। इसमें क्या हो गया?

खैर...

हमने उस शाम के लिए प्लान बनाया—हीराकुंड बांध तक जाने का। मम्मी घर में ही रहना चाहती थीं, अपनी सेहत के और घर के कामकाज के कारण, सबसे बढ़कर डिनर के लिए। मैं मम्मी के साथ रुकना चाहता था लेकिन उनका मानना था कि मैं खुशी के मम्मी-पापा के साथ रहूँ। बस आधे घंटे की ही तो बात है, हम आ जाएँगे, उन्होंने कहा।

फिर दोपहर की नींद और शाम की चाय के बाद हम अपने प्लान के मुताबिक चल पड़े। हमारा ठिकाना मेरे घर से बस तीन किलोमीटर की दूरी पर था, इसलिए हमें समय नहीं लगा और हम 10 मिनट में वहाँ पहुँच गए।

गाड़ी पार्क करके हम जवाहर मीनार पर चढ़ गए, जो निगरानी करने के लिए बनवाया गया था। हम ज़मीन से करीब 150 फुट की ऊँचाई पर थे, और वहाँ से बाँध का पानी ख़ूब अच्छी तरह से दिखता था। हमारी दाईं तरफ विशाल बाँध था—नीचे से टबाइन की आवाज़ आ रही थी। हमारी बाईं ओर बहुत सुंदर नज़ारा था, ऊपर आधा जलता सूरज था, सूर्यास्त का बहुत ही सुंदर नज़ारा था। आकाश और पानी के बीच की रेखा को देखा जा सकता था।

जल्दी ही हमारी छाया दिखाई देने लगी, टावर की लंबी छाया ख़त्म हो रही थी। सूरज उस दिन के लिए गुड बाय कह रहा था। और सामने ख़ामोश द्वीप थे, छोटे-बड़े, दूर-नज़दीक, मीलों फैले पानी में, रात के पक्षियों के आने का इंतज़ार कर रहे थे कि वे आएँ और वहाँ राज करें। पक्षी अपने घर के लिए उड़ान भर रहे थे और टावर से हम अपने शहर की रोशनी को जलते हुए देख सकते थे। सबने उस जगह की सुंदरता की तारीफ़ की।

मैं इस बात से खुश था कि उस जगह पर खुशी के मम्मी-पापा को लेकर आया। और मुझे अच्छी तरह याद है कि उसकी मम्मा ने कहा था कि जब खुशी यहाँ आए तो उसको इस जगह पर लेकर आना। उसको बहुत अच्छा लगेगा। और उसके डैड ने कहा, 'यह उसी तरह का दिलकश नज़ारा है जैसा मैंने पुणे-मुंबई एक्सप्रेस वे से गुजरते हुए खंडाला की पहाड़ियों में देखा था और जिसको देखकर मैंने कविता लिखी थी। अब भी मेरा मन वैसा ही कर रहा है।'

यह सुनकर इतना अच्छा लग रहा था। मुझे नहीं पता कि उन्होंने उसके ऊपर कोई कविता लिखी थी या नहीं। लेकिन वे तब तक नहीं जानते थे कि मेरे छोटे-से शहर बुर्ला में ऐसी सुंदरता है।

हम करीब 8 बजे लौटे, डिनर से थोड़ी देर पहले। और तब जाकर वहाँ लोग वह बात करने लगे जिसके लिए खुशी के माता-पिता यहाँ आए थे। और एक सच्चे प्रेमी की तरह मैं अपनी महबूबा को वह सब कुछ बता रहा था जो वहाँ चल रहा था। कुछ देर बाद जब मैं भी उस बातचीत में शामिल हुआ तो हम सब एक से नतीजे पर पहुँचे।

सगाई की रस्म फरीदाबाद में 14 फरवरी, 2007 को होगी।

खुशी और मैंने वह तारीख़ बहुत पहले चुन रखी थी। उसने कहा था कि वह वेलेंटाइन डे वह अपने मंगेतर के साथ मनाना चाहती थी, जबकि मेरा मन उसे अपनी गर्लफ्रेंड के साथ मनाने का था। इसलिए हम दोनों इस पर राजी हुए कि 14 फरवरी की शाम को हम एक-दूसरे को अँगूठी पहनाएँगे।

दिन में वह मेरी गर्लफ्रेंड रहेगी और रात में मैं उसका मंगेतर हो जाऊँगा। कितना सीधा रास्ता निकल आया, नहीं?

तो यह तय हुआ कि सगाई 14 फरवरी को होगी और शादी नवंबर में किसी समय।

उसके बाद हम सबने खाना खाया और फिर उसके मम्मी-पापा अपने कमरे में चले गए, खुशी-खुशी। मैं अपने मम्मी-पापा के साथ बातचीत करने लगा। हम अपने स्तर पर सगाई के लिए प्लान बनाने लगे, जो एक महीने बाद ही थी।

वह आज तो ज़रूर खुश है। ऐसा लगता है वह मुझे कुछ कहना चाहती है। और मैं पूछ रहा हूँ—क्या? लेकिन वह अपना समय ले रही है। मैं सुन रहा हूँ वह अखबार के पन्ने पलट रही है। फिर वह बोलती है।

‘शोना!’ और एक पल की खामोशी के बाद उसने कहा, ‘शराब न पीने के बारे में तुम्हारा वादा...’

‘हुम्म।’

‘मैं तुमको उस वादे से आज़ाद करना चाहती हूँ।’

‘क्या’ एक पल को तो मैं उसका मतलब नहीं समझ पाया। लेकिन, तो भी मैं खुश हूँ। मैं एक बार फिर अखबार पलटने की आवाज़ सुनता हूँ।

वह कहती है, ‘तुमने पिछले सात महीनों में इस वादे को निभाया है। मुझे लगता है शराब तुमको नहीं बिगाड़ेगी।’

मुझे कुछ शक हुआ कि अभी ऐसा कहने का सिर्फ यही कारण नहीं है। ‘पक्की बात है कि बस यही कारण है?’

शरारती ढंग से उसने सारा सच सामने रखा। वह अखबार से एक आर्टिकल पढ़ती है जिसमें लिखा है कि कम मात्रा में शराब पीने से क्या अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। उसमें यह भी लिखा है कि प्रेमी जोड़े अपने रोमांटिक पल को एक गिलास शैंपेन से ख़ास बना सकते हैं।

मैं मुस्कुरा रहा हूँ।

वह कहती है, ‘मैं तुम्हारी इसके लिए इज़्ज़त करती हूँ कि तुमने अब तक वादा निभाया। अब मैं इसे तोड़ देने के लिए कहती हूँ।’

मैं कुछ कहता नहीं हूँ। बस मुस्कुरा देता हूँ। मुझे यह अच्छा लग रहा है।

वह कहती है, ‘तुमको काफी समय हो चुका है। तुम्हारा मन कर रहा है कि आज शाम अपने दोस्तों के साथ शराब पीयो?’

‘नहीं।’

‘क्यों?’

‘हाँ हाँ... ठीक है... आज रात नहीं।’ मैं हँस रहा हूँ। ‘मुझे खुशी है कि तुमने मुझे अपने वादे से आज़ाद कर दिया और मैं और भी खुश इसके लिए हूँ कि मैं उसे निभा सका। मैं केवल अपने दोस्तों का साथ देने के लिए पीता हूँ। शायद जब अगली बार मुझे पीने के लिए कहें तो मैं उनके साथ पी पाऊँगा। हालाँकि, मुझे कोई जल्दी नहीं है।’

वह कहती है कि मेरी अंतिम लाइन उसे अच्छी लगी।

शुक्रवार की दोपहर थी और हमेशा की तरह मैंने उसे लंच से पहले फोन किया। मुझे उसे बताना था कि हमने रिजर्वेशन करवा लिया है और यह भी कि हम कब उसके घर आने वाले थे। और मैं यह भी जानना चाहता था कि उसकी तरफ़ क्या कुछ हो रहा था। असल में, मुझे पहले से ही अंदाज़ा था; तो

भी हमारी सगाई से जुड़ी बातें इतनी अच्छी लग रही थीं कि हमें उसके बारे में बार-बार बात करना अच्छा लग रहा था। ऐसा सबके साथ होता है, नहीं?

‘हे।’

‘हाय, मेरी प्यारी बेबी।’

‘सुनो हमने अगला काम भी पूरा कर लिया है। हमने अपना...’

लेकिन उसने मुझे बीच में रोकते हुए कहा, ‘रुको। मैं तुमको अपने काम के बारे में बताऊँगी।’ वह पूरे जोश में लग रही थी और उसने मेरी बात पर ध्यान ही नहीं दिया। वह बहुत खुश थी। मेरा मतलब है कि वह वैसे भी खुश रहती है, लेकिन उस दोपहर वह कुछ अधिक ही खुश थी।

मैंने उसके बेड से ज़मीन पर कूदने की आवाज़ सुनी।

‘मुझे एक सेकेंड दो,’ उसने कहा और अपने आप में गाने लगी। ला ला लाला...ला ला।

‘अजीब बात है,’ मैंने सोचा और इंतज़ार करता रहा कि उसका एक सेकेंड पूरा हो जाए।

‘ओके। तुमको पता है मैंने क्या किया है?’ उसने अपनी प्यारी आवाज़ में पूछा। ‘हुम्म...नहीं। बताओ।’

मैंने अभी-अभी कुछ फूलदानों को पेंट किया है। और कुछ मोमबत्ती स्टैंड भी तुमको पता है कि वे किस तरह के हैं? कटोरे के आकार के मिट्टी के बने हुए जो पानी, ताज़े गुलाब की पंखुड़ियों से भरे रहेंगे और उसके ऊपर जलती हुई मोमबत्तियाँ तैरती रहेंगी।’

‘वाह! लेकिन तुम इसके साथ क्या करने वाली हो?’

‘अरे बुद्धू! हम उनको उस जगह पोडियम पर रख देंगे जहाँ अँगूठी पहनाने की रस्म होगी। उससे थोड़ी सुंदरता आ जाएगी और आस-पास मीठी खुशबू फैल जाएगी।’

‘ओह...वाह! यह तो अच्छा रहेगा यार।’

उसके बाद वह फिर से बिज़ी हो गई। शायद फिर से मोमबत्ती स्टैंड पर काम कर रही हो।

‘अच्छा सुनो। मैंने रिजर्वेशन करवा लिया है।’ मैंने उससे कहने कोशिश की।

‘वाओ! पता है? मैंने उसके ऊपर बहुत अच्छा डिजाइन बनाया है। सुंदर लग रहा है।’

पता नहीं उसको क्या हो गया था। वह मेरे ऊपर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रही थी और सगाई वाली शाम की तैयारी में लगी हुई थी। वह गा रही थी, वह पहले से अधिक हँस रही थी। उसको अपने आस-पास का सब कुछ बहुत सुंदर लग रहा था।

ला...ला ला...ला ला...ला...

‘ऐ पता है क्या? खाने का सारा मेनू तय हो चुका है। मैंने ही सेलेक्ट किया है। डैड उसके हिसाब से ऑर्डर भी दे चुके हैं। सारी खरीदारी हो चुकी है। कुछ छोटे-छोटे सामान को छोड़कर। मैं उनकी खरीदारी कल करूँगी।’ और वह सारी लिस्ट गिनाती रही, वह क्या खरीदने वाली है और सगाई वाले दिन वो क्या पहनने वाली है।

‘अरे देखते रह जाओगे। पहली नज़र में ही, मैं तुम्हारे होश उड़ा दूँगी।’

वह फिर से कूदने और गाने लगी, इस बार कुछ ऊँची आवाज़ में।

‘तुमको क्या हो गया है?’ मैंने सुना उसकी मम्मी पूछ रही थीं।

‘यह पागल हो गई है,’ मैंने सुना नीरू कह रही थी।

और खुशी? वो नाच रही थी, गा रही थी।

‘अरे मामा, मैं पागल हो रही हूँ...क्योंकि तीन दिन बाद मेरी सगाई है?’

ला...ला ला...ला ला...ला...

और फिर मुझे लगता है, उसने अपनी माँ को भी अपने डांस में शामिल कर लिया। वह पागल हो गई थी। प्यार का पागलपन...हर बीतते दिन के साथ उसका सपना पूरा होता जा रहा था...वह सातवें आसमान पर थी।

अचानक उसकी माँ ने फोन लिया और मुझसे बात करने लगी।

‘मेरी बेटी आज पूरी तरह पगला गई है...सुबह से हँसे जा रही है। वह इतनी खुश है, मुझे तो डर लगने लगा है...कहीं कुछ...’

‘जब आपकी शादी हो रही होगी तब आपको भी ऐसा ही लगा होगा!’ मैंने सुना खुशी पीछे से चिल्ला रही थी। उसकी आवाज़ दूर जा रही थी जैसे वह कमरे से दूर जा रही हो।

‘तुमने सुना?’ उसकी चिंतित और मासूम माँ ने पूछा।

‘हा हा। लेकिन अम्मा मुझे आज आपकी बेटी और भी अच्छी लग रही है। आप फ़िक्र मत कीजिए उसे तैयारियों का मज़ा उठाने दीजिए।’

उसकी माँ से मुझे पता चला कि सुबह से ही कई बार उस शाम को पहनने वाली ड्रेस पहन कर देख रही है, अपने सैंडल, अपनी चूड़ियाँ। उसने उसी सबके कारण ब्रेकफास्ट भी नहीं किया था। सुबह का सारा समय उसके हाथ में पेंट लगा रहा, जो वह गुलदानों, मोमबत्ती स्टैंड्स पर कर रही थी।

‘तुमको रविन से बात करनी है?’ उसकी माँ ने उससे पूछा।

बाहर से उसकी धुँधली, बचकानी, आवाज़ आई, ‘मम्मा, उससे कह दीजिए मैं अपनी सगाई की तैयारियों में लगी हूँ, इसलिए मुझे डिस्टर्ब न करे।’

वह सगाई की खुशी में इस क़दर डूबी हुई थी कि शायद वह यह बात भी भूल गई थी कि उसकी किसके साथ सगाई होने वाली थी!

मैंने अपनी प्यारी राजकुमारी को उसके काम के साथ छोड़ दिया। लेकिन फोन रखने से पहले मैंने उसकी माँ से यह बता दिया कि हमने रिजर्वेशन करवा लिया है और हम फरीदाबाद कब पहुँचने वाले थे। और मैंने खुशी का ला ला ला ला...सुना।

मैं यह सोचकर हैरत में था कि किस तरह से इस सबकी तैयारी संभाल रही थी, एक तरफ़ मैं रस्म के लिए सब कुछ निपटाने की तैयारी में लगा था। मेरा जीना मुहाल हो गया था: टिकट की बुकिंग, अपने दोस्तों को बुलाना और उनका शेड्यूल तय करना, कपड़े-गहने खरीदना। मिली-जुली चीज़ों की खरीदारी—जो सबसे बड़ा सिरदर्द था। मैं थका हुआ था, परेशान था। दूसरी तरफ, खुशी यह सब इतने अच्छे से संभाल रही थी। हँसना, बचपना, हर पल का आनंद उठाना, प्लानिंग, शॉपिंग और सब कुछ एक बार आजमाकर देखना। मुझे इस सबके बीच उसे इतने आराम से देखकर हैरत हो रही थी। और मैंने इसी वजह से उसे प्यार किया था।

खाना ख़त्म करके मैं अपने ऑफिस के फूड कोर्ट में दोपहर अकेला था और उसकी उस खुशी को याद करके मुझे हँसी आ रही थी। मुझे उसके लिए खुशी हुई और इस बात की कि वह मेरे जीवन में थी।

खुशी के लाइफ का फंडा बहुत साफ़ था—वह जीवन के हर पल का आनंद उठाना चाहती थी। वह कहती रहती थी, ‘जब आपका मन बारिश में डांस करने का हो तो इस बात को भूल जाओ कि दूसरे क्या कहेंगे। बस अपनी इच्छा पूरी कर डालो। यह आपका पल है। यह आपकी खुशी है।’ जब उसने कहा कि सगाई, शादी ये सब मौक़े जीवन में एक बार ही आते हैं तो सही कह रही थी। इसीलिए वे अनमोल होते हैं। आपको उनका ज़रूर मनाना चाहिए। आपको उनको यादगार बनाना चाहिए।

यह सब सोचकर मैं भी मस्त हो जाना चाहता था। ‘हाँ यह मेरी सगाई है,’ मैंने खुद से जोश में कहा। और पानी की आखिरी घूँट पीकर मैं ऑफिस में छुट्टी पर जाने से पहले का बचा हुआ काम पूरा करने लौट आया।

मैंने अपने कंप्यूटर पर छुट्टी का फार्म भरा अगले दो हफ्तों के लिए। कारण मैंने लिखा, 'मेरी सगाई है! मेरा सेल फोन ऑफिस के किसी काम के लिए उपलब्ध नहीं रहेगा, केवल शुभकामनाओं के लिए उपलब्ध रहेगा।'

बाद में रात को, मैंने महसूस किया कि मेरे अंदर जोश के कारण लहरें उठ रही थीं। जल्दी ही मेरी सगाई हो जाएगी। मैं किसी का मंगेतर हो जाऊँगा। अपने दोस्तों के साथ होने और किसी और लड़की को घूरने की मेरी आज़ादी जाती रहेगी। एक अँगूठी, जो मैं जल्दी ही अपनी उँगली में पहनूँगा, लड़कियों की आने वाली ट्रैफिक को रोक देगा। मेरा कुँवारापन जल्दी ही ख़त्म होने वाला है।

क्या मैं आगे इस जीवन का आनंद उसी तरह उठा पाऊँगा जिस तरह मैंने अब तक उठाया था? मुझे पता नहीं। लेकिन मैं अपनी उँगली में उस अँगूठी को देखना चाहता था। मैं और इंतज़ार नहीं कर सकता था। मैं भविष्य तो नहीं जानता, लेकिन, हाँ, मैं खुशी से शादी करना चाहता था। मैं उसके लिए मरा जा रहा था, प्यार करना चाहता था। प्यार की लहरों से मेरे दिल के समुद्र में तरंगें उठने लगीं। मैंने उसे कॉल किया।

उसने जैसे ही फोन उठाया मैंने कहा, 'मुझे लगता है कि मैं तुम्हारे साथ संभोग करना चाहता हूँ।'

'हुम्म। हाहा। पागल तो नहीं हो गए हो। मैं इस समय ऑफिस में हूँ और मुझे कुछ बहुत ज़रूरी काम निपटाने हैं।' उसने शरारती हँसी के साथ जवाब दिया।

कुछ सप्ताह पहले वह अमेरिकी प्रोजेक्ट का हिस्सा बनी थी और नाइट शिफ्ट में काम कर रही थी। मैं जानता था लेकिन मैं अपने ख़्यालों में इस क़दर खोया हुआ था कि मैं बात करता रहा।

'...और मैं अपनी आँखें बंद करके तुम्हारे चेहरे को अपनी उँगलियों से महसूस करना चाहता हूँ...'

'हे! शोना...सुनो!' वह अब भी हँस रही थी और मेरे ख़्यालों के प्रोसेस को रोकने की कोशिश करना चाहती थी।

'और फिर मेरी उँगलियाँ...'

'सुनो डियर! प्लीज़ मैं तुम्हारे मूड को समझ सकती हूँ। लेकिन मुझे कुछ बहुत ज़रूरी काम निपटाने हैं,' उसने इतने प्यार से कहा कि मुझे तकलीफ़ न पहुँचे।

'काम छोड़ो, सब छोड़ो।' मैंने कहा।

'मैं तुमको प्यार करती हूँ डियर। लेकिन छुट्टी लेने से पहले आज मेरा ऑफिस में आखिरी दिन है। तुम नहीं चाहते कि मैं अपना सारा काम पूरा कर लूँ जिससे मैं अपनी सगाई का ज़ा उठा सकूँ?'

वह इसी तरह से मुझे सोचने को मज़बूर करती थी और वास्तविक दुनिया में ले आती थी।

'हुम्म...' मैंने उससे कहा जिससे उसे समझ में आ जाए कि मैं समझ गया, लेकिन तब भी मैं उदास था।

'मैं वादा करती हूँ, मैं तुमको क़रीब पाँच बजे उठा दूँगी, घर पहुँचते ही,' उसने मुझे दिलासा देने के लिए तुरंत कहा।

'मुझे पाँच बजे उठाओगी। क्यों?'

'शायद मैं तुम्हारी उँगलियों को अपने चेहरे पर महसूस करना चाहूँ....'

'ठीक है। काम करो।'

'सेक्सी सुबह से पहले अपनी नींद का आनंद उठाओ। पाँच बजे मिलते हैं।'

उसने मुझे किस किया और अपने काम पर लौट गई।

आधी नींद में मैं अपने तकिए के नीचे मोबाईल फोन के पास पहुँचा। पर्दों से छनकर हलकी रोशनी आ रही थी, मुझे समझ में आ गया कि सुबह हो गई थी। मैंने फोन की स्क्रीन पर टाइम देखा। 6.30 बजे

थे ।

मुझे याद आया कि खुशी मुझे फोन करने वाली थी । फिर उसने कॉल किया क्यों नहीं? क्या वह सो गई? अभी भी मैं रात वाले मूड में ही था, मैंने उसी रुकी बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए उसका नंबर डायल किया । उस सर्द सुबह मैं अब भी अपने कंबल में लिपटा हुआ था । लंबी रोमांटिक बातचीत के लिए मैंने अपना हैंड्स फ्री कानों पर लगाया और रोमांस की दुनिया में जाने से पहले मैंने अपनी आँखों को बंद कर लिया ।

उसका फोन बजता रहा लेकिन उसने उठाया नहीं ।

‘मैं तुमको सोने नहीं दूँगा डियर,’ मैंने अपने आपसे कहा और उसका नंबर रिडायल किया ।

मुझे आश्चर्य हुआ कि फोन किसी आदमी ने उठाया, ‘हेलो?’ आवाज़ तेज़ी से हाँफ रही थीं ।

‘कौन है?’ मैंने अचानक उठते हुए कहा ।

गिरीश ।

मैं समझ गया कि वह कहीं भागा-भागा जा रहा था । उसके आसपास आवाज़ थीं ।

‘आपके पास खुशी का फोन क्यों है?’

उसने जवाब नहीं दिया बल्कि उसने सेल फोन किसी और को दे दिया ।

‘हेलो’, एक और आदमी की आवाज़ ने कहा ।

‘पुष्कर?’

‘हाँ, रविन ।’

‘क्या हुआ यार? तुम सब लोग? खुशी कहाँ है?’ मैंने अपना कंबल फेंकते हुए चिंतित होते हुए पूछा ।

‘रविन, हम लोग आईसीयू की तरफ भाग रहे हैं । खुशी का एक्सीडेंट हो गया है ।’

जो सोचा न था

‘क्या?’ कुछ मेरे दिल में अटक गया। मैं अपने बिस्तर से कूद पड़ा। ‘एक्सीडेंट?’ मैंने फिर से पूछा।

‘ऑफिस से आते हुए उसकी टैक्सी का एक्सीडेंट हो गया...’

मेरे दिल की धड़कन बढ़ गई। पुष्कर किसी को देखने भागा, शायद किसी डॉक्टर को और उसने फोन गिरीश को बढ़ा दिया।

‘गिरीश मुझे सच बताइए। उसको क्या हुआ? वह ठीक है तो है?’

वह खामोश रहा।

‘बताइए न! वह ठीक है न?’ मैं उसके ऊपर चिल्लाया। मैं देख रहा था कि मेरे पाँव काँप रहे थे, ज़मीन पर उसकी पकड़ कमज़ोर हो रही थी। और मैं अपने इधर से उधर भागने लगा।

‘मुझे पता नहीं, रविन।’

‘इस बात का क्या मतलब है कि आपको पता नहीं?’

उसने बड़े आहिस्ते से जवाब दिया। ‘टैक्सी किसी ट्रक से टकरा गई। ड्राइवर...ड्राइवर...वो...’

‘क्या हुआ?’

‘उसकी तो स्पाँट डेथ हो गई।’

‘हे भगवान!’ मुझे सुनकर डर लग गया, ‘गिरीश, भगवान के लिए मुझे खुशी के बारे में बताओ। प्लीज़ गिरीश...प्लीज़।’

‘खुशी आईसीयू में हैं। डॉक्टर कुछ बता नहीं रहे हैं। उसका बहुत सारा खून बह गया है...’

मैं चीखने लगा।

‘क्या उस टैक्सी में कोई और भी था?’ मैंने फिर पूछा।

‘हाँ, एक और आदमी था, जो ड्राइवर की बगल में बैठा था। लेकिन वह ठीक है। उसे बस थोड़ी-बहुत खरोंचें आई हैं। कार दाईं तरफ से पूरी तरह से टूट गई है, जिससे ड्राइवर और उसके ठीक पीछे बैठी खुशी को गहरी चोटें आईं।’ गिरीश ने जवाब दिया।

कुछ देर बाद पुष्कर लौटकर आया और मुझे दिलासा देते हुए कहने लगा कि डॉक्टर उसका ध्यान रख रहे हैं और उनका मानना है कि वे हालात को काबू में कर लेंगे।

‘हम सब यहाँ हैं, रविन। तुम घबराओ नहीं। वह ठीक हो जाएगी। डॉक्टरों का कहना है। मैंने अभी-अभी उनसे बात की।’

‘हाँ पुष्कर। वह ठीक हो जाएगी। मुझे पक्का लगता है कि वह ठीक हो जाएगी। उसे होना ही है।’ मैं फुसफुसाया, दुआ करते हुए कि मेरे शब्द सच हो जाएँ।

‘मैं तुमको फोन करके ज़ल्दी ही उसकी हालत के बारे में बताता हूँ। अभी मुझे दवाई वगैरह के लिए जाना है।’

‘ठीक है तुम ये सब करो। मैं तुम्हारे फोन का इंतज़ार करूँगा।’

कमरे में मैं अब भी सदमे की हालत में था, सोच रहा था कि यह कोई बुरा ख़्वाब तो नहीं था कि मैं नींद से जागूँगा तो पाऊँगा कि खुशी तो ठीक थी।

लेकिन दुर्भाग्य से यह सच था।

मुझे घुटन-सी महसूस हो रही थी। मैं जितना संभव हो सके उतनी हवा साँसों में भरने की कोशिश कर रहा था। मैंने सभी खिड़कियाँ बोल दीं, अपने घर के बाहर के संसार से संपर्क करने की कोशिश

कर रहा था। मैं घर में अकेला था। और वह भयानक सदमा मुझे उस अकेलेपन में मुझे तोड़े जा रहा था। मैंने अपने मम्मी-पापा को फोन किया लेकिन किसी के उठाने से पहले ही काट भी दिया, समझ में नहीं आ रहा था कि उनको कैसे यह खबर दूँ। मैं पहले अपने आपको संभालना चाहता था। तरह-तरह के डर मेरे दिमाग में भर गए थे। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करना चाहिए, इसलिए मैं भागा-भागा दूसरे कमरे में गया, अपने पूजा के कमरे में। अपने हाथ जोड़कर मैंने भगवान से कहा, 'नहीं! इन बुरे ख्यालों को सच मत होने दीजिए। हे भगवान। उसे नहीं। प्लीज़।'।

उस सुबह बाद में मैंने अपने घरवालों को यह बताने के लिए फोन किया। उन्होंने जब सुना तो उनको विश्वास ही नहीं हुआ, लेकिन बाद में मुझे समझाते हुए कहा कि वह अच्छी हो जाएगी। मैंने उनसे कहा कि सबसे पहले जो फ्लाइट मिलेगी मैं उसमें टिकट बुक करवाने जा रहा हूँ। उस दिन बाकी समय मैं उसके घरवालों को फोन करता रहा। मैं बेचैन था। मैंने अपनी फ्लाइट कन्फर्म की।

दिन खत्म होने से पहले मैंने एक एसएमएस लिखा और उसे अपने उन सभी दोस्तों को भेज दिया जो सगाई के मौके पर आने वाले थे।

दोस्तों, एक बुरी खबर है। खुशी का एक्सीडेंट हो गया है इसलिए सारा प्रोग्राम टल गया है।

अगली सुबह मैं 6.30 बजे अपने बिस्तर से उठ गया हालाँकि मैं 5 बजे से जगा हुआ था, अपने सारे बुरे ख्यालों को दूर भगाने की कोशिश कर रहा था।

मैं अपनी अलमारी के पास गया, उसे खोला और फिर हाथ जोड़कर आँखें बंद किए और अपना सिर गुरु नानक की तस्वीर के सामने झुका दिया जिसे मैंने पहले शेल्फ पर रखा हुआ था। दिल ही दिल में मैं बुदबुदाया, 'उसके घाव भर दीजिए और उसे अच्छा कर दीजिए...प्लीज़! मैं जानता हूँ आप ऐसा कर सकते हैं।'।

मैं वहाँ देर तक खड़ा रहा। कुछ देर बाद मैंने अपनी आँखें खोलीं, ऊपर देखा और वहाँ से चला गया, अलमारी के दरवाज़े को खुला छोड़कर। बाथरूम जाते हुए अपने आपको आईने में देखने के लिए मैं अपने कंप्यूटर टेबल की बगल में रुका। मैं डरा हुआ और ज़र्द लग रहा था। मेरी दाईं पलकों पर अब भी एक आँसू अटका हुआ था। मैंने उसे पोंछकर गहरी साँस ली और चेहरे पर झूठी मुस्कराहट लाने की कोशिश की। मैंने आईने से कहा। 'तुम्हारी दिलरुबा अच्छी हो जाएगी। वह इतनी प्यारी लड़की है। भगवान उसको लेकर इतने निर्दयी नहीं हो सकते कि वे उसको और नुकसान पहुँचाएँ।' अपने आपसे कहता हुआ मैं बाथरूम की तरफ भागा क्योंकि मुझे फ्लाइट के लिए देर हो रही थी।

7.30 तक मैं नहा-धोकर तैयार हो चुका था। तैयार होने के लिए मेरे पास एक घंटे का समय बचा था। मैं जो कुछ भी कर रहा था दो नाम मेरे होंठों पर हमेशा थे—खुशी और भगवान।

मैं अलमारी के पास गया, मैंने अपनी पूजा की किताब उठाई और चौकी पर पालथी मारकर बैठ गया। अगले दस मिनट तक मैंने पूरी तरह से ध्यान लगाकर पूजा की। मेरे कमरे में पूरी तरह से खामोशी छाई हुई थी, मैंने भगवान से फिर खुशी की सलामती के लिए दुआ की। इसके बाद, मैंने पूजा की अपनी किताब के सामने सिर झुकाया, फिर उसे मोड़कर ध्यान से वापस अलमारी में रख दिया। सुबह के समय प्रार्थना करना कॉलेज के जमाने से ही मेरी रूटीन का हिस्सा था, शायद आज मैं मन ही मन अपनी प्रार्थनाओं के फल माँग रहा था।

नाश्ता करने का मेरा मन नहीं हो रहा था। मैं कैसे कर सकता था, जबकि मेरी महबूबा आईसीयू में पड़ी थी? मैंने नाश्ता नहीं किया और एयरपोर्ट के लिए निकल पड़ा।

बाहर, चमकता सूरज भुवनेश्वर को गुड मॉर्निंग कह रहा था। और मैं खुशी के बारे में कोई अच्छी खबर जानने के लिए बेताब हो रहा था। थोड़ी-थोड़ी देर में मैं किसी मिस्ट कॉल या एसएमएस के

लिए अपना मोबाईल फोन देख रहा था। इतवार की सुबह सड़क पर भीड़ नहीं थी। मैंने एक ऑटोरिक्षा को रोका और अपने जीवन में पहली बार बिना मोल-भाव किए मैंने अपना एयर बैग उसमें रख दिया।

‘कहाँ?’ ऑटो रिक्षा के ड्राइवर ने पूछा।

एयरपोर्ट।

मैं 9.30 तक एयरपोर्ट पहुँच गया। मैंने अपना बैग उठाया और अंदर चला गया। अभी भी फ्लाइट में 20 मिनट का समय बाकी था। मैं अपने आपको रोक नहीं पाया कि फरीदाबाद में किसी को फोन करके खुशी की हालत के बारे में पता करूँ। मैंने उसका नंबर डायल किया। किसी ने फोन उठाया।

‘हेलो,’ किसी औरत ने कहा।

‘हाय! निशा दी।’ अब तक मैं खुशी के घर में सबकी आवाज पहचानने लगा था।

‘हाय रविन। तुम कैसे हो?’

‘मैं ठीक हूँ दीदी, आप कैसी हैं? और हॉस्पिटल से क्या ख़बर है?’

‘आज सुबह डॉक्टर ने उसे नहीं देखा। वे शायद 11 बजे बताएँगे।’

खुशी की हालत के बारे में नहीं जानने से मैं बेचैन हो रहा था।

फिर मिशा दी ने पूछा, ‘तुम यहाँ कब पहुँचोगे?’

‘मैं इस समय एयरपोर्ट पर हूँ और कुछ ही देर में मेरी फ्लाइट छूटने वाली है। शायद दोपहर के एक बजे तक पहुँचूँ...मुझे लगता है सिक्योरिटी जाँच शुरू हो चुकी है। मैं अब फोन रखूँगा। वहाँ पहुँचकर आप लोगों से मिलूँगा।’

‘हाँ हाँ। तुम चलो। ठीक से यहाँ पहुँच जाओ और फिर हम लोग बात करेंगे। बाय।’

‘बाय’, मैंने कहा और सिक्योरिटी चेक के लिए बढ़ गया।

कुछ देर बाद मैं जहाज में था, अपनी सीट पर, इस बात से अपने को खुश करने की कोशिश कर रहा था कि मुझे विंडो सीट मिली। लेकिन थोड़ी ही देर में मैं फिर से दुखी हो गया। मैं ख़यालों में खो गया कि एक ख़ूबसूरत हाथ ने मेरी ओर कैंडीज बढ़ाया।

‘क्या मैं आपको कुछ कैंडीज दे सकती हूँ, सर?’ एयरहोस्टेस ने पूछा।

‘नहीं शुक्रिया।’

यहाँ तक कि उसका ख़ूबसूरत चेहरा भी मुझसे हाँ नहीं कहलवा सका। शायद इसलिए क्योंकि अब मुझे खुशी से अधिक कोई भी सुंदर नहीं लगता था। और उसी समय मेरे दिमाग में यह ख़याल कौंधा: ‘एक बार जब आप प्यार में होते हैं तो बाहरी सुंदरता, कपड़े वगैरह सब फलतू लगने लगते हैं।’

इस ख़याल से मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने सोचा कि क्या इसी को प्यार का जादू कहते हैं।

जो भी रहा हो, लेकिन उस समय तक एक बात पक्की हो चुकी थी—मैं अपने आपको इस मूड में पसंद नहीं कर रहा था। मेरा मतलब है, एक दिन पहले ही मैं अपने ब्लेज़र, सगाई की अँगूठी और उसकी साड़ी को देखकर इतना खुश हो रहा था। और देखिए मुझे। ‘हे रविन, तुमको इस ख़याल से निकलना ही है। यह तुम नहीं हो,’ मैंने खुद से कहा।

अब तक, जहाज में सवार यात्री, एयरहोस्टेस सब हवा में थे। मैंने खिड़की से बाहर देखा, सफ़ेद बादलों और पास से गुजरती चिड़ियों को देखने लगा। मैं सोचने लगा कि अगर मैं चिड़िया होता तो वीकेंड में खुशी से मिलने फरीदाबाद जाने में मुझे कितना समय लगा होता। मैं अपने खुशफ़हम ख़यालों में खोया हुआ था कि मेरी बग़ल में बैठी मोटी औरत ने मुझसे खिड़की का शटर गिरा देने के लिए कहा क्योंकि धूप बहुत तेज आ रही थी। मैं समझ नहीं पाया कि किस तरह से सूरज की किरणें

उसके रंग को और गहरा बना सकती थीं। खैर, मैं बहस करने के मूड में नहीं था और मैंने वही किया जो वह चाहती थी।

लंच का समय हो चुका था। मुझे यह तब समझ में आया जब मैंने खाने की ट्रॉली सीटों के बीच में देखी। लेकिन मुझे भूख नहीं लगी थी। मैं बहुत उदास था, यही सोचते हुए कि किस तरह से ऐसा दिन आया। मैंने कम से कम एक सैंडविच खाने का विचार बनाया और अपने दिमाग से उन बुरे ख्यालों को दूर भगाने की कोशिश की। ‘कुछ अच्छा सोचो, मजेदार। सगाई वाली रात भांगड़ा का ख्याल कैसा रहेगा?’ मैंने खुद से कहा। फिर उसमें जोड़ना पड़ा, ‘जो अब कुछ महीनों के लिए टल जाएगी...’

अब तक खाने की ट्रॉली मेरी बगल में आ चुकी थी।

‘एक्सक्यूज मी सर! आप खाने में क्या लेना चाहेंगे?’ एयर होस्टेस ने पूछा।

‘एक सैंडविच कोक के साथ,’ मैंने कहा।

‘आप लंच नहीं करना चाहते?’ उसने आश्चर्य से पूछा।

‘यही मेरे लिए आज का लंच है।’

‘अच्छा, वेज या नॉनवेज, सर?’ उसने मुस्कुराते हुए पूछा।

वाह! इस समय मुझे यह मुस्कुराहट अच्छी लगी।

‘आप मुझे दोनों नहीं देंगी?’ जैसे ही उसने अपना सवाल पूरा किया मैंने पूछा। उसने खाने की ट्रॉली की तरफ कुछ घबराहट से देखा, शायद यह गिनती कर रही हो कि वह दो दे सकती थी या नहीं।

‘हे! मैं तो मज़ाक़ कर रहा था। मुझे एक वेज सैंडविच दे दीजिए।’ मैंने उसे टोकते हुए कहा।

वह फिर मुस्कुराई और उसने मुझे सैंडविच और कोक दे दिया। मैंने अपने आपको ज़बरदस्ती उदासी की हालत से निकालने की कोशिश की।

‘वाह! वह मुस्कुराहट सचमुच खूबसूरत है,’ मैंने खुद से कहा। अगले ही पल मेरे मन में यह अजीब ख्याल आया कि उसका नेम टैग देखूँ। पता नहीं क्यों, लेकिन मुझे लगा कि वह भी पंजाबी थी। लेकिन इससे पहले कि मैं ऐसा कर पाता, वो मेरे पीछे वाली पंक्ति में जा चुकी थी। मैंने खड़े होकर पीछे मुड़कर देखने की कोशिश की, लेकिन तब मैंने देखा कि मेरी बगल वाली मोटी महिला मुझे घूर रही थी, मानो उसने अपने पड़ोस के किसी लड़के को अपनी बेटी पर कमेंट करते हुए देख लिया हो।

(‘तुम आदमी लोग कुत्ते होते हो,’ खुशी हमेशा कहा करती थी। ‘और तुम उनमें से एक से शादी करने जा रही हो, नहीं?’ हर बार मेरा यही जवाब होता था) मैं कुछ उदास होकर अपनी सीट पर बैठ गया और अपना सैंडविच और कोक खाने लगा।

मुझे तब अंदाज़ा हुआ कि मैं सो गया था जब मैं यह अनाउंसमेंट सुनकर जगा: ‘हम लोग कुछ ही देर में दिल्ली एयरपोर्ट पर उतरने वाले हैं।’

मैं फिर से बहुत बेचैन हो गया, जब मुझे उस सफ़र का उद्देश्य याद आ गया। कुछ देर बाद, मैं खुशी को आईसीयू में देख रहा होऊँगा। मैंने बाहर का नज़ारा लेने के लिए खिड़की का शटर उठा दिया। बाहर बारिश हो रही थी। अचानक मुझे थोड़ी ठंड लगने लगी। मौसम के कारण नहीं, बल्कि अपनी घबराहट और बेचैनी के कारण।

जहाज़ 1.45 पर, अपने समय से ठीक 45 मिनट बाद नीचे उतरा। पंद्रह मिनट बाद मैं अपना एयरबैग ले पाया और मैं एयरपोर्ट से बाहर निकल आया। मैंने अपने सामने की भीड़ में कुछ दूर देखा कि दीपू और जीजू मेरा इंतज़ार कर रहे थे। मैंने हाथ हिलाया और उनकी तरफ़ बढ़ा। इस बीच मैंने अपना मोबाइल फोन ऑन किया और देखा कि दीपू के कुछ मिसड कॉल थे।

‘आप कैसे हैं?’ दीपू ने हाथ मिलाते हुए पूछा।

‘मैं ठीक हूँ। आप कैसे हैं और खुशी की हालत कैसी है?’ मैंने पूछा।

उसने फिर मुझे बताया, कुछ मेडिकल टर्म्स के साथ जो मेरे लिए नए थे। लेकिन, किसी कारण से मुझे सुनकर अच्छा नहीं लगा। मैंने फिर उससे पूछा कि कुल मिलकर हालत कल से बेहतर है या नहीं।

‘हुम्म...’ दीपू कुछ कहने की कोशिश कर रहा था। मैं हालात को समझ गया।

और फिर मैंने जीजू की ओर ध्यान दिया। मैं उनको पहली बार देख रहा था।

‘यह मेरे बड़े जीजू हैं,’ दीपू ने मेरा परिचय करवाया।

‘सत सिरी अकाल,’ मैंने कहा और हाथ मिलाया।

‘मेरे ख्याल से फ्लाइट लेट हो गई,’ उन्होंने कहा।

‘हाँ, इस मौसम के कारण...वे ऊपर से दिल्ली के नज़ारे लेना चाहते थे।’ मैंने मुस्कुराते हुए आकाश की तरफ इशारा किया, जिससे कि सब लोग कुछ सहज महसूस कर सकें।

हम टैक्सी में बैठ गए। दिल्ली में अच्छी खासी ठंड थी और मैं उस ठंड को महसूस करना चाहता था इसलिए मैंने जैकेट निकाल लिया। हमें फरीदाबाद के अस्पताल पहुँचने में एक घंटे से भी अधिक का समय लगा। टैक्सी ड्राइवर ने हमें बाहर गेट पर उतार दिया और गाड़ी लेकर पार्किंग की तरफ बढ़ गया।

हम अस्पताल के अंदर गए और सेकेंड फ्लोर पर जाने के लिए लिफ्ट लिया। मैं जैसे-जैसे उसकी तरफ बढ़ रहा था मेरा डर बढ़ता जा रहा था और मैं थोड़ा काँपने लगा था। मैं लिफ्ट में अलग-अलग चेहरों को देख रहा था और उनके चेहरे की रंगत से उनकी अच्छी या बुरी कहानी को पढ़ने की कोशिश कर रहा था। दूसरी मंजिल पर लिफ्ट का गेट खुला।

बाहर निकलने पर मैंने देखा कि पुष्कर मेरी तरफ बढ़ा आ रहा था। मैंने उसके गले लगा। इससे पहले कि वह मुझे सफ़र या मेरे बारे में पूछता मैंने उससे उसकी हालत के बारे में पूछा।

‘डॉक्टर ने मुझे कुछ देर पहले ही उसकी हालत के बारे में बताया है,’ पुष्कर ने हम सबको देखते हुए कहा।

‘क्या कहा, बताओ?’ मैंने पूछा।

‘वह अब भी बेहोश है लेकिन उसकी हालत सुबह से कुछ बेहतर है, हालाँकि वह अभी पूरी तरह खतरे से बाहर नहीं हुई है। वे दो-एक दिन में उसके टूटे जबड़े का ऑपरेशन करने के बारे में सोच रहे हैं। इसके अलावा उसके दिमाग के कुछ हिस्सों में खून जम गया है, लेकिन खतरे की कोई बात नहीं है और दवा से उसको ठीक हो जाना चाहिए।’

कुछ बेहतर सुनकर हम सबने कुछ बेहतर महसूस किया। तो भी, हम लोग परेशान थे।

वैसे तो हम यह जानते थे कि पुष्कर को डॉक्टर ने जो कुछ भी बताया उसने हम लोगों को सब कुछ बता दिया, हम फिर भी सवाल किया जा रहे थे, इस उम्मीद में कि कुछ पॉजिटिव पता चल जाए।

इसी बीच फ्लोर पर हम सबके लिए यह अनाउंसमेंट हुई—जो लोग भी बिना आईसीयू पास के वहाँ मौजूद थे वे नीचे चले जाएँ क्योंकि मिलने का समय पूरा हो चुका था। हर शाम, 5.30 से 6 बजे के बीच मरीज़ के परिवार के एक या दो लोगों को मिलने की इजाज़त थी। मैं यह देखने के लिए पीछे मुड़ा कि आखिर यह अनाउंसमेंट कहाँ से आ रही थी। मेरी नजर एक दरवाज़े पर पड़ी जिसके ऊपर आईसीयू खुदा हुआ था। उसका मतलब ध्यान आते ही मैं काँप उठा। मेरे अंदर सिहरन दौड़ गई। अपने जीवन में मैं पहली बार आईसीयू के गेट पर खड़ा था, उसकी दूसरी तरफ के आदमी के बारे में सोचते हुए कि वह मेरी और मेरी ज़िंदगी के लिए क्या मायने रखता था।

‘हे भगवान,’ मैंने उन अक्षरों की ओर देखते हुए कहा।

मैंने उस दरवाज़े पर लगी छोटी-सी खिड़की से अंदर झाँकने की कोशिश की। दाईं ओर का रास्ता उसके बेड की तरफ जाता था। बेड नंबर 3, मेरे पीछे खड़े एक आदमी ने कहा।

मैंने पीछे मुड़कर देखा।

‘यह सुशांत है,’ दीपू ने हमें मिलवाते हुए कहा।

‘अरे हाँ, खुशी आपके बारे में बातें किया करती थी।’

खुशी और सुशांत एक ही कॉलेज में पढ़ते थे और वह उसे अपनी छोटी बहन की तरह मानता था।

इसी बीच, फ्लोर खाली करने के लिए दूसरी बार अनाउंसमेंट हुई। यह तय हुआ कि उस शाम सुशांत अस्पताल में रुकेगा और हम सब घर जाएँगे। रात में से कोई एक आ जाएगा और सुशांत की जगह लेगा।

6.15 में हम घर पहुँचे। दरवाज़ा खुला हुआ था और अंदर घुसने वाला मैं पहला आदमी था, अपने कंधे पर एयरबैग उठाए हुए। ड्राइंग रूम में घुमते हुए मैंने खुशी की माँ की तरफ देखा। वह बहुत उदास लग रही थी—एक माँ जिसकी बेटी अपने जीवन की सबसे बड़ी लड़ाई लड़ रही थी। अपना बैग ज़मीन पर रखते हुए मैं उनके पाँव छूने बढ़ा और उन्होंने मुझे अपने बेटे की तरह गले से लगा लिया।

मैं उनके कानों में फुसफुसाया, ‘सब कुछ अच्छा हो जाएगा, पूरी तरह से अच्छा हो जाएगा।’

‘हाँ। अब तुम आ गए हो तो वह अच्छी हो जाएगी।’ उन्होंने प्यार से मेरी पीठ को थपथपाते हुए कहा।

इस बीच मैंने मिशा दी और अमी दी को देखा। मैं उनसे मिला, अपने सफ़र के बारे में उनके सवाल का जवाब दिया। हम ड्राइंग रूम में सोफे और कुर्सियों पर बैठ गए। कुछ देर बाद दूसरे कमरे से उसके डैड आए। मैं उनके पाँव छूने के लिए उठा और उन्होंने भी मुझसे पूछा कि सफ़र अच्छा रहा या नहीं।

फिर हम सब बैठकर यह बात करने लगे कि पिछले दो दिनों में क्या कुछ हुआ। वह उस दशा के बारे में बताने लगे जिसमें एक्सीडेंट हुआ होगा। हमारी बातचीत के बीच लंबी चुप्पी और गहरी साँसों का वक्त आ जाता था जिसे हम अपनी उम्मीदों से तोड़ने की कोशिश करते।

मैंने फिर देखा कि नीरू किचन से एक ट्रे में चाय और पानी लेकर आ रही थी। ‘उसके चेहरे पर छद्म उदासी को देखो जिसने उसकी मीठी मुस्कान की जगह ले ली थी,’ मैंने मन में सोचा। वह आई और उसने हम सबके सामने टेबल पर कप रख दिए। वह मुझसे बिना बात किए जाने ही वाली थी कि मैंने कहा, ‘हाय नीरू।’

‘हेलो। आप कैसे हैं?’

‘मैं ठीक हूँ। और तुम कैसी हो?’

‘मैं भी ठीक हूँ,’ उसने टेबल से गिलास उठाते हुए कहा और चुपचाप किचन में लौटने लगी।

‘वह बुरी तरह उदास है,’ मम्मा ने मुझसे कहा।

मैं समझ सकता हूँ।

हम कुछ देर तक बातें करते रहे और फिर सब अपने अपने काम में लग गए। मैंने फिर देखा कि छोटा दान अपने कमरे से खिलौने लेकर लौट रहा था। उसने मुझे तुरंत पहचान लिया, और मेरे पास आते हुए बोला, ‘तुम फिर आ गए?’

‘हाँ, मैं तुमसे मिलने आया हूँ, डियर,’ मैंने उसे बाँहों में भरते हुए जवाब दिया।

‘तुम मेरे लिए क्या लाए?’ मैं इस सवाल की उम्मीद कर रहा था।

‘मैं तुम्हारे लिए चॉकलेट लाया हूँ। लेकिन वह तुमको तब मिलेगी जब तुम मुझे 10 किस दोगे,’ मैंने उसके प्यारे गाल को दबाते हुए कहा।

उसने मुझसे कुछ नहीं कहा, बल्कि वह मुझे किस करने लगा और गिनने लगा, जिसके बाद मैंने उस चॉकलेट दे दिए। वह इतना खुश हुआ कि दौड़ कर अपनी माँ को दिखाने के लिए गया।

‘दान के लिए चॉकलेट लाना कभी मत भूलना,’ खुशी ने मुझसे कहा था। वह मुझे इस तरह की छोटी-छोटी बातें याद दिलाती रहती थी जिनका उसके जीवन में बहुत अधिक महत्व था।

9 बजे हमने डिनर लिया और उसके बाद हम चर्चा करने लगे कि वे दो लोग कौन होंगे जो रात में अस्पताल में रहेंगे। परिवार का हर मर्द वहाँ रहना चाहता था और मैंने भी अपने आपको उस परिवार के सदस्य के रूप में ही गिना।

‘तुम सफ़र में थक गए होंगे। इसलिए बेहतर यही होगा कि तुम यहीं घर में आराम करो,’ डैड ने मुझसे कहा।

‘नहीं मैं ठीक हूँ। मेरा सफ़र बमुश्किल 3 घंटे का था...’

मैं बुरी तरह से चाहता था कि अस्पताल जाऊँ। मैं उसके उतने करीब होना चाहता था जितना संभव हो सके। लेकिन, कुछ देर बाद डैड ने फैसला सुनाया कि दीपू और जीजू अस्पताल जाएँगे और उस रात मुझे घर में ही रहना चाहिए। पुष्कर को किसी काम से अपने ऑफिस जाना था। मैं उदास हो गया। मैं बुरी तरह से चाहता था कि उसे देखूँ। लेकिन मुझे एक और रात जाग कर उसे बिना देखे गुजारनी थी।

11.30 में बिस्तर में था, खुशी के कमरे में। अकेला, मैं इधर-उधर कमरे की चीज़ों को देख रहा था और यह याद करने की कोशिश कर रहा था कि वह उनके बारे में बातचीत में क्या कहा करती थी। मेरी दाईं तरफ कंप्यूटर था, उसकी अलमारी बाईं ओर थी और इस कमरे में लगा स्टोर रूम किताबों से भरा हुआ था। उस रात अस्पताल में न जा पाने की उदासी इस ख्याल से कुछ कम हुई कि मैं वह रात उसके कमरे में बिताने वाला था, उसी बिस्तर पर जिस पर वह सोया करती थी।

इन्हीं ख्यालों के बीच मुझे याद नहीं कब नींद आ गई। मैं कुछ घंटों तक सोया होऊँगा। जब मैं जगा तो कमरे के साथ लगे बाथरूम से आवाज़ें आ रही थी। कमरे की बत्ती बुझी हुई थी और मैं ऊपर से नीचे कंबल से ढँका हुआ था। मैंने सेल फोन में टाइम देखा। सुबह के 5 बजे थे। तभी किसी ने बाथरूम की बत्ती जलाई। मैं यह अंदाजा लगाने की कोशिश कर रहा था कि आवाज़ किस चीज़ की थी। जल्दी ही मैं समझ गया कि नल का पानी बाथरूम के बड़े खाली टब में गिर रहा था।

‘आह! वह मुझे इसके बारे में बताया करती थी,’ मैंने कुछ उत्तेजना के साथ सोचा। खुशी मुझे गुड मॉर्निंग वाले कॉल के दौरान इस चिढ़ाने वाली चीज़ के बारे में बताया करती थी।

पूरी तरह से जागने के बाद मैं उसकी बताई इस बात को याद करके मुस्कुराने लगा। इस पल के बारे में उसने इतनी अच्छी तरह से बताया था जो उस आदमी के लिए कितना दर्दनाक होता था जो सोना चाहता हो। और जिस तरह से उसने बताया था उसकी माँ बाथरूम से निकलीं और कमरे से जाने से पहले उन्होंने हरे नाइट लैंप को जला दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने कोई चैंपियनशिप जीत ली हो, पहले से ही यह जानकर कि क्या होने वाला था। मैं अपनी खुशी को कितनी अच्छी तरह से जानता था, मैंने सोचा। हम एक दूसरे के लिए बने थे।

मैंने कंबल से अपना चेहरा ढँक लिया, उस हरी बत्ती और टब में गिरते पानी की आवाज़ से बचने के लिए।

‘हे भगवान! वह हर सुबह कैसे इसे झेलती है?’ मैंने सोचा और सोने चला गया।

अगली सुबह मैं करीब 8 बजे उठा और पाया कि दूसरे कमरे से मम्मा हर दस मिनट में अपनी बेटियों को जगाने की कोशिश कर रही थीं।

मैं उनके पास गया और बोला, 'गुड मॉर्निंग मम्मा।'

'गुड मॉर्निंग बेटाजी,' उन्होंने जवाब में कहा, 'इनको देखो, ये सब कितनी आलसी हैं।' उन्होंने उनकी तरफ दिखाया, कुछ हताशा और मुस्कराहट के साथ।

मैंने उस तरफ देखा जिधर वह इशारा कर रही थीं और देखा अमी दी और मिशा दी नींद में एक ही कंबल के लिए लड़ रही थीं। मुझे उस बेचारे कंबल के लिए बुरा लगा, जिसे कभी इधर तो कभी उधर खींचा जा रहा था। सिर और पाँव कंबल से अजीब एंगल से बाहर आ रहे थे, जो उनके सोने के तरीके को लेकर सवाल खड़े कर रहे थे जिनका जवाब देना मुश्किल था, कम से कम मेरे लिए। कंबल के लिए चल रही इस लड़ाई के बीच नीरू बड़े आराम से सो रही थी। उसे कोई परेशानी नहीं हो रही थी, उसकी माँ द्वारा बार-बार उठाना भी नहीं। उन सबको एक मुस्कराहट के साथ देखते हुए मैं बाथरूम जाने ही वाला था कि मैं ने देखा कि नीरू के लंबे बालों के बीच से एक छोटा हाथ निकल रहा था।

'हे! कौन है?' मैंने थोड़ी मीठी आवाज़ में कहा, छोटे दान को चारों मौसियों के बीच से कंबल से निकालने की कोशिश करते हुए। वह नींद में इतना प्यारा लग रहा था कि मैं अपने आपको उसे मॉर्निंग किस देने से रोक नहीं पाया। उन चारों को बेड पर सोया देखना मुझे इतना अच्छा लग रहा था। उनको देखते हुए मुझे महसूस हुआ कि वे एक दूसरे से कितना प्यार करते थे और वह आपस में किस क़दर मिला-घुला परिवार था।

'टचवुड!', मैंने दिल ही दिल में कहा।

मैं उस घर में सुबह अपने आपको पाकर बहुत खुश था, और जब खुशी आ जाएगी तो यह और भी अच्छा लगने लगेगा। मैंने यह मनाया कि ज़ल्दी ही मैं सभी बहनों को इसी तरह अजीबो ग़रीब अंदाज़ में एक साथ सोते हुए देख सकूँ।

9.20 तक मैं सुबह की प्रार्थना के साथ तैयार हो गया। कमरे से बाहर आते हुए मैंने नीरू और अमी दी को किचेन में देखा। मैं सुबह की बात को लेकर कोई मज़ाक़ करना चाहता था। लेकिन मैंने अपने आपको रोक लिया, क्योंकि सबके दिमाग़ में खुशी की हालत की चिंता चल रही थी और मेरे भी, और उसके कारण घर में शांत माहौल बना हुआ था। और इसके अलावा डाइनिंग टेबल पर डैड का सीरियस मूड में बैठना भी एक वजह हो सकती है।

'हमें अस्पताल जाने में देर हो रही है। अभी तक ब्रेकफ़ास्ट तैयार क्यों नहीं हुआ?' डैड ने किचेन के दरवाज़े की ओर देखते हुए घर की महिलाओं से पूछा।

हमें अस्पताल पहुँचकर दीपू और जीजू को वापस भेजना था जो रात से वहीं थे।

किसी और ने तो नहीं मम्मा ने जवाब देने का साहस करते हुए कहा, 'बस हो ही गया समझिए।'।

कुछ ही देर में ब्रेकफ़ास्ट हाज़िर हो गया, डैड ने मुझे आने के लिए कहा गया। हमने बीस मिनट में ब्रेकफ़ास्ट किया और 10 बजे हम अस्पताल के लिए चल पड़े। रास्ते में, मुझे फिर वैसा ही महसूस होता रहा जैसा पिछले दिन महसूस हो रहा था, पहली बार मैं आईसीयू में जाकर उसे देखने वाला था।

जल्दी ही हमलोग अस्पताल में थे। आईसीयू फ्लोर पर मैंने दीपू को देखा जो हॉल के कोने में रखी एक कुर्सी पर आधी नींद में बैठा हुआ था। डैड और मैं सीधा उसके पास गए।

'हाय दीपू,' मैंने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

हाय, उसने अपनी सीट से उठते हुए कहा।

'क्या आज सुबह डॉक्टर ने उसे देखा था?' डैड ने पूछा।

‘हाँ, उन्होंने देखा था, बल्कि थोड़ी देर पहले ही, उन्होंने मुझसे बात की और कहा कि दोपहर तक वे सीटी स्कैन करेंगे। वे दीदी के ब्रेन में जमे हुए खून की ताज़ा हालत के बारे में जानना चाहते हैं।’

इस बीच जीजू भी हमारी बातचीत में शामिल हो गए। वे अस्पताल कैम्पस की दुकान से पानी की बोतल लेने गए हुए थे। उन्होंने भी दीपू से ताज़ा हाल पूछा। थोड़ी देर बाद डैड ने दोनों से घर जाने के लिए कहा ताकि वे ब्रेकफास्ट कर सकें और थोड़ा आराम भी। लेकिन जीजू ने कहा कि वे कुछ देर हमारे साथ रहना चाहते हैं। उनको ऐसा लग रहा था कि डॉक्टर शायद खुशी को सीटी स्कैन के लिए अभी ले जाएँ और वे भी उसे देख सकते थे। इसलिए वे रुक गए, जबकि दीपू अपनी कार से घर चला गया। दीपू आराम तो बिल्कुल ही नहीं करने वाला था, क्योंकि घर में कुछ ज़रूरी काम निपटाने थे। हम तीनों अलग-अलग जगह पर खाली पड़ी कुर्सियों पर बैठ गए। मैं अपने आसपास के लोगों को देखने लगा—कुछ सोए हुए थे, कुछ अपनों से मोबाइल पर बातें कर रहे थे, कुछ प्रार्थना कर रहे थे, कुछ अपने आँसू पोंछ रहे थे। उनकी आँखों में गहरे कहीं डर बैठा हुआ था जिससे वे लड़ रहे थे। हवा में वही गंध भरी थी, जो देश के हर अस्पताल की खास पहचान होती है। हमारे सामने आईसीयू का गेट था जो मुझे बहुत डरा रहा था।

इस फ्लोर पर दाईं ओर कुछ ऊँचाई पर एक टीवी रखा हुआ था। इंडिया और श्रीलंका की सीरीज का मैच चल रहा था, टीवी का वॉल्युम लगभग जीरो पर था। कुछ लड़के मैच देख रहे थे जबकि एक औरत सास-बहू सीरियल का रिपीट टेलीकास्ट देखना चाहती थी, जिसे वह पिछली रात नहीं देख पाई थी। मेरी बगल में बैठे एक आदमी ने बताया कि यह औरत काफी खुश थी क्योंकि उसके ससुर कुछ ही देर में आईसीयू से डिस्चार्ज होने वाले थे। जैसे ही उसने डॉक्टर से यह ख़बर सुनी वह उसने जश्न मनाने का सबसे बढ़िया तरीका यही पाया कि अपने प्रिय सीरियल को देखा जाए।

मेरे आसपास इतना कुछ हो रहा था। हर पाँच मिनट पर लिफ्ट का दरवाज़ा खुलता था और कुछ लोग बाहर निकलते, कुछ अंदर जाते। नर्स और वार्ड मरीजों को ट्राली पर रखकर आईसीयू के दूसरे दरवाज़े से अंदर ले जा रहे थे। बीच-बीच में किसी अटेंडेंट के लिए घोषणा होती कि वे अपने मरीज के डॉक्टर से मिले लें और हर घोषणा के साथ वह व्यक्ति उम्मीद या डर से दौड़ता हुआ आईसीयू की ओर जाता जिसके लिए वह घोषणा की जाती थी।

यह मेरे लिए एक अलग तरह का माहौल था, शायद उस फ्लोर पर मौजूद सभी व्यक्तियों के लिए। आईसीयू के दूसरे दरवाज़े से आते-जाते डॉक्टर हमें भगवान की तरह लग रहे थे और वहाँ खड़े गेटकीपर उनके दूत की तरह। और ठीक किसी मंदिर की तरह हमें अंदर जाने से पहले अपने जूते उतार लेने पड़ते थे। कभी-कभी वही दरवाज़ा दूसरी तरफ़ से खुलता और हम लोगों को बाहर निकलते हुए देखते, कुछ मुस्कुरा रहे होते, कुछ रो रहे होते।

आखिरकार, हमारे लिए भी अनाउंसमेंट हुई, ‘बेड नंबर 3। खुशी के अटेंडेंट, कृपया अंदर आएँ।’ यह मेरे दिल की धड़कन को बढ़ाने के लिए काफी था। बावजूद इसके कि मेरे माथे पर पसीने की बूँदें थी, मैं अंदर से बहुत ठंड महसूस कर रहा था। मैं तेज-तेज साँसें लेने लगा। मैं जानता था कि समय आ गया है कि जब मैं कुछ ऐसा देखने वाला था जो मुझे बेहद परेशान करने वाला था। मैंने डैड और जीजू की ओर देखा और हम तीनों दरवाज़े की तरफ भागे। अब तक हममें से किसी ने उसको नहीं देखा था और मुझे पता नहीं कि उनका हाल क्या था, लेकिन मैं काँप रहा था। जब हम दरवाज़े के पास पहुँचे तो मैंने जीजू का हाथ अपने कंधे पर महसूस किया जो मुझे दिलासा दिलाने की कोशिश कर रहे थे।

‘हाँ,’ डैड ने गेटकीपर से कहा।

‘नीचे सीटी स्कैन रूम के पास जाइए। नर्स उसे स्कैन के लिए ले गई है।’ गेटकीपर ने हमें बताया।

हम लिफ्ट की ओर भागे। उसका गेट बंद होने ही वाला था कि हम किसी तरह अंदर घुस गए। ग्राउंड फ्लोर पर लिफ्ट के गेट के बाहर मैंने गेटकीपर से सीटी स्कैन का रास्ता पूछा। अपने सेल फोन से उलझे हुए उसने रास्ते की तरफ इशारा किया। हम लोग दौड़ रहे थे। अनेक कमरों से गुजरते हुए वहाँ पहुँचे जहाँ एक बोर्ड लगा था जिसके ऊपर लिखा था 'सीटी स्कैन'। उसके इंट्रेंस पर ग्रिल जैसा लगा था और उसके पीछे रिशेप्शन था।

‘यस?’ रिसेप्शन पर बैठी एक महिला ने पूछा।

‘क्या खुशी नाम की पेशेंट का सीटी शुरू हो गया?’ मैंने अपने जूते के फीते बाँधते हुए उससे पूछा, जो दौड़ने में खुल गया था।

वह रजिस्टर में चेक करने लगी। इस बीच, मैं डैड और जीजू को देखने के लिए पीछे मुड़ा, वे अभी भी कमरे से काफी दूर थे।

‘आप उस हरे परदे के पीछे के स्ट्रेचर को देख रहे हैं? वह आपकी पेशेंट है और उसका सीटी स्कैन कुछ ही देर में शुरू होने वाला है,’ उसने इशारे से बताया।

‘आप कौन हैं और...’ उसने मुझसे पूछने की कोशिश की, लेकिन इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी कर पाती, मेरे पैर स्ट्रेचर की तरह बढ़ने लगे। अचानक मैं ठंडा पड़ गया। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे आसपास का सब कुछ जम गया हो, जैसे समय थमता जा रहा हो। मेरे आसपास की आवाज़ें मेरे कानों में मद्धिम पड़ने लगीं। मैंने अपने आसपास के लोगों उनकी हरकतों को तो देख रहा था, लेकिन मैं उनको सुन नहीं पा रहा था। मैं देख रहा था कि मेरे पीछे रिशेप्शन पर बैठी महिला अब भी मुझसे कई सवाल पूछ रही थी और मुझे अंदर जाने से मना कर रही थी, लेकिन मैं उसे समझ नहीं पा रहा था, और मैं उस हरे परदे की तरफ बिना पलक झपकाए बढ़ा जा रहा था। गेट पर वार्ड ब्वाय ने मुझे रोकने की कोशिश की, शायद उसे रिशेप्सनिस्ट ने कहा हो। मुझे उसका चेहरा याद नहीं, न ही यह कि वह क्या कह रहा था, लेकिन कुछ था कि उसने अगले ही पल मेरे सामने से अपना हाथ हटा लिया। शायद मेरे आँसू उसके हाथों पर गिरे हों...और आखिरकार मैं उसकी बगल में खड़ा था।

उसे देखकर मेरा दिल अंदर से पिघलने लगा। मैंने अपने किसी दुस्वप्न में उसे इस रूप में नहीं देखा था। मेरी जान, मेरी खुशी मेरे सामने थी और उसका शरीर बता रहा था कि उसके साथ क्या कुछ गुज़र था। उसका अधिकतर शरीर सफ़ेद चादर से ढँका हुआ था। उसके मासूम चेहरे पर घाव के बहुत सारे निशाने थे। उसकी नाक में साँस लेने के लिए मोटी नली लगी थी। उसके टूटे हुए जबड़ों को फिलहाल बैंडेज से जोड़ा गया था। उसकी मुलायम दाईं बाँह पर इतने इंजेक्शन पड़े थे कि वह नीला पड़ चुका था। मैं देख सकता था कि उसके शरीर के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग तरह की नलियाँ लगी थीं। उसके बेड पर हर तरह के डॉक्टरी औज़ार पड़े थे। और वेंटिलेटर से लगातार बीप की आवाज़ें आ रही थीं।

मैंने उसके हाथ को देखा, जो मेरी तरफ़ की चादर से बाहर निकला हुआ था। मैंने बहुत आहिस्ते से उसकी छोटी-छोटी उँगलियों को छुआ। बदले में, मैंने महसूस किया कि उसकी ख़ूबसूरत उँगलियाँ मेरी हथेलियों से खेलने लगीं, जिसे देखकर मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और रोने लगा, यह देखकर कि मेरी सबसे प्यारी अकेले ही सारा दर्द झेल रही थी।

मैंने अपने कंधे पर फिर से एक हाथ महसूस किया। अपनी चेतना में लौटते हुए मैंने पीछे मुड़कर देखा तो देखा जीजू मेरे पीछे खड़े होकर उसको देख रहे थे। डैड उसे दूसरी ओर से देख रहे थे आँखों में ढेर सारा प्यार लिए। सचमुच, एक पिता के लिए यह देखना मुश्किल होता है कि उसकी बेटी वेंटिलेटर की मदद से साँस लेती दिखाई दे। और वहाँ मैं था, अब भी उसका हाथ थामे हुए। हम तीनों अपनी प्यारी खुशी की बगल में खड़े थे, दिल और आत्मा से दुआ करते हुए।

‘हमें इसे स्कैन के लिए ले जाना है,’ एक औरत की आवाज़ की चुप्पी को तोड़ा। वह वहाँ की इंचार्ज नर्स थी और सीटी मशीन को तैयार कर रही थी।

उसे वार्ड ब्वाय को मदद के लिए बुलाया और स्ट्रेचर को स्कैनर की तरफ ले गई। वह एक विशाल, सफ़ेद, पहिए जैसा था जो इससे पहले मैंने सिर्फ़ फिल्मों में ही देखा था।

‘इसे स्कैनर पर रखने में मदद कीजिए,’ नर्स ने वेंटिलेटर ट्यूब को समेटते हुए कहा। हम सबने उसे स्ट्रेचर से उठाकर वहाँ रखने में मदद की। मैं बाईं तरफ़ नर्स के साथ खड़ा था। और जीजू दूसरी तरफ़ थे। वार्ड ब्वाय भी उसे उठाने में मदद करने के लिए आकर पीछे खड़ा हो गया। हम सब अपनी-अपनी जगह पर थे, लेकिन मैं यह नहीं समझ सका कि हम उसके बुरी तरह से घायल शरीर को किस तरह से सारी मशीनों और उसके शरीर से लगी नलियों के साथ शिफ्ट कर पाएँगे।

‘अब’, नर्स ने हम सबको उठाने का आदेश दिया। उसी समय सभी हाथ हरकत में आ गए। हालाँकि डैड, जीजू और मैंने उसे स्कैनर पर उठाकर रखने में पूरा ध्यान रखा, लेकिन नर्स उतना ध्यान नहीं रख रही थी। उसने उसके गले को बिना सहारा दिए स्ट्रेचर से उठा लिया और उससे भी बढ़कर उसने जिस तरह से उसके हाथ को पकड़ रखा था वह तो बिल्कुल ही ठीक नहीं था।

‘पानी चढ़ाने वाली नली बाहर आ गई है,’ वार्ड ब्वाय ने कहा।

मैंने कूद कर उस नली को पकड़ा और जल्दी से नर्स को दे दिया जिससे वह जल्दी से उसे लगा दे। लेकिन नर्स कुछ सुस्त लग रही थी।

‘पहले इसे लगा दीजिए,’ मैंने उससे कहा।

‘चिंता मत कीजिए। हर दिन हम मरीजों को सँभालते हैं, फ़िक्र मत कीजिए,’ उसने कुछ रुखाई से कहा।

‘इसीलिए आप इतनी बेदर्द हो गई हैं,’ मैंने ख़ामोशी से कहा।

ख़ुशी के हाथों में कुछ हरकत होने लगी थी, जो धीरे-धीरे बढ़ रही थी, हो सकता है दर्द की वजह से। थोड़ी देर में, वह क़रीब-क़रीब काँपने लगी, अपने हाथों में चुभी सुइयों से छुटकारा पाने के लिए। उसे देखकर मैंने नर्स से कुछ करने के लिए कहा।

‘यह आधे होश में है जिसमें हर कोई यही करता है। कुछ भी नया नहीं है।’ उसने मेरी घबराहट को नज़रअंदाज़ करते हुए जवाब दिया।

हो सकता है उसके लिए न रहा हो, मगर मेरे लिए तो वह ज़रूर नया था। मैं अपनी होने वाली पत्नी को इस हाल में नहीं देख पा रहा था। मैं नर्स के व्यवहार से परेशान हो रहा था लेकिन मैं यह जानता था कि हम ऐसा कुछ करने की हालत में नहीं थे कि जिससे हमारी मुश्किल और बढ़ जाए। मैं ख़ुशी की बग़ल में खड़ा रहा, उसके हाथों को अपने हाथों में थामे ताकि वह कोई नली या साँस की नली न निकाल सके।

‘आपको छोड़कर सब इस कमरे से चले जाएँ,’ नर्स ने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा।

क्यों, मैंने बड़ी शालीनता से पूछा।

‘अब हम स्कैन शुरू करने जा रहे हैं और हम ऐसे में अटेंडेंट को तभी रहने देते हैं अगर हमें उनकी ज़रूरत होती है। मैं चाहती हूँ कि जब तक यह स्कैन चलता रहे आप उसके हाथ को पकड़े रहिए, हो सकता है वह पानी की नली निकाल ले। उसने समझाया।

डैड, जीजू और वार्ड ब्वाय कमरे से बाहर चले गए। नर्स ने अंदर से दरवाज़े को बंद कर लिया और मुझे बिना बाँहों का एक जैकेट पहनने के लिए दिया, जो मुझे लगता है इसलिए था जिससे मैं उस मशीन से निकलने वाली किरणों से बचा रहूँ। मैं वापस कमरे में खड़ा था, अपनी महबूबा का हाथ

थामे, उसके चेहरे की ओर देखते हुए। मेरा दिल भगवान से मिन्नतें कर रहा था, 'चाहे कुछ भी लेकिन इसे नहीं हो।'।

धीरे-धीरे मुझे वह ताकत महसूस हो रही थी जिसकी बदौलत वह अपने हाथों को हिलाने की कोशिश कर रही थी। मेरे लिए यह मुश्किल होता जा रहा था कि मैं बिना उसे तकलीफ पहुँचाए उसके हाथों को मज़बूती से थामे रख सकूँ। हमारे आसपास कोई नहीं था। मैंने अपने आपको सख्त किया ताकि मैं उसे मज़बूती के साथ पकड़े रख सकूँ।

और मैं उससे बातें करने लगा।

'हाय डियर, मुझे माफ़ करना अगर मैं तुमको तकलीफ़ पहुँचा रहा होऊँ, लेकिन यह तुम्हारे लिए अच्छा है। मैं यह इसलिए कर रहा हूँ जिससे तुम जल्दी ठीक हो जाओ। मैं यह सब इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि तुम मेरी ज़िंदगी की अब तक की सबसे बड़ी चीज़ हो और मैं नहीं चाहता कि तुम मुझसे दूर चली जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे बिना रहने के बारे में सोच भी नहीं सकता। मेरे पास वापस आ जाओ, प्लीज़। अपनी आँखें खोलो और देखो तुम्हारा शोना यहाँ तुम्हारे लिए खड़ा है।'

उसका हाथ अपने हाथों में थामे मैं उसके कानों में कहने के लिए फुसफुसाया। 'लड़ो। हमारे लिए लड़ो। और मैं तुमसे वादा करता हूँ कि तुमको सबसे अच्छे अस्पतालों में दिखाऊँगा, सबसे अच्छे डॉक्टरों से, सबसे अच्छी दवा, सबसे अच्छी देखभाल।'

अगले कुछ मिनट तक मैं उसका चेहरा देखता रहा।

इसी बीच, कंट्रोल रूम से नर्स ने आकर कहा कि स्कैन पूरा हो गया है। मैं समझ गया क्योंकि मशीन की आवाज़ अब नहीं आ रही थी। उसने दरवाज़ा खोला और मैंने देखा डैड और जीजू बाहर खड़े मेरी तरफ़ देख रहे थे। हमने वार्ड ब्वाय की मदद से उसे वापस स्ट्रेचर पर लिटाया। इस बार, मैंने ध्यान से उसको चढ़ाए जा रहे पानी की बोतल, पेशाब के पाउच और वेंटिलेटर को लेकर चलने लगा। मैं नहीं चाहता था कि इस बार कोई भी किसी तरह की गलती करे। उसे स्ट्रेचर पर वापस रखकर वार्ड ब्वाय उसके स्ट्रेचर को पहिए के सहारे स्कैन रूम से बाहर लेकर चलने लगा। हम लोग भी उसके साथ चलने लगे। सामने दरवाज़े के पास, मैंने रिशेप्शन पर बैठी उस महिला को दोबारा देखा, वह मुझे देख रही थी। 'आई एम सॉरी,' मैंने कहा और वहाँ से गुज़र गया। आईसीयू की ओर वापस लौटते हुए नर्स ने दूसरा रास्ता लिया—वहाँ तक जाने वाली एक लिफ्ट का वहाँ हमारे जाने की मनाही थी। हम वहीं खड़े रहे, उनको देखते रहे, उसे ले जाते हुए। मैंने अपने हाथ जोड़कर भगवान से विनती की कि उसका ध्यान रखे और उसे जल्दी ठीक कर दें। हम फिर आईसीयू के अटेंडेंट वाले कमरे में आ गए। उन्हीं कुर्सियों पर, उन्हीं लोगों के बीच, उसी तरह के अनाउंसमेंट सुनते हुए। कुछ देर बाद जीजू वहाँ से चले गए, क्योंकि डैड ने जोर देकर कहा कि उनको घर जाकर थोड़ा आराम करना चाहिए। डैड और मैंने सारा समय वहीं अटेंडेंट हॉल में कुर्सियों पर बैठे हुए बिता दिया।

मैंने पिछले कुछ घंटों में जो कुछ देखा था वह मेरे दिमाग में कौंध रहा था। उसका चेहरा, उसका हाथ और मैंने उससे जो कुछ भी अपनी तरफ़ से बातचीत करते हुए कहा था।

'क्या उसने मेरी आवाज़ पहचान ली? क्या उसने मुझे खुद से बातें करते हुए सुना? क्या वह मुझसे कुछ कहना चाहती थी? इस तरह के कुछ सवाल मैं खुद से बार-बार कर रहा था। घंटों में एक तरफ़ इस तरह के सवालों, बुरे-बुरे ख्यालों से उलझा हुआ था तो दूसरी तरफ़ उम्मीदों से भरा हुआ था।

दोपहर के 3 बज चुके थे जब पुष्कर लंच बॉक्स लेकर अस्पताल आया। मैं जब बाथरूम से बाहर आ रहा था तो उससे मुलाकात हुई तो मैंने सीटी स्कैन के बारे में बताया।

'तो क्या डॉक्टर ने रिपोर्ट के बारे में भी कुछ बताया?' उसने पूछा।

'अभी नहीं। शायद शाम को बताए।' मैंने कहा।

‘हुम्म...मुझे लगा था। खैर कोई बात नहीं, मैं तुम्हारे और डैड के लिए लंच लाया हूँ,’ उसने कहा।
‘मुझे लगता है कि बेहतर यही होगा कि हम डैड को घर वापस भेज दें, ताकि वे वहाँ आराम से लंच लेकर कुछ देर आराम कर सकें। वे थके हुए लग रहे हैं।’

‘ठीक है। मैं यहाँ तुम्हारे साथ रहूँगा।’ हम फिर अटेंडेंट हॉल की तरफ बढ़ गए।

डैड के नहीं चाहने के बावजूद हम उन्हें घर वापस भेजने में सफल रहे।

उसके बाद मैंने खाना खाया। अगले कुछ घंटों तक मैं और पुष्कर बातें करते रहे, अपने-अपने ऑफिस के बारे में, घर और दोस्तों के बारे में। और अपनी खुशी के बारे में।

शाम के करीब 5 बजे थे जब मैंने लिफ्ट से दीपू को बाहर आते हुए देखा। मिलने का समय हो गया था और मैं समझ गया कि वह अपनी बहन को देखने आया था। वह हमारे पीछे बैठ गया, अपने कार के बारे में बताने लगा कि उसमें कोई खराबी आ गई थी और उसे सर्विसिंग की ज़रूरत थी। डैड ने उसे पहले ही सुबह के सीटी स्कैन के बारे में बता दिया था।

जब मिलने का हमारा नंबर आया तो मैंने उससे ही कहा कि वह आईसीयू में जाए। बाहर हॉल में मैं और पुष्कर सीटी स्कैन की रिपोर्ट को लेकर परेशान थे। हमारी आँखें आईसीयू के गेट पर ही लगी थीं। हम इंतज़ार में थे कि दीपू कुछ खबर लेकर बाहर आए। करीब 15 मिनट के बाद हमने देखा कि वह बाहर आ रहा था। हम अपनी कुर्सियों से उठकर उसकी तरफ बढ़े।

‘डॉक्टर का कहना है कि दीदी के ब्रेन में खून के थक्के अभी भी हैं। लेकिन अच्छी बात यह है कि उनकी हालत अभी बुरी नहीं हुई है,’ उसने हमारे पूछने से पहले ही बता दिया।

‘और कुछ?’ मैंने जानने के ख्याल से पूछा।

‘कुछ खास नहीं। वह बेहोशी की हालत में है और अपने हाथ-पैर हिला रही है।’

हम कुछ देर वहीं आईसीयू के गेट के पास ही खड़े रहे फिर अपने-अपने सीटों पर लौट आए, जहाँ हम करीब घंटा भर और बैठे। इस बीच डैड ने दीपू के मोबाईल पर फोन किया। वे चाहते थे कि मैं वापस आ जाऊँ। वैसे तो मैं वहाँ से जाना नहीं चाहता था, लेकिन बार-बार होने वाली अनाउंसमेंट के कारण मुझे जाना ही पड़ा। अनाउंसमेंट के मुताबिक बस वही अटेंडेंट वहाँ रह सकते थे जिनके पास आईसीयू पास थे और इसकी जाँच शुरू ही होने वाली थी। हम लोगों के पास बस दो थे और किसी एक को वहाँ से जाना था। मुझे अच्छा नहीं लगा कि मैं पुष्कर या दीपू से जाने के लिए कहूँ इसलिए मैं ही जाने के लिए तैयार हो गया।

‘मैं तुमको घर छोड़ दूँगा,’ दीपू ने कहा।

‘ओके,’ मैंने उसे और पुष्कर की ओर देखते हुए कहा।

‘घर जाकर चाय पियो और थोड़ा आराम कर लो। तुम यहाँ सुबह से ही हो,’ पुष्कर ने मेरे कंधे थपथपाते हुए कहा।

‘बिलकुल। बाद में मिलते हैं।’

‘सी यू।’

लिफ्ट में वापस जाते हुए मैं अपने आपसे पूछ रहा था—और भगवान से, अगर वह मुझे जवाब दे सके इस बात का—वह अब आँखें खोलने वाली थी मुझसे बातें करने के लिए। मैं डॉक्टर को यह कहते हुए कब सुनूँगा कि वह खतरे से बाहर है? हमारे लिए कब हालात फिर से अच्छे हो जाएँगे? मैंने भगवान से प्रार्थना की कि वे मेरी बातों को सुनें और मेरे सवाल का जवाब दें।

ग्राउंड फ्लोर पर आने के बाद हम अस्पताल से बाहर आ गए। बाहर ठंड थी। दीपू मुझसे कुछ कहना चाह रहा था लेकिन मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया, मैं भगवान के साथ अपनी एकतरफ़ा

बातचीत में लगा रहा। नीचे सड़क को देखता हुआ, अपने ख्यालों में खोया, मैं दीपू के पीछे-पीछे अस्पताल से बाहर निकल आया।

‘वह हमारी गाड़ी है, वहाँ,’ दीपू ने दिखाया।

बिना कुछ जवाब दिए मैं उसके पीछे-पीछे चलता गया और गाड़ी में बैठ गया। मेरी चुप्पी किसी भी तरह से न टूटने वाली थी। लेकिन गाड़ी में कुछ ऐसा हुआ जिससे मुझे अच्छा लगा और मैंने अपनी चुप्पी भी तोड़ ली। जैसे ही उसने इंजन स्टार्ट किया, पॉज किया हुआ गाना दुबारा चालू हो गया: आई एम गोन्ना वेकअप...इट्स नॉट माई टाइम टू गो, आई गेस आई विल डार्ड अनदर डे...

मैंने उसके लफ्ज़ों को साफ़-साफ़ सुना, जो उस रात कार के म्यूजिक सिस्टम से आ रही थी। सीट पर आराम से बैठते हुए मैं यही सोच रहा था कि भगवान हमारी बातचीत को दोतरफ़ा बना रहा था या खुशी मुझे वह बात कहना चाह रही थी जो वह मुझसे कहना चाहती थी जब मैंने उसका हाथ पकड़ रखा था। पता नहीं वह क्या था, लेकिन उस गीत के बोल शब्दों से कुछ अधिक ही कह रहे थे। या शायद यह इन्सान का स्वभाव होता है कि वह वही चुनता है जिससे उसे सबसे अधिक चैन मिले।

‘आमीन,’ मैंने अपने दिल में दुआ की, पहले से कुछ बेहतर लगा, मैं फिर दीपू से बातें करने लगा।

हम घर पहुँचे और दीपू निकलने ही वाला था कि डैड ने कहा पहले डिनर कर ले ताकि उसे वापस नहीं आना पड़े। ड्राइंग रूम में मैंने देखा कि जीजू और दान खेल रहे थे। मुझे देखकर नीरू ने मेरे और जीजू के लिए चाय बना दी। अगले आधे घंटे तक सारा परिवार उसी कमरे में आ जुटा। उस रात हमने डिनर करीब 9 बजे लिया, उसके बाद दीपू अस्पताल के लिए निकल पड़ा। मैं उसके साथ अस्पताल जाना चाहता था लेकिन मैं जानता था कि उस रात उसके साथ अस्पताल में सुशांत रहने वाला था। उससे भी बढ़कर, मैंने सुना था, घर में कोई कह रहा था कि सुशांत कल चंडीगढ़ के लिए निकल रहा था और दो-तीन दिनों में लौटने वाला था। मैंने सोचा कि उन रातों में उसकी जगह मैं चला जाऊँगा। पुष्कर को उस रात ऑफिस के लिए निकलना था किसी ज़रूरी फोन के लिए।

मैंने वह रात भी उसी के कमरे में गुज़ारी, उसी के बिस्तर पर। अपनी आँखों को बंद करने से पहले मैंने उसके साथ अपने अच्छे दिनों को याद किया और भगवान से दुआ की कि वे उसे ठीक कर दें। तो इस तरह एक और दिन दुआओं, उम्मीद और चिंता में निकल गया।

अगला दिन भी बहुत कुछ पिछले दिन की ही तरह था। डैड, जीजू और मैं अस्पताल 10.30 में पहुँच गए। दीपू ने हमें बताया था कि डॉक्टर उसी दिन उसके जबड़े और जाँघ का ऑपरेशन करने वाले थे। उनके अनुसार वह कुछ बेहतर हालत में थी इसीलिए डॉक्टर ने ऑपरेशन का फैसला किया। हमसे कहा गया कि हमें 4 खून देने वालों का इंतज़ाम करना पड़ेगा क्योंकि ऑपरेशन में करीब 4 यूनिट खून लगने वाला था।

मैं पहले खून के बदले खून देने के इस नियम के बारे में नहीं जानता था। डैड ने मुझे बताया कि जब भी किसी पेशेंट के लिए खून लिया जाता है उस पेशेंट के अटेंडेंट को सामान्य रूप से 24 घंटे के अंदर उतना ही खून जमा करवाना पड़ता है। यह किसी ब्लड बैंक से ब्लड लेने जैसा नहीं था—हमें ऐसे लोग चाहिए थे जो अस्पताल के खून बैंक में खून जमा करवा सकें।

‘तो हमें ऐसे 4 डोनर्स को ढूँढना पड़ेगा जिनका ब्लड ग्रुप ए-पॉजिटिव हो और जो अगले 24 घंटों में खून देने के लिए तैयार हों?’ मैंने डैड से पूछा। मैं इस बात को जानता था कि उसके पूरे परिवार में सिर्फ डैड का ब्लड ग्रुप ए-पॉजिटिव था और बाकी सब ओ पॉजिटिव थे। यहाँ तक कि मैं भी।

‘नहीं, बदले में किसी भी ब्लड ग्रुप का आदमी खून दे सकता था। शर्त सिर्फ यह थी कि उतने ही यूनिट खून देते होते थे। और हमने पहले से डोनर्स का इंतज़ाम कर लिया है।’ दीपू ने साफ़ कर दिया

।

‘वे कौन हैं?’ मैंने पूछा।

‘सुशांत के दो दोस्त, खुशी की कंपनी का एडमिन और मैं।’

‘मैं भी खून दे सकता हूँ। हम सुशांत के किसी दोस्त से रुकने के लिए कह सकते हैं।’ मैंने कहा।

‘सब कोई यहाँ आ चुके हैं और हमें अपने परिवार के लोगों को खून देने से रोकना है। कुछ और बुरा हो सकता है और अगर उस समय हम समय से किसी खून देने वाले को नहीं खोज पाएँ। याद रखो अगर तुमने अभी खून दे दिया तो अगले तीन महीने तक तुम खून नहीं दे पाओगे।’ उसकी बातों में दम था। मैंने यही दुआ की कि वैसे बुरे हालात नहीं आएँ।

‘मैं सुशांत के दोस्त के साथ ब्लड बैंक जाऊँगा और फिर उसके बाद मैं घर के लिए निकल जाऊँगा। खून देने से पहले कुछ खाने की ज़रूरत है।’ उसने कहा और निकल गया।

तब मेरा सेल फोन बजा। मैंने पॉकेट से सेल निकालते हुए घड़ी देखी। 11 बज रहे थे और मैं जानता था कि यह माँम का फोन था। वह मुझे रोज दो बार फोन करके पता करती थीं कि डॉक्टरों ने क्या कहा।

‘सत सिरि अकाल मम्मा,’ मैंने कहा उस भीड़ भरे हॉल से बाहर की ओर जाते हुए।

‘सत सिरि अकाल बेटा। कैसे हो?’

‘मैं ठीक हूँ। आपकी पीठ का दर्द कैसा है। आराम मिला?’

‘पहले की ही तरह है। कभी-कभी परेशान कर देता है लेकिन मैं ठीक हूँ। खुशी की हालत की कोई नई खबर?’

मैंने उनको बताया कि डॉक्टर ने आज उसका ऑपरेशन करने का फैसला किया है और उसके बदले खून देने की बात के बारे में बताया। उन्होंने ऑपरेशन को लेकर चिंता जताई और मैंने उनको दिलासा दिया, कहा कि वह इसलिए क्योंकि आज खुशी बेहतर है और डॉक्टर यह फैसला ले सकते थे। हमेशा की तरह, उन्होंने खुशी के परिवार बाकी घर-परिवार के बारे में पूछा। फोन रखने से पहले हमेशा की तरह यह कहते हुए उन्होंने मेरा हाँसला बढ़ाया कि भगवान बहुत बड़ा है और वह हम लोगों का ध्यान रखेगा।

‘हाँ मैं जानता हूँ कि वह ठीक हो जाएगी। आप अपना ध्यान रखिए और मैं आपको शाम में फिर फोन करूँगा।’ कहते हुए मैंने फोन रख दिया और बाहर हॉल में डैड और जीजू को खोजने आ गया।

‘वे डेढ़ बजे ऑपरेशन शुरू करेंगे,’ डैड ने मुझे बताया।

‘हमें ऑपरेशन के लिए ब्लड डोनर्स के इंतज़ाम के अलावा और भी कुछ करना है?’ मैंने पूछा।

‘मैंने पूछा था, लेकिन डॉक्टरों के मुताबिक के इंतज़ाम के अलावा और भी कुछ करना है?’ मैंने पूछा।

।

उस दोपहर ऑपरेशन समय पर शुरू हुआ। मुझे बताया गया कि इसमें कम से कम तीन घंटे लगने वाले थे। हम सब फर्स्ट फ्लोर पर एक अलग हॉल में बैठे थे। एक दरवाज़े के सामने जिसके बाहर ओटी लिखा था और बाहर एक लाल बत्ती लगी थी जो जल रही थी।

वही चिंता और ठंड मेरे अंदर फिर से लौट आई थी और मुझे लगता है सबका यही हाल था। हम गुपचुप बातें कर रहे थे। भय और उम्मीद के बीच झूलते हुए। समय जैसे थम-सा गया था। मिनट घंटों की तरह गुज़र रहे थे और घंटे दिन की तरह। और सबके साथ हमारे अंदर डर और उम्मीद की जंग चल रही थी, कभी जीत होती थी कभी हार।

मैं खिड़की के पास खड़ा होकर बाहर की ट्रैफिक को देख रहा था और मौसम को जो बहुत तेज़ी से बदल रहा था। अचानक अँधेरा छा गया। फरीदाबाद के आसमान पर काले-काले बादल छा गए।

तेज बारिश होने वाली थी। मैं अभी खिड़की से बाहर देख ही रहा था कि मेरा फोन बजने लगा। हैप्पी का था। मैंने फोन उठाया।

‘हे हैप्पी वीर।’

‘मेरा भाई कैसा है और मेरी भाभी के अब क्या हाल हैं?’

‘वे उसके टूटे जबड़ों और जाँघ का ऑपरेशन कर रहे हैं। अभी इसमें दो घंटे और लगेंगे।’

‘लेकिन जब मैंने पिछली बार फोन किया था तो तुमने बताया था कि डॉक्टर उसका जल्दी ऑपरेशन नहीं करने वाले?’

‘हाँ, लेकिन आज सुबह उन्होंने बताया कि उसकी हालत पहले से बेहतर है और उसका ऑपरेशन कर देना चाहिए।’

‘इसका मतलब है कि उनकी हालत में सुधार हो रहा है।’

‘मुझे उम्मीद है। मैं उसे ठीक देखना चाहता हूँ यार,’ मैंने दबी आवाज़ में कहा।

‘अरे छोड़ो यार। वह बिल्कुल ठीक हो जाएगी। देखो, उसकी हालत में कुछ सुधार हुआ है, तभी तो डॉक्टर ऑपरेशन कर रहे हैं। बस कुछ समय की बात है और हम तुम्हारी सगाई में भांगड़ा की धुन पर नाचेंगे...क्या कहते हो?’ उसने मुझे दिलासा देते हुए कहा जिससे मैं कुछ बेहतर महसूस कर सकूँ।

‘हाँ,’ मैंने कहा, ‘मुझे उसकी इतनी कमी महसूस हो रही है...हर ख्याल मुझे अंदर से हिला दे रहा है। तुम जानते हो मैं उसे कितनी बुरी तरह प्यार करता हूँ। मैं इस भीड़ में खुद को कितना अकेला महसूस कर रहा हूँ, सिर्फ इसलिए क्योंकि मैं उससे बात नहीं कर पा रहा हूँ।’

‘मैं जानता हूँ डियर। लेकिन इसे चुनौती समझो, एक परीक्षा, मुझे पक्का लगता है तुम इससे हँसते हुए निकल आओगे। सिर्फ उस अच्छे समय के बारे में सोचो जो इस मुश्किल दौर के बाद आने वाला है, जब वह अपनी आँखें खोलेगी और तुमसे बात करेगी।’

मैंने यही दुआ की कि उसने जो भी कहा उसका एक एक लफ़ज़ सच हो जाए, चाहे जो हो। मैं उससे कुछ पूछने ही वाला था कि अचानक उसकी आवाज़ सुनाई देनी बंद हो गई। मैं खिड़की पर पानी की बौछारों को देख सकता था, अपनी नाक से कुछ इंच की दूरी पर। कुछ ही देर में ज़ोर की बारिश होने लगी और मैं बस यही कह सकता था, मैं तुमको सुन नहीं पा रहा हूँ, ज़ोर की बारिश हो रही है, और मैंने फोन रख दिया।

मैंने खिड़की से बाहर देखा कि लोग या तो अपनी गाड़ियों की तरफ भाग रहे थे या अस्पताल की तरफ़। उस बारिश को देखकर मेरे अंदर ज़ोर की ख़्वाहिश हुई कि उसकी आवाज़ सुनूँ। वह बारिश में बाहर की तरफ़ भागा। मैंने एक साइबर कैफ़े खोजा और अपने दिल को तसल्ली देने के लिए, उसके वॉयस मैसेज सुनने लगा, जो उसने मुझे विदेश में भेजे थे। मैं बाहर से पूरी डॉक्टर उसका जल्दी ऑपरेशन नहीं करने वाले?’ तरह भीग गया था।

और अंदर से भी।

एक शाम, सप्ताह की दूसरों शामों की तरह मैं अपने दोस्त के साथ ऑफिस के हेल्थ क्लब में स्नूकर खेल रहा हूँ।

खुशी मुझे मिस्ड कॉल दे रही है, चाहती है मैं कॉल करूँ। उसके फोन में बैलेंस कम है। लेकिन मैं उसे वापस फोन नहीं कर रहा हूँ। मैं खेलने में लगा हूँ। कुछ महीनों में इन्फोसिस में स्नूकर चैंपियनशिप होने वाली है और मैं उसके लिए जम कर प्रैक्टिस कर रहा हूँ। मेरा फोन तीसरी बार बजता है। मैं डिस्कनेक्ट कर देता हूँ।

वह फिर फोन करती है। मैं चिढ़कर फोन उठा लेता हूँ।

‘क्या?’

तुम फोन क्यों नहीं उठा रहे हो?

मैं स्नूकर की प्रैक्टिस कर रहा हूँ। तुमको पता है मैं इस समय खेलने में बिजी रहता हूँ।

तुम्हारे पास मेरे लिए समय नहीं है। पाँच मिनट भी नहीं।

खुशी, प्लीज़, बाद में बात करें। वे मेरे शॉट का इंतज़ार कर रहे हैं।

ओके। बाय।

मैंने अपना फोन वहाँ से बहुत दूर रख दिया और वापस खेलने लगा। एक घंटे बाद मैच जीतने के बाद मैं अपना फोन उठाने गया।

उसमें उसका मैसेज था:

तुम शायद टूर्नामेंट जीतकर खुश हो।

लेकिन कोई उदास होगा।

तुमसे बात करना चाहती हूँ लेकिन शायद बात नहीं कर पाऊँ।

कुछ भी नहीं बदला। चार दिनों बाद भी हालात वैसे ही बने हुए थे—उसकी बेहोशी, डॉक्टरों की कुछ भी कह पाने की असमर्थता, हमारा डर, हमारी दुआएँ और हमारे आँसू।

समय-समय पर हम डॉक्टरों से पूछते कि उसके इलाज़ को लेकर किसी और से सलाह लेने की ज़रूरत तो नहीं। अगर हम इसका इलाज़ कहीं और करा पाएँ जब तक कि बहुत देर नहीं हो जाए। लेकिन वे कुछ कह नहीं रहे थे।

हर बीतते दिन के साथ मौत के साथ उसकी लड़ाई और मुश्किल होती जा रही थी। लगातार वेंटिलेटर पर रहने के कारण उसे न्यूमोनिया हो गया था, उसके फेंफड़ों में खून की कमी महसूस हो रही थी। उसकी इंटेस्टाइन में कहीं खून बह रहा था। उसे दस यूनिट खून चढ़ाया जा चुका था लेकिन उसके गिरते ब्लड प्रेशर को कोई भी चीज़ ठीक नहीं कर पा रही थी।

बहुत बुरा कुछ होने की आशंका ने मुझे बदल दिया था। अचानक मैं हर तरह के अंधविश्वास में यकीन करने लगा था। अगर किसी ने मुझे कहा होता—‘सड़क से कुछ पत्थर उठाकर खा लो, इससे वह बच जाएगी,’ तो मैंने वह भी किया होता। मैं उसे ठीक करने के लिए इतना बेचैन हो गया था कि मैं कुछ भी करने को तैयार था। कुछ भी। बिना कुछ सोचे।

जो दिमागी बोझ मैं उठा रहा था—हम सब उठा रहे थे—वह बहुत अधिक था। किसी अच्छी ख़बर के इंतज़ार में हम सब थे, जो हमें मिल नहीं रही थी। जबकि बुरी ख़बरें एक के बाद एक आ रही थीं। मैं अपनी लाचारी और हताशा को इस क्रूर महसूस कर रहा था कि लग रहा था कि दिमाग़ फट जाएगा। और सकारात्मक रहना और अपना आपा न खो पाना मुश्किल होता जा रहा था।

उस शाम देर से डॉक्टर ने हमें कहा कि उसके इलाज़ को लेकर किसी और से भी राय ली जा सकती है। जिसका मतलब था कि उनको लग गया था कि कुछ भी ख़ास नहीं किया जा सकता था। उसकी हालत बिगड़ रही थी। हम सबने अपना मन बना लिया। अपोलो अस्पताल हमारी आखिरी उम्मीद थी।

इतने सीरियस पेशेंट को वहाँ से ले जाना इलाज़ का सबसे मुश्किल हिस्सा होने वाला था। सबमें बहुत ख़तरा था। ऐसा सोचकर ही मुझे डर लग रहा था। जरा-सी ग़लती से भी भयानक कुछ हो सकता था। लेकिन हमारे पास कोई चारा भी तो नहीं था।

अगले दिन हम सब उस बड़े काम के लिए तैयार थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि महावीर जयंती का दिन था और मुझे दिल में यह लग रहा था कि हम इस शुभ दिन कुछ अच्छा करने वाले थे।

हम उसे अस्पताल से बाहर लेकर जाने ही वाले थे कि डैड से कुछ करने के लिए कहा गया। हमें कुछ कागज़ात साइन करने के लिए दिए गए और अंतिम वाले में तो यह लिखा था:

‘मरीज़ की हालत सीरियस है और इसको यहाँ से ले जाने का काम पूरी तरह से रोगी के परिवार की मर्ज़ी से किया जा रहा है। अगर आगे कुछ ऐसा हुआ जिससे रोगी की मौत हो जाए तो उसके लिए अस्पताल ज़िम्मेदार नहीं होगा।’

उसके पापा ने कागज़ात पर साइन कर दिया और पूरा पेमेंट करके बाहर आ गए। अगले आधे घंटे में हम रोड पर थे। हर मिनट काफी सावधानी की माँग कर रहा था। सारा समय, मैं अपने मन में भगवान का नाम लेता रहा। मैं पहली ही बार किसी एंबुलेंस में बैठा था। एंबुलेंस में होना! सड़क से एंबुलेंस देखने से बहुत अलग होता है। मैं नहीं जानता था कि यह इतना डरावना होता था। सब कुछ ठीक था, फिर भी साथ चल रहे डॉक्टर से मैं बीच-बीच में कुछ पूछ लेता था। और हर बार उसका जवाब सकारात्मक होता था।

बेचैनी के उन 45 मिनटों के बाद हम आखिरकार अपोलो पहुँच गए। वे उसे तुरंत आईसीयू लेकर गए और हमें कुछ औपचारिकताओं को पूरा करने को कहा गया। इसमें हमें करीब एक घंटे लगे और उसके बाद हमें उसे एक बार देखने दिया गया। आईसीयू से निकलने वाला मैं आखिरी आदमी था। मैं वहाँ उस नए डॉक्टर के पास खड़ा था जो उस केस को देखने वाला था। वह वहाँ खड़े डॉक्टरों की टीम में सबसे सीनियर था जो एमआरआई और एक्सरे देखने में लगे थे। मैं उनसे बात करना चाहता था। लेकिन जब वह मेरे सामने आए, मेरे कुछ कहने का इंतज़ार करने लगे तो मैं कुछ भी नहीं कह सका।

‘क्या हुआ?’ उसने पूछा, मेरे कंधों पर अपने हाथ रखते हुए।

अ...

‘हाँ?’

मैं बोलने की कोशिश करने में नीचे देखने लगा।

‘बेटे, क्या हुआ?’ उसने मेरी ठोड़ी उठाई।

‘क्या आप उसे मेरे लिए बचा सकते हैं?’ मैं इतना ही कह पाया कि मेरी आँखों से आँसू बहने लगे।

‘हम यहाँ वही करने की कोशिश करते हैं। फिक्र मत कीजिए सब कुछ बेहतर हो जाएगा। आप अपना ख्याल रखिए। हम उसका ध्यान रखेंगे।’ किसी ने उनको आवाज़ दी और वे फिर से रिपोर्ट देखने में बिजी हो गए।

मैं आईसीयू से बाहर आ गया। उस दिन का सबसे मुश्किल काम पूरा हो चुका था। वह पूरी सफलता के साथ नए अस्पताल में दाखिल हो चुकी थी। हमारे दिलों में जीत का भाव था और एक नए तरह की उम्मीद।

बाद में उस रात, डैड ने माँम से बात करते हुए कहा, ‘अब वह अधिक सेफ हाथों में हैं।’

एक्सीडेंट के बाद वह पहली रात थी जब मैं कुछ अच्छी तरह सोया।

‘लेकिन आपने कहा था कि वह ठीक हो जाएगी!’

‘देखो, जेंटलमैन, आपा मत खोओ। हम आपको चाँद लाकर देने का वादा नहीं कर सकते। हम पूरी कोशिश कर रहे हैं।’

अगली शाम, मैं डॉक्टर से बात कर रहा था। उनका कहना था कि उसकी हालत बिगड़ रही थी क्योंकि उसका प्लेटलेट काउंट गिर रहा था। अचानक सब कुछ उससे बहुत अलग लगने लगा जैसा कि हमने प्लान किया था, जो हमने उम्मीद की थी और जो चाह रहे थे।

बाद में आधी रात को, अलार्म बेल बजा और डॉक्टर्स ने हमसे कहा, 'उसके शरीर को खून की ज़रूरत है।'

'खून? फिर से?' मैंने पूछा।

'इस दफा हम उसके शरीर में प्लेटलेट्स डालना चाहते हैं। उनका लेवल उम्मीद से कहीं अधिक गिर चुका है।'

'हम इसे ब्लड बैंक से ले सकते हैं, ठीक?' उसके डैड ने पूछा।

'ये सेल 4 से छह घंटे से अधिक नहीं रहते। इसलिए उनको ब्लड बैंक में नहीं रखा जा सकता। हमें ऐसे लोग चाहिए जो इसे प्लाज्मा सेल डोनेट कर सकें।

'तो क्या मैं डोनेट कर सकता हूँ?' मैंने पूछा।

'बस वही आदमी कर सकता है जिसका ब्लड ग्रुप मिल जाए जिसका सेल मैच टेस्ट पॉजिटिव हो जाए।'

'हमारे पास कितना समय है?'

'हमें जल्दी से जल्दी करना है,' उन्होंने जवाब दिया और तुरंत अपने काम पर लौट गए।

हालात बहुत खराब थे। उसके डैड को छोड़कर उसके परिवार में किसी का ब्लड ग्रुप ए-पॉजिटिव नहीं था। और बुरी बात यह थी कि उम्र अधिक होने के कारण उनको खून देने की मनाही थी। उस मुश्किल भरी आधी रात में डैड, मै और दीपू एक और चुनौती का सामना कर रहे थे।

दीपू हर जानने वाले से संपर्क साधने की कोशिश कर रहा था। हमने उसके ऑफिस के एचआर वालों को भी फोन किया कि शायद उसके साथ काम करने वालों का खून मैच हो जाए। मैंने पुष्कर को फोन करके उस समय की उस ज़रूरत के बारे में बताया।

आधे घंटे बाद कुछ पॉजिटिव सुनने को मिला। उसके ऑफिस के कोई था जिनका ब्लड ग्रुप उससे मिलता था। वो मदद करने के लिए तैयार हो गए थे। लेकिन बदकिस्मती ने साथ नहीं छोड़ा। उसने देर रात एक पार्टी में शराब पी ली थी। उसके खून में अल्कोहल था और टेस्ट का रिजल्ट नेगेटिव आ गया।

एक घंटे बाद दीपू कुछ अच्छी खबर लाने में सफल रहा। कोई पड़ोसी मदद करने के लिए तैयार हो गया था। जैसे ही वह आदमी आया, उसे शुरुआती टेस्ट के लिए लैब ले जाया गया। कुछ ही देर में हमें पता चला गया कि उसका सब कुछ मैच कर गया था और वह प्लेटलेट्स डोनेट करने चला गया।

वेटिंग रूम में हम राहत महसूस कर रहे थे कि हम उस समय की जरूरत को पूरी कर पाने में सफल रहे।

खून देने के बाद मैं उस आदमी से बात कर रहा था जो हमारे लिए भगवान के भेजे हुए दूत से कम नहीं था।

'मैं आपको नहीं जानता और मुझे समझ नहीं आ रहा कि आपका शुक्रिया कैसे अदा करूँ,' मैंने कहा।

'अगर मैं नहीं करता तो कोई और कर देता,' उसने अस्पताल के लोगों द्वारा दिए फ्रूट जूस का घूँट भरते हुए कहा।

हमने उसे छोड़ने के लिए एक टैक्सी का इंतजाम किया।

'यह एक अच्छी इनसान है। मैं इसे जानता हूँ। फिक्र मत करो; वह जल्दी ही ठीक हो जाएगी।' उसने कहा और मुझसे हाथ मिलकर टैक्सी में बैठ गया। मुझे समझ नहीं आया कि उस आदमी से क्या कहूँ। जो मदद उसने की थी उसका शब्दों से शुक्रिया नहीं अदा किया जा सकता था।

सुबह के करीब 3 बजे दीपू का एक दूर का भाई अस्पताल पहुँचा। अब वहाँ रुकने की उसकी बारी थी और हम सब थोड़ा आराम करने घर चले गए।

लेकिन कुछ अनहोनी की आशंका मेरे अंदर फिर कहीं गहरे उभर आई।

अगले 10 घंटों में उसकी हालत में कुछ सुधार दिखा। उसके खून का प्लाज्मा काउंट पहले से बेहतर हो गया था। लेकिन अभी उसकी हालत ऐसी नहीं थी कि डॉक्टर ये कह सकें कि उसकी हालत ख़तरे से बाहर थी। कुछ अच्छा होगा ये तो वे नहीं कह सकते थे, लेकिन उन्होंने हमें उम्मीद बँधाई।

उधर मेरे घर में, मेरे घर के लोग मुझे लेकर चिंतित थे। उनको छोड़े एक सप्ताह होने जा रहा था। पहले मेरी मम्मा खुशी के लिए परेशान थीं, अब मेरे लिए। वे इस बात को लेकर भी दुखी हो रही होंगी कि इस सबके बीच मेरे दिमाग में क्या चल रहा था। वह जानती थीं कि मैं ठीक महसूस नहीं कर रहा हूँ। मम्मा इस समय मेरे साथ रहना चाहती थीं। वह समझ गई थीं कि मैं उनकी जरूरत महसूस कर रहा था। वह भी मेरे साथ रहना चाहती थीं। मेरे पित ने बताया कि उनको पिछले दो दिनों से अच्छा नहीं लग रहा था। वे खुशी को देखना चाहती थीं, उस लड़की को जिससे वे महीनों से बात कर रही थीं।

जब मैंने उनको फोन किया, उन्होंने मुझसे कहा कि अगर मैं उनके पास आ जाऊँ तो फिर वे मेरे साथ फरीदाबाद आ सकती थीं। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाना चाहिए, फिर भी मैं उनके साथ होना चाहता था।

फिर, कुछ मेरे ध्यान में आया, क्योंकि मैं उसके परिवार के साथ रह रहा था। उनके घर आने वाले लोग मुझे कॉन्शस बना देते थे। जब उसकी फैमिली से मेरे बारे में पूछा जाता था। जब उनसे पूछा जाता। 'तो यह आपके साथ रह रहा है? एक हफ्ते से?' इस तरह के सवाल मुझे शंकालु बना देते थे। क्या मैं उनके जीवन में मुश्किल बढ़ा रहा था? लोग कभी-कभी बकवास करते हैं, मैं जानता था। मुझे अपने आपको लेकर परवाह नहीं थी, लेकिन मैं यह नहीं चाहता था कि मेरी वजह से उनके परिवार को लेकर लोग बातें करें, कुछ मुश्किल हो।

अगले 24 घंटों में उसे कुछ और यूनिट ब्लड प्लेटलेट्स दिए गए। हमें उसके ऑफिस के हर आदमी का सहयोग मिला। उसके एचआर ने मेल से सबको डोनेशन के लिए लिखा।

जल्दी ही सब कुछ बेहतर होने लगा। हमारे अंतहीन प्रयासों का परिणाम दिखने लगा। उसके खून में प्लेटलेट्स काउंट ठीक होने लगा।

बाद में उस शाम खुशी के डैड ने कहा कि मेरी माँ ने उनको फोन किया था। उन्होंने कहा कि परिवार में तुम्हारी ज़रूरत है।

‘तुम्हारी माँ बहुत परेशान थीं। वह तुमसे मिलना चाहती हैं और वह भी यहाँ आना चाहती हैं। अगर तुम चाहो तो जाकर उनको ले आओ।’

‘मैं उनकी हालत समझता हूँ। लेकिन मैं इस हालत में खुशी को नहीं छोड़ना चाहता।’

हम सब यहाँ उसकी देखभाल के लिए हैं। दिमाग से काम लो और ज़बात पर काबू रखो। मैं फैसला तुम्हारे ऊपर छोड़ देता हूँ।

‘मैं डॉक्टर से बात करूँगा फिर अपना फैसला लूँगा।’

मैं डॉक्टर के चेंबर की तरफ गया...वहाँ एक लेडी डॉक्टर थीं जिस मैंने कई बार खुशी को देखते हुए देखा था। वह उस टीम का हिस्सा थीं जो उस केस को देख रहा था।

‘मैम क्या मैं आपसे कुछ देर बात कर सकता हूँ?’

‘हाँ,’ और इससे पहले कि मैं उसकी डेस्क तक पहुँचता उसने पूछा, ‘आप बेड नंबर 305 के पेशेंट के परिवार से हैं न।’

‘जी मैम।’

‘बताइए।’

‘किन्हीं कारणों से मेरा परिवार मुझे कुछ दिनों के लिए अपने साथ देखना चाहता है। मेरी माँ मुझसे मिलना चाहती हैं और मुझे उनको अपने साथ लेकर आना है। मैं ऐसा करने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पा रहा हूँ। मैं आपका सुझाव चाहता हूँ,’ मैं कुछ देर खामोश रहा, फिर मैंने कहा, ‘आप समझ गईं न मैं क्या कहना चाहता हूँ?’

‘हाँ समझ गई,’ उसने कहा और मुझसे पूछा, ‘आपका पेशेंट से क्या रिश्ता है?’

‘वह मेरी मंगेतर है।’

‘अच्छा, मुझे लगा था आप उनके परिवार से हो।’

‘लेकिन अब मैं उनके परिवार का ही हूँ,’ मैंने बहुत साफ़-साफ़ कहा।

उसने मुझे कुछ देर तक और फिर मेरे हाथ को।

‘सगाई से ठीक दो दिन पहले उसका एक्सीडेंट हो गया। सिर्फ़ अँगूठी ही नहीं पहनाई, वैसे वह मेरी मंगेतर है। मैंने उसे साफ़ कर दिया क्योंकि उसने उँगली की खोज की थी।

उसने कुछ देर दूसरी तरफ़ देखा और कुछ देर सोचने के बाद मेरी तरफ़ मुड़ी और बड़े अपनेपन से बोली, ‘थैंक यू।’

‘सॉरी?’ मैं उसका आशय नहीं समझ पा रहा था।

‘तुमको पता है उसके चेहरे, उसका ब्रेन, उसके पूरे शरीर को इतना अधिक नुकसान हुआ है...’

‘हाँ, मैं जानता हूँ।’

‘हम पूरी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन कुछ पक्का नहीं कह सकते कि बाद के जीवन में भी वह उतनी ही खूबसूरत रह पाएगी जैसी वह थी। तुम इसे जानते हो?’

‘हाँ मैं जानता हूँ।’

‘तुम सब कुछ जानते हुए भी उसके साथ खड़े हो, मैंने उसके लिए थैंक यू कहा...अपने प्रोफेशन में मैंने ऐसे कई केस देखे हैं जिसमें लड़की से उसके ससुराल वाले तुरंत नाता तोड़ लेते हैं। एक औरत होने के नाते मैं समझती हूँ कि लड़की और उसके परिवार को तुम्हारे सपोर्ट की कितनी ज़रूरत है...और उससे भी बढ़कर मैं समझती हूँ कि तुम उसे कितना प्यार करते हो।’

मैं कुछ देर चुप रहा। फिर काँपती आवाज़ में मैंने कहा, ‘क्या आप मेरे प्यार को बचा सकती हैं?’

‘तुम्हारे प्यार को बचाने में भगवान हमारी मदद करेगा।’ उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया, मुझे दिलासा दिलाने की कोशिश करते हुए, मेरी उम्मीद को बढ़ाने के लिए। फिर मैंने उनसे वह पूछा जो मैं पूछने आया था। मैंने उनको अपने घर की हालत बताई और पूछा कि क्या मुझे अपनी माँ के पास जाना चाहिए। ‘मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करना चाहिए। मैं अपनी माँ के लिए खुशी को इस हालत में नहीं छोड़ना चाहता।

‘सुनो। जब वह आँख खोलेगी तो उसको सबसे अधिक तुम्हारी ज़रूरत महसूस होगी। और भगवान की इच्छा हो सब कुछ अच्छा होगा अभी चार-पाँच दिन और लगेँगे।’

‘चार-पाँच दिन?’

‘हाँ, तब तक वह नींद की गोलियों के सहारे रहेगी। इसलिए बेहतर यही है कि तुम जाओ और वह करो जो ज़रूरी है, जिससे तुम समय से वापस आ जाओ। मैं तुम्हारी माँ की हालत को समझ सकता हूँ और मैं तुमको यही सलाह दूँगा कि जाके मम्मी से मिलो और फिर उनको यहाँ ले आओ।’

इस जवाब को सुनकर मैंने यह तय कर लिया कि मैं अपने मम्मी-पापा के पास जाऊँगा और वापस फरीदाबाद अगले हफ्ते तक आऊँगा।

अगली सुबह मैंने खुशी को भुवनेश्वर के लिए जहाज में बैठने से पहले आखिरी बार देखा। वह शांत और बेहोश थी। मैं उसके चेहरे को कुछ देर तक देखता रहा। दिल ही दिल में मैंने उससे बातें कीं। 'मैं आ जाऊँगा और जब तुम आँखें खोलोगी तो मुझे पाओगी। सी यू सून, माई डियर।'।

मैंने उसके हाथों को चूमा और प्लेन पकड़ने चल पड़ा।

उधर मेरे अपने शहर में, मेरे आ जाने से माँम कुछ अच्छी हो गई। डैड भी मेरा उत्साह बढ़ा रहे थे। हम सब अपने जीवन के सबसे मुश्किल दौर से गुज़र रहे थे। तो भी, साथ रहने से हमें अच्छा सोचने की मोहलत मिली। मैंने उनको अपने जीवन के हर घंटे में प्रार्थना करते हुए देखा। भगवान से यही दुआ करते हुए कि मेरे लिए उनके लिए खुशी को बचा लें।

मैं हर कुछ घंटे में फरीदाबाद फोन करता। जब भी मैं फोन करता मैं कुछ अच्छा सुनने की आशा रखता। डॉक्टरों ने कहा था कि उसकी हालत में काफी सुधार हुआ है। उसका ब्लड प्रेशर ठीक हो गया था। और वह पहले से बेहतर महसूस कर रही थी, पिछले दो हफ्तों में सबसे बेहतर, हालाँकि उसको अब भी होश नहीं आया था।

यह शुक्रवार की रात थी, मुझे याद है।

मैंने भगवान का हर बात के लिए शुक्रिया अदा किया। हम सबने उनका शुक्रिया अदा किया। इस ख़बर से हमारे उदास चेहरों पर कुछ खुशी आ गई। अपने विरोधाभासी बयानों के बाद डॉक्टर अब अच्छी-अच्छी बातें करने लगे थे। हालाँकि अब भी वे अंत में यही कहते थे, 'हम अच्छा करने में यकिन रखते हैं, लेकिन यकिन रखिए हमें तब तक इंतज़ार करना होगा जब तक वह होश में नहीं आ जाती।'।

इसलिए हम सब उसके आँखें खोलने का इंतज़ार कर रहे थे। जैसे ही मुझे अच्छी ख़बर मिली, मैंने भुवनेश्वर के लिए बस पकड़ ली। मैं फरीदाबाद के लिए अपने पूरे परिवार का टिकट कटवाना चाहता था। जल्दी-जल्दी में मैंने अपना डिनर भी मिस कर दिया। कुछ समय बाद, मैं तीसरी पंक्ति में था, बस में सबसे दाईं तरफ़ वाली सीट पर। अंदर बत्तियाँ बुझ चुकी थीं। मेरी दायीं ओर की खिड़की खुली हुई थी और मैं आसमान में चाँद और तारों को चमकता हुआ देख पा रहा था। मैं खुश था। मैं आकाश को तब तक देखता रहा जब तक कि थकान से मुझे नींद नहीं आ गई। मैं अपनी आँखों के भारीपन को महसूस कर रहा था। मैंने खिड़की से अपना सिर टिका दिया और कुछ देर के लिए आराम कर लिया।

और फिर, कुछ मिनटों के बाद कुछ विचित्र घटित हुआ। लेकिन जिस पर मैं विश्वास नहीं कर सका। नींद में करवट बदलता हुआ मैं अपनी बाईं तरफ घूमा। और अगले ही पल मैं अवाक रह गया।

वह ठीक मेरी बग़ल में बैठी थी।

खुशी ठीक मेरी बग़ल में बैठी थी।

मेरी विस्मित आँखें उसे एकटक देखती रहीं। मैंने बोलने की कोशिश की लेकिन बोल नहीं पाया। उस समय मेरे मन में सैकड़ों सवाल चल रहे थे लेकिन मैं तय नहीं कर पा रहा था कि कौन-सा सबसे पहले पूछूँ। मैं इधर-उधर देखता रहा। अँधेरे में सभी यात्री सोये हुए थे।

वह मुस्कुराई। एक्सीडेंट का न तो उसके चेहरे पर कोई निशान था न ही शरीर पर। वह इतनी सुंदर लग रही थी। जैसी कि वह हमेशा लगती थी। उसने अपनी सगाई वाली साड़ी पहन रखी थी।

मैं अब भी समझने की कोशिश कर रहा था कि यह क्या हो सकता था।

उसने बड़ी मासूमियत से मेरे माथे पर अपने हाथ रख दिए। फिर धीरे-धीरे मेरे गालों पर ले आई और वहीं उसे आराम से रहने दिया। फिर उसने पूछा, 'कैसे हो डियर?'

मैंने बोलने की कोशिश की लेकिन मेरा मुँह सूख गया था। मैंने बोलना शुरू किया, 'मैं इस पर यकीन नहीं कर सकता...तुम...कैसे...?' मेरे सवाल आधे-अधूरे ही रह गए।'

'मैं जानती हूँ कि तुम क्या सोच रहे थे। लेकिन मैं यहाँ हूँ तुम्हारे लिए। सिर्फ तुम्हारे लिए।'

'लेकिन तुम तो मुझसे बहुत दूर अपोलों में थी...बेहोश...' मैं उसे स्वीकार करने की कोशिश कर रहा था जो कुछ मैं देख रहा था।

वह बड़े आराम से मेरे सवालों के जवाब दे रही थी, 'शोना! मैं तुमसे अलग नहीं हो सकती। मैं तो हमेशा से यहाँ थी। ठीक तुम्हारी बगल में...हमेशा।'

मैं उसकी आँखों में अपने लिए प्यार देख सकता था। मेरे अंदर कुछ था जो उसमें विश्वास करने लगा जो कुछ दिखाई दे रहा था। मैं खुश और सहज महसूस कर रहा था।

कुछ मिनटों की खामोशी के बाद मैं बोला, 'मैंने तुमको इतना अधिक मिस किया, खुशी। दो हफ्तों तक मैं तुमसे बात नहीं कर सका और तुम....'

'शश!' उसने अपनी उँगली मेरे होंठों पर रख दी और मुझे आगे नहीं बोलने दिया। 'माफ़ कर दो डियर। मैं जानती हूँ कि तुम मुझे कितना मिस करते रहे। मुझे माफ़ कर दो डियर। इसीलिए सारी बाधाओं के बावजूद मैं तुम्हारे पास आई—अपने प्यार के पास।'

उसने मुझे किस किया।

और फिर, उसके हाथों में एक छोटा बॉक्स था। मैंने देखा उसने उसे मेरे सामने खोला। उसमें सगाई की अँगूठी थी जो वह मेरे लिए लाई थी। अपनी खूबसूरत मुस्कान के साथ उसने अँगूठी बाहर निकाली और ऊपर देखते हुए, मेरे हाथ अपने हाथ में ले लिए।

'लेकिन यह तो हमें सबके सामने करना होगा, न?' मैंने उससे पूछा।

'न, मैं उतना इंतज़ार नहीं कर सकती।'

'लेकिन क्यों?'

'मेरे पास ज़्यादा समय नहीं है।'

'इस बात का क्या मतलब है कि समय नहीं है?'

'शशश...तुम सवाल बहुत करते हो,' उसने बड़े प्यार से मेरी नाक खींचते हुए कहा। और फिर सीधे मेरी आँखों में देखते हुए, उसने कहना ज़ारी रखा, 'क्योंकि मैं तुम्हारी होकर मर रही हूँ...मेरे प्यारे। क्या तुम मुझसे शादी करोगे?'

खुशी के उस पल में मैंने कुछ भी नहीं कहा। बस सिर हिलाकर रह गया।

उसने वह खूबसूरत अँगूठी मेरी तीसरी उँगली में पहना दी और मुझे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि जो अँगूठी मैंने उसके लिए ली थी वह पहले से ही उसकी तीसरी उँगली में थी।

मैंने उसे गले से लगाया और उसके माथे और होंठों पर किस किया। हम एक-दूसरे का हाथ थामे रहे।

कुछ मिनट की रोमांटिक खामोशी के बाद उसे अचानक कुछ याद आया। 'तुमने अपना डिनर क्यों छोड़ दिया? तुमको भूख लगी है न?'

'नहीं मुझे नहीं लगी है,' मैंने कहा। लेकिन उसे यक़िन नहीं हुआ और उसने अपना बैग खोलकर उसके अंदर से एक बॉक्स निकाला। वह एक टिफिन बॉक्स था जो वह ऑफिस लेकर जाती थी।

'देखो मैंने तुम्हारे लिए क्या बनाया है।'

'अरे, राजमा चावल!' मैं लगभग चिल्ला पड़ा, सोए यात्रियों को परेशान करता हुआ।

अपने हाथों से उसने मुझे मेरा फेवरेट खाना खिलाया। हम बातें करते रहे, वो मुझसे भी अधिक। हमने आखिरी कौर साथ खाया जिसके बाद उसने मुझे कहा, 'अपना खाना नहीं छोड़ना। तुमको अपना ध्यान रखना है।'

मैंने कुछ नहीं कहा। मैं अपने हाथ में उसकी उँगलियों को महसूस कर रहा था।

'वादा करो,' उसने कहा।

'क्या?' मैंने उससे पूछा।

'वादा करो, तुम हमेशा अपना ध्यान रखोगे।'

'क्यों?'

रहस्यमय ढंग से उसने जवाब दिया, 'क्योंकि मैं तुम्हारे लिए हमेशा राजमा-चावल बनाने के लिए नहीं रह पाऊँ।' और वह हँसने लगी। वह प्यारी लग रही थी। उसने फिर से मेरे माथे पर किस किया और मेरी आँखों में गहरे देखा। मैंने उसकी आँखों में, उसके किस में कुछ अलग-सा महसूस किया।

और फिर, एक बच्चे की तरह उसने मुझसे पूछा, 'सुनो, मैं कुछ देर तुम्हारे कंधे पर अपना सिर रखना चाहती हूँ।'

और फिर उसने मेरे बाएँ कंधे पर अपना सिर रख दिया। हम अब भी हाथों में हाथ थामे थे। कुछ मिनट खामोशी में गुज़र गए। अपने हाथ उसके हाथ से छुड़ाते हुए मैंने यह जानने की कोशिश की कि वह सोई थी या नहीं। वह नहीं सोई थी। उसने मुझे अपना हाथ नहीं छुड़ाने दिया। वह चाहती थी कि मैं उसे कस कर कपड़े रखूँ।

मैंने उसे अपनी बाँहों में ले लिया जब उसने कहा, 'शोना! मुझे जीवन भर का प्यार देने का शुक्रिया।' मैंने कुछ कहा नहीं, बस उसके बालों को चूम लिया। मैंने अधिक बात नहीं की। मैं चाहता था कि वह आराम करे। कितने समय बाद हमें यह मौका मिला था। कुछ और समय गुज़र गया। मुझे पता नहीं कितना। और फिर अचानक, मुझे लगा कि मेरे माथे पर कुछ लगा है।

वह क्या था? मैं समझ नहीं पाया। लेकिन मैं कुछ सुन सकता था। कुछ आवाज़, कोई घरघराहट, जो मुझे परेशान कर रही थी। कुछ सेकेंड तक मैं समझ नहीं पाया कि वह क्या था। मैं अपनी आँखें खोलने की कोशिश कर रहा था।

मैंने पाया कि मेरी दाईं तरफ की खिड़की अब भी खुली हुई थी और मेरा सिर ग़िल पर टिका हुआ था। हो सकता है नींद में मेरा सिर उससे टकराया हो। मैं होश में आने की कोशिश कर रहा था। मेरे पॉकेट में मेरा सेल फोन बज रहा था।

बस में अब भी अँधेरा था। हवा के एक झोंके ने मुझे नींद से जगा दिया। बाहर आकाश शांत था, चाँद अपनी चमक खो रहा था, तारे गुम हो रहे थे। भोर हो चुकी थी।

और अचानक मैंने पाया कि मेरी उँगली से अँगूठी गायब थी। मैं उसे देखने के लिए तुरंत अपनी बाईं ओर घूमा। लेकिन वह वहाँ नहीं थी। मैं डर गया। मैंने खड़े होकर उसे इधर-उधर देखना शुरू किया। लेकिन मैं उसे देख नहीं सका। वह जा चुकी थी, पता नहीं कहाँ।

मेरे पॉकेट में फोन बज रहा था और उस भ्रम की हालत में मैंने उसे निकाल लिया।

उस पर खुशी का नंबर आ रहा था।

मैंने अपनी घड़ी देखी। सुबह के चार बजे थे। फोन करने के लिहाज से थोड़ा ग़लत समय था।

यह बहुत ज़रूरी हो सकता है, मैंने सोचा और फोन उठा लिया। 'हेलो?'

लेकिन दूसरी तरफ से कोई आवाज़ नहीं आई, बस किसी की साँसों की आवाज़ आ रही थी।

'डैड।'

'बेटा...'

मैं सही था। यह खुशी के डैड थे। 'हाँ, डैड?' मैंने कहा।

उन्होंने एक लंबी खामोशी के बाद कहा। 'बेटा एक बुरी खबर है। हमारी खुशी नहीं रही। कुछ मिनट पहले वह हमें छोड़कर चली गई...'।

'लेकिन वह तो कुछ मिनट पहले मेरे साथ यहाँ थी...' मैंने सुना कि मेरे अंदर चीख रहा था लेकिन बाहर कोई आवाज़ नहीं आई।

मेरे दिल पर कुछ भारी-सा आ कर लगा, भयानक झटका। मेरी आँखें फल गईं। मेरे अंदर एक तरह का ठंडापन फैल गया। माँसपेशियाँ नहीं हिल पा रही थीं। मेरे दिल की धड़कन बढ़ गई थी। मेरा दिमाग सुन्न हो गया था। मेरा अपने ऊपर से कंट्रोल खत्म हो गया था और मुझे बार-बार वही मैसेज सुनाई दे रहा था। मेरे दिमाग में बस यही आया कि मुझे अपने मम्मी-पापा के पास जाना चाहिए। बीच के स्टैंड पर ही उतरकर मैंने बुर्ला की बस पकड़ ली। एक अलग तरह की शांति मेरे ऊपर छा गई थी। मैं रो नहीं रहा था। जब घंटों बाद मैंने घर का दरवाज़ा खोला तो मैंने पाया कि मेरे मम्मी-पापा मुझे देख रहे थे कि मैं वापस क्यों आ गया। मैं वहीं खड़े उनको देखता रहा।

मैं अब भी शांत था।

फिर, साहस जुटाकर उनको अपने जीवन की सबसे उदास खबर सुनाई।

जैसे ही मेरे माँम ने यह सुना उन्होंने मेरी कलाई पकड़ ली और दीवार पर लगी भगवान की तस्वीरों को गुस्से से देखने लगीं। मम्मी-पापा रोने लगे और उनकी आवाज़ खाली कमरे में गूँजने लगी। मैं अब भी शांत था। या सुन्न था। मेरे दिमाग में कुछ भी नहीं ठहर रहा था। मैंने उनको कुछ देर देखा और उनको छोड़कर अपने कमरे में आ गया।

मैं अपने बेड पर सो गया, अपने ऊपर कंबल डालकर। मैं घुटनों के बीच हाथ डालकर सो गया। मैं रो रहा था।

उसके बिना

‘पिछले कुछ घंटों से हमें उसकी हालत में कुछ सुधार दिखाई दे रहा था, लेकिन अचानक उसका ब्लडप्रेसर तेज़ी से गिरने लगा। असर इतना अधिक था कि उसका दिल जवाब दे गया।’ डॉक्टरों ने कहा।

परिवार वाले उसे देखना चाहते थे।

डॉक्टरों ने कहा कि वे बाँड़ी फैमिली वालों को नहीं दे सकते। (आपने ध्यान दिया? उन्होंने यही कहा। उसका अब कोई नाम नहीं रह गया था। वह बस एक बाँड़ी थी। एक मुर्दा बाँड़ी।)

यह एक एक्सीडेंट था और उसमें पुलिस को शामिल किया जाना ज़रूरी था, कानूनी औपचारिकताएँ पूरी करनी थीं, उसके बाद बाँड़ी को पोस्टमॉर्टम के लिए ले जाया जाना था। परिवार वालों ने उनसे विनती की कि उसकी ऑटोप्सी न की जाए, लेकिन वहाँ के अधिकारी उसे वहाँ लेकर गए जहाँ मुर्दा शरीर की चीर-फाड़ की जाती है।

यह सब कुछ जहाँ हो रहा था वहाँ से बहुत दूर मैं सदमे की हालत में था। इस सच को मान पाना इतना मुश्किल था। मुझे पता नहीं उसके बाद क्या हुआ, लेकिन मैं कल्पना कर सकता था कि उसके घर पर क्या हो रहा होगा...मैं उन दर्द भरी आवाज़ों को सुन पा रहा था। मैंने उसकी उँगलियों को देखा और मैंने अपनी दाईं जेब में उसकी सगाई वाली अँगूठी को टटोला। मैंने उसे सफ़ेद कपड़ों में लिपटे हुए देखा और उसकी रंगीन साड़ी को अपने सीने से लगा लिया। मेरे अंदर कुछ सुन्न होता जा रहा था, इस बात के अहसास के साथ कि मैं उसके आखिरी पलों में उसके पास नहीं रह सका।

कुछ पलों बाद, मैं महसूस कर सकता था कि कुछ मासूम जल रहा था।

मुझे उसके मुर्दा हाथों को चूमने का भी मौका नहीं मिला...

मेरे घर में मुर्दा ख़ामोशी भर गई। मेरी तरह नहीं, मेरे माता-पिता अकेले में रोते थे, क्योंकि उनको मुझे मज़बूत बनाना था। वे तो उस लड़की को देख भी नहीं पाए जिससे उनका लड़का शादी करना चाहता था।

शाम को, डैड ने टिकट बुक करवाया और अगले दिन हम दोनों फरीदाबाद के लिए चल पड़े।

एक दिन बाद, दोपहर में, मैंने उनके घर का दरवाज़ा खोला। तमाम लोगों के बीच मैंने उसकी माँ को देखा और उनके गले लगने के लिए दौड़ पड़ा, हम दोनों आँसुओं में डूब गए।

विडंबना यह थी...वह घर जो बेटी की सगाई के जश्न में जगमगाने वाला था, वहाँ का माहौल इतना अलग था। सादे कपड़ों में लोग ख़ाली किए गए ड्राईंग रूम में बड़ी-सी दरी पर बैठे थे। वहाँ खुसफुसाहट थी, अचानक का रोना था और वे आँखें भी थीं जिनके आँसू सूख चुके थे। हम सबके ऊपर जैसे अभिशाप टूट पड़ा था।

उसी घर में जहाँ वह बड़ी हुई थी, उसके बिना रहने के अहसास के बीच मेरा दिन किसी तरह से गुज़र गया। शाम हुई। कुछ और दूर के रिश्तेदार, कुछ और जान-पहचान वाले आए। और उसके बाद आहों-कराहों, आँसुओं का और दौर चला। सब देखकर, मैं वहाँ से भागकर किसी ऐसी जगह जाना चाह रहा था जहाँ मैं होऊँ और उसकी यादों...शायद कमरा नंबर 301 में...

सब कुछ इतना अविश्वसनीय लग रहा था। लेकिन फिर भी सब सच था।

आठ बजे के करीब अँधेरा हो गया। मैं एक फोटो स्टूडियो में अपनी मर चुकी गर्लफ्रेंड की तस्वीर को फ्रेम करवा रहा था, उसकी अंतिम प्रार्थना के समय गुरुद्वारे में रखने के लिए, जो अगले दिन के लिए तय हुई थी। सोचिए कौन-सी तस्वीर...?

वह उनमें से एक थी जिसे भेजने के लिए वह सुबह तक जागी थी, जब मैं अमेरिका में था। अपने किसी बुरे ख़्वाब में भी मैं यह नहीं सोच सकता था कि मैं उसकी उस तस्वीर का इस काम के लिए उपयोग करूँगा।

जब दुकान वाले ने मुझे वह फ्रेम की हुई तस्वीर सौंपी तो मेरी नज़र उसकी आँखों पर पड़ी। वे खूबसूरत थीं।

कुछ सेकेंड बाद, मैंने महसूस किया कि अमी दी की उँगलियाँ मेरी गीली पलकों को पोंछ रही थीं। हमने पैसे चुकाए और घर के लिए चल पड़े।

अगले दिन, हम सब गुरुद्वारे में जुटे। मृतात्मा की शांति के लिए अंतिम अरदास थी। मैं जैसे ही अंदर आया, मेरी नज़र उसकी तस्वीर पर पड़ गई जिसे अब फूलों से सजाया गया था। इस धरती पर ऐसा कोई नहीं होगा जो यह देखना चाहता हो कि उसकी गर्लफ्रेंड की तस्वीर फूलों से सजी हो। यह तो जैसे आपको मार देता है। और कितना मुश्किल होता है इस सच का बार-बार सामना करना, और तो भी सबके सामने अपने आपको ज़ब्त करके रखना पड़ता है।

वह अब भी इतनी सुंदर लग रही थी।

वहाँ जितने लोग जुटे थे सबने सफ़ेद कपड़े पहन रखे थे। कुछ लोग प्रार्थना कर रहे थे। जब मैं औरतों के झुंड के पास से गुजर रहा था तो मुझे खुसफुसाहट सुनाई दी, 'यही है वह लड़का जो उससे शादी करने वाला था।'

मैंने उनकी आवाज़ को अनसुना किया और दूर कोने की तरफ बढ़ गया, अपने डैड से, उसके डैड से, उसकी फैमिली और भगवान से दूर।

मुझे कुछ याद नहीं कि क्या कुछ हुआ और कितनी देर तक मैं वहाँ रहा। मैं उसके साथ ख़्यालों में था। और बिना समझे मैं वही कर रहा था जो दूसरे कर रहे थे। जब वे सब खड़े हुए, मैं भी खड़ा हो गया। जब सब झुके, मैं भी झुक गया। कुछ घंटों में सब कुछ ख़त्म हो गया था...सिवाय उस दर्द के जो मेरे दिल में रह गया था।

उस दोपहर उसके घर में, जहाँ उसकी सगाई की पार्टी होने वाली थी, वहाँ उसकी रुखसती का खाना चल रहा था। जिन खानसामों को लज़ीज़ खाना पकाने के लिए बुक किया गया था वे कुछ और पका रहे थे। वे लोग जिनको कुछ दिनों पहले सगाई का बुलावा मिला था आज किसी और ही कारण से जुटे थे। और मैं कहाँ था...?

उन लोगों को भोजन परोस रहा था जो मुझे जानते भी नहीं थे।

मैंने देखा कमरे के एक कोने में मेरी किस्मत मेरे ऊपर हँस रही थी।

दिन बीता और फिर रात आई। और मैं वैसे तो दुआ कर रहा था कि उसकी आत्मा को शांति मिले, मेरी आत्मा अंदर से शांत नहीं थी। मैं सोने की कोशिश कर रहा था, लेकिन नींद मुझसे दूर थी। उसके साथ बिताए समय की छवियाँ काफी देर तक मेरे दिमाग में चलती रहीं। यही आखिरी बात मुझे याद है। मुझे याद नहीं कब दूर जा चुकी नींद ने आकर मुझे आगोश में ले लिया।

‘अरे! वह आ गया है!’

‘ओहहह! सब कोई आओ। रविन सगाई करके वापस आ गया है।’

दो दिन बाद मैं अपने ऑफिस में लौट आया था। एक-दो लोगों को छोड़कर किसी को इसका अंदाज़ा नहीं था कि मेरे हालात किस क्रूर बदल चुके थे, लेकिन सब कुछ लोगों की कल्पना से कितना परे था।

और, सबसे बेखबर, मेरे दोस्त और साथ काम करने वालों ने जैसे ही मुझे लिफ्ट से बाहर आते हुए देखा मेरी ओर दौड़ पड़े। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता मैं लोगों से घिर चुका था। वे सब गा रहे थे। चिल्ला रहे थे, मुझसे ट्रीट की माँग कर रहे थे।

मैं खामोश खड़ा रहा।

किसी ने चिल्लाते हुए कहा, 'अपनी अँगूठी दिखाओ। भीड़ में से किसी ने वह देखने के लिए मेरा दायँ हाथ खींच लिया।

मैं खामोश खड़ा रहा।

सारा फ्लोर मेरे आसपास जुटी भीड़ को देख रहा था, दूर से कुछ लोग चिल्लाए, 'मुबारक हो दोस्त!'

'अँगूठी कहाँ है? क्या तुम नहाते समय उसे भूल गए? या कि तुमने बैंक के लॉकर में रख दिया है?'

'हाहाहाहा!'

'अरे कुछ बोलो भी यार।'

और मैं बिना पलक झपकाए फ्लोर की ओर देख रहा था, कुछ कहने का साहस जुटा रहा था।

'अगर उसे पता चल जाए कि तुमने अँगूठी नहीं पहन रखी है, तो क्या वह तुम्हारे ऊपर चिल्लाएगी नहीं?' किसी ने मज़ाक किया।

और मैंने अपना चेहरा ऊपर उठाया, सबका सामना करने के लिए। कुछ को मेरी गीली आँखें दिख गईं और उन्होंने मज़ाक करना छोड़ दिया।

'वह मेरे ऊपर कभी नहीं चिल्लाएगी,' मैंने अपने सामने खड़े लोगों को बहुत धीमी आवाज़ में कहा। कुछ ने सुना, कुछ ने नहीं।

'क्यों नहीं? क्या तुमने उसे डराना शुरू कर दिया है?' मेरे पीछे से एक आवाज़ आई। हा हा हा। मैंने सबके सामने उनकी तरफ़ घूम गया। मेरी आँखें मेरे दुख का बयान कर रही थीं। और मैं किसी तरह सिर्फ़ यही कह पाया, 'क्योंकि वह अब इस दुनिया में नहीं है।'

वह मर गई। मैं रह गया।

मेरे सितारों में अकेले जीना लिखा था। उसके बिन मन इतना अकेला महसूस कर रहा था। जबकि सच्चाई यह थी सिर्फ़ वही गई थी बाकी सब कुछ वैसा ही था। लेकिन सब कुछ मेरे लिए कुछ भी नहीं था....

मैं उसकी कमी अपने दिनों में महसूस करता, अपनी रातों में। मैं अपने जीवन के हर पल में उसकी कमी पाता था।

और मैं आपको बताऊँगा कि यह अकेलापन कैसा लगता है, उसके बिना जीवन जीना जिसने आपको दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार किया हो: उसके बारे में कुछ याद करते हुए आप किसी समय हँस पड़ते हैं, कभी-कभी जब आप हँसते हैं तो आपको अपने ही आँसुओं का स्वाद महसूस होता है। जितना ही आप अपने आसपास रोमांस से बचना चाहें, आप उससे उतना ही घिरा पाएँगे। यह आपको दुखी करेगा। आप देखेंगे कि प्रेमियों के जोड़े किस कर रहे हैं, एक दूसरे के गले लग रहे हैं, एक-दूसरे के कंधों पर सिर रखकर आराम फरमा रहे हैं। आप उन्हें सब जगह पाएँगे, यहाँ तक कि सिनेमाघरों में भी जहाँ आप कुछ घंटे अँधेरे में बिताना चाहते हों। आप पाएँगे कि आपकी बगल में बैठा हुआ जोड़ा वही

सब कुछ कर रहा है जो पहले आपने अपनी महबूबा के साथ किया था। आप दर्द महसूस करेंगे, आपका दिल उबाल खाएगा। और बड़े आहिस्ता से, आप ऐसे चलेंगे जैसे आपने कुछ देखा ही न हो।

आपके दोस्त एक और सुंदर लड़की के बारे में बातें कर रहे होंगे। लेकिन धरती की एक से एक सुंदर लड़कियाँ आपको अपनी तरफ़ खींचने में नाकाम हो जाएँगी। किसी भी चीज़ से आपको जोश ही नहीं आता, यहाँ तक कि आपकी सेक्स की इच्छा भी मर-सी जाती है। जिम में कसरत करते हुए आप सबसे भारी वजन उठाने की कोशिश करेंगे। बाद में शावर के नीचे खड़े होकर आप ज़ार-ज़ार रोएँगे लेकिन कोई नहीं सुनेगा। पानी की आवाज़ आपके रोने की आवाज़ को ढँक लेगी। आप कुछ ऐसा खाना चाहेंगे जो आपकी यादों को पोंछ डाले।

और, यक़ीन मानिए, आपको ज़िंदगी मौत से भी बदतर लगेगी।

हर वह चीज़ जो मेरे चेहरे पर मुस्कान लाती थी अब तकलीफ़ देने लगी थी। कभी-भार इंटरनेट पर सर्फ़ करते हुए शादी.कॉम का ऐड दिखाई दे जाता और पुरानी यादें जाग उठतीं। मुझे याद है वह किस तरह से कहा करती थी शादी के बाद हम स्क्रीन पर अपनी सफल कहानी डालेंगे। मैं नहीं जानता था कि मैं एक दिन दुख भरी कहानी लिखूँगा।

कभी-कभार मैं खुद को उस नशेबाज़ की तरह महसूस करता जो बुरी तरह अपनी अगली खुराक के इंतज़ार में रहता। लेकिन नशेबाज़ के पास अपने नशे का सामान तो होता है...मुझे बड़ी घुटन महसूस होती। जैसे कुछ मेरी साँस रोक रहा हो। जैसे कोई मेरी आत्मा को घोंट रहा हो।

मुझे चीज़ों से डर लगने लगा था। मुझे पता नहीं वे क्या थे, लेकिन वे मुझे सोने नहीं देते थे। और एक बच्चे की तरह मैं भाग के अपनी माँ की बग़ल में सो जाता। वह मेरा सिर सहलातीं। अब भी, घंटों, मैं अपने ऊपर चलते पंखे को देखने में लगा रहता।

अगर कभी मैं सोता भी, तो घबरा कर जग जाता, चिल्लाता हुआ। अक्सर 4 बजे का समय होता।

फ़िलहाल

20 जुलाई, 2007

एक बेहद खास दिन। जश्न और मातम का दिन।

एक और शाम आई है, कितनी उसके जैसी और कितनी उससे अलग जो ठीक एक साल पहले आई थी। इस शाम मैं उस शाम को याद कर रहा हूँ जब मुझे पहला एसएमएस मिला था, जब हमने पहली बार बात की थी, फोन पर। जानना चाहता हूँ—किसी से, सबसे और किसी से भी नहीं—मुझे ये दोनों शाम क्यों जीने पड़े। जीवन वरदान हुआ होता अगर मुझे उनमें से किसी एक को ही जीना पड़ता, लेकिन दोनों नहीं। लेकिन अगर दूसरी नहीं आती तो मैं अपनी सगाई की अँगूठी को चूम रहा होता, उससे बातें कर रहा होता, अपने साथ के एक साल का जश्न मना रहा होता। अगर पहली शाम नहीं आई होती तो दूसरी भी नहीं आती।

उस शाम बारिश हो रही थी, आज भी बारिश हो रही है। तब भी मुझे किसी से प्यार नहीं था, आज भी नहीं है। मैंने कभी तब भी नहीं चाहा था कोई मेरे लिए सबसे खास हो जाए, मैं किसी के लिए सबसे खास, न ही मैं आज उस तरह से महसूस करता हूँ।

लेकिन उस शाम वह मुझसे बात कर रही थी, सवाल पूछे जा रही थी, मेरे सेंस ऑफ ह्यूमर पर हँस रही थी, लेकिन आज वह ऐसा कुछ नहीं कर रही। मैं तब उसे बिल्कुल ही नहीं जानता था, आज वो मेरे दिल के बहुत करीब रहती है।

जब मैं मुड़कर पीछे देखता हूँ तो उन लम्हों पर कभी हँसता हूँ कभी रोता हूँ। वे कुछ ऐसे मिले-जुले भाव जगा जाती हैं कि मैं बेचैन हो उठता हूँ। क्या मुझे जश्न मनाना चाहिए या मुझे रोना चाहिए? देखिए मैंने क्या पाया, देखिए मैंने क्या खोया...

मुझे याद है किस तरह मैं उससे बातें करते हुए किन्हीं अदृश्य दर्शकों के लिए हवा में अदृश्य तलवार भाँजने लगा था, और किसी राज़ की तरह यह घोषणा की थी, 'उस दिन पूरे देश में जश्न मनाया जाएगा और उसके बाद उस दिन सार्वजनिक छुट्टी हुआ करेगी। उस दिन सारे स्कूल-कॉलेज बंद रहा करेंगे। प्रेमियों के लिए यह दिन दूसरे वेलेंटाइन डे की तरह से होगा।'

और मेरे इस पागलपन पर वह हँसने लगी थी।

अब जब मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ तो सुकून मिलता है कि मैं कोई राजा नहीं था और सचमुच कोई दर्शक भी नहीं था, अब अगर वे मेरे पास आकर जश्न मनाने के बारे में पूछते तो मेरे पास कोई जवाब नहीं होता।

इधर मैं, इतना अकेला पाता हूँ खुद को, यहाँ तक सबसे भीड़ भरे इलाकों में भी। और बिना अपनी उस साथी के मेरी हालत दिन पर दिन बुरी होती जा रही है। इतना दर्द, इतना दुख... यहाँ तक कि आँसू भी सूख गए हैं।

लेकिन तो भी मुझे जीना है, हँसना है...

इसलिए, इस दिन मैंने अपने ऑफिस में जब मेरे फ्लोर पर कोई नहीं है, मैं अपने कंप्यूटर पर उसकी तस्वीर खोलता हूँ। मैं उसे चिढ़ाता हूँ, उसकी नाक खींचता हूँ, उसकी आँखों पर अपनी उँगली फिराता हूँ, उसे बहुत देर तक किस करता हूँ और कहता हूँ—मुबारक हो! हमारे साथ के आज एक साल हो गए। 3 दिन लड़ाई के और 362 दिन प्यार के। उतना बुरा नहीं रहा ना। और मैं अपने आँसू पोंछने के लिए बाथरूम में भागता हूँ। आज के दिन मैं रोना नहीं चाहता हूँ।

दिन बीत रहे हैं हँसने और किसी भी तरह खुश रहने की कोशिश में। अब रात आ चुकी है। अपने बेड पर लेटा मैं सोचता हूँ...अगर मैं उसकी जगह होता और वह मेरी जगह, तो उसका जीवन कैसा हुआ होता? क्या वह मेरे बिना रह पाती? क्या वह इसी तरह केवल जीने के लिए जी रही होती, अपने परिवार के लिए, जिस तरह मैं जी रहा हूँ? क्या अब भी भगवान में उसका यकीन होता, जिसे मैं बहुत पहले खो चुका हूँ? क्या उसके परिवार वाले उसके लिए दूसरा लड़का ढूँढने के बारे में सोच रहे होते? क्या वह एक दिन मुझे भूल जाती?

एक साल बाद

मेरे आसपास सब कुछ वैसे ही लौट चुका है जैसे दो साल पहले मेरे जीवन में खुशी के आने से पहले था। मेरे वीडियो शेल्फ पर रोमांटिक फिल्मों की जगह एक्शन फ़िल्में ले चुकी हैं। मैं अब समय पर सो रहा हूँ, क्योंकि अब देर रात कोई फोन नहीं आता। मैंने ऑरकुट पर अपने स्टेटस में फिर से 'सिंगल' लगा लिया है। मैं उसे बदलना नहीं चाहता था क्योंकि मैं अब भी अपने आपको उसका मानता था। लेकिन जब लोगों ने अजीब सवाल पूछने शुरू किए तो मुझे बदलना पड़ा।

उसके साथ सब कुछ चला गया—मेरे सपने, मेरी खुशी, मेरा बेहतर भविष्य और भी बहुत कुछ। मैं बदल चुका हूँ। एक साल हो चुका है मुझे हँसे हुए। लेकिन मैंने झूठी मुस्कान को ओढ़ना सीख लिया है। यह बहुत मुश्किल होता है, लेकिन इससे मेरे मम्मी-पापा को लगता है कि मैं बेहतर हो रहा हूँ, वैसे मैं जानता हूँ कि ऐसा नहीं है। मैं अधिक बात नहीं करता। जब मैं अपने दोस्तों के साथ होता हूँ तो मैं अकेला रहना चाहता हूँ, जब अकेला होता हूँ तो किसी का साथ चाहता हूँ। कहीं भी चैन नहीं पड़ता।

हर रात और दिन के बीतने पर मुझे महसूस होता है कि मेरे अकेले जीवन का एक और दिन बीत गया। इसलिए, अब मैं उस दुनिया के अधिक करीब हो चुका हूँ जहाँ वह जा चुकी है।

और लोग, ख़ासकर मेरे रिश्तेदारों ने यह कहना शुरू कर दिया है कि मुझे शादी कर लेनी चाहिए, कि मेरी हालत अच्छी नहीं है। मेरे मुँह पर कहने की हिम्मत तो नहीं पड़ती इसलिए दूसरे ढंग से कहते हैं। मेरे मम्मी-पापा मुझे खुश देखना चाहते हैं। उनको यह भी लगता है कि कोई और लड़की मुझे सुकून दे सकती है, सब कुछ भूलने एक नया जीवन शुरू करने में मेरी मदद कर सकती है।

लेकिन, कोई और लड़की?

मैं उससे क्या कहूँगा? कि मैंने अपने जीवन का बेहतरीन समय एक ऐसी लड़की की बाँहों में बिताया है जो तुम नहीं हो? कि मैं तुमसे भले ही शादी कर लूँ लेकिन मैं अभी भी एक ऐसी लड़की के प्यार में हूँ जो कि अब इस दुनिया में नहीं है? कि चाहे तुम जो भी कर लो, मैं हर वक्त तुम्हारी तुलना उससे करूँगा, तब भी जब तुम मुझे किस करोगी? क्या मैं बहुत सारी ज़िंदगियाँ बर्बाद नहीं कर दूँगा—लड़की की, उसके परिवार की, अपने परिवार की और अपनी? मेरी तो पहले से ही बर्बाद हो चुका है।

मैं अपने आप से इस तरह के सवाल पूछता रहता हूँ। और चूँकि मेरे पास इनके कोई जवाब नहीं होते, जब ये सवाल उठते हैं मैं भाग खड़ा होता हूँ। और मेरे माँम और डैड पूछते हैं—‘तुम कहाँ जा रहे हो?’

‘पता नहीं,’ मैं कहता हूँ।

‘कब तक इस तरह के सवालों से भागते रहोगे, बेटा? कभी न कभी तो घर बसाना ही होगा।’

‘मेरा मन नहीं करता,’ मैं कहता हूँ। फिर एक लंबी चुप्पी के बाद कहता हूँ, ‘अच्छा, मुझे देर हो रही है। मैं अपने एक दोस्त से मिलने जा रहा हूँ।’

‘रुको! तुमको इस बात का जवाब देना होगा। क्यों तुम घर बसाने के बारे में नहीं सोच सकते? तुम किसी और लड़की के बारे में क्यों नहीं सोच सकते?’

‘मैं नहीं सोच सकता, डैड?’

‘लेकिन क्यों नहीं?’

‘क्योंकि...’ मैं कहता हूँ और उस बहस से और घर से निकल जाता हूँ।

पीछे से डैड की आवाज सुनाई देती है, वही सवाल, ‘लेकिन क्यों नहीं?’

‘क्योंकि, किसी और लड़की के बारे में सोचना मुझे लगता है जिस्मफ़रोश होना है,’ मैं चुपचाप अपने आसपास के खालीपन से कहता हूँ।

मैं अपने पड़ोस के पार्क में हूँ। अहले सुबह। लंबे समय तक जॉर्गिंग करने के बाद मैं एक बेंच पर सुस्ता रहा हूँ। मेरी बग़ल में एक औरत बैठी है। मैं उसे नहीं जानता। वह एक लाल स्वेटर बुन रही है। वह अपनी बेटी के साथ है जो पार्क में एक लड़के के साथ खेल रही है। वह शायद छह साल की है।

उस पार्क में बहुत सारे लोग हैं। बहुत सारे बच्चे भी। मैं उनमें से किसी को नहीं जानता।

मैं ख़्यालों में खोया हूँ, अपने हाथ ठुड्डी पर टिकाए। मेरे सामने चलता खेल मुझे धुँधला दिखाई दे रहा है। मेरी आँखें नहीं घूमतीं। मेरे ख़्यालों को तोड़ती हुई बग़ल में बैठी औरत की तेज आवाज सुनाई देती है।

‘ऐसे मत करो। ठीक से बैठो नहीं तो तुम गिर जाओगी।’

मेरे सामने सी-साँ का खेल चल रहा है। जैसे ही उसकी स्पीड तेज होती, वह और ऊपर आ जाता और वही आवाज सुनाई दे जाती है।

‘ऐसे मत करो, नहीं तो गिर जाओगी...नहीं...नहीं...’

अचानक वह लड़की जमीन पर गिर जाती है। मैं समझने की कोशिश कर रहा हूँ कि क्या हुआ होगा आख़िर।

मेरी बग़ल में बैठी उसकी माँ उसका नाम ले-लेकर चिल्ला रही है।

उसका नाम...

मैं वह नाम जानता हूँ।

और अचानक मैं डर जाता हूँ, मैं उसको देखता हूँ और फिर उसकी बेटी को। मैं उसकी मदद करने के लिए भागता हूँ। मैं चिंतित हूँ और तेज़ी से साँस ले रहा हूँ। मैं उसे उठाने के लिए झुकता हूँ। वह रो नहीं रही है। मैं उसके हाथ-पैर देखता हूँ कि कहीं कुछ कट तो नहीं गया, चोट तो नहीं आई। बड़ी मासूमियत से वह कहती है कि वह अच्छी है। मैं उसके कपड़ों से गर्द झाड़ रहा हूँ। मेरी आँखों में आँसू हैं। मैं उसका चेहरा अपने हाथों में लेकर कहता हूँ कि यह अच्छा है कि वह अच्छी है और मैं मुस्कुरा देता हूँ।

उसकी घबराई माँ पहुँचती है और उसे बाँहों में भर लेती है। मैं उठ खड़ा होता हूँ और देखता हूँ कि उसका अधबुना स्वेटर नीचे गिरा हुआ है। वह उसका माथा चूम रही है, मैं वापस जाकर उसका स्वेटर उठा लेता हूँ।

यह पक्का कर लेने के लिए कि जो मैंने सुना वह सही था या बस मेरी कल्पना। मैं पूछता हूँ, ‘तुम्हारा नाम क्या है?’

‘मेरा नाम खुशी है।’

मैं उसे कुछ देर तक घूरता रह जाता हूँ। उसकी माँ मुझे देखती है। मैं उससे कहता हूँ, ‘यह तो बहुत अच्छा नाम है।’

फिर मैं घर लौट जाता हूँ।

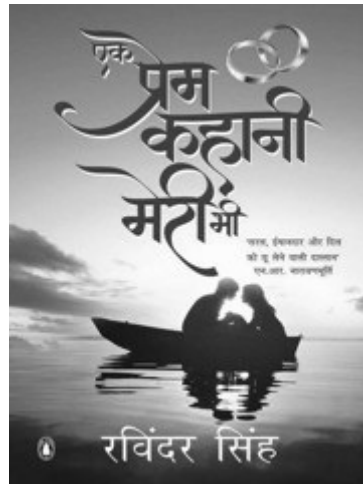
आभार

इन लोगों को दिल से शुक्रिया, जिन्होंने इस किताब के लिखने के सफर को आगे बढ़ाने में मेरी मदद की ।

खुशी के पिता को, जिन्होंने पहली बार इस किताब को पढ़ कर इसे संवारने में मेरी मदद की ।

मेरी अच्छी दोस्त प्रियंका राठी को, जिन्होंने हमारे कैंपस के उडुपी में ठीक 4 बजे की चाय में मेरा साथ दिया, जहां वो इस किताब के खूबसूरत टुकड़ों को दर्ज किया करती थीं ।

मेरी सबसे प्यारी दोस्त रिधिमा अरोड़ा को, जिनकी तरह के एक पाठक को पाने का सपना सारे लेखकों का होता है । उन्होंने हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया और बेहतरीन रास्ते दिखाए ।



एक शुरुआत

आइए बातचीत शुरू की जाए

पेंगुइन को फोलो कीजिए [ट्विटर.कॉम@पेंगुइनइंडिया](#)

हमारे ताज़ातरीन जानकारीयों के लिए आइए [यूट्यूब.कॉम/पेंगुइनइंडिया](#)

पेंगुइन बुक्स को आप लाईक कर सकते हैं [फेसबुक.कॉम/पेंगुइनइंडिया](#)

आप अपने लेखकों के बारे में ज़्यादा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और कई और जानकारीयां पाने के लिए आ सकते हैं
[पेंगुइनबुक्सइंडिया.कॉम](#)

पेंगुइन बुक्स

पेंगुइन बुक्स द्वारा प्रकाशित

पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रा. लि., 11 कम्युनिटी सेंटर, पंचशील पार्क, नई दिल्ली 110 017, भारत

पेंगुइन ग्रुप (यू.एस.ए.) इंक., 375 हडसन स्ट्रीट, न्यूयॉर्क 10014, यू.एस.ए.

पेंगुइन ग्रुप (कनाडा), 90 एलिंगटन एवेन्यू, ईस्ट सूइट 700, टोरंटो, ओंटारियो एम4पी 2वाय3 कनाडा (ए डिविज़न ऑफ़ पियरसन पेंगुइन कनाडा इंक.)

पेंगुइन बुक्स लि., 80 स्ट्रैंड, लंदन डब्ल्यू.सी.2आर. 0.आर.एल., इंग्लैंड

पेंगुइन आयरलैंड, 25 सेंट स्टीफेंस ग्रीन, डबलिन 2, आयरलैंड (ए डिविज़न ऑफ़ पेंगुइन बुक्स लिमिटेड)

पेंगुइन ग्रुप (ऑस्ट्रेलिया), 707 कॉलिंग स्ट्रीट, मेलबर्न, विक्टोरिया 3008, ऑस्ट्रेलिया (ए डिविज़न ऑफ़ पियरसन ऑस्ट्रेलिया ग्रुप पीटीवाई लिमिटेड)

पेंगुइन ग्रुप (एन.ज़ेड), 67 अपोलो ड्राइव, रोज़डेल ऑकलैंड 0632, न्यूज़ीलैंड (ए डिविज़न ऑफ़ पियरसन न्यूज़ीलैंड लिमिटेड)

पेंगुइन ग्रुप (साउथ अफ्रीका) (पीटीवाई) लि., ब्लॉक डी, रोज़बैंक ऑफिस पार्क, 181 यान स्मट्स एवेन्यू, पार्कटाउन नॉर्थ, जोहान्सबर्ग 2193, साउथ अफ्रीका

पेंगुइन बुक्स लि., रजिस्टर्ड ऑफिस : 80 स्ट्रैंड, लंदन डब्ल्यू.सी.2आर. 0.आर.एल., इंग्लैंड

अंगरेजी का प्रथम संस्करण : सृष्टि पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2009

हिंदी का प्रथम संस्करण : पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2011

[पेंगुइनबुक्सइंडिया.कॉम](http://www.penguinbooksindia.com)

सर्वाधिकार © रविंदर पाल सिंह, 2011

आवरण चित्र: रविंदर सिंह

सर्वाधिकार सुरक्षित

आईएसबीएन : 978-0-143-41722-4

यह डिजिटल संस्करण 2013 में प्रकाशित

ई-आईएसबीएन : 978-9-351-18589-5

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा ज़िल्दबंद या खुले किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के

खरीदार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का अंशिक रूप में पुनः प्रकाशन या पुनः प्रकाशनार्थ अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुनः प्रस्तुत करने की प्रति अपनाने, इसका अनूदित रूप तैयार करने अथवा इलेक्ट्रॉनिक, मैग्नेटिकल, फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग आदि किसी भी पद्धति से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखने वाले अधिकारी तथा पुस्तक के प्रकाशक की पूर्णमति लेना अनिवार्य है।

Ebook Downloaded From www.pdfhindi.in

For More Books visit! @ pdfhindi.in